अथरूप सनातन चरित्रं । दोहा । अवश्रदभुत से
दर सबद हृदय हरन संदेहु । भक्तिमहातम
करनकल हृल कमल पदनेहु । करहुं यथा
मति कथन कल्लरूप सनातन नाम । गौड़देस
जग भ्रात इह भये विदत गुणधाम । चौपाई ।
अवसर एक जगल अनरागे । निजवरदेस स
दन सबत्यागे । हृस्सकमल पद प्रीति वढाये
उनकंदिन वृंदावन आये । गोपेस्वर भगवान

५४
भ.
१

समीपा। लागेबसन भक्त कुलदीपा। चारहअजाचित
ब्रतकहंधारो। यथालाभ संतोष बिचारो। बिचरत
तहां कृस्न भगवाना। लीलाअमिय करत नितपाना
कृस्नबिमल कल गुण गणगाते। वृंदाबिपिन भक्ति
मदमाते। निवसत भये विप्रवर दोई। अजाचित हू
ती बिदित सबहोई। अवसर एक कृप गुण भवना
नंदीग्राम कीन कल गवना। देखा सनातन प्रीतिब
ढाये। वृंदाबिपिन ललित सुखपाये। एक दिवस

१

भेटन निजवीरा। नंदीग्राम गवन निधिधीरा। आव
नदेखि रूप अनुरागा। हृदय विचार करन निज
लागा। कबहूं कि आज उगाथमै पावहूं। प्रभुहिं
धम नैवेद लगावहूं। पाछेमात फल सरवपाई
देहूं रुचिर निज वीर जिमाई। हृदय सफुरन भक्त
जनकामा। रमारूप राधे अभिरामा। जनगजीत
कल लटक चटकिया। धरनसीस सम उगाथम
टकिया। नंदलखित सगंधि मनहारू। लीनेस

६४
भ॰
२

प्रगट करीजाहू। आवत भनेवचन रसबोरे। लेहू
भक्त इहू अरपण तोरे। मै प्रतिस्तुतकीनी सुभपहू
होहिं प्रसन्न धेनु जबगेहू। पायस सिद्धिहेतु नव
लाई। देहू दुगाध तंदुल हरषाई। हितजनतरूप सुत
न अमवानी। लीन्यो दुगाध परम सुख मानी। पेट
गदेखि अलौकिक सोभा। रूप अनूप मान रतिछो
भा। इकटकरह्यो चकित चितभारी। वदन सनात
नगिराउचारी। कहिनें कौन अगामन सुहाता।

२

मानाकवन नाम तवनाता । मैखडी भ्रषभान सुहा
ई । कियेगवन असवदन अलाई । वेगपाक नवहू
परचायो । वंधुजिमाय आप पुनिपाये । भनेवहो
रि वचन सुखदाता । मैआगमन देखि तवआता
डगाय अहार करावन कोरी । तोरेभई रुचिर रुचि
मोरी । अकस्मात इह गोपि सुहाई । तातमोर म
नवांछितल्याई । दोहा । सुनत सनातन वचन नहि
भने वदन मुडवानि । तीरथ वासी संतकहं कर

न लोभवऽहानि। यातेंनए हृत भक्ति जन होत नष्ट
सववीर। इहराथा प्रिय हृस्म कल नव गुनि स्नता
अहीर।१। टीका। अव आगे और हृस्म भगवानके
चरन कमलों मे प्रीतीके अधिक करनेवाला वडा
सुंदर सुखदायक और अदभुत भक्तीका महात
मजोहै सो गायन करताहूं कहतेहैं कि गौडदेस
विखें सरव गुणोंके धाम रूप सनातन नाम कर
के दोभ्राता प्रसिद्ध होतेभये एक समय वेदोनोंभ्रा

२

प्रेमभक्तीमें मगण भयेहुये अपने देस और घरके

सबको त्यागकर श्रीभगवानके चरनकमलों

को हृदयमें धारकर बडीप्रीती श्रद्धासे श्रीवृंदा

वनमें चले आवने भये तहां आयकर आनंदसे

गोपेश्वर भगवानके निकट निवास करनेलगे

और अजाचित व्रतजोहै सो धारन करलिया जो

कोई आयकर श्रद्धारुचीसे कुछ देजाता तोपाय

लेतेनहीं तो संतोषमें मगण रहतेथे और तहां

२४ भ० ५

हीं विचरते विचरते कृष्णपरमात्मा की लीलावि
लासके अमृत रसको नित्यपान करते और तिन
केही गुणगाण गावते रहतेथे इसप्रकार भक्ती
के मदमै उनमत्तभयेहूये वृंदावनमै वासकरक
र सब लोगोंमै अजाचितवृति अर्थात किसीसेकु
छ नहीं मांगने वाले प्रसिद्ध होयगये एकसमय
गुणप्रवीन रूप जोहै सो नंदीग्राम विखे चलाग
या और जिसका दूसराभाई सनातन नामा आने

५

दसपूर्वक वृंदावनमैं हीं रहताभया तब एकदिनअ
पने भ्राताके मिलने को सनातन जोहै सो नंदी
ग्रामविखें चलागया तिसको आवते देखकर ह
रष और प्रेमके वशभयाहूआ रूप हृदय मैं वि
चार करनेलगा किजो कदाचित आजमेरेको उ
गपजोहूपहै सोप्रापत होवे तोप्रथम भगवान
को नैवेद लगाय कर पीछे प्रीती रुचीसे अपने
भ्राताको जिमाऊं जब रूपके चितमैं इह अभिला

ध भ.
५

षाभई नव भक्तजनोंके मनोर्थोंको सफल क
रने वाली लक्षमीका रूप श्रीराधकेजोहै सो
गुजरीके सुंदरभेषमै बडीलटक और चटकसे
सीसपर धरीहुई दूधकी मटकी नेमसेंही वडे
उज्जल सुगंधीवाले चावल और शरकरा मिष्टान
लियेहुये आयकर बडेहित से कहनेलगी
किहे भक्त मैने घरमै रहसकवणा करीथी कि
जब मेरीगऊ सुखपूर्वक निरविघन होयकर प्र

५

सुतहोवेगी अर्थात सुयेगी नोमैंदीरके नमित इ
सकाहूथ प्रथम संतोके चखाउंगी सो आवतमा
री दयासे मेरामनोरथ सफल होयगयाहै इसलि
ये इहहूथ चावल और मिष्टानमें लाईहूं सोतम
कृपाकरके लेलेवो इसप्रकार गूजरीभेष नाथके
जीका वचन सुनकर सो हूथ चावल मिष्टान आ
नंद पूर्वक सब कुछलेलिया परंतु तिसकपट
भेष गूजरीके रूपकी शोभादेखकर किमानोर

रू॰ भ॰ ६

नीको कामदेवकी स्त्रीहै तिसकी मनोहरताईको
भी लज्जा देतीहै रूप भक्तके नेत्रचकित होयकर
एकटकलगजातेभये तव रूपका भाई सनात
न कहनेलगा किहेमातातूं कहांसे आई औरते
रे पिताका का नामहै ऐसे सुनकर सो कहने
लगी कि साधु मै वृषभानकी पुत्रीहूं इतना कह
तीही तरतचलेगई तवतो रूपने भोजन वनाया
और भ्राताको जिमायकर आपभी पाया फिर रूप

6

कहनेलगा किभाई मेरेको तेराआवना देखके
रहृदयमे हृथका आहार करावनेकी रुचीहोती
भई तव अकस्मातही इह गोपीजोथी सोमेरे मन
वांछन को लेकरके आयगई ऐसे रूपकावच
न सुनकर सनातन वडी कोमल वाणीसें क
हनेलगा कि तीरथवासी संतों को ऐसे अभिला
षा और लोभनहीं करना चाहिये इसमे वडी
हानीकी वारतारै और इसतें जपतप भक्तीभ

१४ भं. ८

जन सब नष्ट होजाता है हे बीर इह भी जान कि तिसको तैने अहीर की कन्या समझा है सो तो साक्षात श्री राधके रूप भगवान की प्यारी है ।१। चौपाई ।
हमकहं जानि शुद्ध नहिं गेहू । लाई उ गाथ मात करि नेहू । रूप रतन मानस विसमाना । वेषुवचन निश्चे नहि माना । नंदीग्राम कीन तव प्याना । खोजत जंगल सदन हरवभाना । नव लोगन अस प्रकट उचारा । अब न काहु हरवभान अगारा ।

८

सुख भयो विदित जगगावा। जबलोगन अस बद
न अलावा। तबहुं सनातन गिराउचारी। तातन
मार लोभ वस भारी। पावालोभ जनन सुखदानी
आगल अब नकरहु इहिभांती। अस भाषत हंसा
वनकाही। चलो हंस सुमरत मन माहीं। एक
दिवस सुंदर थलकाहू। लीलारास हंस उन
साहू। देखोहोत नृत्य कलगाना। रहोभक्तव
र वैठि जडाना। प्रेममगन सुनवत जनभययो

करन सर इक सनिक रह्यौ। स्तनलविनासु चेनहि
नवीनी। ग्राण कंधर अगुरी नहिदीनी। नवस पर्शी
करि नेजक्रसाना। भयोना सजनु दाहकभाना। दे
खीवहुरि नरन निरवकासी। पावक दगध सामस
वभासी। जियन जाति मानस विसमाना। भक्ति प्र
भाव विदन प्रकटाना। उन नहि भ्रात रूपवरकाहीं
भयोसपन अदभुत निसिमाहीं। कृपानाथ भगव
न गोविंद। बोलेभक्त कुमद मनइंद। सरतिमोर व

हिर कलग्रामा। दिपतदिव्य सनहौ गुणधामा।
तांकरलेहु खनन नवथरनी। करहु प्रकट संस्त
ति सुखकरनी। तहि सृजन करि रुचिर सुहावा
ले हिं लोग मन वांछित पावा। दोहा। बैठहिं गे
यन नृथनहु अम्बक ललित थलसोय। मंद मंद
तहिपै करत धेनदगथ च्युतहोय।२। टीका। इह
जगतकी माता हमको अपने पुत्र जानकर
बडे सनेहसे घरको त्यागकरके हथले आईहै

नवरूपसुन करके अवरजके वशहोयगया।
और भ्राताके वचनपर निश्चय नहीं होता
भया नंदीग्रामको चलेगये तहांहोनाभाई व्र
षभानका घरखोजनेलगे तवलोगोंने कहा
किभाई अव तोईहो व्रषभानका घरकोई नहीं
है सोतो सर्वकालविखें भयाहै सव लोग जान
तेहैं जवइस प्रकार लोगोंने कहा तव सनात
न कहनेलगा किहेवीर मेरेलोभके वशहोय

कर भक्त सुखदायक और दीन हितकारी माता
ने बहुत कलेशपाया है अर्थात तेरे हृदयकी
बूझकर अपने परम धामसे हथलेकर चली
आई इससे विचारनो करके जगजननीने कित
ना कलेश और श्रम पायाहोगा आनंद अबजो
भया सोभया परन्तु हे मैया इसने आगे फिर ऐसी
वारता कदाचित नहीं करनी ऐसे कथन कर
कर कृष्णभगवानको स्मरता हूआ सनातन

जोहै सोवृंदावनको चलाआया एकदिन तहांकिसी
देव भवनमै कृस्नभगवानकी सुंदर रास लीला औ
र नृत्यगाय जोहोताथा सोभक्तस्रष्ट देखकर प्रेममै
मग्न और ध्यानमै जडहूआ मानोमरे हूयेपुरषके
समान अचेत होयकर वैठरहा तव करन सर
नाम करके तहां एक पूजिकथा सोतिसकोमृ
त जानकर भ्रमसे क्रीडाकरनेके लिये नासिका
के मारगमै अंगुलीदेकर तिसकी चैतनता ।

१०

कोजाचनेलगा नव सपर्श होनेही तिसको अैसीते
जवाली दाहक अगनीका प्रभाव जानपड़ा किसा
नो अंगली सबभस्म होयगईहै तबतही बाहरनि
कालकर जो देखनेलगा तोक्या देखताहै कि
अंगुलीजल करके सबस्याम रूपहोय रहीहै
तबतिसको जीवताजानकर हृदयमेवड़ा अचरज
मानताभया अैसे सनातन की भक्तीका प्रभावजो
है सोप्रकट देखने मे आया अौर इहांतिसकेरू

२५
भ॰
॥

पनामाभानाको राञीके समय वडा अदभुत स्वपन
देखपडताभया क्याकि भक्तजनाके कुमदरूपी म
नके चंद्रमा भगवान कृपानिधान जोहैं सो कहने
लगे किहे गुणोंके धामभक्त प्रवीन ईहां नगरके
वाहर वडीदिव्यप्रकाशमान मेरी मूरती भूमीके
वीच लुपतभई हुईहै तूंपृथवीको खोदकर औ र
तिससुखदायक मेरीमूरतीको निकालकरके सं
सारमे भलीप्रकार प्रकटकर हेभक्ततिसके पू ॥

जनसेवनतें लोगजगतमें अपने मनवांछित फ
लोंको प्रापतकरैंगे सोश्रेसी सरवसिद्धियोंके दे
नेवालीमेरी मनोहरमूरती कहांहै कि जहां श्र
मक अस्थान पर गौओंका समूह बैठताहै तहां
तिसके ऊपर मंद मंद अर्थात बूंद बूंद करकेग
ऊका दूधजोहै सो टपकतारहताहै एहीतिसका
निश्चय करके चिन्हहै मैनेभक्त तेरेको भलीप्र
कार जनाय दियाहै ।२। चोपाई । देखि स्वपनश्र

२४
भ०
१२

सरूपसुजाना। सोवविच मूरति भगवाना। येन
फरतहग उगाथ निहारी। नरतखेनन वनलीन
निकारी। सज्जन साधु चरित असदेखी। भयेच
कित चित हृदय वसेखी। करिपूजन विधिवत स
मुदाई। रूपभक्ति मानससरसाई। कीन स्थापि
त हवि सनमाना। अवलों सो मूरति ॥
भगवाना। जय श्र जय हरि भूपति ना
मा ॥ तास विरचित भवन अभि रामा।

12

भक्तिशक्ति लोगन सुखदाई। श्रीहरिस्थापित भवन
कराई। तव इक दिवस सनातन धावा। नंदीग्राम
रूपपे आवा। मारग जटा मुकट सिरजोई। फस्यो
विघ्न कंटिक द्रुमसोई। ईहो रहन सासन भग
वाना। भक्त प्रवर मानस निजजाना। इस प्रकार
है दिवस विहाये। तव गोपाल भक्त सुखदाये।
त्रितिये दिवस उगथ सविलीने। जटा मुचित
द्रुम कंटिक कीने। सोसातिर पयपान करावा।

देखिदिव्य वररूप सुहावा। पूछत कवन वसहु कहिग्रामा। केनेनोर वंधु अभिरामा। सुनिबोले अस भक्त उदारी। मैगोपाल आन ममचारी। नंदी ग्रामवास निजमाना। असकहि भये लपत भग वाना। नवविसमय अतिमानसछावा। नंदीग्रा म सनातन आवा। खोजनलग्यो सकल थलनी के। सोगोपाल भक्त प्रियजीके। देखेजव नजन न सखदाना। नवनिश्चय कीने भगवाना। रोद

१२

नकरत विविध पछतावा। आपरूप करहूं मरम सुनावा। दोहा। तब इक अवसर रूपवर गाथावे नि सुहान। लागेपा वरणन वदन निज लखिन परहिं उपमान। ३। टीका। तब ऐसे स्वपने को दे ख करके रूपभक्त तरत तहांचलागया और भ गवानकी दिव्य मूरतीके ऊपर तेसेही रूपकी हेदें टपकतीदेखी ततकाल बड़े उतसाहसे पृथवीको खोदकर वेदीनवंधु की मनोहर

१५ भ० १५

मूरती जोषी सोनिकाललई इस प्रदभुतको देख
कर सब सज्जन साधू वडे अचरजको प्रापत होय
गये नवरूपने भक्ती प्रीतीसे विधिवत तिसमू
रतीका सवश्जन करके फिर सनमानसे ल्याय
कर भवन मे स्थापितकरदेई सोमूरती भगवा
न कृपानिधानकी अवलगभी जयपुरमे जय
सिंह राजाकेरचेहूये भवन विखें विराजमानहै
ग्रोर कैसी भी प्रसिद्धहै कि जगतमे लोगोंकोभ

१५

14

करनाहूं इहभक्तप्रधान मथुरापुरीमै निवासक
रके रात्रीदिन कृस्नभगवानके चरन कमलों
को भजन रहतेथे जगतमे जोजादेव अस्थान
पुराणोंविखे प्रसिद्धथे और लुपतभेय हूयेथे
तिन सबको अपनीबुद्धी और अनुभवके द्वारा
प्रकट करने लगजानेभेय जहांकहीकुछ सं
शाय भ्रमहोता तोस्वपने मै दीन हितकारी भ
गवान कृपाकरके आप जणाय देतेथे इसप्र

९३ कार कुछ समय वतीत होयगया तव एक दिन
भ० माघ महीने की संदर ऋतु पाय कर नगर के
३ लोग मिल करके प्रयागराज के दरसन को चले
३ और भक्त प्रधान नारायण जी के पास आय कर
कहेने लगे कि हे भक्त प्रवीन चलो हमारे साथ
प्रयागराज का नहां भली प्रकार सव दरसन पा
यकर और फिर हमारे साथही सँपूर्व कवर को ब
चलो आवो औसे तिनका कथन सुनकर भक्त सि
३

रोमशजी कहनेलगे किभाई इह तमने का कथन कियाहै मैंतोभगवानकी कृपासे तमको ईहां व रमैंही प्रयागराजका दरसनकराय देताहूं तम वालककोकोख अर्थात वगलमै दवायेहूये नग रमै ढूंडते फिरतेहो का तमारी बुद्धी किसीनेवौ री कर देईहै जोप्रयागराजको वरमै छोड कर वा हर दरसन करनेको जातेहो इसमे जोकदाचित तमको प्रतीतीनहीं आवती तोचलो अवहीं दिखा

यदेताहूं कुछ्छविलंब नहींहै ऐसे कथन करकर
सव लोगोंको साथलियेहूये भक्त प्रधान नगरके
वाहर चलेआये तहां एकवड़ा ऊचा सिखर देखक
र और तिसके ऊपर जायकर वड़ी ऊची स्वरसे
सवको सुनायकर कहने लगे किहो भाई लो
गो इहदेखो वड़ी उज्ज सुखके देनेवाली सुंदर
त्रिवेनीजोहै सोवही चली जातीहै तव लोग दे
ख करके परम अचरजको प्रापत होय गये

९९
भ०
४

जलका प्रवाहजोहै सो अनंतनहीं वहा चलाजाताहै
इसअद्भुत कौतुक और भक्तीके प्रभावकोदेख
कर हरषकेवश भयेहूये सवलोग भक्तप्रधान
के चरनोपर वार वार दंडप्रणाम करके भावसे
अनेकप्रकारकी असतती वडाई करनेलगे इ
सप्रकार इहनारायण भट्टजी भक्तीमे प्रवीन
जदुनंदन भगवानके परमभक्त होतेभये देखो
कि जिनोने अपनी भक्तीके प्रभावसे लोगोंको

भ. ५

मथुरामैहीं प्रयागराज प्रकट दिखायदिया ॥ ५ ॥
इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे भगवद्भक्ति महा
नमे मिह्रांसिंहकृत भाषाटीकायां नारायण
भट्ट चरित्र वरणनं नाम सरगः ॥

५

सेतिसकी मनमारे हुये और सुधी बिसारे हुये की
दशादेखकर भक्तप्रधान हरिदासजीने तुरतज
मुनाके जलमै जाय प्रवेशकिया और तहांसे न
नकालही रेतसंयुक्त कंकरोंकी चार अंजलीभ
रकर तिसपुरुषके आगेडारदेई और मधुर वा
णीसे कहनेलगे कि भाई अबतू अपनी मनो
हरदिव्य मणीजोहै सो इनमैसे पहिचानकर
लेलै ऐसे भक्तउत्तमका वचन सुनकर सो

९९
भ.
१९

जबदेखनेलगा तोतिसकोवे सब अपनीहीं मणी
के समान दिव्य मनोहर और बडी अदभुत देख
पडतीभई तबतोहृदयमें बडा अचरज मानक
र और हाथ जोडकर चरनोपरशिरपडा फिर
तैसेंही दीनभावसे सनमुख स्थित होयकर
मुखसे अनेक प्रकारकी विनतीबडाई करने
लगा और अपना अपराधक्षमा करवायकर
मनवचन काया करके तिनकाहीं बडाहकृ

१

सेवकहोयगया ओर गुरुजीको प्रकट ब्रह्मके
समानहीं जाननेलगा इस प्रकार कुछकालप
र्यंत तहां निवास करके गुरुजीके चरनोंको से
वन करताहुआ गुरु प्रसादसे सुंदर परम
पदजोहै तिसको प्रापतहोजाताभया । २ ॥
इतिश्री भक्तविनोदग्रंथे भगवद भक्तिमहा
तमे मिहांसिंहकृत भाषाटीकायां हरिदा
स चरित वरणनं नामसरगः ॥ ।

१०

९१

अथ विट्ठल चरित्रं । दोहा । ग्रान महानम सब वेद जहि खनन उदधि संसार । येन वरन वनहोहिं नर सुगम यतन विनुपार । चौपाई । चारु भल्ल भा चारजकेरे । वरदपान मंगल जगवेरे । ललित भागवत रटन सुशीला । निरत निरन्तर भगवत लीला । वैस्नव सुभट विमल मतिवारे । दायानिधि दीनहितकारे । सवकहं साचि उपदेस सुहावा । करहिं प्रीतिरित संज्जतभावा । सफल करत सव लोगनकाहीं ।

४१ भ· १

निरत जगल नित परहित माहीं। हरिगुणगान वि
मल कलगाते। संतत संत भक्तिभवराते। विचर
तरहे ज्ञान गुणसागर। विद्यावेद धरममतिनागर
द्वैमानाम एक अभिरामा। रामभक्त मानस निस
कामा। कृपापात्र हनूमान सुहावा। विठुलनाम
आन इकगावा। मथुरावसहिं भक्तिरत होई। पि
तापितरव्य नाम असदोई। रहे भूप अपरो हितनेह
सोकरिकलह परस्परगेह। सतवँ भये एककर

सीला। विठ्ठल नाम निर्गुण हरिलीला। पुत्रप्रवी
नवादवर वादन। रसिक मधुरस्वर नादनिनादन
करहिं ललित जव नृत्यप्रवीना। नारायणपदपं
कज लीना। एक दिवस अपरोहिनराजा। कीन
स्मरण जानि कछुकाजा। तवनहि मरण भ
तनजव वरना। बोल्यो स्ववन नाम पतिधरना
स्वनिनदेस विठ्ठलनर राये। आये हृदय प्रीति
सरसाये। राऊ विलोकि कीन सनमाना। तहं

वसि कछुक दिवस सुखमाना। दोहा। तव एकाद
शि दिवस कहं धरणिनाथ व्रतधारि। नृत्यगीतगु
णिजन सभा विरचिललित मनहारि। टीका। अव
और भक्तोंका प्रभाव जोहै सोहैसंतजनो आपकेआ
गे गायन करताहूं कैसाभी चमतकारहै किजिसके
श्रवणकरनेसें मानुष्य सहजेही गोचरनके समा
न संसार समुद्रको तरकर पारहोजातेहैं भक्तभा
वारजजीके मंगल और वरपान नामकरके दोचेले

होतेभये सो कैसे किश्रीमत भागवतके विचारनेमे
प्रवीन और ज्ञानभक्ती मे लीन निरमल बुद्धीवाले
वैस्नव उत्तम और दयारसमे भीगेहू दीनजनोके हि
तकारी थे नित्यलोगोंको बडे हितचित और प्रीती
से सुखके देनेवाला परम पवित्र उपदेस जोहै सो
सुनाय कर सबको सफल करतेहूये परहित और
परउपकारमेहीं लीनरहतेथे और भगवानके गुण
गायन करने और संतोकी सेवाभक्ती मे प्रीतीवाले

ध१ भ. ३

3

होकर प्रेममै उनमत भयेहूये संसारमै विचरते रहते
थे इह तिनकी इतनीही गाथाहै आगे हनूमानजीके
कृपापात्र किजिनके ऊपर हनूमानजीकी अत्यंतदा
याथी और परमभक्तीमान देमानाम करके भक्त उ
जागर होतेभये तेसेही और दूसरे विठ्ठल भगवा
नके परमभक्त मथुरामे वासकरतेथे तिनकापि
ता और चचाइह दोनो राजाके अपरोहितथे सो
दैवभावीसे दोनो परस्पर वैर विरोध कर करके औ

र लडकर मरजाते भये तिनके पुत्र परम सुशील
और साधु विट्ठल जी होते भये सोकैसेकि रागस
बंधीवाजयोंकेवजाने और मधुर रसभरी स्वरसे
गायन और नृत्य करनेमे परम चतुरथे जब
नृत्यगायन करते तब भगवानके चरन कमलों
के प्रेममै उनमत होयजातेथे एक समय राजा
ने कछुकारन जानकर अपरोहितका सुमरण
किया अर्थात तिसको बुलाया राजाके सेवकों

नेकहा कि महाराजवेतो कवकामर गयाहूआहै

तव प्रजानाथ वोले कितिसके पुत्रको लेआवो ऐ

से राजाकी आज्ञासे सेवकोंकेद्वारा प्रेम भक्ती मेम

गणभये हूये विठ्ठलजी तहांचले आवतेभये तिन

कोदेखकर राजाने प्रणाम करके वहुत आदर स

तकारकिया तववे स्नेह पूर्वक कुछदिन पर्यंत

तहांही निवास करतेभये जव एकादशीका दिन

आया तव भक्तव्रतधारी राजाने पंडित विद्वान और

गुणीजनोंकी सुंदर सभाजोहै सो रचाई और अनेक
प्रकारके नृत्यगायन भजन कीर्तन होनेलगे। ५
चौपाई। हर्षीजन विठ्ठल जनकेरे। नृपमन प्रकट
बदन असटेरे। पृथ्वीनाथ नृतगीत सुहावन। इह
अति निपुण विप्रमन भावन। सुनहु आज इहि
दीन दयालू। नवनदेस दीन्हा महिपालू। विठ्ठल
सुनन कीन सुईकारा। जब जनन करि हृदय वि
चारा। इनसनमुख हरि भवन अखारा। रच्योवि

लोकि उनंग अगारा। भूपसचिवजन सज्जनज्ञानी।
आये सकल विलोकनरानी। साधुनिकर परिवार
नहोई। विठ्ठल आय सकुच सबखोई। लागेपाहोनन्द
सकल गाना। मधुर मधुर स्वर रसिक महाना। भू
पविलोकि ललित रससोहन। मुरछित भयो जन
हूं वस मोहन। सभासमष्ट एकटक लागी। प्रेमप्र
वाह वार दृग त्यागी। परममोद विठ्ठल उनमानी
निरनत सुधि सरीर विसरानी। संतन निरत धा

५

न भगवाना। ब्रह्मानंद जनहु सुख माना। प्रेममगन
पुन होत अगाहू। उरभी परी भक्त बनयाहू। भूपदे
खि मानस अकुलावा। हाहाकार करत उठि धावा।
साधु संत सब लोग सयाने। निज निज हृदय उ
खित पछताने। मनहुं प्राणगन लीन उठाई। निज
सुख उष्ट जनन कहुं पाई। ईश्वा मूढ कनरवो अ
खारा। कहिउर वचन कीन विसकारा। नवअवे
न विह्वल उजकाहीं। ल्याये साधु नगर गृहमाहीं

५२
भ.
६

नृपभ्रत संजुत विविध प्रकारा। कीन्यो नाम यतन प
विचारा। दितिये दिवस उनहिं सुधि आई। जननि दीन
सब कथा सुनाई। भक्त प्रवर कछु वदन नकाह्या। सु
मरत ह्रस्ल मैन उरवाह्या। वासर एक सदन निसि का
ह्यी। लग्यो विचार करन मनमांही। दोहा। इह प्रपंच मि
थ्या सकल करि चिंतन उर सोय। ह्वै विरक्त चित अर्ध
निसि चल्यो सदन सुख खोय।२। टीका। नव विठ्ठल
जीके द्वेषी और विरोधी जो थे सो राजा को कहने लगे

6

६

८

कि है पृथ्वीपाल इह विठ्ठल ब्रह्मनंदन गायमें परम चतुर है हावभाव और मधुर आलापसे मानोमन को मोहित करलेता है कृपानिधान आज इसको अवश्य देखना सुननाचाहिये ऐसे तिनका कथन सुनकर राजा विठ्ठलजीको आज्ञादेताभया तिनोंने वचन स्वीकार करलिया कि सत्य वचन देखिये तब उन्ह जनोंने कपटसे भगवानके भवनके सन मुख बडे ऊंचे अस्थान पर आखाडेकी रचनाकर

दई और साजसमाज सब त्याय करके राखदिये
नव रात्रीके समय अपने सब सेवक मंत्री और ना
नीजाती सज्जन ऋत्विकादियोंके सहित राजाजोहै
सो आयकरके तहां बैठ जाताभया तिसतें उप
रांत साधु समाजके बीच परिवारत अर्थात घेरहू
ये विठ्ठल भक्तभी सकुचलज्जाको त्यागेहूये आनं
दसे चलेआये और सुंदर नानाप्रकारका बडी र
सिक और मधुर स्वरसे नृत्य गायनजोहै सोनेल

गा तब ऐसा अद्भुत रसपाय करके छायनभया
कि देख करके राजा मानो मोहन मंत्रके वश हो
य करके मूर्छित होयगया और सभा भी सब
एकटक नेत्रजोड़ करके चित्रके समान मौन हो
यगई सबके नेत्रोंसे प्रेमजलका प्रवाह वहा
चला जाता है इहां विठ्ठलजीभी शरीरकी दशा
से अचेत मानो ब्रह्मानंदके सुखमे मगण औ
र निरंतर करके भगवानके ध्यानमे लीनभये

९१
भ
८

हूये नृत्य गायनमै खचनहोयरहेहैं इसप्रकार नृ
त्य करते करते प्रेममै उनमत्त भक्तप्रधान अक
स्मातहीं तिसअखाडेके ऊंचेअस्थान से धरन पृथ्
वीपर गिरपडे ऐसे तिनका गिरना देखकर व्या
कुलचित हाहाकार करताहूआ राजा धायकरके
पास चला आया अरु और भी सब साधसंत पं
डित विद्वान और गुणीजन जो थे सो अपने अप
ने चित्तमै परम दुखमानकर बहुत पछतावने

लगे राजाने आयकर भक्तस्रष्टको ऐसे उठाया कि
मानो प्राणोंसे रहित भयाहूआ है और तिन ऊंची
जगा पर आक्रोश रचनेवाले दुष्टोंका राजाने अ
नेक प्रकारके दुरवचनों से निरादर किया औ
र कहा कि अरे मंद अभागी तुम ऐसी ऊंजगा
गा पर क्यों आक्रोश रचाथा अब जावो दुष्ट मेरी
आंखोंके सनमुख मत रहो तब अचेत भयेहूये
विठ्ठलजीको संत उठाय करके नगरमे चरखिले

वी

५१ भं ६

लेआये राजाने तिनकी सेवाकेलिये तहां आपनेसे

वक छोड़दिये और आपभी संतोंका भक्त राजारा

त्रीदिन तिनके उपाय मैं हीलगा रहताथा कि इन

कोकव कल्याणहोवे इसप्रकार जव तीसरादिन

वतीतभया तव विठ्ठलजीका स्मरन आयगई औ

र माताने सव वृतांत प्रकट करके सुनायाटि

या भक्त प्रवीन सुनकरके मौनरहे कुछ उत्तर

नहीं दिया हृदय मैं भगवानका स्मरणकरनेलगे ६

नव एकदिन रात्रीके समय घरमै बैठेहूये विचा
र् करतेहैं कि इह जगत प्रपंच जोहै सो सव मिथ्या
ही भासताहै इसके वीच पचत होयकर वृथाहीं
जनम हार देनाहै ऐसे सोच कर कर विरक्त भ
येहूये भक्त प्रधान विठ्ठलजी आधीरातके सम
य घरको त्यागकर चलपडे । २ । चौपाई । छितीना
म मंजल इकग्रामा । वसहिं निकर वैस्नव अभि
रामा । गहइ गुविंद देव करवाहू । तहां ललित

९। भं० ९

10

मूरति मनहु स्राहू। विप्र निवास कीन निज नाहीं। स्रम
रत हृदय चराचर नाहीं। सो जब आय सदन निज त्या
गी। पत निमात्र नहि विरहं विरागी। दुखित नास
अन्वेषण हेतू। चली जगल तजि रुचिर निकेतू। उत
धावन नृप दीन पठाई। जननी तिये दुखित इत आई
खोजत विथत सकल थल काहीं। पहुंची आय ग्राम
छिति माहीं। सुत कहं देखि भरत दृग वारी। दुखि
त दीन मुख गिरा उचारी। इह वल हीन हृद्नव वंश्रवा

९

अब सुनतनजकु कवन अवलंबा। करहु सदन चलि
पालन मोरा। हमहुं भरोस तात वलितोरा। रहो
मौन सुनिभक्त प्रवीना। तहां निवास जन निश्चिय
कीना। सुखउखहान लाभ संसारा। भक्तसुहृस
म हृदय विचारा। रहत अजाचित वत मनलीना
मात पतनि उत अनव हीना। भई उछवित अति
कृशपसरीरा। तव भगवान हरन जनपीरा। उन
कंहं दीन स्वपन निसिमांही। अवतम भक्तसुह

५१
भ॰
११

इनकाहीं। जाइ लेत निज सदन सुहायन। करहु
सो रघुगुणगण तहं गायन। बार बार जब कछु स्म अ
लावा। तब निज भवन भक्त वर आवा। देखि दीन
बांधव जन त्यागी। रह्योसि एक मीन अनुरागी। हि
तज्जन तास कीन मन माना। लग्यो बसन तहि म
दन सुजाना। एक दिवस तहि तिये सुभागी। पद
नख खनन धरन जब लागी। कलस निधान देखि
तब पावा। पतिहिं जाय तिय मरम जणावा। विद्ध

॥

लदेखि वदन ग्रमकाहा। इहहमार कछुखम
नराहा। दोहा। मदन स्वामि कहं वोलि ग्रस भक्त
लष समझाय। इहसजन विन खम नव राखहू
यतन उपाय।१। टीका। तवछिटी नाम कर
के एक सुंदर ग्रामथा तिसविखे वहुत वैसव
हीं रहतेथे ग्रीर गरुड गोविंद भगवानकी म
नोहर मूर्तीभीथी तहांकुसल परमात्माको स्मर
रतेहूये भक्त प्रधान निवास करतेभये तोजव

भक्त प्रवीन घरको त्यागकर चले आये पीछे तिन
की माता और स्त्री विरह करके व्याकुल और दीन
दुखी भई हुई तिनके खोजनेको वण नगर ग्रामों
मैं भ्रमती भ्रमती तहांहीं छिटी नगर विखें आय
प्रापत भई तब पुत्रको देखकर माता नेत्रोंमें ज
लभर करके वडी दीन और दुखकी भरी हुई वा
णी से रोदन करकर कहने लगी कि हे पुत्र मै वृ
द्ध बलहीन और दुखी दीन तेरी जननी अब तात

१९
भ०
१२

ज

१२

मेरेको कौनके आश्रय छोडकर चलेआये इह पुत्र
तमको उचितनहीं था अब मेरी वृद्धकीदशा देख
कर घरमै चल और हमारी पालनाकर पुत्रहम
को केवल तेराही भरोसाहै ऐसे सुनकर विद्ध
लजी मोनहीं रहे कुछउत्तर नहीदिया तब माता
और स्त्री दोनो तहांही निवास करने लगी भक्त
लक्षनोथे तिनको सुख दुख हान लाभ संसार
मै एक समानहीथा और नित प्रजाचित बनमै

भ० भ० १३

नगारागरहतेथे किसीसे कुछनहीं मांगतेथे माता और स्त्री जोथी सो अन्नके विना भूखी वडी दुखीदी न और दुवली वलहीन होयगई इसप्रकार तिन कीदशा देखकर दीनोकी पीडा हरनेवाले भग वान भक्तको रात्रीके समय सपने मे कहतेभये किहेमेरे प्यारे भक्त अव तुममेरे वचनसे इनको लेकर सुखपूर्वक अपने घरको चलेजावो और तहां निवास करके मेराभजन सुमरण कीर्तन

गायनजोहै सोकरनेलगे ऐसेजव वारवार भ
गवान कृपानिधानने कहा तवदीन वंधुकीआ
ज्ञाके भावभये हुये विठ्ठल भक्त माता और स्त्री
कोलेकर अपने घरमे चलेआये तहांवांधवभा
ई वंदोंने कुछदोष लखकर तिनको अपनी पं
क्तीमे त्यागदिया केवल एक मीनहितकारी पु
रुष जोथा सोआदिर सनकार और हित प्यार
से मिलकर मनमगनरहा नहींतो और सबके

मुख होयगये नवतो भक्त प्रधान तिस मीतके घ
रमें ही निवास करनेलगे एक दिन सोच करती
हुई भक्त उनमकी स्त्री अपने पाउंके नखसे पृथ
वी कोखनरहीथी अर्थात खोद रहीथी नवदैवयो
गसे अकस्मातही तिसको एकधनकाभराहुआ
पीतलका बडासगाला देखपडा सो देखतीही न
रनआयकर पतीको सुनायदेतीभई विठ्ठलजीस
नकर कहनेलगे किहेप्यारी इह हमारा खन

नहीं है अर्थात हमारे भागका नहीं है तव घरके मा
लक अपने मीतको वुलाकर समझायदिया कि
भाई इहधन तुमाराहै इसको लेलेवो और घर
मै कहीं यतन से संभालकर राखो तुमारेकाम
आवेगा।३। चौपाई। तासुवचन अतिसियहिसुहा
ई। यहकाकौन कथन तवभाई। सुनविन स
दन मोर परिवारा। सुनहु तात सव औहिं तुमा
रा। सज्जनलेहु कलस निधि एहु। स्वारथ नि

वि॰
भ॰
१५

रतनेश्वर हरिविगोह्न। नवविठ्ठल सादिवहूव रवाई। खो
ल्यो ललित कलस जव आई। निकसी बीच देव स
खदाई। विनसज्जन मूरति मनभाई। सोसादिर क
लभवन रचाई। स्थापित कीन भक्ति सरसाई। अह
विन अलदीन जनलेखी। अतिथी संत भक्त हरिदे
खी। लग्योविभक्त करन सनमाना। सवकहं जथा
जोग जिमिजाना। भयोविदत दाता उपकारी। विभ्र
देखि वांधव असरारी। लागे करन रुचिर सतका

१५

रा। सोकुनरक सव हृदय विसारा। रंगीलाल वि
दन प्रसनामा। भयो सवन ताकर अभिरामा। कु
सल न्रत्य गायन वडभागी। हृस्न सरोज चरन
अनरागी। गयो कछुक जव समय विहाई। नव
धक नदी निउण कलआई। देव भवन नहि न्रत्य
सुहावा। भक्त सरुष जन भक्ति करावा। ललितभा
व रस नास निहारी। साधु साधु सव लोग उचारी
जव नहि देन वसन विनलोग। भक्त सरुष हरष

त अनरागे। नदी भनत प्रिय वस्तु सुहाई। सोम
हि देहु भक्त मनभाई। कवन देहुं तोहि भक्तउ
चारा। लेहु एक प्रिय पुत्र हमारा। अस कहि दी
न भक्त सुततासा। चली लेत मन वांछित आसा
नवविदगाध नरनायक रानी। तौकर न्त्य गीत
रुचिमानी। बोलि तासु जव न्त्य करावा। देखि
सु ललित बाल मनभावा। हरषत पुत्र भावजि
य आनी। बोली वदन वचन असरानी। दोहा॥

इह कहिनें तव लीन नहि वाल ललिन सुङगात।
गहि देखत पिय लागत अति हननसनेह जिमिमा
न।४। टीका। तब सोमीन हन करके कहिने लगा
किहे भाई इहनेंने क्या कथन किया है धनथाम
स्त्री पुत्र मेरा जो है सोतो सब नेरा ही है मीनतेंसे
कोचको त्यागकर इस धनके भरे हुये पात्र को
ले ओर घर विखे आनंद पूर्वक स्वार्थ मे लगा
ऐसे सजन सनेही का वचन सुनकर विठल

जीने सनमानसे आयकर तिसधनके भरेहुये
पात्रकोखोला नवतिसके बीच अनंत धनकेस
हित एक भगवान की मनोहर मूरती देखपडी
सोभक्त प्रधानने यतनसे बडा सुंदर भवन ब
नवायकर तिस मूरती को विधिवत भक्ती प्री
तीसें तहां स्थापित करदिया फिर अतिथी संत
भक्तों और निरधन दीनजनोंको देखकर वे अ
तिधन जोथा सोयथायोग प्रीती सनमानसें बां

रनेलगा तवतो भक्त प्रवीन वडादाता उपकारी स
वजगतमै प्रसिद्धहोयगया इसप्रकार तिनके प्र
ताप और महिमावडाई को देखकर वांधव भाईवं
द जो थे सो हृदयसे अंतरक और द्वेषकोछोडक
र सव आयमिले और नाना प्रकारका आदिर स
तकार करनेलगे तव विट्ठलजीका एकवडासुंद
र रंगीलाल नामकरके पुत्र होताभया सो कैसे
सो वडभागी कि नृत्य गायन मे परम प्रवीन

श्री
भ.
१८

18

और कृष्णभगवानके चरनोकी प्रीतीभक्ती वाला
थ्या जब कुछ्छक काल वतीत होयगया तबनट्रा
एक संगीतके जाननेवाली परम चतरवेस्याजो
थी सो आयगई विठ्ठलजीने आनंद पूर्वक भगवा
नके भवनमे वडीभक्ती सनमानसे तिसका न्रत
करवाया तव तिसकेहावभाव और रसके सहित
वडामधुर गायन स्रनकरके सवलोग प्रेमकेवश
भयेहूये साधसाधूशब्दको उचारन कर्तेभये जवभक्तप्रणतू
१८

प्रसन्नभये हूये तिसको धनवस्त्र इत्यादि देनेलगे

व तबनटी जो वेस्या है सोकहनेलगी कि महाराज मै

सो वस्त्र लेऊंगी कि जो आपको व्रतसे करके प्या

री हो भक्तकहनेलगे कि नटी मै तेरेको कोनसी

सी प्यारी वस्तु देऊं अब प्यारा तो मेरा एक पुत्र ही

है सोई तुम लेलेवो ऐसे कथन कर कर रंगीला

ल अपना प्यारा पुत्र जो था सो तिस वेस्याको देदि

या तबवे आपने मन वांछित फलको पायकर

ओर रंगीलाल कोलेकर प्रणाम करके चलपड़ी कहां

राजाकी परमचतुर रानीजोथी सोनटीके नृत्य गाय

नकी शोभासुनकर ओर बड़ीरुचीसे बुलायकर ति

सका नृत्यगायन जोहै सोकरावतीभई तोजब रंगी

लाल मनोहर बालकको तिसकेसाथदेखा तबहृ

दयमें पुत्रभाव रखकर मोहितभई हुई कहनेलगी

किहे नटी सत्यकहो इहकोमल अंगोंवालादिव्यस

रूपवाला तैने कहांसे पायाहै मेरेको देखकरके इह

पुत्रके समान अत्यंत प्यारा लागा है। ४। चौपाई। भ
गवान भवन न्तप कल गाना। रही करत वेस्रासन
माना। चतुर विचारि मनोरथरानी। बोली वदन
मधुर मृदुबानी। तुमहिं देउं महि हिव सुतनेहू।
असकहि नरी निपुण गृहगेहू। सिसुहिं वदन
अस वचन उचारी। करहु न्तत्य सुत भवन मुरा
री। लागेण करन न्तत्य कलसोई। नव प्रसन्न मा
नस नटिहोई। सिसुहिं लेत निज अंक प्रवीना।

४१ भं. २.

विस्वनाथ कर सनमुख कीना। मह्रिषी सन ग्रस वच न वखाना। इह ग्ररपण कीन्यो भगवाना। प्रभुतें लेहु मांगि न्रवरानी। ग्रस न्रव कीन कथन नरिवानी। न्रव प्रसन्न मन हरषत रानी। प्रभुतें लेन वाल ज वलागी। सफुट वचन न्रव रंगि ग्रलाया। करहु सपर्शी मोर जनिकाया। मै ग्रव भयो हुलस मन माना। ग्रसकहि वदन वचन सुखदाना। निरनत नरत वरुष नजिदीना। भयो सुभक जोति हरि

२०

लीना। अस माथुर हरि भक्त महाना। विठ्ठल नाम
सकल जगजाना। जहि संसर्ग वारवधुरानी। भई
विरक्त भक्ति रसखानी। दोहा। राटत आनन आ
घु रटि नट नागर भगवान। कटि वंधन भव भक्त
भटि भगवन भयो समान। ५। टीका। नव सो वेस्या
वडे प्रेम सनमानसे भगवान कृपानिधान के भव
नमे न्रत्यगायन जोकर रहीथी तिस प्रवीनने ए
णीके मनोरथको जानकर वडी मधुर वाणीसे

८१
भ०
२१

जगाय कर कहा किहे रानी मैइह पुत्रनेरेको देती
हूं ऐसे कथन कर कर गुण प्रवीन नटीजोथी वा
लक को कहनेलगी किपुत्र हे भगवानके भवनमे
नृत्यगायनकर और कृपा निधानकोरिझा इस प्र
कार नटीकावचन मानकर रंगीलाल भवनमे भ
गवानके आगे नृत्य करनेलगे नववेस्या प्रसन्न
होय करके रंगीलालको गोदमे लेकर और जग
ननाथ भगवानके सनमुख कर कर कहनेलगी

किहेरानीजी इहवालकमैने भगवानके अरपण
करदिया अर्थात प्रभूको चढ़ायदियाहै अवतू इ
सको दीनवंधूतें मांगकरलेले ऐसे जव नदीने क
थनकिया तव आनंदमें मगनभई हूई रानीवा
लकको भगवानसे मांगतीभई रंगीलालजी सु
नकर वडी चटककी वाणीसें कहनेलगे कि देख
माई मेरे शरीरको हाथनही लगाना मै अवकल
भगवान के चरनोका दास होय गयाहूं अवतमा

ग्रं॰
भ॰
२२

ता किसीका मेरे पर अधिकार नहीं रहा है ऐसे कथ
न करकर रंगीलालजी भगवानके आगे प्रेममें मग
न होयकर नृत्य करने लगपडे तब सबके देखते
नृत्य करते करते ही शरीरको त्यागकर भगवान
की ज्योती में जाय लीन हुये इसप्रकार इह मथुरा
वासी विठ्ठलजी सबलोगों मे बडे प्रधानभक्त उजा
गर होतेभये कि जिनकी संगतीके प्रसादसे व
वेस्या और राणी विरक्त होय कर भक्तीके सुख

22

किया तद्यपि सोनहीं रहतेभये आनंदसे वृंदा
वनमै आयकर और कहीं सुंदर अस्थान देख
कर गिरधर भगवानके चरन कमलोंको ह्रदय
रखेहूये तहां निवास करनेलगे एकदिन भ
गवान के भवनमै बडे अद्भुत रसके सहित
रास लीलाजो होनेलगी जोभक्तजनों के म
नको लूटलेनेवाली श्रीराधकेजीके चरन क
मलकी सुंदर किंकणीका धागाजोथा सो।

८० भ० ३

हूटगया इस प्रकारनको देखकर हर व्यासजी नर
न भक्तिप्रीतीसें अपना यज्ञोपवीत अर्थात जनेऊ
उतारकर तिसकेसाथ हाथकी चपलतासे ति
सकिंकणीके टूटेहूये सूत्रको तैसेंही यथावत
गंठन करदिया और प्रसन्नहोयकर कहनेल
गे किमैने यज्ञोपवीत बहुत दिनोंका धारनकि
या हूआथा सो आजइहू जगतमें सफल होय
गयाहै ऐसे कथन कर कर भक्त प्रवीन और

३

हूसगानया यज्ञोपवीत धारन करलेते भये ग्रोर
नवलोगा देखने लगे तो क्या देखते हैं कि व्यासजी
के कांधेपर भगवान कृपानिधान कृस्नपरमात
मा जो हैं सो विराजमान भये हूये हैं देखकरके स
व अचरजको प्रापत होयगये किरहू कैसा चमत
कार है ।। १ ।। चौपाई । भक्ति प्रभाव अनंत अपारा ।
नवलोगन निजहृदय विचारा । नानावदन प्रसं
सनलागे । वासर एकभक्त बडभागे । भक्तिप्रीति

९८
भ०
४

मानस सरसाई । कृपानकेत हेत मन भाई । निरम
त पीत मवर मनहाह । वेश्न स्वर्णसूत्र करवाह
मौलि हृसम मूरति अनुरागे । भक्तस्पष्ट पहिराव
न लागे । विसकन पेव कसँ जब होई । विकल सी
स थिर रहन न सोई । बार बार बांधन हरषाई । धु
वन होत प्रभु पाग सहाई । नव अति प्रेम कोप र
सपागे । वेश्न ललित धरत प्रभु आगे । आतु क
रन निज लेहु सवारी । अस कहि आय वहिर

क
४

व्रतधारी। तोलोग्रान देख कर काहू। ग्रावाभक्त
निरत उतसाहू। समरि कोपनिज करिविसका
रा। तासहलेन हरि भवन सिधारा। देखि ललि
त ग्रदभुत मनहारी। सतीसीसवर पागसवारी
ग्रासूपात हरष हगछाये। गद गद बचन भन
न समकाये। मोतें ग्रस भावन प्रियजीकी। कव
वनि परत नाथछविनीकी। तवहू देत वांधन
प्रभनाहीं। जानि परो मानस जनकाहीं। ग्रान

९०
भ०
१

भक्त प्रेम सुनत प्रसंगा। पुलकगात मनमोद उमंगा। दोहा। साधु साधु कहि वदन निज हरख वदन सिरनाय। रतन व्यास गुण गण विमल वरणे सदन निजधाय।२। टीका। तब लोगोंने हृदयमे नाना किरह भक्तीका अनें प्रभाव और महिमाहै ऐसे विचार कर सबमे नानाप्रकार प्रसन्नी और बडाई जोहै सो गायन करनेलगे तब एक दिन भक्त वडभागी हरव्यासजी भक्ती प्रेममे

त

५

मगनभयेहुये भगवान कृपानिधानके नामि
ने कंचिनतार और सबके मेलसे मनोहरव
र्णसहित पीत वरणकी पागवनवायकर और
भक्तीभावसैं लायकर अपने हाथसे कृष्ण
परमात्मा की मूरती केसीसपर बांधनेलगे
नवदीन बंधुकी मूरतीकासी सचिकना माथा
ज्योंही रैवं चरैवं च कर बांधते त्योंही पेच खि
सकतेजाते फिर बार बार बांधते परंतु पाग

९८ भ॰ ९

6

भगवानके सीसपर थिर नहीं होनी भई अंतको
हारकर अमरसके कौसभीगेहुये भक्त तिस
पागको प्रभूके आगे धरकर कहनेलगे कि इस
को आपही अपने हाथसें सवारलेवो ऐसे क
थनकरकर भक्त व्रतधारी भगवानके बाहरचले
आये इतनेमे कोई औरदेसके रहनेवाला भगवानका
भक्त बडे उत्साहसें तहां आय प्राप्तभया तब भक्तहर
आसनी अपनेकोपको समरकर और अपने आपका वडु
नत्रिसकार ।

प

स

भवनके

६

कर कर तिस भक्त को साथ लिये हूये भगवान
के भवन मैं चले गये तहां जाय कर का अद्भुत
चमतकार देखैं हैं कि वे सुंदर पाग भगवान की
मूरती के सपर वडी शोभा से सजी हूई है तव
तो भक्त प्रधान के नेत्रों से प्रेम के आंसू पात जो
हैं सो चल पडे और वाणी भी गदगद अटपटी
सी होय गई मुख से कोई वचन निकलता को
ई नहीं निकलता है तव मुसक्याय कर कहने

तेसी

९० भ.

लगे किनाथ मेरेसे ऐसी मनभावन छुवी कब व
नमकती थी अव जान लिया कि इसीनें प्रभूमेरे
को बांधने नहीं देते थे इस अदभुत प्रसंगको सु
नकर वे हसरा भक्त जोथा सो आनंदसे प्रफुल्ल
त होयकर साधु साधु उचारकर भगवानके आ
गे दंडप्रणाम करके व्यासजीके गुणगण गाव
ताहुआ अपने घरको चलागया। २। चौपाई। तद
नंतर इक दिवस प्रवीना। साधुसमाज प्रेममन

८

लीना। लगेपाकरन भोजन निजगेहा। लगीपरो
सन भामनिनेहा। इगाथविभक्त करत सबका
हीं। पतिकहं प्रीति भक्ति मनमाहीं। इगाथमंड
दीन्हो हरखाई। सोग्रस देखि ब्यासउ रिताई। सा
रभूत केवल महिदीना। हेषध्यान संतन सन
कीना। भनेसि परम रोख जनवानी। नवम हि
प्रथम प्रीति पतिजानी। दीन सार सठ पंकति
भेदा। सोमै सग्यो संत मख वेदा। प्रवलपाप इह

९८ भं० ८

बैरवढाई। अब न मंद मोहि होहिं भलाई। इहतोबि

दत सकल जगनाना। एकल बैठिपाक जहिपा

ना। अहविभक्त अवसर जहिकीना। पंकति भे

दनरक जगलीना। अब नहिं अधम निरन उ

रनाई। नाहिन उचित संत सिवकाई। मोरेहग

न ओट हत भागी। दुरमति होहु बेग गृहत्यागी

पतिविसकार लेन ततकाला। परिहरि सदन ग

वनि तवबाला। सामाजक जनभवन नवीना। बे

तीजाय सोच मनलीना। निस अपराध जानिनिज
कांही। बार अहार कीन कछुनाहीं। असप्रकार
जगदिवस बिहायो। चिंतिये दिवस स्वपन निसि
आयो। कमल नयन वैसव इकबाहू। भाषन व
दन वचन मनहाहू। निय अपराध नहिंन कछु
कीना। उगायसार तोहि कपट बहीना। दीन्योसब
लभाव निजजीके। अबतम जानि बिप्र बरनीके
करिप्रसन्न संजन मनकारा। बोलिलेहु निजल

लित अगारा। जो न करहु तौ कर मन कारो। तौनि
श्चय अस वचन हमारो। अव तैं सदन तोर सनमा
ना। करहिं न संत अन्न जल पाना। दोहा। देखि अ
स वर स्वपन अस निज पतनी पें आय। भाष्यो तो
हि न दोष कछु प्रिय तव सील सभाय। जान हुज
कछु ना करी परीछक महि आन। अवचल हौ निज
सदन सभ सेवहु संत सुजान। होहिं अनिछुत
पाप जे उचित निवारण तास। सुनि पति मन खेतिय

वचन अस हरषि चली निजवास ।२। टीका। तिसतें
उपरांत एकदिन व्यासजी अपने घरमैं संत समाज
के सहित बैठकर भोजन पावनेलगे तव तिनकी
स्त्रीजोथी सो परोसने लगी और जब संतोको बांट
नेलगी तबहूधकी मलाई जोथी सोवउ हरष और
प्रीतीभक्तीसें अपनेंही पतीकोदेतीभई ऐसेतिस
के हेतभावको देखकर कि हथकामार मेरेकोदि
या और संतोंकेसाथ द्वेषकिया व्यासजी परमको

ऐसें कहनेलगे कि अरे अधम भामनी तैंने पतीकी
प्रीती मानकर और पंक्तीसें भेदकरकर इहहृथकामा
रभून मलाई जोहै सो मेरेकोदेदिया मंद मैंने वेद
शास्त्र और संतोंके मुखसें सुनाहुआहै कि इसतैंरे
कर्मका रौरव नरकके देनेवाला वडाभारीपापहै
अब जबतेरा कदाचित भलानहीं होगा इहतोसर्व
जगतमेंप्रसिद्धहै किजिसपुरष अथवा स्त्रीने अकेलेवैठ
कर भोजनपाया औरपरोसनेवांटनेके समय जिसनेपंक्ती
से भेद ।

९८
भ०
९

10

९

किया तिसको अवश्य नरकको प्रापन होनाहै ।
ताते अधम इरवुद्धी अवतेरेको संतसिवकाई मोहै
सो योग्य नहीहै अभागनमेरी आखोंके परोषकहीं
घरको त्यागकर चलीजा इस प्रकार पतीकी वि
सकार कीहूई सोभामनी घरको त्यागकर परम
चिंता और सोचकेवश कहीं पडोसीके घरमै जा
यवैठी तब अपनेको तिस अपराध जानकर
तिसने अन्नजल कुछ खानपान नहीकिया

त

ऐसे जब दो दिन व तीन होय गये तब तीसरे दिन
रात्रीको सपनेमे एकबड़ा सुंदर कमलोंके समा
न नेत्रोंकी शोभावाला वैष्णव आयकर मनोह
र वाणीसे कहनेलगा कि हे भक्त तैने कृष्णआ
राधन नही किया इसकी मलाई जो है सो तेरेको
रूपे स्वभाव से निसकपट होयकर देईथी आ
वनमको उचित है कि तिसको प्रसन्न करके
आदर सतकारसे बुलाय कर अपने घरमे ले

आवो और जो कदाचित तुम तिसको मन मानस

वेक प्रीतीभाव से नहीं ले आवोगे तो निश्चय कर

के मेरा ईश्वर सत्य वचन है कि अब ने आगे आदर स

न्मान से तुमारे घर मे कोई साधसंत अन्नजल

खानपान नहीं करेगा ऐसे स्वपन को देखकर

व्यासजी तुरत अपनी स्त्री के पास चले गये और

जाते ही तिसको कहने लगे कि प्यारीतूं अदोष

और सरलहृथे स्वभाव वाली हैं तेरे को कोई दोष

८० भ. १२

नहीं है मैने अब भली प्रकार जान लिया है कि तैने
कुछ जान बूझकर नहीं किया था तांते अब लोभ
को त्यागकर अपने घर को चल और संतो की से
वा भक्ती मे सावधान हो अनिछत पाप जो होता
है तिसका निवारण ही उचित होता है इस प्रका
र पती का वचन सुनकर वे सुशीले आनंद से
अपने घर को चली आई। चौपाई। हृदय प्रसन्न पू
र्ण वत लागी। सेवन अतिथि संत वउ भागी। नव

१३

12

इकदिवस काल मध्याना । तंकरस्मदस संत भगवा
ना । दत्थाविथन जथमिलिश्राये । ब्यासदेखिवमा
नस हरषाये । तासर जनि निज सदन रचावा । पा
निगृहण निजसता सहावा । जेपकवान वरातन
हेत । रहे सकल निरमाणनकेत । तेसंतन कंह
दीनत्रिमाई । नववरान उलहा जतआई । संतनदे
खि परमउरवमाना । श्रावकस वनहिं देवपकवा
ना । जानि संत जन चिंतनसोई । बोल्योव्यास ह

रषजतहोई। महाराज अव सोचनकीजै। जोउहहै
ष मेरु सदन कछदीजै। कुसलहपाल पैज रखवारे
असप्रकार जव व्यासउचारे। नवपकवान वरान
नकाहीं। लागेदेन सकल जहांताहीं। कुसलप्रमा
ह पारनहिंपायो। सादिर सकल वरान जिमायो।
दोहा। असअदभुत हगदेखि निज सकललोग
विसमाय। साधु साधु अस रटत मख साधु सदन
निजधाय। ४। टीका। तव प्रसन्न होय कर।

सो वह भागन सर्वके समान अतिथी साधसंतोंकी से
वा भक्तीनाहै सो करने लगी एक समय सूरजके
मध्यान कालमै तिसके घर विषे क्षुधाकरके आ
कुल संतोंकी जमात आयजाती भई तब देखकके
आसजी हृदयमै बडे प्रसन्न हूये और तिस रात्री
को तिनके घरमै कन्याका विवाह था सो जो पक
वान बरातियों के लिये रखाये हूये थे सो आनंदपू
र्वक बडे सनमानसे संतोंको जिमायदिये इतने

८०
भ॰
॥

मै उलहाके सहित वरातभी आय प्रापतभई तव तिसको देखकरके संतोंने हृदयमैं वडाकलेश माना किहे भगवान अव इनकेलिये पकवान कहांसे और कैसे वनेंगे इसप्रकार संतोंको चिं तासोचके वस देखकर आनंदसे व्यासभक्त कहनेलगे किहे संत महंतो अव सोचका समय नहीहै इस घरमें जोकुछ पीछे वचाहूआहै इनको दीजिये भगवान भक्त सुखदान हमारी पैजराख

15

॥

नेवालेहैं ऐसेजब व्यासजीने कथनकिया तबति
नसंतोके सहित सबलोग मिलकर पकवानजो
थे सोजहांतहां बरातीजनो को देनेलगे तहांकु
ळभगवानकी कृपासें भोजन पकवानका कुछ
पारनहीं पायागया जहांलगबराती जनथेसो
आदिरसनमानसे सब जिमायदिये इसअदभुत
को देखकर सब लोग अचरजको प्रापत होय
गये और मुखसे साधुसाधु शबद को उच्चारण

१० भ. १९

करतेभये।और वेसंतभी हरव्यासजीकी भक्तीका
प्रभाव देखकर धन्य धन्य कहतेहूये तिनका
भजन गावते अपनेधामको चलेगये।४।चौपा
ई।समय एक तब आसनकेरा।आवा आन संत
सबदेरा।सो अनभिप लोग विवहारा।संतन
कुसलभक्ति उरधारा।द्वैदिन रह्यो व्यासवर भवना
तीसर दिवस कीन जब गवना।राखो व्यास यतन
न मनमाना।आजनजा हु संत भगवाना ॥

असजव भानु लषन निसि काई। नव करिय तन नखा
स हरषाई। शालिग्राम सिला नहि फोली। लीन
सपदि कलसं पुट खोली। प्रति विचित्र प्रभु मू
रति जोई। कीनी लषन ध्यान वर सोई। खग इक
थ सोतास मध्याना। रविदीन संपुट सन माना
उदय ग्रहण नव संत सुभागा। प्रमुदित चलन
पंथ निज लागा। ध्यान दीन भोजन कछु आनी
भनी वदन सरइ मंजुल वासी। औरहिं अस कथ

८१ भ० ९

17

न ललित सुहाना। चाहहु जो जन परिमज्जना। त
हं सनान करत मन भावा। लेहु भक्ष वर भोजन
पावा। संत सजन मानस दूर खोई। चले करत
बहु विनय बडाई। तहाँ जाय संकेत कबासा। देखो
जाय दृग न अभिरामा। करि सनान पावन तन हो
ई। सुंदर नवल कमल दल खोई। राखि पाक नैवे
द सुहाव नाँ। नव खोलो मेंपुट मन माना। उओ
विहेग देखि विसमाना। जानो मदन बाम प्रभु था

लागो जब भगवन कहं
लावन।

१८

ये। ताकर भक्ति बिलोकि लुभाये। खानपान न
नियावत आवा। तासु दीन सब मरम सुनावा।
काम सुनत मानस हुलसानो। निजकृत कपट
देखि मसकानो। जावहु भवे भवन हरिभाई
देखिलेहु निज मूरति पाई। तेहतिभवन देवज
व आयो। सोउ ललित निज मूरति पायो। भाषत
नमहुं देव भगवाना। ईहां निवास रुचिर रुचि
माना। बोले काम वदन नवबानी। अवतुम ई

हां बसहु सुखमानी। इहं भगवान भक्त मनभा
ये। चाहत ईहां बसन सुखदाये। तांते बसहु स
दन ममम्मांही। नवजावहु जव भगवन जाहीं
साधुसनत अस वचन वयासा। तहांकीन नि
ज रुचिर निवासा। [margin insertion: एक दिवस तहि सदन सुहावा।] श्रीदाकरन संत इक आवा।
दोहा। सबकहं भाषत वचन अस व्यासहिं देहु
सुनाय। मैं आगानव सदनरति अति हर्षत अ
कुलाय।५। टीका। नवएक समय व्यासजीके घ

18

रमै कृष्णभगवानकी भक्तीवाला ओर लोक विव
हारमोहे तिसकात्यागी एक ओर संतआय प्रा
पतभया सोतहां व्यासजीके घरमै दोदिन निवा
स करके तीसरेदिन जब चलनेलगा तब भक्त
प्रधानने यतनकरके बडेआदर सनमानसेरा
खलिया किहे संतमहानमा आजकादिन कृ
पाकरके ईहांही वासकरिये तोजब सुरज लु
पत होयगया ओर रात्रीपडगई तबव्यासजीने

९८
भं
११

का कौतक किया कि तिस संतकी झोलीकेवीच
शालिग्राम भगवान की शिला संपुटमे राखीहुईथी
सो यतनसे निकालकर लेलेतेभये और तिस संपु
टकेवीच एक पंनीवंद करके फिर झोलीको तैसे
ही संभालकर राखदेतेभये जब भोजनकाल होते
वे संतचलनेलगा तब व्यासजीने तिसको कुछ भो
जन लपायदिया और मधुर वाणीसे कहा कि इहां
से एकजोजन अर्थात चारकोस पर एक वडासंत

१८

अस्थान है तहां निरमल जल और छाया भी है हे
संत तुम नहां सौच सनान करके प्रीती से बैठक
र भोजन पायलेना ऐसे भक्तस्रेष्ठका वचन सु
नकर सो साधु बारबार विनय प्रणाम करके
चलपड़ा और जाताजाता तिसी अस्थान परजा
य प्रापत भया तहां प्रेम प्रीती से सनान करकर
और पवित्र होयकर एक सुंदर कमलका पत्र
लेलिया तिसपर वे भोजन राखकर भगवान

८०
भ॰
२॰

कृपानिधानको नैवेद्य लगावनेलगा तोजव स
न्मान पूर्वक तिस संपुटको खोला तव तिसके
वीचवे पंछीजो वंद कियाहूआथा सोनिकरनहीं उड़
करके चलाजाताभया इस अद्भुतको देखकर
साधुवडे अचरजको प्रापतहोयगया और हृद
यमे जानलिया कि व्यासजीकी भक्तीके वशभ
येहूये भगवान तिनके घरमेंही चलेगयेहैं तव
खानपान सव त्यागकर धावताहूआ तिनकेपास

२॰

चलाआया औरआयकर सवहतांत सुनायदेता
भया व्यासजी सुनकर हरषमे अपना कपट
विचार करके सबका कहनेलगे किभाई भग
वानके भवनमे चलेजावो तहां पहिचानकर
जौनसी अपनीमूरतीहै सो लेलेवो ऐसेसुन
कर वेसाथ तुरत भगवानके भवनमे चला
आया तहां अपनी निसमूरतीको पहिचानक
र औरलेकर नंम्र वाणीसे कहनेलगा कि

९८
भ·
२२

मैने हृदयमै जान लिया प्रभू आपको ईहांहीं नि
वास करनेकी रुची होयगई है तब व्यासजी कहने
लगे कि हे संतमहात्मा अबतम ईहांही निवासक
रो इहतमारे भगवान कृपानिधान जो हैं सो भी ईहां
ही स्थापित होनेकी रुची राखते हैं अर्थात ईहांही
वास करना चहते हैं तातें तम ईहां मेरे घरमें होवसो
जब भगवान भक्त सावदान जावेंगे तब जावो इस प्रकार
व्यासजीका कथन सुनकर सो साधु भगवानकी रुची जानकर

2)

आनंद पूर्वक तहांही निवासकरताभया तवएक
दिन व्यासजीके घरमे एककोई और साधनिनकी
परीक्षाकरनेके लिये चलाआया और आवतेही स
वको कहने लगा किभाई तुमजाय करके व्यास
जीको सुनायदेवो जोमै अतिथी साधू क्षुधाकर
के व्याकुलभयाहूआ तेरेद्वारेपर आयाहूं ।५। चौ
पाई । जोमहि करहिं तपत जनव्यासू । कालकले
सनआपहिंनासू । असजब सुन्यो व्यास ततकाला

श्री०
भ०
२२

गयो लेन निज भवन रसाला। दीन्हो सहि विभोजन सु
खदाना। अतिथी कछुक पाय अकुलाना। उठ्यो वद
न असमगिराउचारी। उपज्यो उदर सूल महि भारी।
नव उछिष्ट भोजन जेतासा। लीन उठाय करन निज
ग्रासा। सो विलोकि मानस विसमाना। सादर गहि तन
पानि निज पाना। बोल्यो हरखि वचन अभिरामा। र
हीन मोहि पाक कछु कामा। सानि संतन मख सज
स सुहावा। भक्त करन श्रीनातब आवा। भयो आज

मोरे सब भाना। भक्त न तोहि सपन अभिमाना। उद
रसल मिथ्या मिस कीना। भक्ति प्रभाव रुचिर न
वीना। अस प्रकार सब संत उवासो। करि अपणा
म निज भवन सिधासो। इत निज व्यास हृद वप्रवी
नो। लीन बुलाय पुत्रवर नीनो। तीन भाग निज सं
पति सारी। कीनी व्यास भक्त व्रत धारी। एक वोर हृ
रि मूरति चारू। एक वोर भूषण धन सारू। संजम
ज इक वोर सुहाये। तावे भवन भक्त जउराये। ते

भ० मा०
२३

सबकरि प्रणाम सनतीन्यो। निजहरि भक्तिभाव जन
तलीन्यो। दोहा। ग्रास इह भक्त थन अजग विदत ब्या
महरनाम। सेवन संतन सजसजहि रह्यो शरि सब
धाम। भक्तसिरोमणि अंनतनिज नजन सगाम कल
काय। मनिसर डुरलभ ललिन गति लीन यतन
विनुपाय। ६। टीका। जोमेरेको ग्रास भक्त त्रिपतक
रेंगे तो भगवानकी कृपासें तिनको कालका कले
श जोहै सो कदाचित नहीं ग्रावेगा ग्रैसेजव ग्रास

२३

जीने श्रवण किया तो नतकाल आयकर तिस साधु
को सनमानसें घरमें लेगये और भक्ती प्रीतीसे ब
हुत सुखदायक पवित्र भोजन जो है सो आगे राखदि
या तब वे अतिथी भोजन पावने लगा अबी दो तीन
ग्रासही किये थे कि व्याकुल होयकर उठ खड़ा हु
आ और कहने लगा कि मेरे पेटमें बड़ा भारी सू
ल उतपन्न भया है तब व्यासजीने वे तिसका जूठा
भोजन तुरत सनमान पूर्वक अपने हाथसें उ

भ॰ २४

ठायलिया ऐसे तिनकी संतभक्तीको देखकर सो साधू अचरज मानकरके धन्य धन्य कहताहू आ पने हाथसे तिनकाहाथ पकडकरके तिसभोज नको खवायदेताभया फिरप्रसन्न होयकर मधु रवाणीसे कहनेलगा किहेभक्तप्रधान मेरेको कुछ भोजनकी इछानहींथी मैंतो संतोंके मुखसे तुमारा भजनसखोर बडाई सुनकर केवलप्रीक्षाक रनेकेलिये आयाथा सो मैने आज आपने नेत्रोंसे

प्रकट देख लिया है भक्तजन को तो स्वपने में भी अ
भिमान नहीं है मैने इह मिथ्या ही पेट के सूल का
वहाना करकर तुमारी भक्ती के प्रभाव को देख
लिया है इस प्रकार कथन करकर वसंत ने उधा
से वार वार प्रणाम करके मुख से नाना गुणगण
ओर भजन गावता हूं आ अपने आ श्रम को चल गया
स
तव ईहां व्यास जीने अपने शरीर को हड़ जानकर
अपने शरीर को हड़ जानकर अपने तीनो छेत्रों

ती

९८
भ०
२५

कोबुलायलिया और घरकी संपतीकें नहीं भागकर
दिये सो कैसेकिये कि एक भागमे भगवानकी सुंदर
मूर्ती दूसरे भागमे संपू[illegible] धन भूषण और तीसरे
भागमे ठाकरोंके संज मंज इत्यादि राखदिये इसप्र
कार भक्तप्रधानने सर्वसंपतीको बांटदिया तबजि
स पुत्रको जैसी रुची होतीभई तिसने भक्तीभाव
से प्रणामकरके सोई भाग लेलिया ऐसे इहजगतमे
धनमानभक्त हरव्यासजी प्रसिद्ध होते भये ।

25

किजिनकी संत सिवकाई का सजसजोहै सो अवल
गभीजहां तहां परिपूर्णहोय रहाहै और भक्त प्र
धान संसारमें जबलग जीवतेरहे तबलग सब
परमात्माके भजन स्मरण और कीर्तन गाय
नेमेंही लीनरहे फिर अंतको सहजेंही शरी
रको त्यागकर मुनीदेवताउंको दुर्लभगती
जोहै तिसको यत्नके बिनाहीं प्रापत करले
तेभये ।६। इतिश्री भक्तविनोद ग्रंथे भगव

मिहांसिंहकृत

१८ भ. २६

इमति महानमे भाषाटीकायां हर व्यास चरितं वरणनं नाम सरगः ॥

२६

अथचंद्रहास चरितं । दोहा । नाथ सीस गरुवर

चरन नेमरत नाभादास । चंद्रहास अविचरित

कल लागे करन प्रकास । प्रमाणिकाछंद ।

सुनो कृपाल पावनी । कथा वचित्र भावनी ।

प्रमोद बोध दायनी । सची मनस्स छायनी ।

कलेस शोक हारनी । भवो पयोधि तारनी ।

सुप्रेम हेम दातनी । प्रचंड पाप पातनी । सो

रठा । सुनहिं श्रवण नरजेहु । इहिकहुं पाव

३६ न प्रीतिजत । हरिपद नलिन सनेहू । उपजहिं

भ० अवरिल भक्ति उर ।१। टीका । अब नाभादास

१ जी गुरू महाराज के चरनो पर सीस नायकर

और संपूर्ण संत जनोको वंदना कर कर चेद

हासकी मनोहर गाथाजोहै सो गायन करने

मे लं कहतेहैं किहे संतो इह गाथा पवित्र पा

वनी और वचित्र मनको भावनीहै फिर कै

सीहै कि वडी विचार प्रेम आनंद और स्तनम

कल्यान के देनेवाली संसार के भय और पापो
का नाश करनेवाली है जो इस रमणीक गा
था को श्रद्धा और प्रीतीसे श्रवण करेंगे ति
नकी अवश्य भगवान के चरन कमलों मे
अविरल भक्ती होयजावेगी कि जिसमे कोई
विरल नहींहै ।।१।। चौपाई । भयो एक भूरव व
ल शाला । धूष्ट दमन जग नाम भुआला । वि
श्व समति गुण संपति नागर । सूर वीर सब

३६ भ० २

लोक उजागर। नहिं छितपाल राजसामीपा। र
हावसन इक अलप महीपा। उपजा पुत्र नाम
महिपाला। चंद्रहास जहिनाम रसाला। जवते
भयो वरष जगतीना। जनक नास रिपु अन
हतकीना। संपति राज धाम धन धरनी। लीन
सि छीन रिपुन रिपु करनी। चंद्रहासकर मा
तसयानी। सविपन नाम मरनक नपरानी।
उर विचारि रदा निज प्राना। पुत्र सहित इत

२

किये पयाना। धूहु उमन नृप राज मझारा।
आई नगर धाम धन सारा। तहाँ भूपकर स
चिव अवासा। पुत्र सहितनहि कीन निवासा। त
तामस विद्या सकल निज वरणा। सचिवहिं
सनत लागि अति करणा। करि करि ताह
विविध सतकारा। दीन भवन निज वास न
यारा। असन वसन सेवन सब कीना। आर
न जाति भलहिं सचिलीना। यद्यपि ताह।

११
भ
२

रुचिर आगारा। दीन प्रवीन सचिव सुखभारा
सोरठा। तदपि मरण वियोग। करी चिंतन
निज प्राणपती। अतिचिंता दुखरोग। मा
नहिं जीय तीय पतिव्रता।२। टीका। पूर्व
काल विषे जगतमै एकबल पराक्रम का।
धाम गुण प्रताप और सुख संपती की निधी
महं सूरवीर एषडुमन नाम करके राजाव
रा उजागर होताभया तिस के राजके सामी

२

पहीं एकसुविव्रत नाम करके छोटासा गा
ना निवास करताथा तिसके घरमै एक व
उ सुंदर रूपकी नथी वालक उतपन्न हो
ताभया कि जिसका नाम चंद्र हासराखा
गया सो जब पांच वरषका होय गया त
व शत्रुवोंने प्रवल होय करके तिसके पि
ताको रणमै वध कर दिया ~~अर्थात मार~~
~~दिया~~ अर्थात मारदिया ओर राज काज ।

३६
भ०
४

धनधाम इत्यादि विभूती जोथी सो सब छीन
लेई तब चंद्रहास की वडी चतर माता अप
ने प्राणें की रक्षा विचार कर और सब धन
धाम को त्यागकर पुत्र को साथ लियेहूये
धृष्ट दुमन राजाके राजविखे चली आवतीभ
ई तहां तिस राजाका मंत्री जोथा तिसके घ
रमे आयकर अपनी विथा और कलेश स
व सुनाय देतीभई तब मंत्री सुणकरके ब

४

मंत्र दयाके वशहोय गया और अपने घरके
बीच तिसके निवास करने को एक बड़ा संुद
र न्यारांही घर देदिया खानपान आदिक वि
वस्थाभी सबबांधदेई तिस को विपताके व
श दुखी जानकर भलीप्रकार सेवा सन्मा
न करताभया यद्यपि मंत्रीने तिस राज पत
नीको सर्व प्रकार करके सुख और आनंद
दिया तद्यपि हृदय में पतीका मरण वियो

सुमरकरके परम चिंता ग्रौर कलेशको ग्राप न होतीथी। २। चौपाई। इस प्रकार निजपुत्र समेता। करहिं सउच जन वासन केता। र हा एक सन सचिव प्रवीना। नहिमन चंद्रहा स मनलीना। खेलत रहहिं सदा सुख मानी प्रीत रीत नहि जाये बखानी। तब तोके खेल न दिन एका। मिलो ग्राय इक संत ववेका। शालिग्राम सुलप शिल पावन। ग्रति ववित्र

सुभग मनभावन। देत नाथ निज पंथसिधा
रा। केहि प्रकार सुजन सभ चारा। चंद्रहास
नव दृगनन देखी। शिला वचित्र दिव्य श्रव
शेखी। गयोमोद सुख हृदय श्रछाई। श्रना
यास मान हुं निधिपाई। नमस्कर श्रास नास
जीय जानी। गविस वदन प्रेम सुखमानी
भोजन समय वहिर सुख लाई। करि श्राचा
र विधि ज्ञन समदाई। पुनि नैवेद लाय स

हि
नमाना। रावि बांधि बसन परिधाना। करहिं
आय भोजन पुनि वाला। निम्बतात्ह ग्रास लिय
म रसाला। एक काल कीश सावरात्या। संज
न सचिव पुत्र मन माता। धृष्ट उमन नृप
सभा मझारा। आय सिंहन जग कीन जहा
रा। जहं वैठे साम हक चछिन। सुमति लि
धान वाम दिसि दछिन। प्रथमहिं नृपति
वोलि मंगवाये। निज निज इष्ट सहित सब

६६ भ ६
6

आये। देखो तिनहिं बाल बल धामा। रूप।
सत   चेड़ हास जहि नामा। बदन भूपमन
भाषन लागे। सकुच भीत मानस निजआगे
सोरठा। सुनहु येन उजपाल। इहबालक।
प्राक्रम नथी। जोकर भाल रसाल। लसहिं
राज स्वाव संपती।३। टीका। इस प्रकार अ
पने पुत्रके सहित सोच श्रोर संकोचके वश
भई हुई रानी तहो निवास करती भई तब

२८ भ

तिस मंत्रीका एक बडा सुंदर नवीन बालक
होथा तिसके साथ चंद्र हासकी बहुत प्रीती
होयगई दोनो परस्पर रात्रीदिन क्रीडा विलास
करते और खेलते रहतेथे एक दिन नरेश।
खेलते खेलते तिनके पास एक बडे महान
सा और ज्ञान ध्यानकी मूर्ती संत जोथे सो
आय गये और वे चंद्र हासको देखकर ब
डी प्री तीसे एक पवित्र छोटीसी शालिग्राम

की शिला देकर और पूजनका सब प्रकार क
हि कर आप अपने मारगको चले जाते भये
तव चंद्रहास तिस अद्भुत शिलाको देख क
र हृदय मे ऐसा सुख और आनंद मानताभ
या कि जो कथन नही कियाजाता मानो तिस
को विना श्रम और यतनके ही निधी प्रापत
होयगईहै तव चोरके भयसे तिस शिलाको
रातीदिन अपने मुख विखे ही राखने लगा

भोजनके समय मालिसे निकाल कर सनमान
से स्नान देता और भजन सेवन करता फि
र नैवेद लगाय करली सेहिं यतनसे बांधक
र मालिसे रखलेता और पीछे आप भोजन
पावताथा इस प्रकार जिसका इहनित्य नियम
था एक समय चंद्रहास और मंत्रीका पुत्र दो
नो खेलते खेलते राजा धृष्ट डुमन की सभा
के बीच आय करके प्रणाम करते भये ।

तब तहां राजाके आस पास दहने बायें ब
डे भारी विद्वान और पंडित जोतसी प्रथ
मही आय करके बैठ हुयेथे तिनोंने तिस
राजाके पुत्र चंद्र हासका बडे उदय भागों
वाला मस्तक देख करके और अभय हो
य करके धृष्ट उमन के आगे कथन कर
दिया कि हे गो ब्रह्मण की पालना करने
वाले राजन इस बालक मो देख पडताहै

१६
भ
५

सो एक महा तेजस्वी और वल पराक्रमकी
निधीहै इसके मस्तक मै राजसुख संपती
इत्यादिका चमत्कार देख पड़ताहै ।३। चौ
पाई। वीर प्रचंड धीर विज्ञाना। होहिं नरिंद
नोर जामाता। अस जब सामुद्रक जनभाषा
सुनत श्रवण महिपति मनराखा। तुली भ
यो सोचमन माहीं। प्रकट वदन कछु भा
षत नांही। तिनहिं जिमाय पाक विधि ना

ना। विदाकीन संजन सनमाना। आशु वच
न तिन हृदय विचारी। भयो शोकवस भूप
तिभारी। करि विचार नवछित पतहेरा। ह
नन योग्य इहि बालक केरा। अस जीय गु
नत भूप तन काला। लीन सिवोलि डूष्ट चं
डाला। जाय इकांत नास अस काहा। इह नवी
न बालक जोई राहा। करि आपन छल बल
चतराई। इहि कहं कहुं कानन लेजाई। तव

३८
भ
९०

चोउल करहु हनुमाना। मोरे निश्चय हेतू स
जाना। सोरठा। काहु अंग इकतेहु। लाय दि
खावहु मोहि तव। तव मिटि है संदेहु। को
जानै नहीं इह मर्म।४। टीका। फिरवे पंडि
त जन कि जो रेखा विचार मे प्रवीनथे कह
ते हैं कि हे राजन बहुबालक बडा प्रचंड
वीर और धीरजका धाम अवश्य करके ते
रा जो माता होवैगा इस प्रकार जब तिन।

९०

विद्वानोने कथन किया नव राजाने स्नन क
रके चित्तमें ही राखा और मौन होय रहा
प्रकट करके कुछ कहि नहीं सका तिनको
सनमान पूर्वक भोजन जिमाय कर विदा
य करदेता भया और आप तिनका कथन
हृदय मे स्मरण कर सोच करता करता इह
सिद्ध करता भया कि इस बालक का अव
वधकरना अर्थात मार देनाही योग्यहै औ

१६ से विचार करके चांडाल जो है तिनको बुलाय
भ लिया और गुपत कहिदिया कि तुम इस चं
॥ द्र हास नामा बालक को कहीं निरजन बन
विखे लेजायकर कि जहां कोई देखता नाहो
खड्गका घात देकर मारदेवो और मेरे दि
खावने के लिये तिसका कोई एक अंगकाट
करके लेआवो तोमै जानूंगा कि वे अवशपमा
रागयाहै और तुम जानो कि इह भेट और ॥

किसी हमरे को जान न्यापड़ै ।४। चौपाई।स
नि अस गुपत वचन नरराई। करि चोअ
ल कपट चतराई। सिखहिं लेत पथ विष्णु
न सिधारा। कहि सउ वचन अनेक प्रका
रा। जानहिं मर्म बाल कछु नाहीं। भक्ति
हेत ठाकर मन माहीं। राख ही प्रेम प्रीति
जन सजा। विधि वत करहिं भावनजि ह
जा। नाम पुनीत भक्ति वशनेहीं। भक्त ।

२६ भ० १३

पाल भगवन प्रभु जेही। सात्विक बुद्धि दीन चंदेलैं। मानस भयो नाम ततकालैं। कोमल परम लागि अति दाया। विमल विवेक ज्ञान उपजाया। अहो विपुल आश्चर्य गुसांई। इह बालक अनाथ कर न्यांई। निर आव लेव स्वामि पितहीना। रक्षा करहिं कवन इहिं दीना। जननी जासु बिरहे पति मारी। दुष्ट उमन नृप [illegible]

१३

सरन सिधारी। तासु सचिवगन करहिं नि
वासा। सब संपति गत हृदय निरासा। वि
नु भगवान आन नहिकाहीं। हृदय भरो
सतन कछु नाहीं। सोरठा। अस अनाथ
सि सदीन। तहि पर मानस भूपनिज। क
ठिन झलस वन कीन। दीन दसायस छ
य करन। ५। टीका। ऐसे राजा की आज्ञा
पायकर वांईल जो है सो अपनी चतुराई

क

९६ भ॰ १२

और कपटसे बडे कोमल वचनो की रच।
ना कर कर अकेलाही बालक को लेकरके
वणको चला जाता भया तव बालक जोहै
सो इस मर्मको और तिस चांडालके कप
ट को कुछ जानतानहीं केवल भक्ती के
नमित्त जो ठाकरेंको भावसे राखता और।
तिन श्रीजी मन कारसे भजन सेवन करता
था। तिस पवित्र भक्तीके प्रसादसे भक्त पा

ल भगवान तिस चांडाल को सात्विकी बु
द्धी देदेतेभये तबतही तिसका ह्रदय को
मल होयगया और ज्ञान विवेक दयात्मा
इह रोम रोम मे स्फुरित हो जातीभई आपहीं
कहने लगा कि अहो वडे अचरजका चमत
कारहै देखा इह अनाथ बालक कि जिस।
को कोई भी आश्रय नहीं है अब इस दीनकी
कौन रक्षा करै माता जिसकी पतीके वयो

गासे व्याकुल भई हुई सब साख और संप
ती को त्यागकर पुष्टद्युमन राजाकी श्रोर
शरणागत आय करके तिसके मंत्रीके घरमें
वास करतीहै और जिसको भगवान कृपा
निधानके विना और किसीकाभी भरोसान
हीं है तिसका इद्र १३ ऐसा अनाथ और
दीन बालक कि जिसपर राजाने अपने हृ
दयको वज्रके समान महा कठोर करके

भं०
१४

१५

न्रप करने की आज्ञा देईहै ।५। चौपाई ।राउ
दीन यद्यपि अनसासा । मैन करहुं तद्यपि
हननासा । म्रदुसशील सुंदर सिसुदेहा ।
मोरे दीख उपज जीय नेहा । पुनि प्रतीति
निश्चय न्रप लागी । काहु चिन्ह बालक ब
डभागी । लैजावहु करि यतन सुचैना । सि
सुसनमेलि कपट कछु बैना । अस जीय गु
नत सु पच तत काला । गहि कर करत ।

२६
भ
१५

15

लीन निज बाला। षष्टम अंगुरि नाम करेो
ई। कुलजन बेदि लीन इत सोई। एकल सि
सहिं काडिवन माहीं। आवा आप भूप सठ
माहीं। कपट युक्त मंत्र वचन सुनाई। अंग
भंग सि सदीन दिखाई। नाम विलोकि हग
न पति धरना। कीन प्रतीत बालका कर म
रना। जहां गहन कानन सिह जोई। लक्ष्यन
विपत दीनवन होई। रोदन करहिं नाम मन

१५

मासीं। विपन सरीर पीर कछु नासीं। मृगवि
हंग खग कानन चारी। ललित बाल लखि
विपुन उचारी। कहति विलाप रोदन मुखवा
सा। भूरिदया तिन हृदय प्रकासा। ढला ता
स वचन मनदेहा। लागे करन स्रवि उर ने
हा। तव नहि समय एक महि पाला। सर्पन
न रन विपुन रसाला। प्राय नरन नहं प्राप
न भययौ। जहं बाल रोदन करि रहयौ॥

दसा बिथत नरहिदेखि भुआला। कहत वदन

भरउ ववन रसाला। पुत्र कवन कहितें तुम

आवा। ईहां प्रवेश विघुन कसपावा। सोरठा

कौतुमार पितुमाई। जिन निज उर कवि व

ज्रसम। तुमहिं दीन विसराई। कहहु तात

परि हरि रुदन।९। टीका। फिर चांडाल क

हताहै कि यद्यपि राजाकी आज्ञा इसको व

ध करने की है तद्यपि मै इस बालक को क

दाचित न होंगे माहंगा कें कि इह अत्यंत हे

दर् ऐश्वर्यशील वंश का मल बालक है इस

की दशा देख करके मेरे हृदयमें दया उत

पन्नहोय गईहै परंतु अब राजाको दिखाव

ने और तिसकी प्रतीत के लिये इस बालक

का कोई चिन्ह ले जाना उचित है ऐसे विचार

कर तिस बालक का हाथ अपने हाथमे ले

लिया और तिसके हाथ की षष्ठम अंगुलि ।

३६

भं॰

१८

छवी अंगुली जोथी सो कृपानसे तरत हीं काटकर और तिसको तहांवणमै अकेला हीं छोडकर आप तिसतिर दय राजाके पा सचला आवताभया तहो कपट के वचनों से तिसको वे अंगुली दिखाय कर वाल क का मरना निश्चय कराय देता भ। या तब सो पापकी वाती सत्य मान क र वडे हरष को प्रापत होय गया और।

१८

ऊंहां चंद्रहास बालक जोथा सो अंगुलीके ।
काटने की पीडा से बणविषें अकेला भ
यके वशदीन और आकुल भयाहुआ रोद
नकर रहाहै तब बणके खग मृग जोथे
सो तिसको परम दुखी और विलापसे रो
दन करता देख करके सब दयाके वशहो
यगये और तिसकी सरव प्रकार करके
रक्षाकरने लगे तब दैव योगसे अकस्मा

३६
भ.
१८

18

तहीं तहां एक राजा सिकार खेलता खेलता
आय प्राप्त हूआ सो तिस बालको परम व्या
कुल और डरसे रोदन कर्ता देखकर बडे
कोमल प्यारके वचनोंसे पूछनेलगा कि
हे पुत्र तू कहांते आया और कौन हैं कहो
ईहां और निरजन वणविषें तेरा कैसे आवेश
भयाहै और कौन तेरे ऐसे निरदय माता पि
ताहैं कि जिनो ने अपने हृदय को वज्रके

समान कठोर करके तेरेको विसार दियाहै

अवहे पुत्र तूं संकोच सोच और रोदन को

त्यागकर अपना वृतांत कथन कर ।६। चौ

पाई। सुनि नरेस मृदु वचन रसाल। बोल्यो

वदन वचन नव वाला। नाथ मर्म कछु ना

हिंन मोरे। पेइक करहूं कथन प्रभु तोरे।

धृष्ट दमन नृप सचिव वन केता। वसिहं ज

ननिमोर सुख देता। अह मोरे कोउ दुष्ट।

19

अरानी। लावा ईहां गहन वन छानी। मम कर अंगुरि षटम सत छेदी। भयो नाथ इत विघन अभेदी। रहा कवन कछु मर्म न मोरे। इह निज भेद विया प्रभु तोरे। सुनि करुणा रत बालक बानी। हृदय गनत भू पति सुव मानी। इह सुशील सिसु सुभग सुनीती। कहि न वदन कस गिरा अभीती। ऐसहिं अवश्य

नरपति सुतनपुहा। लैचलहों इहि आपन गेहा

पालन करहुं पुत्र जीय जानी। अस उर गुन

न भूप सुख मानी। लालन वचन कहत म

खनीके। गहि करकरन वाल प्रीयजीके।

सिवका रुचिर लीन वैठाई। चलेपोलत का

ननतें राई। लाग भवन हरष उरछाये। म

हिखी कंह निज निकट बुलाये। दीन सम

रपि वाल गहि पानी। कहि सउँर रुचिरम

मधु

खवानी। इहि कहं खवन जानि नत लालन
दिन दिन करहु प्रीति रनपालन। सीयापुत्र
नव नाहिन गेहा। दीन तमहुं भगवन सुत
पहा। इहि पर सदा छोहहु निज प्यारी। राखेहु
जानि पुत्र हित कारी। पति सवव सनत व
चन असमरानी। अति प्रमोद मानस निजमा
नी। सोरठा। सिसहिं गोद धरि लीन। रूपम
भाव विलो किनहो। महिषी परम प्रवीन

गद गद भई प्रसन्न मन ।७। टीका। ऐसे रा
जाके मुखसे वचन सुन करके बालक क
हने लगा कि हे नाथ मेरेको अपना वृतांत
कुछ भली प्रकार स्मरण नहीं है परंतु
इतना जानताहूं कि धृष्टद्युमन राजाकामं
त्री जोहै तिसके घरविषे मेरीमाता निवा
स करतीहै और मेरेको ईहां वनविषे
कोई दुष्ट शत्रु कपट से प्रेर करके ले आ

२६
म
२१

था और मेरे हाथकी षष्ठम अंगुली को नर
नहीं काटकर और ले करके ईहां कहीं व
एमैहीं लुपत होयगयाहै मै तिसको नंही
जानताहूं कि कौनथा और कहांको चलाग
याहै हेप्रभु मेराइह वृतांतहै मैने आपको
सुनायदियाहै इस प्रकार बालककी बानी
सुनकर राजाके शरीर मे रोम रोम दयाछा
यतहो जानीभई कहनेलगा कि देखो इह

२१।

सुशील और सुनीती बालक कैसे स्पष्ट वच
न कहताहै मै जानताहूं कि इह कोई राजा।
का ही पुत्रहै अब इसको अपने घरमें लेजा
ताहूं और पुत्रके समान पालना करताहूं ऐ
से विचार करके राजा बड़ी प्रीती और प्यार
के वचनों से तिस बालकका हाथ पकड़ क
रके शिवकाजो पाल कीहै तिस विखें विठा
य करके आनंद से अपने घरको लेजाताभ

३६
भ
२२

या और तहां राणीको बुलाय करके वे बाल
क तिसको देकरके वडी सुंदर वाणीसे कहने
लगा किहेप्यारी अवतूं परम हित और पया
रके वचनों से इस बालक को पुत्रही जान क
कै पाल क्योंकि तेरे घरमे पुत्र नहीं है भगवानने
तेरेपर अनुगृहकरी और इह पुत्रदियाहै इसपर
तूं सदैवही दया राखतीरहो तव पतीके मुखसे
वचन सुनकरके रानीपरम आनंदको प्रापहोयगई

२२

नवन बालक को लेकरके अपनी गोदमै बैठा
यलिया और तिसकारूप स्वभाव और शी
ल देख करके हरषके वश गद गद वानी
होजाती भई अर्थात आनंद से कोई वचन
निकलता कोई रुक जाताहै । ७। चौपाई ।
तासु दिवस निशि पालन लागी । प्रीतिरीति
संजन अनुरागी । करुणा देखि निज पित
माता । सिसु हिं हरष नहिं हृदय समाता ।

३६

भ॰

२२

असप्रकार जब वैसक शोरा। भाखिसह कवि
र रूप चित चोरा। हरण अंग मदन वनसोभा
नखसिख अति वचित्र मन लोभा। नव नृप
गृह उमन रतिलीना। तहि सिख ध्यान रूप
च नहिंकीना। करहिं निवास असक नृप
गेहा। निहत जाति प्रीति अति नेहा। दिन ।
दिन करहिं हरष वस होई। भाखव जवावै
स सिख सोई। अस विचारि मानस निजराया

२२

अरि इव रोम रोम विसथाया ॥ स
ज्ञानन मिस उठि ततकाला। संज्ञन
सचिव गवन महिपाला। पहुंचे व
हिर नगर नहंजाई। उतरे देखि रु
चिर अमराई। नवनरेस निज स

१६
भ॰
२२
२

चव पठावा। विविध भाँति मोहि सब
कपट सिखावा। मित्रभाव मम प्री
ति जनाई। सबविधि करहु प्रकट
अपनाई। नृपतें नहि बालक कहं आनो
जेहिविधि सचव जतन जिय जानो।

२३

मंत्रीपाय भूप अन हासा। पढ़ें खो जाय ना
स न्टप पासा। सोरठा। कीनसि प्रथम ज्वहार
मैत्रिभाव पुनि वचन स्वावे। कहिमउ विवि
ध प्रकार। कहा सचिव भूपती सुनो। ८। टी
का। तव तिस वालक को राणी जोहै सो
वडी प्रीती और प्रेमसे दिन दिन पालने ल
गी और वालकभी माता पिता की ऐसी द
याके सहित पालना देखकर परम हरष

३६
भ०
२५

को प्राप्त होताभया इस प्रकार जब सो बा
लक पलता पलता जवा अवस्था को प्राप्त
होगया और कामदेवके समान अंगो की
बडी अनूप शोभा देनेलगा जब कहीं रा
जा धृष्ट द्युमनने स्मरणलिया कि तिस बालक
को चांडालने वधनहीं किया और वे अन्त
क राजाके घरमें निवास करताहै भूप ति
स को पुत्र जानकर पालताहै सो अवजवा

२५

अवस्था को प्राप्त भयाहूआहै ऐसे विचार
करके राजाको रोम रोम विषे कोप जोहै
सो व्यापत ~~हो~~ होयगया तब कालहीं मंत्री
को साथ लेकर शिकारके [वहानेघरसेनिकलकर्के] चलता चलता
तिस राजा के राजमें प्राय प्राप्त हूआ तहां
नगरके बाहिर एक बडा सुंदर बाग देख
करके तिसके भीतर उतर पडता भया तिस
तें उपरांत अपने मंत्रीको सर्व प्रकार सब

२६
भ०
२५

जाय कर श्रौर तहां तिस राजाके पास भे
जकर बार बार यही कहताभया कि हे
प्रधान जिस प्रकार जानो अनेक बुद्धी औ
र कपट चतुराई करके तिस बालक को
राजासे मांगाकर ईहां मेरे पास ले आवो इ
स प्रकार अपने स्वामी की आज्ञा पायकर
मंत्री जोहै सो ततकाल तिस राजाके पास
चलागया तहां प्रथम प्रणाम करके श्रौर

२५

फिर अपने राजाकी ओर से वड़ी मैत्री और प्रीती के वचन सुनाय कर जिस प्रकार कह नेलगा सो आगे कथन किया जाताहै। ८।

चौपाई। सुंदर सील सुवन वर तोरा। देखन चाहिं नृपति दृग मोरा। अस प्रकार नहि क पट कहानी। करि करि विविध वदन छल सानी। सिस हिलेन आवा तुम्ह नाहीं। अति दुख रहा भूप मन जाहीं। नहि सिस देखि नर

३६ भ २६

नपहि चाना। परम आनंद मूढ मनमाना। अ
व इहि कहं करि कपट प्रकारा। करहुं वहन
प्राणन संसारा। अस विचारि पत्रिक लिखि
राया। चंद्रहास वचन अलाया। कहा जाहु
मोरे पुर माहीं। मदन नाम बालक मम जा
हीं। नहिक हं जाय देहु नव पाती। कहिसव
कुसलतान सब भाती। अति हित वचन प्रकट
रिपु कीना। गुपत मरम अनहित लिखि दीना। देषत

कंहे

२६

मदन पत्र मम पानी। इहि विधि देहु जानि जहि भांती। भलहिं विचारि जतन जीय ना ना। कारज करहु सरव सुखदाना। अस प्र कार मदन करिपानी। चंद्र हास कर दीन अगानी। कहा जाहु सुत वेग सिधाई। होहिं नमहिं सब भांति भलाई। पत्रिक बांचि नर न सुत मोरा। करहि अभिष्ट सिद्ध सवतोरा। नृप नदेस धरि सीस सुहाई। चंद्र हास कर

३६
भ.
२८

पथिक पाई। चल्यो वेग कछु विलम न कीना
अर्ध दिवस जब गयो बतीना। जाय नगर न
प आपन भययो। फूलन वदन मदन किन
रह्यो। तब इक भन्यो पुरष नहिकाला। म

नाम

दन नृप सुवन रसाला। अंतह पुर मानस
सुखमानी। करहि निवास नृप बल खानी।
चंद्र हास तब हृदय विचारी। रही एक वा
टिक फल वारी। अंतसे ववित्र निकट नृप

२८

श्रेना। तहंनिज नाथ कीन कलसैना। त्रिवध
समीर पाय गुण नीके। भयो निरन निद्रा स
ख जीके। आई तहां रूप गुण धन्या। विषया
नाम भूप तहि कन्या। सखि गण संग श्रेग
मउ वारी। नख सिष छवि रूप रति सारी।
सील भवन मउ गवन मराली। लालन लालि
त मान सर पाली। देखा चंद्र हास कृत सय
ना। बोली वदन सकुच जन वैना। निद्रा नि

वन कवन सखिपहा । देखहु जाय मंद गति ते
हा । अरु इहि सीस धरो कछु दावो । परहिं
जनहुं पथिकसखि लेवो । सोतम जाय सह
ज हरिलेहो । निद्रा विगत होन जनि देहो ।
सुनत वचन इकसखी सयानी । सह जहिं मे
ट मंद मदुगामी । करि वचित्र आपन चतुरा
ई । पथिक नरत चतुर हरिल्याई । आय दीन
विषया करसोई । ताचि परम विसमय वस

होई। सोरठा। जनक उष्ट मतिमोर। लिखहिं न इहि करटेन विष। अति सुंदर चित चोर। सुभ्रत दिव्य सरूप सिसू। ९। टीका। मंत्री कहता है कि हे राजन इह तेरा सुशील और सुंदर बालक जो है सो इसको मेरा राजा देखने चहता है क्यों कि इस बालक का गुण प्रभाव सुन करके राजा के हृदय मै दरसन करने की बहुत लालसा उतपन्न भई है।

३६
भं०
२५

इस प्रकार तिस मंत्रीने अनेक रीतीसे कपट
की कहानी कर कर राजाको प्रसन्न कर
दिया और फिर तिसकी आज्ञापाय करके
बालक को साथ लिये हुये तहां अपने रा
जाके पास आय प्राप्त होताभया तब तिस
शत्रु मरतीने बालक को देखते ही तरत प
हिचानलिया और हृदयमें बडा आनंदमानता
भया कि अब इसको छलकर्के अवश्यमारूंगा ऐसे
विचार कर

२५

पत्रिका लिखी और चंद्रहास को कहनेल
गा कि हे पुत्र अब शीघ्र मेरे नगरमेजा
वो नहां मदन नाम करके मेरा पुत्रजोहै इ
ह पत्रिका तिसके हाथमे देदेवो और हमा
री कुशल भी सब कहि देवो देखिये कि अ
धम भूप प्रकटतो बडे हितके वचन करता
है और पत्रिका मे गुप्त अन हित और
महा अनर्थ लिख देताभया क्या लिखा कि

३६
भ०
१०

हे पुत्र मदन तुम मेरी पत्रिकाके देखते ही
इस बालक को जिस प्रकार होयसके विष
दे करके मारदेना किंचक भी विलंब नहीं
करना ऐसे पत्रिकाको मुहृत करके चंद्र
हासके हाथ मे देकर बडे उतसाह के व
चन कहताभया कि पुत्र अब जावो तुम
को तहां बडा आनंद और सुख प्रापत।
हो वेगा इस पत्रिका को वाच करके मेरा

30

१०

पुत्र मदन जोहै सो तुमारा अनेक सेवन और
सतकार करेगा इस प्रकार छल और कपट
से रहित सूधे सुभाव वाला चंद्रहास राजा।
की आज्ञा सीस पर धारन करके और पत्रि
काको लेकरके ततकाल धाय जाता भया
तब आधे दिनके उपरांत जाय करके राजा
के तिस नगरमे प्राप्त होय गया और पूछ
ने लगा कि मदन नामा राज कुमार कहांहै

२८
भ॰
२१

तव किसी ने कहि देया कि मदन इस समय
भीतर् भवनें मै निवास करताहै ऐसे सुन
करकें और हृदय मै विचार करकें तहां राजा
के महलों के पासही एक वडी सुंदर् वाटि
का अर्थात फूलों की वगीचीथी तिसमै जा
य करके चंद्रहास वास करता भया तव त
हां तीन प्रकार की सीतल मंद सुगंध प
वन जो चल रहीथी तिस का गुण पाय

३१

२१

करके चंद्रहास नगर निद्राके सुखमें लीन
होयगया तिसी समय तहां रूप और गुण
विषें धन्य बडी सुशील हंसनीवत सुंदर गा
नीवाली मानोलाड प्यारके मानसरो वर मे
पलीहुई विषया नाम करके राजाकी कन्या
जोथी सो सब सखियोंका समाज साथ लि
~~ये~~ लिये हुये तहां आय जातीभई ~~तब चंद्रहास~~
~~को~~ तब चंद्रहासको तहां सोयेहुये देखकर

१६
भं॰
२२

वडे सङ्कचसे आवर्ज होयकर कहने लगी कि
हे सखी तू सहजेहीं जाय करके देख इह को
न ईहा निद्राके सुखमैं मगण होय रहाहै
और इसके सीस की पागमैं कोई पत्रिकासी
कैसी देख पडतीहै तौतैंतू हेसखी जा और
जाय करकै इसकी पागमैसे इह पत्रिका सह
जेहीं निकाल करके लेआ निद्रासे जागनाय
है नव राज कुमारी की आज्ञा पाय कर एक

२२

चतर सखी सहजे सहजे पगधरती हूई चत
राईसे तरतहीं पत्रिका को निकालकर ले
आई और विषयाके हाथ मे देदेती भई सो
तिसको वाच करके वडे आश्चर्जको प्राप्त
होय गई और कहनेलगी कि देखो इहमेरा
पिता कैसा उग्र वडीहै कि जो ऐसी मोह
नी मूर्ती वाले कोमल कुमार को विषदेना
चहताहै।९।चोपाई।सद्दा रुचिर मोर मन

३६
भ॰
२२

माना। मैंइहि वरहूं करहूं पतिआना। हृदय ग
नन अस राज कुमारी। वैठीजाय नवन उढिन्या
री। उपवनवर कानन कर लीना। नाम ललित
लोचन इत कीना। काजर रुचिर दृगन रवि
स्यामा। आ अच्छर लिखिदीन लिलामा। विष
या भयो नाम विषकेरा। मरम गुपत अस का
हू नहेरा। करन कौन पुनि महत पानी। वि
रचन रही प्रथम जहि भांती। हरषत वहुरि

२२

सखिन पैं आई। सुखानिन नव मर्म उराई। क
हा जनक इह पत्र पठोरा। मोरे मदन वीर
वर ओरा। इहि कहं तुमहं सहज सखि ना
हीं। राखहु जाय सीस तहिमाहीं। सोसखि
मंद मंद नवजाई। धरि पत्रिक मग तरत प
राई। लियसंग नव सखि गण सारी। स्वता
भूप निज भवन सिधारी। न्टप स्वत वेद हा
स उत जागे। आय द्वार भूपति अनुरागे।

३६
भं०
२४

द्वार पालकर दीन सिपानी। कहि कहि कु
सल वदन सब भांती। वाचि पत्रका मदन
सजाना। अति अनंद सुख मानस माना।
सोरठा। तहि निवास हितदीन। नरत पक
सुंदर सदन। सब विधि सेवा कीन। सादि
र हरषि यथा उचित। ९। टीका। फिर राज
कुमारी कहतीहै कि इसकी मनोहर मूर्तीजोहै
सो मेरे चित्तको अतसे करके प्यारी लगीहैसे

इसको अवश्य वरूंगी और अपना प्राणप
ती करूंगी ऐसा हृदय मै विचार करके त
तकालही उठकर न्यारी जाय वैठी और अप
ने कानका करन फूल लेकर तिसको ले
खन वनायकर और नेत्रोंके अंजन अर्थात
सुरमे की सयाही लेकरके तहां जो अत्तर
लीखे थे तिनको भी मेटी कर अपने पत्र
जोहै सो वदलाय दिया तव तिस विषका विष
या शब्द वनगया इस भेदको कोईभी जान

35

नहीसका फिर तिस पत्रिका को तैसेही म
हत अर्थात वेद करके सखीके हाथमै देक
र कहने लगी कि इसको नहा सहनेही ति
सके सीसकी पागमै धर आवो तब सो चत
र सखी तरतही पानीको लेकर नहा तैसे
हों तिसकी पागमै धर करके राज कन्याके
पासचली आई जब श्रोर सखियोंने पानी
कामर्म अर्थात भेद सका तब कहने लगी

कि पिताने मेरे भ्राता मदनके नाम इह प
त्रिका भेजीहै ऐसे भेदको छिपाय कर
तिसतें उपरांत सब सखियों को साथ लि
येहुये आनंदसे अपने घरको चलीआई
इतनेमें ऊहांचंद्रहास भी जागा और स्ना
वधान होय करकें राजा के भवनो को च
ला आया तहां द्वार पालको देखकर औ
र तिसके हाथमें पाती देकर सब कुसल

३६
भ.
३६

भी भली प्रकार सुनाय देतीभयी तब हार पा
लेने पत्रकानाय करके मदनके हाथमें देद
ई सो बाच करके परम हरष को प्रापत भ
या और चंद्रहासके निवासके वास्ते एक
बडा उत्तम अस्थान देदिया और यथा योग्य
सब सेवन सतकार भी किया। ए। चौपाई। अं
गराग आदिक सब दाई। असन बसन स
ब दीन पठाई। पुनि उपरो हित लीन बुलावा

३६

सकल वृतांत नाह समुझावा। ते अनु सासु मद
न असपाई। करत विचार नगर इत आई। ब
स्त विवाह जवन उप जोगा। तिन कर कीनता
स उद्योगा। करि सु यतन सबलीन बनाई। आय
मदन कहं खबर जनाई। महाराज सबकाज स
वारा। साज समाज अनेक प्रकारा। नव तिनसो
यि महूरत भावा। सुदिन जानि मंगल विरचा
वा। पनव भेरि संख सैनाई। बाजन लगे घोर

३६
म॰
२७

धुनिछाई। उतसव भयो भवन न्रपभारी। गावहिं गीत केव कलनारी। वेदवतान रुचिर विरचायो। वेद निवार सभ छविछायो। रचेरु चिर कदली वरखंभा। वीच वीच नवललित कदंवा। अस प्रकार सोभा भवनीके। हास विलास विविध प्रीय जीके। रचना सकल अनू पर चाई। वरनि नजाय मनो हर ताई॥ पू जि देव गण संजुत प्रीती। भलहिं।

२७

सकल विधि वेद वहीती। चंद्र हास विषया क
र पावन। भयो विवाह सभुमन भावन। आग
ल दिवस मदन लिखिपाती। कारन कलित
कीन जहि भाती। दीन जनकपें नरन पठाई। म
हाराज तव आय सपाई। सहि विवाह विष।
या करकीना। सब विधि सजस नाथ जगली
ना। पहुच्यो पत्र भूपपें जवहीं। वाचन भयो
विधन मन तवहीं। प्रति अवरज कछुजाय

३६
भ०
३८

नजाना। सोच विवसमानस अकुलाना। सोर
ठा। भयो दुखित अतिभारि। चिंता विसमय
विवस न्टप। जाय न दसा निहारि। कौन क
वनको इह भयो।।३।। टीका। और फिर अंग
राग जो वटने आदिक सुंदर वासना वाली
सुख दायक वस्तु और भोजन वसत्र जो हैं
सो प्रीती पूर्वक सब पठाय दिये फिर तिसतें
उपरांत उपरो हितको बुलाय करके सब

३८

वृत्तांत सुनाय और समझाय देता भया। तब मदन की आज्ञा पायकर उपरोहित नगर मै चलागया और विवाह संबंधी जोजो वस्तु और समाज उचितथा सो सब यथावत बनाय कर और आय कर मदन को खबर देताभया कि महाराज आपकी कृपासे सब समाज जो उराखाहै अब जैसी आज्ञा हो ति सके अनुसार कारज कियाजावे इस प्रकार



उपरोहित का वचन सुनकर मदन जोहै सो
महूर्त को सुधाय कर और सुभदिन देख क
रके घरमै मंगल रचाय देताभया अनेक प्र
कारके बाजेयोंकी नाना धुनी जोहै सो हो
ने लगी जहां तहां आनंद और उतसव ही दे
ख पड़ते हैं राज भवनो से लेकर संपूर्ण घर
घरमै को कला वेनी स्त्री वडे मनोहर गायन
करतीहैं वेदी जोहै सो वेद की विधी अनुसार

भली प्रकार सवारीगई तैसेहीं जगन माला
बांधकर जहां तहां चौकों मै बेली बनानोके
सुंदर सायवान सजायगये कदली खंभ श्रो
र कदंव हरतोकी नाना रचना भी कीगई इ
स प्रकार सब शोभा श्रोर मनो हरताई को
उदय कर कर वेदकी विधी श्रोर वंसकी री नी
श्रनुसार गणपती श्रादि सब देवताऊंका
पूजन करवाय करवाय कर चंद्रहास श्रोर

३६
भ० ५०

विषयाका संदर विवाह जोहै सो करवायदि
या नव हमरेदिन जिस प्रकार सब कारज
कियाथा तिसके वृत्तान्त की पत्रिका लिख क
रके मदन अपने पिताके पास भेजदेताभया
कि महाराज आपकी आज्ञाके अनुसार विष
याका विवाह कर दियाहै और जगतमै लो
गों विखें भलीप्रकार सुजस प्रापत कियाहै
जब इह पत्रिका राजाके पास जाय पहुंची । ५०

नव वाच करके अचरजके वशभया हुआ व्या
कुल होय गया और उत्त चिंता करके दीन
और मलीन मनहोय कर कहने लगा कि
अहो इह किसने क्या करदिया। और कौन
विप्रीती का अनर्थ होगया मेरेको कुछ
जाननहीं पड़ताहै।१२। चौपाई। अति संदि
गध भूप मनमाहीं। धायो सपदि ठौर जीय
नाहीं। आवा नगर भवन निजमाहो। छ

मदन

३६
म०
५१

न वदन मन काह्नो । आय सभाय भूपभवन ।
जाई । त्याय मदन कहं तुरत बुलाई । मन म
ख भयो भूप तब काह्ना । पठयो मोर पत्रिक
जोई ताह्ना । सो मोरे इत देहु दिखाई । तुरत म
दन आय सन्तपपाई । त्याय दीन भूपति कर
पाती । बाचिन विहसि गई मनछाती । सरव
वरण मोरे कर लिखिया । विख कर कहत
भयो कस विषया । इह अचरज मोरे मनछा

५१

वा। कवन मर्म कछु जानि नपावा। असमन ढ
मानि विकल संतापा। हृदय कीन पुनि विं
तन पापा। कपटी कुटिल मंद मतिहीना।
रह्यो मौन मन विमल मलीना। बहुरि गुन
न अस हृदय कसाई। जोलो करि छल बल
चतुराई। करहु नबध इहि बालक काहीं।
बोलो मोहि भावत कछु नाहीं। ननर उष्ट सा
मर्थ न थोरा। हरिहैं देस कोस सब मोरा।

साम्हक जन सम बखाना । संतन हृदय मो
र हठ माना । सठता मोर विषया इह जोई । यद्य
पि विष सरूप सो होई । करहिं निवास मोर आ
गारा । सो दुख मै सब लेहुं सहारा । पै इह सू
ल सहा नहिं जाई । अस प्रकार चिंतन करि
राई । निज मन कहं सठ भाखन लागा । प्र
ति सनेह संतन अनरागा । सोरठा । अधिष्ठा
ना सोई देवि । इहि पर कर सनेहा सवन । सो

तमरे झलसेवि ॥ श्रवताकर सजन उचित । १२

टीका । तब अनसे करके सोचके वश भयाहु आ राजा नहांसे तरतंही चल पडता भया । और अपने नगर विषे घरमे आयकर पूछ ने लगा कि मदन कहांहै तिसको शीघ्र ले आवो ऐसे राजाकी आज्ञा पाय कर सेव क जोहैं सो जाय करके मदनको तरतहीं ले आवने भये तिसको देखतेही राजा कह

३६
म
५३

ने लगा कि मेरी भेजीहुई पत्रिका कहांहै
मेरेको अबी ल्याय करके दिखावो तब पि
ताकी आज्ञा सुनते ही मदनने सो पत्रिका।
ल्याय करके तिसके हाथमें देदेई और वे बांच
ताही बडे अचरज के वश होय कर कहने ल
गा कि देखो इह संपूर्ण अक्षर मेरेही हाथके
लिखे हुयेहैं अबमें कुछ नहीं जान सकताहूं
कि इह विषका विषया शाह किस प्रकार होयगयारे

५३

ऐसे प्रथम बड़ा संताप मानकर और कपट
की खानी हृदय मै पाप बसाय कर मोनहो
य रहा और फिर मनमै कहताहै कि जब ल
ग इस उष्टको मै नहीं मारता तबलग मेरे
को कुछ भावना नहीं है क्यों कि इह उष
सर्व प्रकार करके सामर्थ है मेरा राजको
श संपती सब छीन लेवेगा ऐसा विचारवा
ले पंडितजो हैं तिनोने सत्यहीं कथनकि

याथा सो अब मेरेको ज्ञानपड़ाहै यद्यपि इह
विषया मेरी कन्या विष रूप होय करके मेरे
घर मै निवास करेगी सो उाव मै सब सहा
र लेऊंगा परंतु इह मूलनहीं सहा जाताहै
ऐसे विचार करके प्रथम आपने पुत्र को ब
ड़ी प्रीतीसे कहने लगा कि इस नगर मै जो
स्थापिक भई हुई देवीहै सो हमारी कुलकी
इष्ट देवहै हे पुत्र अब तिस भगवतीका पूज

न जोहै सो अवश्य करावना चाहिये। ९। चौ

पाई। चंद्र हास नहि भवन मझारा। जाहिं

मोर आयस अनुसारा। अस प्रकार आज्ञा

न्रप कीना। पुनि चांडाल बोलि इक लीना

भाषिस मरम ताहि अस बदना। चंद्रहास

तें भगवति सदना। तम चांडाल प्रथम त

हं जाई। रखहु खड्ग निज पानि उठाई।

हम नरेंत नहि कर निसि काला। पठवहु

३६
भ॰
४५

भगवति भवन रसाला। नव नम ननवसएण।
खडग प्रहारह्र। काटिसीस नहि मेदनिडावह्र
न्रप अन मास पाय चोडाला। चल्या गहित
कर खडग कराला। बोल्या नव नरेस ग्र
स वानी। चंद्र हास नहि भवन भवानी
तोलो जाव करन नहि प्रजा। तोलो प्र
थम पुरष जनि हूजा। जाघन नहां मारग्र
नसाला। अस प्रकार न्रप वचन प्रकासा।

४५

नव पुर जन परिजन भूत संगा। अगनित पु
न्य पुरष वहु रंगा। लिये राऊ प्रमुदित मन
गवना। चंद्रहास जन भगवति भवना। एक
ल राखि तासु अस आगे। पाछिल नाहिं स
कल नहि लागे। मदन भूप आयसु विसरा
ई। मिल्योसि चंद्रहास मन जाई। प्रीति पर
स्पर तिन कर भारी। एकल सकोान तासु
निहारी। पहुंचे निकट जवहिं करि गवना

३५
भ॰
५६

46

मदन प्रथम तव भगवति भवना। कीन प्र
वेश सुमरि नंद लाला। अवसर देखि तव
न चंडाला। कठिन प्रहार खड्ग करकीना।
धरनि गिराय सीस नहि दीना। जाना चंद्र
हास जड एहा। ऐसो नतास आन संदेहा।
भलो चंद्र हास भ्रम जानी। कीन्योतास मद
न वधपानी। सोरठा। नहि पाछिल नवजा
य। चंद्रहास भगवति भवन। व्याकुल चलो

पराय। अति अचरज जीय मानि निज।। ए।। टी

का। राजा कहता है कि मेरी आज्ञासे चंदहा

स तहां पूजनके नमित्त भगवती के भवन

मे जावे ऐसे कहिकर फिर प्रथम चांडाल

को बुलायकर गुप्त कहने लगा कि तुम

हाथमे खड्गजो तलवार है सोधार कर

और प्रथमही भगवती के भवन मे जाय

कर लपन होय करके स्थित होय रहो।

हम रात्रीके समय चंद्रहास को तहां भेजदेवेंगे
तब तुमने ततकाल खड्ग का प्रहारदेकर ।
तिसका सीस काटकर पृथवी पर गिराय दे
ना इस प्रकार राजाकी आज्ञा पाय कर चांडा
ल जोहै सो हाथमै तलवार धारकर तहां भ
गवती के भवन मै चलागया और ईहां राजा
अपने सब सेवकों को आज्ञादेताभया किज
व लग चंद्रहास भगवतीके भवन मै पूजा

करने के लिये नहीं जावे तब लग प्रथम

नहो कोई नाजाना पावे ऐसे कहिकर रा

जा अपने सजन सबे परिवार और घरके

लोकोंको साथलिये हूये सबनें आगे चंद्र

हास को राव कर देवी के भवनको चल

पडता भया तब मदनको जो चंद्रहास के

साथ अत्यंत प्रीतीथी तिसको चंद्रहासका

अकेला आगे जानानीके नहीलगा सो रा

३६
भ
५८

जाकी आज्ञाको विसार कर धाय करके तिसके साथ रलजाताभया जब आवते आवते भगव तीके भवनके पास चलेआये तब राजाका पु त्र मदन जोहै सो प्रथमही देवीके भवन मै चलागयाथा रात्रीका समयथा चांडालने जाना कि इहु चंद्र हासहै तब खड्गका प्रहार करके तिसका सीस काटकर पृथवी पर। गिरायदिया ऐसे चांडालने जब चंद्रहाके प्र

५८

ससे मदनको मारदिया तव चंद्रहास भी भवन
के भीतर चलाआया और मदनका सीस क
टाहूआ देखकर हृदय मे व्याकुल और अचर
जके वश भयाहूआ तरहीं पीछे को फिर आ

त

वताभया ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ बहुरि संग मानषलिये
गवना ॥ चंद्रहास नहि भगवतिभवना ॥ देखा
उष खड्ग करधारी ॥ कोपिलीन नहि नरन
प्रचारी ॥ भयो ऊलाहल शबद अपारा ॥ मदन

३६
भ॰
४९

मरण सबकाहू निहारा। जब इह खबर सुनेउ नरनाहा। सुनकर मरन परन महिताहा। आ ये वेग मानि उर भारा। परेउ मृतक जहां मदन कुमारा। देखि तासु मानस अकुलाना लगेउ करन रोदन मुख नाना। ताडन करहिं करन सिरछाती। विल पत परहिं धरन गत भ्रांती। दारुण शोक सूल उर मानी। गहिपा षाण प्रथम इन पानी॥।

४९

49

करि प्रहार असफोटन सीसा। कीन तुरंत प्रा
ण निज खीसा। चंद्रहास तव हृदय विचारी।
कहत अकाज जवन इह भारी। मोर विवाह
हेत सव भयऊ। भूपति सुवन मदन जोई
रहयो। मोरे अर्थ काय तिन त्यागी। अरु म
हिपाल नास हित लागी। त्रिभवन तुरत प्रा
ण निज तोरा। अवधिग धिग जगजीवन मो
रा। अस प्रकार निज हृदय विचारी। है अन

३८
भ.
५.

न गति भक्त मरारी। लगेया अराधन करन भ
वानी। असनिज हृदय रुचिर प्रणवानी। जो
जग जननि लोक त्रैमान्यो। आसा मूरति वेदव
खान्यो। तोइहि कहँ अवदेह जयाई। मातु
कृपाल जनन सखदाई। अस कहि मदन
सीस गहिपानी। परि कवंध पर समरि भ
वानी। डारि वसन सित मादिर धरनी। दीन
लिटाय अग्र सव करनी। मूदित द्वार वहि

५.

र सुनि आई। बैठो निज आसन हरषाई। सं
तन लगेउ अराधन देवी। जे जग जीव चरा
चर सेवी। अस्तुति विविध भांति मख बरनी
नाय सीस नेत्रन गति धरनी। निश्चय कीन्
ताम्र मनमाहीं। जो इहि मात जयावसि नाहीं
तो मैं ईहां न जइहुं निजथाना। अस प्रकार मान
स प्रणठाना। अस्तुति करत वदन मडवा
नी। सकल रैन अस ताम्र सयानी। अरुण

३६
भ०
५१

ह्वै जब बोलन लागेपा। भयो सजीव मदनन
व जागेपा। बोल्यो बदन रुचिर मृदुबानी। क
बन बहिर तब भवन भवानी। खोलहु द्वा
र बिलम जनिलावहु। बहिर भवन मैं आ
वन चहवहु। अस सुनि चेद्र हास सुख मा
नी। खोल्यो द्वार तरत निज पानी। देखो मदन
सजीवन भययो। हरि माया चरनन सिर
नययो। सोरठा। असनुति बिबिध प्रकार

५१

5/

लगो करन जन्त वहू वदन। वर तिन जायश्र
पार। चंद्रहास कर जवन सवे। ४। टीका।
तव श्रौर मानुखों को साथ लेकरके चंद्रहा
स जव फिर भगवती के भवन मै जाय क
र देखने लगा तो हाथमै तलुवार धारन
किये हुये चांडाल जोहै सो तहां ठाड भया
हुआहै तिसको देखतेहीं तुरन पकड क
र बांध लिया। तव मदनका मरना देखकर

के तहां अत्यंत शोर पड जाता भया इह ख
वर जब राजाने सुनी कि मदन मारागया
तब ततकाल धावताहूआ तहां चला आ
या पुत्रको प्राणोंसे रहित पृथवी पर प
डा हूआ देख करके मसतिक और छाती
को पीट पीट कर वडे हाहा शबदसे रोद
न करने लगा और हृदय मे परम सूल
मान कर तुरतही एक पाषाण जो पथ्य

रहै सो लेकरके आपने सीस मै मारता भ
या तब पाषाणके लगनेसे तिसका मस
तिक फूटगया और तड़फता तड़फता त
त्काहीं मस्तकको आपन होय गया ऐसे ति
नकी दशा देखकर चंद्रहास कहने ल
गा कि देखो इह सब अकाज मेरे विवाह
के निमित्तही भयाहै राजाके पुत्र मदनने
मेरेही निमित्त प्राणदिये हैं और आपने पु

३६
भं०
५३

उ के नमित्त राजा मृत्यु को प्राप्त होय गया है
अब जगत मै मेरा जीवना भी धिग है ऐसे
कहिकर भगवान का भक्त चंद्रहास जो है
सो सर्व ओर से वृत्ती को रोक कर और ए
काग्रचित्त होय करके जगदंबे जो भगवती
है तिसकी आराधना करनेलगा और हृदय
मै प्रेमापूर्ण धारन किया कि जो तीन लो
कमै मानी हुई जगत की माताको सन्मुक

५३

53

कें आसा हरनी करूतेहैं तो अब मरत भये ह
ये इस राजाके पुत्र मदन को अवश्य जिवाय
देवेगी ऐसा प्रण करके और मदनका सीस
तैसेही तिसके शरीरके साथ जोडकर और
स्वेत वसनरसें छाया दिन कर कर अर्थात स्व
तवस्त्र ऊपर डालकर भगवती के आगे लिटा
य दिया फिर भवन के कवाड मूंदकर और
आप वाहिर आय कर दृढ आसन लगाय

ग्र।

वंदना करते हैं तिसकी आराधन करने लगा और ^२

54

करके जिस जगतकी जननी भवानी को सर्व
चरा चर जीव सेवते और^ नाना प्रकार की अस
तुती गायन कर कर हृदय मे इह निश्चय क
रताभया कि जो कदाचित जगदंबे इसको जी
वत नहीं करेगी तो मै भी ईहां भगवती के
आगेही अपने प्राणों को त्यागदेऊंगा इस प्र
कार आराधन और असतुती करते करते
तिसको संपूर्ण रैन वतीत होयगई और जब

श्रवन हुए अर्थात् कुकड़ बोलने लागे तबप्रा
तकाल होनेही मदन जोहै सो सजीवन होय
करके जागउठताभया और कहनेलगा कि
भाई तुम भवन के बाहिर कौनहो कवाड़ोंको
शीघ्र खोलदेवो मै बाहिर आवने चहताहूं ऐ
से मदन की वानीसुन कर चंद्रहास आनंदसे
तुरत कवाड़ खोल देताभया और मदनको
सजीवन देखकर भगवान की मायाको वा

३६
भ.
५५

र वार सीस नायकर अनेक प्रकार की असन
ती जोहै सो करने लगा तिस समय चंद्रहासका
हाव और आनंद कुछ कथन नहीं कियाजाता
चौपाई। आवा वहिर मदन जहि काला। देखत
नगर मनुज सीयवाला। अति अचरज तिन कर
मन माना। हाव समूह नहीं जाय वखाना। रहा
मृतक भूपति सुत जोई। भयो सजीव भनत स
व कोई। गयो मदन तव शीघ्र तोही। मृतव

५५

55

५५

सपनेहु धरनि पिन जाहीं। पूछेउ मरम मद
न जबनासा। चंद्र हास तब बचन प्रकासा।
तमहिं बिलोकि भूप गत प्राना। कहि सहा
र निज सीस परवाना। तजे प्रान चिंता जी
य मानी। बोला बदन मदन तब बानी। मो
र मरन कर कवन प्रसंगा। करहु कथन
तव सकल निसंगा। चंद्र हास सुनि बच
न रसाला। लीनसि बोलि तरत चंडाला

३६
स.
५९

56

सकुन लगे नास समदाई। सचिव सुजान सु
जनसुखदाई। कहि विधि कहहु मदन नृ
म मारा। कहिस वृतांत सुपच नव सारा।
चंद्रहास करसो सब गाथा। लेगवन्यो जि
मि कानन साथा। घटम अंग छेदन लग
सारी। जथा मदन कहं खड्ग प्रहारी। भूप
रजाय जवन विधि लीना। पृथक पृथक क
रि सब कहि दीना। सोरठा। सजन सचिव

सुजान। सुपत्र वचन सुनि मदन कहें लागे वदन वखान। इहि कर सत्य वृतांत सब। ५

टीका। तो जब मदन भगवती के भवनसे बाहिर आया नगर की सब स्त्री पुरुष देख करके बडे अचरज को प्रापत होय करके परस्पर कहते हैं कि देखो इह राजाका पुत्र मृत होयगयाथा अब भगवती की कृपासे फिर सजीव होयगयाहै ऐसे सब कोई आप

३६ म. ५८

ने हृदय मे परम आनंद और सुख मानते भये नव मदन जोहै सो जहां राजा मृत हुआ पडाथा तहां चलागया और तिसके मरनेका वृतांत पूछने लगा चंद्रहासने कथन किया कि तुमको मरे हूये देख कर राजा भी अपने मस्तक मे आपही पथ्थर मार करके मर गयाहै नव मदन कहने लगा। कि मेरे मरने का कौन कारन है।

57

46

चंद्र हासने तबतहीं चांडालको बुलाय कर
सन सबब कर दिया जब तिसको सबने ल
गे सोचे चंद्रहास का वृतांत कि जिस प्रका
र राजाकी आज्ञासे अकेला बणमै ले गया
और तिसकी षष्ठम अंगुली काटकर तहां
बणमैंही छोडकर चलाआया फिर जैसे
राजाकी आज्ञासे चंद्रहास के मारने को
भगवतीके भवन मै आया और तिस भ्रम

३६
भ०
५८

मे जैसे खड्गका प्रहार देकर मदनका सीस

काटाथा इत्यादि सब हृतांत भिन्न भिन्न कर

के सुनायदेताभया तब सज्जन सुजान और मं

त्री प्रधान सुनकरके कहने लगे कि महारा

ज इसका कथन सब सत्यहै इसमै कुछ संश

य नहीं है ।५। चौपाई । बोल्यो वदन मदन त

व वाचा । रह्यो सि राज ड्रष्ट मति साचा । कियो

सचिव तब वचन वखाना । सुनहु श्रवण तब

मदन सजाना। सुनवसु नमहिं देखि न्रपबा
ना। तजे नरत ह्रनि कठिन पाषाना। चंद्र हा
स नव हृदय विचारा। अवधि गजिघन मोर
संसारा। असविचारि भगवान भवानी। ल
येया सुमरण रुचिर प्रणठानी। भक्तिविलो
कि नाम भगवाना। दीन नमहिं अस प्राण
नदाना। अरु इहि जननि परम विलपाती।
रोदन करत धीर गत शांती। मोरे भवन अ

३५
मं.
५५

जहँ लगवासा। करहिं विरहँ वस स्रवन निरा
सा। चंद्र हास कर राज कुमारा। इह वृतांतमै
वर नयोसारा। अव तुमार मानस सुखदाई
आवन जवन करहु हितराई। सुनत मदन
अस वचन सुहावा। हृदय आनंद परम सुख
पावा। चंद्र हास सममंस्रति आना। कहत न
होहि मोर प्रीय प्राना। अव मै अति प्रसन्न।
मनहोई। अर्ध भाग निज संपति जोई। इहिक

५५

हेदेहूं प्रथम नव आना। अर्थ दहिक पित्र क
रम विधाना। पाछिल करहूं सकल मनलाई
नव मंत्री सब विनय सुनाई। प्रथमहिं जो
गप करम न्प करना। विधिवत वेद विदत
जिमि वरना। सोरठा। सुनि अस मदन प्रवी
न। सचिव सिखावन सावद सुभ। मरतक
करम सब कीन। विधि वत प्रथम नरेस
कर। ९। टीका। नव सुन करके मदन क

३६
भै०
६०

हने लगा कि हो भाई मैने जान लिया है इसमे
रा पिता जो था सो सत्य करके इष्टबुद्धी और
महा मंद था इसने अपनी करनी का फल
पाया है तब मंत्री कहने लगा कि हे राजकु
मार अब और भी सुनो कि तब राजा ने तम
को मरन हुयेदेखा तबँकाल अपने मस्तिक
मै पाषाण मारँ मस्तकको श्राम होयगया तब
चंद्र हासने हृदयमै विचारा कि अब जगतमै

तत
कर

मेरा जीना भी धिग है ऐसे चिंतन करके और
प्राण धार करके कृपासिंधु भगवान और ज
गदंबे भगवती जो है तिनका आराधन करने
लगा ऐसे चंद्र हास की भक्ती और दृढ वि
श्वास देख करके भगवान और भवानी नेरेको
प्राणदान देदेने भये और इसकी माता जो है सो
धीरज और शांती से रहित परम रोदन और
विलाप करती हुई हृदय मे पुत्र का वियोग ।

३६
भं.
६१

6/

मानकर अब लग मेरे घरमें निवास होय करनि
वास करतीहै हेराजकुमार ऐसे चंद्रहासका वृ
त्तांतहै सो मैंने तेरेको कथन करके सुनाय दि
याहै अब जो तेरेमनको भावतीहै सोकर इस
प्रकार मंत्रीकी वाणी सुनकर मदन हृदयमें
परम आनंद और सुखमानकर कहनेलगा
कि अहो चंद्रहास धन्यहै इसके समान संसा
रमें मेरेको और कोई प्राण प्यारानहीं है अब

६१

मै हरष पूर्वक प्रसन्न होयकर अपना आधारा
न रस को देदेताहूं फिर पीछे पिताका मृतक
करम जोहै सो करूंगा तब मंत्रीवरी बनीत
वानीसे कहनेलगा कि महाराज पिताका क
रम करना प्रथम योग्यहै पीछे और जो कर
नाहो सो करियो ऐसे मंत्रीकी शिक्षा सुनक
र मदन जोहै सो पहिले वेदकी विधी अनु
सार पिताका मृतक करमही करताभया। ।६

चौपाई। बहुरि दिवस घट चतुरथ पाछे। करि
बहु दान विविध विधि आछे। अर्थराज निज सं
पति सदना। चंद्रहास कहं प्रमुदित मदना।
दीना हृदय परम सुखमाना। सो प्रमोद किमि
जाय बखाना। चंद्रहास प्रभुता पदपाई। विष
या सहित परम हरषाई। लगे निवास करन
दिनराता। लीन्हसि बोलि बहुरि निजमाता।
रत्नाकीन विघन नृप जाही। लावा मदन जा

नि सुनत नाहीं। तासु बोलि पितु मातु समाना।
सेवत प्रीति कीन सनमाना। करि सतकार
विविध विधि राई। दीन सकल कर तासु छुड़ा
ई। राज अकंटकि कीने निज देसा। लगेपा करन
सद मानि वसेसा। जासु भूप सिंह समय म
कारा। चंद्र हास पितु प्राण वजारा। तेहि पर
लिये संग अति धावा। असि प्रहार जमधाम च
लावा। राजको सधन संपति सारी। छीनली

३८
भ०
६३

न रण परन प्रचारी। अस प्रकार रह चरित म
हावा। वेद ह्रासकर मै प्रभु गावा। देखेहु सा
लिग्राम प्रभाऊ। जेहि प्रसाद सुजन जग ताहू।
कठिन घोर अपदा उसनरनी। उरगाम उजोवित
जाय किमि वरनी। काटी सकल सहज स
व पावा। कीन अकंटिक राज सुहावा। इहि
नै संसृति भक्ति समाना। नहिंन उपाय स
गम कै आना। भय कलेस अपदा।

६३

इ खहारी । संपति सजस सकल सुखकारी । सो

रठा । तांते ग्रस जीयजान । जेसुख संपति जाव

हीं । करहिं भक्ति भगवान । लोकसुजस परलो

कसुख । ५ । टीका । तिसतें उपरांत जब दसदि

न बतीत होय गये तब ग्रनेक प्रकारके दान

ब्रह्मणोंको देकर मदन जोहै सो ग्रपना ग्राधा

धनधाम ग्रौर राज ग्रानंद पूर्वक चंद्रहासको

देदेताभया तिस समयका उतसाह ग्रौर सुख

३६
भ
६५

64

जोहै सो कुछ कथन नहीं कियाजाता नव ऐसी प्रभुता और प्रताप को चंद्रहास पायकर हरष के वशभयाहुआ नहीं अपने घरमै निवास करनेलगा और अपनी माताकोभी बुलाय लेताभया फिर जिसराजाने वर्णविषे जिसकी रक्षा करीथी और पुत्र जान करके घरमै ले आयाथा तिसको बुलाय करके बडी प्रीती से माता पिताके समान आदिर सतकार क

रनाभया और तिसका कर अर्थात नजराना
भी सब छुडायदिया सो आनंद पूर्वक अभ
य होय करके अपना राज काज करने लगा
और तिसराजाने चंद्रहासकी बाल्य अव
स्थामें तिसके पिताको मार दियाथा सोसे
ना चढाय करके तिसका राज सब और
धनधाम सब छीनकर अपने आधीन क
रलेता भया नाभा दासजी कहतेहैं किहे

३६८
भ०
६५

65 ज

संतो इस प्रकार इह चंद्रहासकी मनोहर गा
था मैने आपके आगे गायन कीहै देखिये ।
शालिग्राम के पूँनका कैसा अदभुत प्रभावहै
कि जिसके प्रसादसे महा घोर डख और
वडी कठिन डसतरनी आपदा कि जोतरीन
हीं जाती तिससे सहजेही तरकर और सर्व
कलेशोंसे नछुत होयकर चंद्रहास तिसके
टिकराज और सुखको प्रापत होताभया तो

६५

ते संसारमै भक्तीके समान और कोईभी सुख।
का सुगम साधन नहीहै इह भगवानकी भ
क्तीहीं सहजे सर्व सुखोंके देनेवाली और अप
दा कलेशोंके नास करने वालीहै तोंने इस वा
रताको हृदय मे विचार कर जो कोई सुख।
और संपती को प्रापत कियाचाहै तो लोक
और परलोक मै सुखदेने वाली इह भगवा
नकी भक्तीजोहै इसी को आधार करलेवे। ७

के

३६८
भ.
६६

इतिश्रीभक्त विनोद ग्रंथे भगवद भक्ती महात्मे भाषाटीकायां चंद्रहास चरित्र वरणनं नाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत

66

तीनदिन वतीन होयगये जब अथम चौथे
दिन फिर आया तब भी तिसको धनके हर
नेका समय नहीमिला क्योंकि भक्तो की र
क्षा करने वाले भगवान जहां आप रखवा
रेथे नहां चौरकी क्या सामर्थथी जो धन को
हरले जाता अंतको चोरने अपना बल कु
छ चलता नहीं देखा तो हार करके लजितभ
या हुआ तलसी दासके पास आयकर अपना

सब वृत्तांत सुनाय देता भया और कहने ।
लगा कि हे भक्त प्रधान तेरे चरमै जो धनुष
बाण धारी कमलनेत्र और मेघवत शरीर
की शोभावाले सिंह वत पराक्रमी और पीत
वस्त्रधारी कोटि कालभी जिनको देख कर
के भय मानताहै और भक्त जनोके सुंदर भू
षण है मै तिनको प्रकट देखने चहताहूं ।
तब तुलसी दास तिसका कथन सुनकर ।

हृदय मै अत्यंत प्रसन्न होते भये और तिस

को कहने लगे कि हे भाई ऐसे कमल

नेत्र और सुंदर छबीवाले धनुषबाण धारी

महावीर धीर मेरे घरके रख वारे कब देखे

हैं ।१२। चौपाई । चोर बदन निज बचन अला

वा । मैं निसि अनुक सदन नव आवा । हरषत

हृदय इष्ट रुचि मानी । सो भट बान समान

न पानी । डाटे दीख सजग रख वारे । त्रासत

॥ भ० ७१

चल्यो धीर उर हारे। त्रितिये दिवस बहुरि जव
आवा। सोऊ मदन मोहन छवि छावा। जा परथ
कित भवन सव सोभा। देखत भक्त मोर मन
लोभा। अव दाया करि देहु दिखाई। तुलसी
जान लीन रघुराई। वोले तासु वचन मृदु वानी
अहो धीर तव धन्य अमानी। जासु दरस हित
कोटि उपाये। संत सिद्ध तापस रिषि गाये। क
रत न अविर भूत प्रभु होहीं। तव जन विदत

नैन भरि सोंही। देखे अखिल भुवन पति रा
मा। अब नृप भयो विगत सब कामा। निज
उर धारि ध्यान प्रभु सोई। विचरहु अभय भक्ति
भ्रम खोई। बैर सुनत तुलसी असबानी। निज
कहेहु कृत्य कृत्य जगजानी। नाय सीस निज भ
वन सिधारा। राम सरूप लीन उर धारा। इन
विचार तुलसी जीयकीना। अहो महान नीच
चितचीना। जाहि हित हरन त्रास संसारे। मोरे

सदन भये रविवारे। दीना नाथ विठल प्रेम
लीना। मै इह डष मीन कसकीना। अस वि
चारि मंजल यन धामा। तलसिदास मान
सनिस कामा। कौन विभक्त संतजन दीना
निरभय आउ राम पद लीना। विचरन ल
गेण धरनि तलमाहीं। आन भरोस राम वि
नुनाही। अब सर एक विप्र जन कोई। संद
रजवा वैस जन होई। दोहा। काशी मरन वस

२१
भ०
७२

72

भयो उज सह गामनि तीय नास। होन चली
पावक जरन तजत जियन जग त्रास।४।
टीका। तब चोर कहने लगा कि मै अमक
राजीको धनके चुरायले जानेके वास्ते न
मारे चरमै आयाथा तहां सो धनुष बाण
धारी महांसूरवीर तमारे रखवारे देख
कर तिनके भयसे मै धीरज को त्यागे हुये
भाग चला और तीसरे दिन जबमै फिर आ

२४ मे॰ ७२

73

था तब भी सोई मदन मोहन कि जिन परम
रव भवनो की शोभा थकत हो रहीहै मेरा
मै देखपड़े मै तिन की अनंत छवी और अ
नेनही रूपपर मोहित होय रहाहूं हे भक्त
रूष अब कृपा करके सो मनोहर मूरतीवा
ले मेरेको दिखाय देवो इस प्रकार चोरके
मुखसे वचन सुनकर तुलसी दास हृदय
मै जानगये कि सो धनुष बाणधारी तोरघु

नाथजी महाराजजीहैं ऐसे विचार कर तिस
को कोमल वानीसे कहने लगे किहे चोर
तूंधन्यहैं और धन्य तेरा जनमहै देखो कि
जिस भगवानके दरसन के वासते संत सि
उ तपसी मुनी अनेक यतन और हठ कर
तेहैं सो भगवान तिनको प्रसन्न होयकर।
कबीदरसन नहीं देते हैं आजतेरे वडे उदय
भागहैं किवे दीनानाथ तैने सनमुख नेत्र।

भर कर देखलिये और तूं सर्व मनोरथों को
पायकर संसार मे सफल होय गया हैं ताते
हे भक्त अब दीन बंधु का सोई ध्यान हृदय
मे धार कर और अभय होय कर जगत
मे विचर तेरे का सरब काल कल्यान ही
होवेगी श्रीतुलसी दास जी की बाणी सुन
कर सो चोर अपने आप को सफल जान
कर और तिनके चरनो पर सीस नाय कर

रघुनाथ जीका सोई सरूप हृदय मे धारन
करके आपने घरको चला जाताभया और
ईहां तुलसीदासजी हृदयमे विचार करते
भये कि अहो इह धनजोहै सो महां नीचहै
देखो जिसके नमित्त संसारका भय निवार
ण करने वाले तीन लोकके नायक भग
वान मेरे घरमै आय करके रखवारे वने
और कृपा निधानने बहुत श्रम और कले

भ॰ ८८

75

श्राणाया तांते मैने इस उष्टको क्यों अपना मी
न बनाया इस प्रकार विचार करके घरका सं
पूर्ण धन जो था सो संत जनो और अतिथी ब्रा
ह्मणों को बांटदिया आप निरभय और नि
स्काम होय कर रघुनाथ जीके चरनोमे ली
नभया हूआ हृदय मे रामनामकाहीं आधा
र राखेहूये पृथवीतल परसंक विचरने ल
गा तब एक समय जबा अवस्था एकब्राह्मण

निर

८८

कासीमै जो सत्य होय गया तो तिसकी स्त्री ज
गत मै जीवने की आशा त्यागकर पतीके सा
थ सहगामनी अर्थात सती होवने लगी। ॥ ष
चौपाई। देखमग तुलसी अभिरामा। सीयजो
रि करकीन प्रणामा। लाख्यो नमर्म भक्त वर
काहू। हरषि दीन आसिख मनखाहू। सुधी
होहु पती मनभाई। सुभ सौभाग्य वती स
खपाई। अथो वदन सीय लगी विचारन ॥

भं
७६

76

मैगवती पतिमन वधु जारन। अब तव भा
गन सेत वनाई। तव बोले बांधव समदाई
विधवा भई नाथ इहकाला। तव आशिख।
अवदीन कृपाला। सत्य वाक्य कस होहिं
तमारा। अहो संत हित करन उदारा। अव
लो विप्र वचन संभारो। मिथ्या नाहिंन।
नाथ निहारो। इहकर्म फल दायक प्रभु
होना। ऊखर धरनि बीज जिमि बोना। तल

सी आवत ङ्गते आनाये। तिन कर कथन सुन त विसमाये। आये वङ्गरि देवसरितीरा। ले त वसन सिन मृतक सरीरा। सादर करत अह्नादन नामा। वैठि निकट तुलसी गुण गामा। पावन मंत्र वदन सियरामा। लागे रटन भक्त प्रदकामा। ललित सरूप राम उरआनी। लागे विविध प्रसंसन वानी। हे मार धरनि धेनु डुख हारे। हेहर हृदय भ

२५
भ.
७७

77

क्त सुख कारे। हे प्रभ जलध नील घनकाया
सदाकरन जन दीनन दाया। हे भुज दंड चं
ड खल हरने। हे अखंड मंडिन सुरसरने।
हे गंगादि करन पद पावन। शिव ब्रह्मादि
देव मन भावन। हे हरि नेति निगम जग ९
गाये। हे प्रभ भक्त देव द्रुम छाये। हे जग च
रन तरन मनि नारी। हे जग ग्राह ग्रसत उ
नकारी। हे व प्रसार हलनर धारी। हे प्रहला

द करन सख कारी। हे प्रभु कुपद सनादि सहै
या। हे करुणाभरन भरनक जैवैया। दोहा। मै
करि चुको कृपायतन वदन वचन निज ए
ह। करहु सजीवन उनहिं अव प्रभजन दी
न सने हु। विषधरनि सर सदासुख करन
आस संसार। तोते उनकहं करहु प्रभु प्राण
दान उपकार।।५। टीका। नव रसने मे नल
सी दासजीको देख कर सो सौ हाथ जोडक

श्री
भं.
२८

र चरनो पर प्रणाम करती भई भक्त स्रष्ट तु
लसी दासने कुछ मर्म अर्थात भेद नहीं जा
नाथा हरष पूर्वक तिसको आसीस देकर
कहने लगे कि हे पुत्री तं सुंदर सुहागवती
और अपने पतीको परम प्यारी हो तब सो
स्त्री सुनकर नीचेमुख करके हृदय मै विचार
करती भई और कहने लगी कि हे दया की
निधी संत मै तो पती के साथ जलने को चली

२८

जानीथी अब तुमने मेरेको सौ भागन अर्थी
न ब्रह्मागन बनाय दियाहै इतने मे तिसके
बांधव जन बोल उठे कि हे नाथ इहतो विध
वा स्त्रीहै और तुमने इसको कृपाकरके सौ
भागकी आसीसा दईहै हे हितकारी संत
अब इह तुमारा वाका कैसे सत्य होवेगा अ
वलग संसार मे ब्राह्मणका वचन मिथ्या न
ही देखाथा अब इह कैसे फल दायक होवे

गा जैसे कल्लर वाली भूमीमे बीज नहीं उगता
रहै तैसेही प्रतीत होताहै तिस समय तुल
सी दासजी सनान करके चले आवतेथे ति
नका कथन सुनकर बडे आचर्ज को प्राप
त होयगये ततकाल तिनको साथलिये
हूये श्रीगंगाजीके किनारे पर चले आये
और स्वेत वस्त्र लेकर तिस मरेहूये पुरष
के शरीर पर उढायकर आप तुलसीदास

तिसके पास आसन लगाय कर बैठ जातेभये
और परम पवित्र राम नाम मंत्र जोहै सोनि
रंतर होय करके मुखसे उचारन करनेल
गे और राम चंद्रजीका ध्यान हृदय मै धार
कर नाना प्रकार असतुती भी करनेलगे
कहतेहैं कि हे गौ ब्रह्मण पृथवी और देव
ताउंके दुख कलेश हरने वाले हे दीनोके
सहायक हे भक्त जनोके सुखदायक हे नी

२१
भ॰
८॰

ले बादरके समान शरीरकी शोभावाले हे प्र
चंडभुजधारी हे आकाशसंचारी हे भगवान न
मकैसेहो कि गंगादि नदियों को अपने चर
नकमलोंसे पवित्र करने हारेहो और शिव।
ब्रह्मादि देवताउंके मनको भावते हो वेदभी
तुमारे अंतको नहीं पावता नेत नेत करके ही
गायन करताहै हे भक्त जनोंके कल्पवृक्ष हे गौ
तममुनीकी स्त्री अहल्या को तारने वाले।

८॰

हे ग्राहके ग्रसे हुये गजको छुड़ावनेहारे हे
नरसिंह रूपधारी हे प्रह्लादकी रक्षा कर
नेवाले हे द्रौपदीके सहायक हे कृपारूपी
अमृत करके मृतक शरीरों को जीवदान दे
नेवाले हे दयाके समुद्र मै तुम्हारे चरन क
मलोंका दास अब मुखसे वर्णन कर चुका
हूं हे मेरी लज्जा तुमको ही है अपना भक्त
पाल विरद सम्हारकर अब इस ब्राह्मण को

उपकारसे प्राण दान देकर सजीवन करदे।
दो ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ मोहि किंकर निज चरननजा
नी । द्रवहु देव धनु सायक पानी । जनकर व
चन सफल प्रभु करहो । विप्र पतनि जिय
शोकनि वरहो ॥ जिमि पूरव मोरे रघुराई । देह
होत नव सदा सहाई । तिमि अब देहु सजन स
जगमोहो । वंदहुं बारबार प्रभु तोही । अस प्र
कार असतुति मन लीना । इंद्र जाम जब गयो

भ. ८। ८१

वतीना। तव प्रभु भक्त सुखद हितकारी। राम
वेद जन शोक निवारी। नृपन जिवाय विप्र
वरदीना। अदभुत चारु चरित प्रभु कीना।
राम राम अस उठ्यो उचारी। तेसमाज सब ह
गन निहारी। वाल्मी ईहां कवन हित आये
आन मीच तव वदन अलाये। तव सनभ
ये आज जग नेहू। प्राण दान दायक पित
पहू। जो उपकार विदन इन कीना। सोकिमि

२५
भं.
८२

82

जाहिं जनम शानदीना। विप्रसनन अस अव
ए प्रसंगा। रोम रोम जन हरष उमंगा। त
लगि चरन नंमत सिरनाये। लागेण सजस
विविध भांति गाये। बहुरि सनान करत क
लगंगे। चले सकल मन मोद उमंगे। तुल
सिदास उन आश्रम आये। अस प्रकार कछु
दिवस विहाये। इह प्रभाव तुलसी अभिरा
मा। छाये समग्र नगर भरग्रामा। रुचिर प्र

सादर भक्ति रघुराई। कीरति अतल तुलसि
जगछाई। इहु प्रभाव जब सख्या देलेहु। उ
न केहिन निज हृदय बसेहु। दरसन करहु
भक्त बड़भागी। जो अस राम चरन अनुरागी
अस विचारि सुचि सेवक ताहु। पाइन प्रीति
संजन उतसाहु। सादर प्रेम भक्ति मरसाये।
तुलसिदास तव लीन बुलाये। सघल संत
सुनत भवन सुहावन। तंहा निवास दीन मन

भावन। दोहा। वैठो मनमुख साह तव करि
प्रणाम हरषाय। करहिं प्रसंसन विविध वि
धी वदन वचन सुखदाय। भक्त राज सामर्थ
तव सुन्यो अलोकिक कान। मृतक सजीव
न विदत जग जानत सकल सुजान। अवक
छु हमहूं सहो मत कलित कटाछ दिखाय
निज सेवक करिले हु जग भक्तप्रवर रघुरा
य। ५५। टीका। फिर तुलसी दास प्रार्थना

५५
भ०
८२

८३

करते हैं कि हे दीनानाथ मेरेको अपना किं
कर जानकर दयाकरो जोमेरा इह वचन ज
गत मे सफल होवे और आपकी कृपाके
प्रसादसे इह ब्रह्मणकी स्त्री भी शोकसे छू
टजावे हे भक्तों की पैज राखने वाले भग
वान जिस प्रकार मेरी सरब सहायता क
रते रहेहो तैसेही मेरेको अबभी जगतमे
सन्मान और वडाई देवो मे प्रभु तुमको बार

वार वंदना करताहूं इस प्रकार तुलसीदास

का असतुती करते करते जब एक प्रहर

बतीत होयगया तब भक्तजनोंके हितका

री और भक्त शोक निवारी भगवान राम।

चंद्र महाराज ततकाल ही अपने अदभुत

चरित्रसे तिस ब्रह्मणके जीवता करदेते भ

ये सो राम राम उचारण करता हुआ उठखं

डाभया और अपने आस पास सब समाज

को देखकर कहने लगा कि हे तुम सब कि
सकारन आये हो तब तिसके बांधव जन सन
करके कहने लगे कि हे प्यारे सनेही तूंतो मृ
त्युके वश हो गया था अर्थात मर गया था इह
उपकार की मूरती संत जो सनमुख स्थित हैं
इन्होंने कृपा और परम हित करके तेरे को जी
व दान दिया है इस महात्माने जो उपकार ।
किया है सो तो हमारे से सौ जनम पर्यंत भी

रा॰
भं॰
८५

दिया नहीं जावेगा ऐसे तिनका वचन स्रवण
कर ब्रह्मण जो है सो रोम रोम हरषसे उमगा
हुआ धाय करके तुलसी दासके चरनोपर
गिरपड़ा फिर दोनो हाथ जोड़कर मखसे तु
लसी दासजीका धन्य वाद गायन करने ल
गा तिसके उपरांत सब लोग श्रीगंगाजी मे
सनान करके तुलसीदास जीकी बड़ाई कर
ते हुये और धन्य धन्य कहते हुये आनंद पूर्व

८५

क अपने अपने घरोंको चलेगये और ईहांभ
क्त प्रधान तुलसीदास भी अपने आश्रम को
चले आये इस प्रकार जब कुछक दिन वती
त होगगये तब तुलसीदास जीका इह प्रभाव
जहां तहां ग्रामो और नगरोंमे छायतहो जाता
भया रघुनाथजीकी भक्तीके प्रसादसे तुलसी
दासजीका प्रभाव और महा सुजस जगतमे
भलीप्रकार सब फैलगया होती होती इह ।

५ भ० ८९

महिमा जब दिल्लीके [illegible] बादसाहने सुनी न
व रघुनाथ जीके भक्तके दरसन की अत्यंत
अभिलाषा वाला होयकर और बडी प्रीतीसे
अपना दूत भेजकर तुलसी दासको मनमा
नसे बुलाय लेताभया और बडे पवित्र अस्था
नमे निवास देकर यथायोग्य सब आदर सत
कार किया तिसके उपरांत भक्ती प्रीतीसे आ
प आय कर प्रणाम करके मनमारि बैठगया

80

धन इहिकाहीं। जोलो निज प्रभाव कछुनाहीं

हमहूं दिखाव सकल जनि करना। जव अस

साह वदन निजवरना। करन लरेत भलन गा

हिलीना। वंधन भवन भक्त हरिदीना। नव

तुलसी सुमरण सियरामा। लाग्या करन

रोग उतधामा। अग्र गामि राघव वरकाहीं।

वहुरि सुमर्ण लग्यो मनमाहीं। हेहनुमत न

गाजिन मतिमाना। श्रीरघुपति अति रतिरन

२५
८८
भ.

जाना। हेमाकृत सुन भक्त सनेहू। श्रीति प्रन्त
लन बल बालजनेहू। अंजनि सुत हनु रघुवी
रा। जनमन हरन दोख दुखपीरा। हेविदेप
करन लांगूला। हरन प्रचंड दनुज अगहूला
हे हृदर उर प्रमोद प्रदरामा। हे अव नरण सप
त चनवामा। विपतिकाल कलकरनँ हाई। म
मूर्छित देखि समर अहिराई। कौतुक कलित
द्रोण गिरि ल्याये। लीन सुजस जग लावन।

१५
८८
म

जयाचे। सो प्रभाव अब प्रकट करीजै। दीनाना
थ दीन उर छीजै। कौनसो लंक दगध बलजा
सा। प्रबल चंड दसवदन बिनासा। हेसुर उर
नरीहल जयकरना। इहि दिवाहु बल भक्त उब
रना। जहि प्रभाव करि लंक प्रवेस। बिदत।
मात सिय हरो कलेस। धरि सरूप सलभ
सुविदोय। जिमि दस वदन भवन हर आये
अब प्रभु नाम समति बनराई। करहु सोर

कपिराज सहाई। हेभव भक्त भवन उरखभारी

हेभुज दंड चंड वलधारी। अग्र गन्य सेवक र

घुराई। संसृति अभय भक्त वरदाई। दीन घा

ल सरणा गतलेखी। हरहु दीनउरख हृदय

वसेखी। दोहा। इह विनंति भव नलोसि जन

अभिमत फल दातारु। हरन कष्ट वंधन भक

त नरन करन सख चारु। अस प्रकार स्मर

ण कियो अग्रगामि रघुराय। जेजग नडन प्र

भाव वत ततछण होत सहाय। हनुमत सन

त प्रसन्न जत रामभक्त उछेहेर। ततछण

अगनित वलि मछेन लीन प्रवल अनिटेर ८

टीका। तव तुलसी दासजी कहने लगे कि

हे प्रजापाल हम चमतकार् तो कछु जान

ते नहींहैं केवल रघुनाथजी के चरन क

मलोंकी प्रीतीमानी हुईहै जगतके और

सव खेल विलास जोहैं सो एक नट क्रीडा

सु० भं० ५८ ७०

वन जानतेहैं अपनी सामर्थ्य कुछ नहीं है
घट घट मे सब रामकला ही व्यापीहुई दे
खरहे हैं इस प्रकार तुलसी दासका वचन
सुनकर दल्लीपत जोहै सो परम कोपके
वशहोयकर अपने नौकर चाकरोंको कह
ने लगा कि जावो इसको अवी बंधनागार ।
अर्थात जहिलखाने मे लेजावो जबलग कुछ
अपना प्रभाव और चमत्कारनादिखावै तबलग

५८

इसको नहीं छोड़ना इस प्रकार जब मोह
ने आज्ञादेई तब नौकरोंने तुलसीदास
जीको ततकालही पकड़ कर बंधन च
रमै ले जायकर वंदीकर दिया नहां तिस
बंधना गारमै तुलसीदास वंदी होय कर
श्रीरघुनाथ जीका स्मरण करेन लगे
और तिससे उपरांत फिर मनमै राम चं
द्रजीके परम हितकारी भक्त हनूमानजी

का स्मरण करने लगे कहते हैं कि हे ज
गको जीतने वाले हे बुद्धीकेधाम हे र
घुनाथजीकी दृढ भक्ती प्रीती वाले हे प
वनकेपुत्र हे भक्तजनोके हितकारी हे अ
नलन्त बल वालेहे बालजती हे अंजनीके
सुत हे रघुनाथजी के सुहृद हत हे दास
जनोकी पीड़ा हरने वाले हे दीर्घ लांगूर
के धारनेवाले हे प्रचंड असुरोको वधकरने

हारे हे श्रीरामचंद्रजीके हृदयको आनंद दे
नेवाले हे एकादश रुद्र अवतारधारी हे वि
पति कालमै सहायता करनेवाले और द्रो
णाचल परवतको ल्यायकर रणमै मूर्छा।
भये लक्ष्मणजीको प्राणदान देनेवाले हे
सुजसके सागर महा वीरजी अवकृपा करकै
सोई अपना प्रभाव प्रकट करिये और इस
दीनका कलेश हर करिये और जिस महा

सु. मं.
६२

92

नवलसे अति प्रचंड वलकी निधी रावणका
नाम किया अव सोई वल दिखाय कर जन
के हृदयको आनंद दीजिये और जिसवलके
प्रभावसे लंकामें जायकर प्रवेश किया औ
र सीते माताका कलेश निवारण करके तिस
के हृदय को धीर्जदिया और जिस प्रकार व
उ सूक्षम सुखदायक रूप धार करके दसकं
धरके घरमें आये और तहां अपना अनंत ।

प्रभाव दिखाया अब तिसी चतुराई और सम
ती सामर्थ्यसे हे कपीराज मेरेसहायक हो
वो हे संसारमे भक्तोंका भय हरने वाले हे
भुजोंमे प्रचंड वलके धारने हारे हे रघुना
थजीके सेवकों मे प्रधान और दृढ सेवक
हे जगतमे भक्त जनोंको अभय वरके देने।
वाले अब मेरेको शरणागत जानकर इस
बंधनागारके कलेशसे निवारण करिये।

इस प्रकार इह तुलसी दासकी विनती जो
है सो जगतमै मनवांछित फलके सिद्धक
रने वाली ओर वंधन कष्ट इत्यादि सब क
लेशोंको हर करके मानुष्यों को सर्व सुखों
के देने वालीहै ऐसे तुलसीदासजीने जब
रघुनाथजीके भक्त शिरोमणी हनुमान जी
की असतुती करी तब विजलीके प्रभाव व
न ततलण सहायता करने वाले हनुमान

२५ भं. ८३

८३

जी लक्ष्मणकर्के प्रसन्नहो जातेभये और रामभ
क्त लक्ष्मीदासजीका दुख और कलेशदेख
कर ततकालहीं अगनित वानरोंकी सेना
को कि जिनकी कछुगिनती नहींथी प्रकार
लेते भये । ९ । चौपाई । अस प्रकार वानर ज
ब आये । चले मार धर मार अलाये । जब द
लीस ७२ कीन प्रवेस । तब मारन लागे दीन
नदेस । संकल लोक नगर जनराई । करहु ।

विदलन पलन अवलाई। करि कदर्थ मरदन

सवकाहीं। देहु प्रमोद नलसि मनमाहीं। वा

नर सुनत वचन हनुमाना। एवमेउ इंद्रप्रस्थ

पुरनामा। कट कटाय मख मकर्त्ति चलाये।

प्रसतर धूलि करन गहिधाये। द्रुमन उपारि

विपुल विसराते। चले मनहुं वारुणि मद

माते। रद लांगूल नख नवसंगा। क्रीडन ल

गे मनहुं महिरंगा। अतिडर दशा कीन सव

काहू। हाहाकार शबद सुनि साहू। व्याकुल उ
ठ्यो देखि विसमावा। इहु का भयो कवन विधि
आवा। अनन कौन परिवारन साहू। हनन
परहिं वानर जनि काहू। तोला कट कटान
करि आये॥ वानर कटक कठिन विसछाये ॥
धाय धाय धरि मारन लागे। विथन नभकहिं
कितनहु अनभागे। धरि वहाय जमन जलका
हू। हने काहु मनभाव धरि साहू। कौन सक

५१
भं.
५५

95

ल मनवत भत नाहीं। रय जात पकरि लीन न
रनाहीं। गहिकच वदन प्रहारत पाना। विह
सि हसि निरत करावत नाना। मरण पर्यंत
भया तव माहू। आन लोग पीडत सवकाहू।
जो सीयराम शवद श्रम कैहीं। जानि भक्त प्र
भताहत गैहीं। सचिव प्रवीन मरम श्रमपाई
गुपत माहमन दीन जिताई। राम राम सव क
रहू उचरना। सो कलेश सव होहिं निवरना ॥ ५५

दोहा। तुव तुलसी अभि मत बरहो बेगहु भ
यो बहोरि। तो स्वामिन निज प्रजा जन बपुड
ख लीनन घोरि। ते त्रिभुवन धनि राम कर भ
क्त बचन मनकाय। तव कीन्हो अपमान त
हि बंधन गार पठाय। मैं हनि राख्यो बिप्र
भत्व सदा राम असवान। संहति निज सीय
भक्तकर साहिनस काहिं अपमान। १८। टी०।
इस प्रकार जब बानरों के समूह आयगये

९९

96

तव मारोधरो मारो धरो कहते हुये चलपड़ते भये और जब चलते चलते दिल्लीनगर में आय पहूंचे तब पवन के पुत्र हनूमानजीने आज्ञादेदई कि अब विलंबको त्यागकर दिल्लीपतके सहित सब नगरके लोगों को भली प्रकार निरादर करके मरदन कर डालो और तुलसीदासको प्रसन्न करके बंधनागारसे छुड़ायदेवो ऐसे हनूमानजी

९९

की आज्ञापाय करकै वानरजोहैं सो इंद्रप्रस्थ।
अर्थात दिल्ली नगरमै प्रवेश करते भये औ
र मुखसे कटकटात शब्द कर कर भकु
टी जो भवांहैं सो चढ़ाय कर पाषाण धूडी
और वृक्ष हाथों मै धारे हुये मानो मदकर
के मत्त और कोपसे भरेहुये दांत लांगूर।
नख और नखोंसे मानो रणभूमीमै युद्ध क
रने लगजाते भये तब तो सब लोगोंकी श्रे

भं. ५८

सी उग्रदशा होतीभई कि चारोपासे हाहाका
र शब्द मचगया इस अनर्थको देखकर
साह व्याकुल और अचरजके वशभया हु
आ कहने लगा कि अहो इह नगरमे का
भया और कौन ऐसा प्रबल शत्रु आयगा।
याहै इतने मे सब नौकरों चाकरोंने आय
कर साहको घेरापायकर बीचमे लेलिया।
मन ऐसानाहो कि वानर आयकर अपमान

और उरदशाकरदेवैं इहां वानरोंकादल जो
कोपाय मान होय रहाथा ततकालहीं कट
कटात शवद करते और कोपसे भरेहुये सा
हके ऊपर आयपडे तहां तिसके रक्षक और
भक्तसेवकोंको पकड पकड कर मारनेलगे
सो व्याकुलभये हुये कहीं भागनहीं सकते
हैं तिनमेंसे केते तो जमनाके जलमें वहा
यदिये और केते साहके सनमुख ही पकड

स
भ
६८

कर मारदिये जितने सेवक नौकर चाकरथे
सो सब भस्मकरदिये कि मानोमरे हुयेहैं ति
सके उपरांत स्त्रीके सहित साहको भी पकड़
लिया और केसोंसे पकड़कर मस्तकपर नग्ना
वेमारते और हस हस कर नृत्य करावते हैं
तव साहजोहै सो मरने प्रयंत होयगया औ
र लोगोंको भी परम दुःख और कलेश प्राप
तभया तिनमे से जो कोई सीघ्रराम शाहको

98

६८

उच्चारण करता जिसको रघुनाथजीका भक्त
जानकर छोड़देते तब साहका मंत्री अर्थात
वजीर इस मर्मको पायकर आय करके गु
पतही साहको कहने लगा किहे नाथ अब
यही उचित है कि राम राम शब्दको उच्चारण
करो तो तुमारा रह दुख और कलेश सबछू
ट जावेगा और सुखको प्रापत हो जावोगे।
देखो कि पहिले तुम तुलसीदास के मन

स्व
भं
५५

११

सुखेथे अर्थात अनुसारीथे और अब वेमुख
हो होयगये हो इसीते प्रजाके सहित शरीर मे
परम दुख और कलेश पायाहै सो कैसा भी
तुलसीदासहै कि तीनलोकके नायक जो रा
मचंद्र महाराजहैं तिनका मन वचन काया कर
के दृढभक्तहै और तुमने तिसका अपमान
करके वंदीघरमे भेजदियाहै हे प्रजापाल मै
ने ब्रह्मणों और विद्वानोके मुखसे सुनाहूआ

है कि रघुनाथजी महाराजकी ऐसे वाणहै
कि जगतमे अपने प्यारे भक्तका अपमान क
बी सहार नहीं सकते हैं। १९। चौपाई। याते रा
म भक्त हनुमाना। आर्वलेत निकर अनिनाना
कौन विविध उरदसा हमारी। प्रभ स्वामिन।
निज हृदय विचारी। जगकर जोरि वदन सी
घरामा। वार वार प्रभ रटहुलि लामा। पद
चर नगान पाद पुनि जाई। त्राहि शबद प्रभ

सुं॰
मं॰
१००

100

वदन मलाई। तुलसि दास चरनन सिरना
वहु। निज अनुचित सब दसा करावहु। सु
निअस सचिव कथन वहुवारा। राम राम
सब साह उचारा। वानर सुनत राम सबुना
सा। तैसो जानिजिय रघुवर दासा। सेवत प
तनि साह अकुलाई। पदचर तुलसि दासपैं
आई। परो दंडवत चरनन आई। त्राहि त्रा
हि अस वदन मलाई। त्रमहु त्रमहु।

१००

मोहि जानि अजाना। तुलसी भक्त राम भगवा
ना। हमहूं कुटिल दुरमति दुरचारा। साधु स
बल तव चूक निवारा। कुमति कीन जस अनु
चित तोरा। नाथ ताम फललीनन थोरा। तुल
सी सुनत कथन अस ताहू। बोले पुल कि व
चन उतसाहू। भाषा प्रथम सत्य सब नाहीं।
कलु संसृति सामर्थन मोही। सकल प्रभाव
रामभगवाना। सो अब विदन लीन तवजाना

भनत साह चरणन सिरनाये। किये प्रसन्न भक्त रघुराये। तव तुलसी दरसन हनुमाना पाय सफल जीवन निज जाना। करि पूजन संजुत अनुरागा। कीन विदाय भक्त वरभागा। सुमरि राम वानर समुदाई। निज निज गये हरष सरसाई। तव तुलसी उर आनंद छाये। चले भवन जव होत विदाये। साह नेम्र च रनन सिरनाई। विन जुन कीन विपुल सिव

१०१

काई। भक्त सुख सईकार नकीना। तव दली
स उर हरषि प्रवीना। निज अनुचित सवन
सा करा ई। विनय बहुरि अस बदन भलाई
मोहि उपदेस कवन प्रभ राहा। दयापुरुष त
लसी तवकाहा। तव निज वदन रचन सन
माना। सुअत भवन राम भगवाना। आवत
अतिथि संत सतकारा। करन बहरु हित।
होहिं तमारा। दोहा। अस उपदेसन वदन

रा
मं.
१०२

नहि हृदय सुमरि भगवान। तुलसी हृदावि
पुन कहूं कौन हरषि निज ध्यान।२९। टीका
मंत्रीकहताहै कि इसीतें रामचंद्र जीकाह
न हनूमान अनेक प्रकार की सेनालेकरके
आया और हमारी बहुत दुरदसा कीहै इस
वारताको हृदयमें विचार कर हे नाथ अव
वार वार सीये रामहीं मुखसे उचारणकरो
और नांगेपाऊं हाथजोडकर त्राहि त्राहि कह

102

ने हुये तुलसीदासजीके चरनोपर चल करके
सीस धरा और अपना अपराध क्षमाकरा
वो इस प्रकार मंत्रीका कथन सुनकर सो
सुजोहै सो हृदयसे द्वेषको त्यागकर तत
काल राम रामसीये राम ऐसे उचारनेलगा
तब वानरोंने जिसके मुखसे राम राम शब्द
सुनकर और रामचंद्रजीका भक्त जानकर
तुरतही छोडदिया फिर तहांसे छूटाहुआ

पतनी

सोइ अपनी अर्थात स्त्रीके सहित व्याकुलभ
या हुआ नागपाङ्ग त्राहि त्राहि कहता हुआ ।
तुलसी दासजीके पास आयकर दंडवत च
रनो परगिर पडा और फिर हाथ जोडकर
विनती करने लगा कि हे रामचंद्रजीके प्रवी
न भक्त तुलसी दासजी हम कुटिल दुरमती
और दुराचारी महामंदहैं तुमसाधू सरल सी
ल परम उदार और सदा उपकारकी नयीहो

अब कृपा करके हमारा अपराध और अनवि
न सोहै सो क्षमाकरिये क्योंकि हम अज्ञान औ
र बुद्धीके हीन तुमारे अनंत प्रभावको कुछ
जान नहींसके हम अधमोंने जैसी अवज्ञा
करी तैसाही फल पाय लियाहै इस प्रकार
राजाकी विनती सुनकर तुलसीदासजी आ
नंदसे कहनेलगे कि हे प्रजापाल मैने तो
तुमको प्रथमही सत्य सत्य कहिदियाथा

२५
भ०
१०५

किहमारी जगतमें कुछ सामर्थ्य नहींहै ज
हां तहां सब राम प्रभावहीं व्यापत होय रहा
है सो अब हमने प्रतक्ष देखलिया तब साष्ट
ङ्ग करके फिर चरनोपर सीस नावताभया
तुलसीदासजी अन्तर्ध्यान होयगयेतिसतें उप
रांत रामभक्त तुलसीदासने जायकर हनू
मानजीका दरसनपाया और अपने जनमको
सफलजाना फिर भक्ती प्रीतीसे भजन करके

१०५

164

20

अथगोदा अंबा चरितं। दोहा। जासु कृपातें ब
यर अति मनहिं ज्ञान सावदान। ग्रंथ अम
ल कल जोति हग लेहिं विदत जगजान। अक
जाहि कृपा कटाक्षतें होहिं मूक वाचाल। पंगु
चढहिं गिरिवर गहन पाय प्रसाद कृपाल।
अस करुणा मन सिंधुके सुमरि चरन जल
जात। संत सुजस गुण विमल कछु करहुंक
थन अवदात। चौपाई। विप्र चित्र कन्या इक

२९
भ
१

गाई। गोदा ग्रंवा नाम सुहाई। नामकथा अद
भुत सावदानी। ईहों भनत कहु करहु सवा
नी। विश्वचित इक नवल लिलामा। विरचत
रहो तुलसि आरामा। सोचित नाम दिवस इ
कनाहीं। मिली एक कन्या मुनिकाहीं। देखि
सील निधि रूप कुमारी। लागि दया नहिं सके
सहारी। सुताजानि अति प्रीति समेता। ल्याय
हरषि निहि हविरन केता। लगे तासु पालन।

मुनि राई। तब नमि स्वपन दीन जउराई। ज
व हमकोलव पुष धरिलीना। धराउधार
विदत जगकीना। तब स्वैहो मेदनि असमो
ही। कैानसीय पूज प्रभु तोही। रीजहु कैान
जनन सिवकाई। तव मै कहो तासु समुभा
ई। सुनाहमन मोहि प्रीय लागै। असुसेवन
सजन अनुरागै। कीर्तन नाम मोर संसारा
करहिं अनन्य मोर निरधारा। तापर मम।

न

भ
२

अनुराग नयोरा। लेहिं वजाय मुक्ति वरजोरा। ताते ममउपदेस सुहावा। हृदय राखि सेदनि मनभावा। भईकन्य का रूप निधा नी। तुमरे भवन वास रुचिमानी। जो रहिहैं सेवत पहि काहीं। तो तुमरे कछु दुरलभ नाहीं। दोहा। अमरजनी देष्यो सुपन विस्त्र वित मतिधीर। उठप्रात गति भागवड वट न रटत जडवीर। १। टीका। नाभादास कह

२

तेहैं कि जिस परमात्माकी कृपातें बधर जोबो
ला सो कानोंमें प्राप्त स्रणने की शक्ती वाला
होजाताहै और अंध जोहै सो नेत्रोंमें संदर जो
ती और प्रकाशको पायलेताहै और जिस की
अनुगृहसें मूकजोगुंगा सो वाचालहो जाताहै
अर्थात वाहता अलाप करने लगजाताहै। औ
र पंगूजो लंजा सो परवत पर चढ जानेकी सा
मर्थ वालाहो जाताहै ऐसे कृपा सिंधु भगवान

के चरन कमलोंका स्मरण करके संत भक्तोंके
गुणगण और निरमल सुजस जोहैं सो यथाम
ती कुछ गायन करताहूं एक विप्र चित्र नाम
करके मनीष्य तिनकी कन्या रूप निधी और
गुणोंकी खानी गोदाअंबा नामा जिस प्रकार।
प्रकट होतीभई तिसकी अदभुत और आनंद
के देनेवाली गाथा जोहे सो इहां प्रीती पूर्वक क
थ कथन की जातीहै कहतेहैं कि विप्रचित्त।

मनीने अपने अस्थानपर एकनवीन वडीसें
दर तुलसीकी वाडीकी रचनाकरीथी एक
दिन तिसवाडी को जल देते देते तिनको त
ह्रांसे एक कन्या प्रापत होयगई तिस सील
और रूप की निधी कन्याको देखकर दयाके
वश भयेहुये मनी पुत्री जानकर प्रीती सन
मानसे अपने घरमे लेआये और दिन दिन
तिसकी पालना करने लगे तब एक राजाको

२. भगवान सपनेमैं तिसमुनीको कहनेलगे

भ. किहे मुनी जबमैने वाराह रूप धारकरके

५ पृथवीका उद्धार कियाथा तब पृथवीने मेरे

से पूछाथा किहे भगवन तमको कौनसी

पूजा प्यारीलगतीहै श्रोर श्रपने दासको कि

स सिवकाई पर तमरीझतेहो तब मैंने तिस

को कहा किमेरेको पुष्पोंकी पूजा श्रतसे क

रके प्यारी लगतीहै श्रोर संसारमै भक्तीप्रीतो

४

पूर्वक मेरे नामका सुमरण और कीर्तन जो
करने वालाहै तिसपर मेरा प्रेम थोड़ा न
हीं है बहुतहीहै सो ऐसा मेराभक्त तिससे
देह होय करके मेरे परम धामको जाय प्रा
प्त होताहै इस प्रकार मेरा उपदेस जोया
सो पृथवीने हृदयमे धारकर और कन्या
होयकर इहां तेरे भवन मे आयनिवास कि
याहै अब हेमनी जो तुम इसको भलीप्रका

भ॰
५

र सेवते रहोगे तो तुम्हारेको कछुभी डरल
भ नहीं होगा सर्वप्रकार करके सबही प्राप्त
होवेगा। ऐसे रात्रीको स्वपन देखकर पी
रजके धाम विसमित प्रातःकाल होतेहीं अ
पने भागोंकी वडाई जानकर हस हस रट
ते हृदय उठ खडे भये ॥१॥ चौपाई। जान कर
म कन्या करकीन्हा। महामोद दंपति मन ली
न्हा। समयपाय कन्यानवमोई। जवावैसहकरे प्रापनहोई

कुसुम कमल पद प्रेम जुड़ानी। कुसुम कुसुम निस
वासर वानी। सुमनमाल हरि हेतु रचावैं। ह
रि गुण विमल सुजस मुख गावैं। सुमन मा
ल वनमाल सुहावन। तासु सप्रेम रचित मन
भावन। विस्वचित्र नितदा मनरीती। रंगनाथ
कल भवन सप्रीती। जाय अनुपम हरष सव
साई। देतरुचिर निज करन चढ़ाई। एक सम
य गोटा मनभाई। ललित करन निजमाल।

रचाई। मोलीन्यो आपन उरधारी। पुनिकर गहि
नम्रकर सुकमारी। निजसुज धन कल देखनलागी
आपगये तव पित बडभागी। लषि उखिष्ट वन
माल कुमारी। नूतन विरचि ललित मन हा
री। रंगभवन डुतजाय प्रवीना। प्रभुहिं करन
पहिरावन कीना। दोहा। रंगनाथ भगवान न
व देखि नवल सुजनैन। विस्मित कहे वि
हसि मुख भने ललित मरु बैन॥ २॥

६

टीका॥ नव कन्याका जात कर्म जो है सो विधी पूर्वक सब क्रिया होने स्त्री भरता वडे आनंद को प्रापत भये फिर समय पाय करके सो कन्या जुवा अवस्थाको प्रापत हो जाती भई और कुल भगवानके चरन कमलोंमे प्रीती वाली होकर रात्रीदिन कृस्नके भजन स्मरणीमेही लीन रहती सुंदर पुष्पोंकी माला भगवान के वासते अपने हाथसे वनावती और भग

वानकेहीं पवित्र गुणगान बाद गावती रहती
तिसके हाथकी प्रीती और प्रेमसे रचीहुई म
नको भावती पुष्पमाला और तुलसी की मा
ला विस्नुचित्तजोहै सोटासोकी रीतीसे वेडहुव
ए और आनंद पूर्वक लायकर रंगनाथ भगवा
नको नितहीं चढायदेता तब एक दिन गोदाने
अनसे संदर और मनोहर माला बडी प्रीतीसे
बनायकर फिर अपने ही हृदयमे पहिर लई

और हाथमै दरपन लेकर अपनी सज धजको
है सो देखने लगी इतने मै तिस कन्याके पि
ता विस्मचित्त तहां आयगये और कन्याकी उ
छिष्ट अर्थात पहिरी हुई तुलसीकी माला
देखकर तुरतही और नवीन रचकर रंगना
थभगवानको जायकरके अपने हाथोसे प
हिराय देतेभये तव रंगनाथ भगवानसो न
वीन मालादेखकर वडी कोमलवानीसे मस

काय कर विस्वविनको कहने लगे । २। चौपा
ई । गोदाकर जूठी स्वज जोई । पहिरावहु मोरे
तम सोई । जदपि ललित इहमाल तमारी । पै
मोहि गोदा कर अति प्यारी । तव नवीन सवि
तें अधिकाई । सो जूठी मोरे मन भाई । विस्ववि
न सुनि भगवन वाचा । अपने उर अति आनं
द राचा । सुता सहित वन मालहिं लीन्या । रंग
नाथ कहं अरपन कीन्या । तव भगवन गोदा

कहंदेखौ। भनेवचन ज्ञन कृपा वसेखौ। रा
खौ सुनाहिं भवन निजस्तानी। हम ब्याहव
हहि सुयंवर ठानी। विस्वचित्त सासन प्रभुली
न्हौ। सुता समेत गवन गृहकीन्हौ। एक समै
य गोदा सुकुमारी। हरषि पितहिं यसवचन
उचारी। तात विदत ब्रह्मांड मझारा। केतेदि
व्यधाम निरधारा। सुनि पुनीत गोदामख
वानी। विस्वचित्त मानस सुखमानी। जेतेदि

ब्रधाम हरिपावन। लखे पाहरखि निज सुताहिं
सुनावन। दोहा। सुनगोदे मेरो कथन सो अवधा
न निरधार। श्रीवैकुंठ निवसें सदा श्रीवसुदेव
कुमार। टीका। भगवान कहते हैं कि हे विस्व
वित इह गोदाकी पहिरी हुई जूठी मालाजो है
सोई मेरेको पहिराय देवो यद्यपि हमारीमाला
अनंत सुंदरही है परंतु इह गोदाकी मालाजो
है सो मेरेको बहुतहिं प्यारी है हमारी नवीन।

ग्रैार पवित्र मालासे इहू गोदकी जूढी माला मे
रे चित्तके ग्रन्तसे भावतीहै इसप्रकार विस्त
चित्त भगवान भक्त सुदर्शनके वचन सुनक
र हृदयमे ग्रत्यंत सुखमानकर वनमालाके
सहित पत्रीको लायकर भगवाके ग्ररपण
करदेताभया तव भगवान गोद को देखकर
वडीकृपाके सहित वचन कहने लगे किहे
भक्त तुम ग्रपनी इस पत्रीको सनमान पूर्वक

घरमैं गाके हम स्वयं वरकी विधी अनुसार
इसको विवाह लेवेंगे ऐसे विस्मचित्त भगा।
वानकी आज्ञालेकर पुत्रीके सहित अपने
घरको चला जानभया। तब घरमें एक स
मय गोदा अपने पितासे वडे आनंदमे पूछ
ने लगी किहे तात इस संपूर्ण ब्रह्मांडमें दिव्य
धामजोहैं सो कितने प्रसिद्धहैं ऐसे गोदाकेमु
खसे परमपवित्र वानी सुनकर विस्मचित्तहृदयमें

म. १०

10

१०

प्रसन्न होकर भगवानके जितने पवित्र दिव्य
धामहैं सो हरषसे हर्षित भये गोदेको सब
सु नावनेलगे कि हे पुत्री प्रवन्तू मेरे कथन
को निश्चयसे सावधान होकर श्रवण कर
जो श्रीवैकुंठमे तो श्रीवसुदेव कुमारजी नि
वास करतेहैं ।२। चौपाई। पुनि प्रामोद लोक
जहि नामा। शिव सनतन शंकर बलरामा।
लोक प्रमोद प्रद्युमन सुहाये। करहिं निवा

हूये

५४

स हरष सरसाये। अहसा मोद लोक छवि।
छाजे। सानकूल अनिरुद्ध विराजे। सेतदीपम
हं मंडिन संता। वसैं छीर साई भगवंता। ब
दरी धाम नाम जहि गावा। नरनारायण के म
नभावा। वसैं जोगपती हरिपद कामा। नेम
धार नीरथ अभिरामा। मक्तिनाथ महंमदि
न विराजे। सालिग्राम इमत छविछाजे। वसैं
अवध सिय सानुज रामा। जदु नंदन मथुरा

किय धामा । निव सत विश्व नाथ कलकासी
तारक मंत्र देत अवनासी । अभय करत ज
ग जीवन काहीं । शिव समको उदार विधना
हीं । अवनीनाथ विदत जिन नामा । किये अ
वंति अमल निजधामा । हारवती जड ऊमद
मयंक । सरना गत सव हरन कलंक । जेनं
दनंदन नाम कहाने । निवसत नंदग्राम व
साने । हंदावन कल ऊंज विहारु । केलि

भ०
भ०
१२

ध्रुज निरतन बल सवाहू। काली ह्रद गोविंद सहाये। गोवर धन गिरधर छवि छाये। कि रि गोमंत सौरि भगवाना। ह्रदीद्वार जउँति मनमाना। दोहा। निवसहिं संत समाजउ न गया गदा धर देव। वेनी माधव रमरहे प्रयागराज जगसेव। ४। टीका। फिर आमो द लोक जिसका नामहै ताहां संकर वनमें वलरामजी निवास करते हैं और प्रमोद

१२

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लोक जोहै तहांप्रद्युमनजी विराजतेहैं सोसो
दलोकमे अनिरुद्ध वासकरतेहैं और सेतदी
पजोहै तहांसंत भक्तोंको आनंद देनेवालेही
रसाईं भगवान विराजमानहैं वदरीधाम ना
मकरकै जोप्रसिद्धहै तिसमै नरनारायण श्री
भगवानतेहैं और सर्वकामनाके सिद्धकरनेवा
ले जोगपतीभगवानजोहैं सो नैमषारण ती
र्थपर निवास करतेहैं तेसेही भक्तोंनाथमे ।

२॰ भ॰ १३

13

अनंत छवीको उदय किये हुये आनंदहूर्वक

सालिग्राम भगवान विराजमानहैं और अज

धामे जानकीजीके सहित रामचंद्र महाराज

शोभापावतेहैं मथुरामे जदुनंदन भगवान

वास करतेहैं कासीपुरीजोहै तिसमे विस्व

नाथका धामहै औरवे अविनासी तारक मे

उपदेश कर जगतके जीवोंको अभय क

रतेहैं ऐसे सिवके समान और कोई ।

१३

उदार नहींहै श्रौर जिनको श्रवनीनाथजी

कहतेहैं सो श्रवंती नगरीमे निवास कर

तेहैं द्वारिकामे जदुकुल कुदोंके चंद्रमा

श्रौर सरणागतके सब कलंक हरकरने

वाले हंस परमात्मा विराजेहूयेहै श्रौर

जो नंद नंदन नामककै प्रसिद्धहै सो नंद

गाम वरसानेमे वास करतेहैं वृंदावनमे

कुंज विहारी भगवान श्रनेक खेलखिला।

म

१. मे. ७

मों करकेयुक्त शोभा पावतेहैं और काली
हृदमें गोविंद निवास करतेहैं गिरधरभ
गवान गोवरधन में विराजतेहैं और ह
रीद्वारमें जड़पती महाराज आनंदलेतेहैं
गरीगोमंत जोहै तहां सौरी भगवान वा
स करतेहैं और संपूर्ण संतसमाजके।
सहित गदाधरस्वामी गयाजीमें विराजतेहैं
तेसेही वेनीमाधवभगवान प्रयागराजमें रमरहेहैं

७

ग्रौर अपने दरसनसे जगतके सब जीवोंको

सफल कररहेहैं । ४। चौपाई। गंगासागर क

पल कृपाला। नंदग्राम भरत सुखशाला ।

जानकि लछमन सहित रघुनायक। निव

सत चित्रकूट सुखदायक। विश्वरूप प्रभुदे

व प्रभासा। कूर्मदेव कूरम हरिवासा। जंग

नाथ नीलाचल वसहीं। जत बलभद्र सुभ

द्र विलसहीं। सिंहसैल नरसिंह वसैया। ग

२ दानाय तुलसीवन छैया । सेता चलमहं । म
नरहरिस्वामी । करहिं वास निजजन अनु ॥
गामी । लेव पुरातम दोष विनासा । तहं सा
खी नारायण वासा । गोदावरिके तीर सुहा
ई । धरम पुरी सब से स्रुति गाई । तहांहरन
सब संतन पीरा । जोगानंद वसें जड़बीरा ।
क्रस्नावेनी तीर सुहंता । वसें अग्रनायक भग
वंता । धाम अहो वलसपर नगरहीं । श्रीनर १५

सिंह वामनहं करहीं। वरद राज कांची सव
माना। पंडर पुरवि ठुल भगवाना। दोहा।
सेसाचल महं धामकिये वंकट नाथ सदाहिं
नारायण निवसे सदिन श्रीजादव गिरिमाहिं ५
टीका। गंगासागर जोहै तहां कृपाके धाम क
पलजी विराजमानहैं श्रोर नंदीग्राममें भर
तजी वास करतेहैं चित्रकूटमें जानकी श्रोर
लक्ष्मनजीके सहित रघुनाथजी महाराज

१० मे० १६

शोभापावतेहैं प्रभासक्षेत्रमें विश्वरूप श्रौर कू
र्मक्षेत्रमें कूर्मभगवान विराजेहुयेहैं जगनाथ
प्रभू बलभद्रजीके सहित नीलाचलमें वास
करतेहैं श्रौर सिंहसैलमें नरसिंहभगवान
रमरहे है तुलसी वनमें गदानाथजी विराजे
हुये हैं श्रौर स्वेताचलमें दास भक्तोंके
हितकारी नरहरी स्वामी शोभादेतेहैं सर्व
पापोंके नासकरने वाला प्रणाम ॥

१६

देवजोहै तहां साक्षीनारायण निवास करते
हैं और गोदावरीके सामीप धर्मपुरीजो प्र
सिद्धहै जिसमे सवसंत भक्तोंकी पीडाहरू ।
करने वाले जोगानंद भगवान वसतेहैं औ
र कृष्णावेनीके किनारे अंध्रनार्य भगवान क
शोभा पावतेहैं अहो वलधाममे सुपरनग
रकेवीच श्रीनरसिंह वासकरतेहैं वरदरा
ज भगवान काचीनगरीमे और विठ्ठलदेव

सु० ४
१८

पुंडर पुरमै विराजे हूयेहैं सेसाचलजोहै ।
तहां सदैव व्यंकटनाथ भगवानकाधामहै
और श्रीजादवगिरी मै आनंदपूर्वक । श्री
नारायण निवास करतेहैं । चौपाई । नारसिंह
घटिका गिरिराजे । कांची बहुरि रुचिर छ
बिछावे । पारथ सारथि पुरन कामा । पुनि
जयोत्मकारी असनामा । तहां रमापति धाम
सुहावन । तहिनगरी दक्षण दिस पावन ।

१८

निवसहिं भक्त संत सुखदाना। नरहरि ना
मजास विख्याता। पश्चिमदिसा त्रिविक्रमधा
ल। करहिं वास सरणागत पाल। गूढ स
रोवर तीर सुहाये। वसहिं विजै राघव रघुरा
ये। सीतारम्य देश मनभावन। बसैवीर रा
घव जगपावन। सीतादरी हरण उखदीना
रंगसैन प्रभुआ श्रमकीना। राज नगरी राज
सोक निवारन। श्रीहरि वसहिं जनन भव

२ मं १८

तारन। करहिं वासविल पुर अभिरामा। श्री बलराम नाम छविधामा। तीरवती करतीर सुहावन। पुरिगोपाल ललित मनभावन। श्रीगोपाल विराजत ताहीं। अभय करत ज गजीवन काहीं। जे श्री मुषण देश लसति श्रा जो। कोल रूप हरि तहां विराजो। तरुनाग र सदलगामाहीं। वसैं कमल लोचन प्रभुता हीं। कावेरी मध तहांसुहावा। दीप एक भास

१८

न मनभावा। रंगनाथ भगवान सहाये। नि
वसहिं तहां जनन सुखदाये। दक्षण राम
क्षेत्र इक जाहीं। वसहिं राम जन जानकि
तांहीं। श्रीनिवास कलक्षेत्र विसाला। तहं
प्रवन भगवान कृपाला। स्ववरन नगर एक
छविरासा। स्ववरन मुख प्रभु तहां निवासा
श्रीव्याघ्र नामिक ग्रामजेहू। तासथ महावा
हु प्रभु रोहू। दोहा। ग्राम नगर महं चित्र।

भ० १५

हरि करहिं बास सब काल । देश उतपला बर
तैसे निवसत श्रीजदुपाल ।६। टीका । फिरना
रसिंह भगवानजोहैं सो घटिकागिरीमें वि।
राजतेहैं और कांचीमें पारथके सारथी कृस्न
प्रमातमा निवास करतेहैं जथोक्तकारी नामक
कैं जो नगरीहै जहां रमापतीका धामहै और
तिस नगरीकी दक्षणदिसामें भक्तसंतोकेसु
खदायक नरहरी भगवान बासकरतेहैं और

१५

तिसकी पश्चिमदिशा मे शरणागतको पा
लनेवाले त्रिविक्रम देव विराजतेहैं गृद्ध
सरोवरके किनारेपर विजैराघवजी निवा
स कर्तेहैं और वीक्षारण्य क्षेत्रमे वीरराघ
व शोभापावतेहैं अोतादरीमे दीनोके दुख
हरनेवाले रंगसेन प्रभूविराजेहुयेहैं और
गज नगरीमे गजका शोक निवारनेवाले
और जीवोंको जगतमे तारनेवाले श्रीह

श्री॰ भै॰ श्री॰

री भगवान वासकरतेहैं अतसे रमणीक व
ली प्रवजोहै तहांछवीके धामवलरामजीका
आश्रमहै और हीरवतीके किनारेपर वडी
सुंदर गोपाल पुरीजोहै जिसमें श्रीगोपाल
जी विराजेहुये जीवोंको अभयकरतेहैं श्री
मृषणादेवजो प्रसिद्धहै तहां वाराहरूप भग
वान शोभादेतेहैं और दक्षणमें नगनगर
के बीच कमललोचन प्रभु विराजे हुयेहैं ।

२०

कावेरीके बीच एकबडा सुंदर द्वीपजोहै न
हां भक्तोंके सुखदायक रंगनाथभगवान
रमरहेहैं और दक्षणमै रामद्वीव जो प्रसि
द्वहै तहां जानकीके सहित रामचंद्र महा
राज निवास करतेहैं श्रीनिवास जो वडाभा
री द्वीपहै जिसमै पूर्णभगवान शोभापाव
तेहैं और सुंदर सुवर्ण नगरमै सुवर्ण म
ख प्रभु निवासकरतेहैं आज्ञनामक पुरी

जोहै तिसमै महावाहू भगवानका धामहै
तैसेही वाम नगरमै विचहरी औ़र उत प
लवत तिचमै श्रीजडपाल विराजमानहैं। ६
चौपाई। मनि कोटी महं दीन दयाला। वस
हिं महा प्रभ आनंद शाला। सागर नीर कु
ल घरमाहीं। निवसैं महा कुल प्रभताहीं
विल्व छेत्र इक संस्रति गायन ॥ व
सहिं अनंत भक्ती कर दायन ॥ २१

कुलदेव जुत सेत विकासा। तहां लक्षमिना

रायणवासा। सेवत सैल इक निगम वखाना

वसैं शांत मूरति भगवाना। अगति होइ १

२ विदत अनूपा। तहां वसहिं वामन सुरभू

पा। भार्गव देव जवन महिख्याता। तहां नि

वास परस धर गाता। अहै विकुंठ नगर इ

कनामा। वसहिं तहां माधव छविधामा। विद

न गरिष्ट देव जग पावन। सखा भक्त तहं

रा०
भं०
२२

वसहिं महावन। कौंं सदरसन प्रभ द्युति रा
स। चक्रतीर्थ महं रुचिर निवासा। कुंभकोण
पुरि भूत मफारा। सारंगपानि दहुंन पगाधा
रा। तीरथ कलष हरन इक नामी। वसहिं
गजेंद्र मोक्ष प्रतस्वामी। दोहा। दक्षण देसम
सिद्ध इक चित्र कूट प्रसनाम। तहांवसहिं गो
विंद प्रभजनन कलष डुमकाम।७। टीका।
मणी कोटीजोहै तहां दीनोके हितकारीमहा

२२

प्रभू वास करतेहैं और समुद्रके किनारे कु
स्थल पुरमे महाकुशस्थलप्रभ विराजतेहैं विसुदे
व जो जगतमे प्रसिद्धहै तहां मक्षीकेदांत
अनंत भगवान विराजमानहैं और कुसदे
त्रमे संतसमाजके सहित लक्षमी नारायण
शोभा पावतेहैं स्वेत सैल जो एकवडा उजा।
गरहै तहां शांत मूरती भगवानका धामहै
और अगनि होत्र परजोहै तिसमे वामन

२ भगवान विराजतेहैं भार्गवक्षेत्र जो पृथ्वी
भ पर प्रसिद्धहै तहां परसुधरजी निवासकरते
२२ हैं और परम रमणीक वैकुंठ नगरमें माध
व भगवान राजेहुयेहैं जगतमें परमपवित्र
गरिष्ठ नामक क्षेत्रजोहै तहां सर्वभक्त शो
भा पावतेहैं और चक्रतीरथमें सुदरसन च
क्र निवास करतेहैं कुंभकोणमें और भूत
पुरीमें सारंग पानीभगवान विराजते हैं

23

२२

ओर कलुष हरन तीरथ जोहै तहां गजेंद्र
मोक्ष स्वामी वास करतेहैं दक्षणदेसमें चि
त्रकूट नामककें प्रकट अस्थान जोहै ।
तिसमें दासभक्तोंके मनोर्थ सिद्ध करने·
वाले गोविंद देव निवास करतेहैं ।७। चौ
पाई । श्री उत्तमा जे जगतमहीं । नामथई
स अनत्तम वसहीं । स्वनमैल महंकिये
निवास । पदम विलोचन विस्व प्रकास

२. मे. २४

पारब्रह्म पारथ पुरमाहीं। करहिं सफल जगजीवन काहीं। वृद्धपुरी वृष ध्वस्वय स्वामी। सानंदवसहिं जनन अनुगामी। सरत पुरी सरण सुखकारी। संगम नगरि प्रेम मरारी। धनष देव जगधी सुरगाये। कालमेच मगादर पुरछाये। दत्तण मे मथुरा सुभधामा। तंह सुंदर प्रभुवसहिं ललामा। परव राज नामिक प्रभुजोई। निवसहिं वृष

२४

24

परवत महं सोई। वरगुण देश धुणपथलश्रा
जा। नाथनाम प्रभु तहां विराजा। रमापुरी ऊ
रका पुरि लसहीं। गोष्ठि नाथ गोष्ठी पुर व
सहीं। दर्भ सैनमैं सिंधु किनारे। भूमि सैन र
घुनंद पधारे। धनी मंगल नगर उजागर।
निवसहिं कान ऊवर तहं नागर। दोहा। भ
वर देश महं विदत श्रम निगम निरूपण
कीन। वल साली भगवान तहं वसहिं हरन

रा॰ मे॰ ५५

उत्वदीन ॥ ८ ॥ टीका ॥ फिर जगतमै उत्तमापुरी
जोप्रसिद्धहै तहां अनन्तम ईस निवास करते
हैं और रवि मैलमै जगतके प्रकास करनेवा
ले परम त्रिलोचन भगवान शोभापावतेहैं
तैसेही परथ पुरमै परब्रह्म विराजतेहैं औ
र जगतके जीवोंकोसफल करतेहैं इद्रपुरी
मै आनंदपूर्वक हृष आसय स्वामी निवास
करतेहैं सरन पुरीमै सरण सुखकारी और

५१

संगमनगरीमे असंग मरारी विराजेहुयेहैं। धनुषक्षेत्रजोहै तहां जगदीस्वर और मदंग रुपरमे कालमेघ आश्रमकिये हुयेहैं दक्षणमे एक मथुरानामकर्के धामहै तहां से दर प्रभु निवास करतेहैं और वृषपरवत जोहै तिसमै परवराज भगवान विराजमान होरहेहैं वरगनक्षेत्र जो परम सत्वका। अस्थानहै तहां नाथ नाम कर्के भगवानशो

रा॰
भ॰
२६

भापावतेहैं ऊरकाउरीमे रमापती ओर गो
छीउरमे गोछीनाथवासकरतेहै समन्दके कि
नारे दर्भसेन अस्थानमे भूमीसेन रघुनंदजो
है सोविराजेहुयेहै ओर धन्वीमंगल नगर
मे कान्हऊवर वास कर्तेहैं भंवर देवजो प्र
सिद्धहै तहो दीनोकाउरवे हरकरनेवाले व
लमाली भगवान शोभापावतेहैं ।८। चौपाई
नगर ऊरंगएक छविरासी। तहं सरण प्रभु

२६

सेहिं निवासी। नदि थल नगर रुचिर मनभा
वन। बसहिं विश्रवय तहं सुहावन। सुंदस
रन तट परम रसाला। अच्युतनाम विदत ज
गपाला। भद्रश्री महंसंसवति गाये। नामस्र
वेन सैन प्रभध्याये। इहिविधि विश्ल पुन्नथ
लमाहीं। चित्रविह दिव्य बसेष सुहाहीं। जेतिन
करसे वनमन राचे। चारि पदारथ लेहिं सु
सांचे। दिव्यरूप जे सकल बखाना। तिनकर

रा· बा· ९८

चरण सरन किय पाना। होतसुचित हरषण
समुदाई। लेहि सहज जग सदगति पाई। ह
रिसुरति मन जहि यनरागा। किये ज्ञानते ऊप
तिन हतभागा। पिनसावे सुनि प्रबोध अस
नीके। मोद भई सगन सबजीके। हरि सर
ति सब सत्य विचारी। बार बार उर वंदिक्कमा
री। दीन्हा तजि भरोस सबकेहू। कीन्हा रंग
नाथ पदनेहू। दोहा। बिरचि ललित वन मा

ललित नवल पदहिं प्रभुकाहिं। रंगनाथ सो
वन जगत दीसत नैनन माहिं।९। टीका। ए
क सुंदर छवीकाधाम श्रीरंग नगर जोहै तहां
पूर्ण प्रभुका निवासहै और नटीथल नगरमै
विठ्ठलभगवानका वासहै बडीमनोहर भद्र
रीजोहै तिसमै अनंत सैन प्रभु विराजे हुयेहैं
और छुद्र सरनाके किनारे जगतके पालक
अच्युत नाम भगवान आसन कियेहुयेहैं ३

स्कं॰
भं॰
२८

सप्रकार वहुत पुन्य अस्थानोमे दिव्यधाम
जोहैं सो वशेष करकें शोभा पावतेहैं जो पु
रष तिनके सेवन मे रत्त हूयेहैं सो जगतमे
सत्यकर्कें चारो पदार्थ धर्म अर्थ काम मो
क्ष जोहैं सो प्रापत करतेहैं इह दिव्य रूप
जो संक्षेप कथन कियेहैं इनके चरणाम्रत
पान करनेसे पुरष सर्व पाप और दुषणोंसे
रहित होकर सहजेही सदगती को प्रापत

२८

होजाताहै ऐसे भगवानकी मूर्तीसे जिसने
प्रेमनहीं किया सो जगतमें महामंदपापी
और अभागी पुरषहै इसप्रकार पिताके मु
खसे प्रबोध सुनकर गोद जोहै सो परम
सुखमें मगन होजातीभई भगवान की स
व मूर्तीको सत्य जानकर हृदयमें बारबार
वंदना करके और सबके भरोसेको त्याग
कर एक रंगनाथ भगवानके चरनकमलों

र॰ भ॰ २९

की प्रीतीवालीहो जातीभई नित्य नवीन फूलों
की मनोहर माला प्रेम पूर्वक अपने हाथोंसे
बनाय कर भगवानके पहिरने के लिये भेज
देती और प्रभुके प्रेममे ऐसी लीन होयगई
कि सोवती जागती और बैठती उठती को एक
रंगनाथ भगवानही दृष्टीमे आवतेहैं। ९॥
चौपाई। इकसत अष्ट दिव्य हरिधामा। भारत
खंड विदित अभिरामा। सनिप्रभाव तिनकर

२९

मन भावन। रंगनाथ पद पंकज पावन। भई
निरत गोद दिन राती। प्रीति प्रतीति न हृद
य समाती। देखि जनक अस प्रेम नवीना।
रंगदेव चरनन मन लीना। रंगनाथकी क
था अनूपन। लगे करन सानंद नरूपन ॥
सुनगोद सादर मनलाई। रंगनाथ कर क
था सुहाई। एक समय तप किये विधाता। प्र
कटे देखि भक्त सुख दाता। सुंदर स्याम नाम

२ भ ३

रम काया। चारु चतुर भुज रूप सुहाया। नि
रखत बदन कोटि विधु सोभा। भाल तिलक
चंदन मन लोभा। अंगदादि भूषन बनमाला
बसन पीत उपवीत रसाला। मकराकृत कुं
डल कलकाना। पुंडरीक लोचन छबिखाना
दोहा। मोर मुकट माथे बने भने बचन भ
गवान। मागहु भावत चतु बदन मोहि प्रस
न्न जिय जान। १०। टीका। इस प्रकार भारत

30

खंडमै प्रसिद्ध भगवान के एकसै ग्राठ दिव्य
धामजोहैं तिनका ग्रनसे पवित्र प्रभाव हुए
कर गोद जोहै सो रंगनाथ भगवानके चरन
कमलोमै ग्रत्यंत प्रीती ग्रोर निश्चय वाली
हो जातीभई तव पिता तिसका रंगनाथ भ
गवानके चरन कमलोमै ग्रेसा दृढप्रेमदे
ख करके रंगनाथ भगवानकी पवित्रगाथा
जोहै सोई तिसको प्रीतीपूर्वक सुनावनेलगे

र० भ० ३१

कहतेहैं किहे गोदे अब तू कान धरकर और
सावधान होयकर रंगनाथजीकी मनोहर
गाथा श्रवणकर एक समय ब्रह्माने तपजो किया
तौतिसका पूर्ण तप देख करके भक्त[illegible] सुख
दायक विष्णुभगवान ऐसे ध्यानसे प्रकट हो
थगये कि तामरस जो नीलवर्णका कमलहै
तिसके समान सुंदर काया और चारहैं भुजा जि
नकी कोटि चंद्रमा की शोभाको लज्जा देते । ३१

वाला अतसे सुंदर मुख जिनका और मस्तक मे चंदनका मनोहर तिलक अंगद जो भुजा मे पहिरे हुए हैं ऐसे बाहु और हृदय मे तुलसी की माला इत्यादि धारे हुयेहैं भूषण जिन्होने पीतवस्त्र और पीत रंग का यज्ञोपवीत अर्थात जनेऊ और कानो मे शोभादेतेहैं मकराकृत कुंडल कमलो के समान बड़े सुंदरहैं नेत्रजिनके और माथे मे मनोहर मोर मुकट ऐसी उपमा वाले भ

रा॰
भ॰
३२

गवान हृदय मै परम प्रसन्न होयकर ब्रह्मा
को कहनेलगे किहे चतुरानन अब तुमे
रेको अनुकूल अर्थात प्रसन्न जानकर जो
मनको भावतावरहै सोमांगो। ९। चौपाई।
तब विरंचि अमविनय वषाना। हमरे इह
लालस भगवाना। तोहि पूजव करिके मष
भारी। सोप्रवन कीजै गिरधारी। करहु यज्ञ
विधिकरहु सरनाहो। पाप लेत ऊसमिन व

३२

नजाहीं। असकहि भये लषन सरनाता। वि
पिजन रचो जग्य नव थाता। तहां मुनीस
असुर सुर चारन। आये विधि सघ देखनका
रन। इक्ष्वाकु महाराज सुहाये। निज समा
ज संजुत तहां आये। सजित रहे खरें चितहा
हीं। रंगनाथ मूरति मघमाहीं। सो अनंत
छवि कैान वखानै। न्टप इक्ष्वाकु विलोकि।
लभाने। करि दरसन नरनायक पावन ॥

२० भ० ११

भूरिभाग निज गुनन सुहावन। विधि सों
कहत जोरि जुगपानी। मोर विनेति दीन
वरदानी। रंगदेव मूरति छवि पागी। इहि
सुजन मम मति अनुरागी। जो मोपै करुणा
प्रभु तोरी। तो फुर करहु आस इह मोरी।
मूरति रंगनाथ भगवाना। मोहि कीजे सुज
न हितदाना। सुनत विरंचि भयो असवाणी
करहु भूप तप मूरति लागी। तोतव इहि सु

33

३३

जन अधिकारी। कैसेहु अवसि भूप उपकारी
सिर धरि हितक वचन विधिराई। कौशला
प भरतु नट जाई। तब नृप देखि उग्र नप
भारी। मानकुल विधि अवधपि धारी। दी
न्हो रंगनाथ भगवाना। महा प्रेमाद भूपम
न माना। तबतें रघुकुलके नरपालें। रंग
नाथ प्रभु दीन दयालें। मान्या निज कुलदेव
सुहावन। जब रघुनाथ पतित जगपावन।

रं॰ भे॰ ३४

34

दोहा। करि रण राव प्रकार बहु भाति अस्हरद
स कंथ। लिये लछन जन अवध पग धारो
कृपा प्रबंध ॥ १ ॥ टीका। तब ब्रह्मा विनती क
रने लगा कि हे भगवन मेरेको इह लालसा
है जोमै यज्ञ करकै तुमारा पूजन करूं आप
कृपा करके मेरे यज्ञ को पूरण करिये तब भ
गवान कहने लगे कि हे ब्रह्मा तुम यज्ञ करो
परंतु पन्नदेवमै जहां उत्तमवन बनहै तहांक

ते ऐसे कहि करके दीनानाथ और देवताउके
पालक भगवान लुपत होयगये और ब्रह्मा
विधीके सहित यज्ञ जोहै सोरच देताभया।
तहां मनीस अमर सुर और चारन विधाता
के यग्य देखने के लिये चलेआये और इन्द्रा
हू महाराज भी अपने सव समाजके सहि
त तहां आय जातभये तव यज्ञमै विधाता
जो ब्रह्माहै सो रंगनाथ भगवान की मूर्ती।

र॰
भ॰
३५

का भजन कर रहा था तिस मूर्ती की अनंत छ
बीको देखकर राजा इक्ष्वाकु लोभाग्यमानहो
गये ऐसे भगवानकी मूर्तीका परम पवि
त्र दरसन करके और अपने बडे भाग्य जानके
र राजा दोनोहाथ जोडे हूये विधाताके आगे
दीन होय कर विनती करने लगे कि हेभग
वन इह रंगदेव महाराजकी अनमे छबीली
मूरती जोहै सो इसके भजन सेवन करनेकी

३५

मेरे चित्तमें रुची और प्रीती होय गईहै अबजो
मेरे पर तुमारी कृपाहै तो हे कृपानिधान मेरा
मनोरथ पूरण करिये इह रंगदेवकी सुंदर
मूर्तीजोहै सो मेरेको अनुगृह करके दान
करिये ऐसे राजाकी जाचना सुनकर ब्रह्मा
कहने लगा किहे राजन तुम इस मूर्तीकी
प्रापतीके वास्ते तपकरो तब तुम इसके पू
जन करनेके अधिकारी होवोगे इसप्रकार

ब्रह्माकी आज्ञा सीसपर धारन करकें राजा सर
जूके किनारे परजाय करकें तप करनेलगा।
तब राजाका उग्र अर्थात बडाभारी तप देख
करके विधाताजो ब्रह्मा सो अजध्यामै जाय
कर बडी प्रसन्नता पूर्वक रंगनाथ भगवान
की मूर्ती जो है सो दे देताभया राजा ऐसी दि
व्य और मनोहर मूर्ती को पायकर परम आ
नंदमै मगन होयगया तबतें रघुकुल के राजा

उंने रंगनाथ भगवान अपने कुलदेव मानेहु
येहैं और जव पापियोंका उद्धार करने वाले
रामचंद्र महाराज रणमे अनेक प्रकारका।
जुद्धकर्कै और रावणादि सव असुरोंको मा
र कर्कै सीते और लक्ष्मणजीके सहित आ
नंद पूर्वक अजुध्यामे चलेआये तव सो रंगदे
वको मूर्ती जिस प्रकार वभीषण को देतेहैं
आगे कथन किया जाताहै।।९।।चौपाई।तव

२ सुं. ५८

रघुपति मन रावण भाता। आयो अवध श्री
मदगाता। सो विदाय जब होवन लागा। जोरि
जुगल कर मन अनुरागा। रघुपति सों अस वि
नय उचारी। प्रभ वियोग नहीं सकहूं सहारी
नाम प्रीति हृढ देवि रसाला। रंगनाथ नहिंदी
न कृपाला। दनुज नाथ अस भगवन पाई। गु
नन भाग निज विपुल वडाई। बार बार पद वं
दि पधारी। चलो लंक कहं वेग सिधारी। ज

३८

वकावेरि तीर किय थ्या[illegible]ना । तहाँ सुनेमतात्मक छुटाना । सोजव भयो समापन ताहीं । लागयो चलन देस निजकाहीं । रंगनाथ कहँ वहुरि उठावन । भाउघुगाद दनुज डलभावन । जद पि जतन व[illegible] कियो महाना । तदपिन उठे रंग भगवाना । तव अधीर व्याकुल उरवपागा ह्वै निरास चित रोवन लागा । भई गगन तव गिरा सुहाई । करहु नसोच निसा चर राई ॥

१०
भ०
२८

तुमरे संग पवन सुतजाई । इहि थल बसवहु चिर सुखपाई । इह भूमी भावति प्रीय मोही कबहुं सकु मानस हु विलोही । जो तुमरे मन मम अनुरागा । तो नित दिवस भक्त बड भागा लंकातैं प्रति दिवस सिधाई । करहू मोर सुजन रत आई । दोहा । जब सुमरहु तब मोर जियं कब हु भक्त तनधारि । होब प्रकट मै तुरत तब पुर बहुं आस तुमारि । ३ । टीका । तब रघुनाथ जीके

३८

३८

साथ रावणका भ्राता वभीषण आनंद करके ए
ति भया हुआ अजुध्याम चलाआया सा नव
विदा होनेलगा नव हाथ जोडकर रघुनाथजी
के आगे विनती करने लगा किहे दीनवंधू
मै आपका वियोग कैसे सहूंगा ऐसे तिसकी
हठभीनी देखकर रघुनाथ जी महाराज क
पाकरके तिसको रंगनाथभगवान की मूरती
देदैनेभये नव देतपती ऐसे भगवानको पाय

२०
भ०
२९
39

कर अपनेभागोंकी अनंत वडाई मानताभया
फिर वार वार इष्टदेकारी रघुवीरजीके चरनों
को वंदना करकें वेगसे लवन लंकाको चल
पडा जबका वेरीके किनारे पर आयपहूंचा त
हो अपना उक्ष नितनेम करनेलगा सो जब
करचुका तव फिर अपने देसको जो चलने
लगा तो रंगनाथजीको उठावताहै परवे न
हीं उठतेहैं यद्यपि वहुतसी यतन और बल।

२९

भीकिया तद्यपी सो नहीं उनतेभये तब धीरज
से रहित व्याकुल और उन्की भयाहूआ मन
से निरास चित होय करके रोदन करनेलगा
इतनेमे आकाश वाणी होतीभई कि हे नि
शाचरोंके पती तम हृदय मे मत सोचकरो
अब हम तमारे साथनही जावेंगे इसी आश्र
नमे आनंद पूर्वक निवास करेंगे इह भूमी
मेरेको बहुत प्यारी लगीहैं हेभक्त तेरेको।

र. मं. ५.

अपने हृदय की सत्य सत्य कहताहूं अब जो
तेरेचित्तमै मेराप्रेमसहींहै तो नित दिन दिन लं
कासे आयकर हेभक्त बडभागी ईहांहीं मेरा
भजन कियाकर और मै इहभी कहताहूं कि
तब जब तुम हृदयमै मेरा स्मरण क
रोगे तब तब मै प्रकट होय करके तुमारे म
नकी आसा पूरण करहूंगा।१२। चौपाई। रंग
नाथ सासन सावदाई। सिरधरि वंदि चरन द

५०

नराई। गये लेक कहूं वेग सिधारी। सुमरत हृ
दय भक्त भय हारी। नवेत नित्य प्रीति जनआई
करिहृजन प्रभुजाहिं पराई। वसिकावेरि रंग
भगवंता। नसो पतन जगजीव अनंता। जहिं
मंदिर भगवान निवासा। विस करमा निज
करन प्रकासा। ललित दिव्य दिप नवल प्र
कारा। तहां वसे हरि भक्त उदारा। सुनिकल
कथारंग भगवाना। परम मोद मोदे मनमा।

र॰
भ
५८

ना। इकमन अष्ट रूप हरिजाने। सबतें अधि
क रंग प्रभु माने। कह्यो जनक सब वचन ब
होरी। मोहि कब मिलिहैं भक्त चितचोरी॥
रंगनाथ भगवन जगपावन। मीन अरीष संत
स्वरन मन भावन। बिसरचित गोदै रानिवानी
भनै वचन नहि प्रीति पिछानी। पृत्री माघी सी
ष वृतकीजै। नवपद सरन रंग प्रभलीजै। वृं
दावन गोपिन जतप्रीती। धारेहा इह वृत वि

५८

मल सरीती । नवतें भई सकल सुख खानी ।
पाये वेद वेदन वरदानी । जनक कथन श्र
म सुननन वीन्हा । गोदे मार्ग शीर्ष व्रतकीन्हा
पदन प्रबंध विरचि मन भायन । व्रतकरि म
धुरकरहिं कल गायन । मगन प्रेम ननकर
सखिनागी । रंगनाथ दरसन अनुरागी । एक
प दिवस निसि सपँनलिलामा । मिलिगे नाहरंग
धनसामा । सोरठा । चौकीउठी ननकाल ला

२१
भ
५२

गीचित वन चइंन दिस । सोमूरति नंदलाल
लदिन परत आकुलभई । टीका। इस प्रकार रं
ग नाथभगानकी आज्ञा सीसपर धारन करके
बार बार प्रणाम करता हुआ रंगनाथ भग
वानको ही स्मरता स्मरता वभीषण जोहै
सो लंकाको चलागया नवेते निग्पश्रीनी सर्वक
आपकर रंगदेवका भजन करता और आपने
घरको चलाजाता ऐसे कावेरीमे रंगनाथभ

५२

गवान निवास करके जगतके अनंतहीं पापि
योंका उद्धार करदेते भये और जिस मंदिरमे
रंगदेवजीने अपना वासकिया सो वडादिव्य ।
और प्रकाशमान कि जो विसकर्माने अपने
हाथसे अनेक चतुराई करके रचा और भगवा
नके परम उदारदास भक्तजोहैं सोई तहां वा
सकरतेहैं इस प्रकार पिताके मुखसे रंगना
थभगवानकी पवित्र गाथा सुनकर गोदेमहा

२· आनंदमै मगन होयगई एक मै आठ भगवान
भ· के दिव्य रूपजान कर सबतें अधिक रंगनाथ
४३ भगवानको माननीभई और फिर पिता सो
कहने लगी कि हेतात मेरेको इह भक्तों चित्त
को हरलेने वाले रंगदेव प्रभू कब प्रापत हो
वेंगे तब विस्नुचित गोदे की बानी सुनकर औ
र तिसकी प्रीती देख कर कहने लगे कि हे
पुत्री जो तू भगवान की शरणको प्रापत होई ।

४३

४३

चरतीहैं सोमार्गशीर्ष व्रतकोधारन कर देखो वृंदावनमैं गोपियोंने प्रीती ओर स्वभरीती पू र्वक इह निरमल व्रतजोहै सोधारन किया। नवेनें वैस्नव स्त्रीकी खोनी होय कर नंदनंद न भगवान को प्रापत होय गईहैं ऐसे पिता का कथन सुनकर गोदेने प्रीती पूर्वक मार्ग शीर्ष व्रतको धारन करलिया नवेनें व्रतके स हित होयकर अतमें मनको भावने ओर।

र॰
भ॰
४४

मधुर पदजोहैं सो नित्त नवीन रचकर ब
डी मीठी स्वरसे गायन करती और प्रेम में
मगन सरीरकी सुधी बिसारे हूये रंगदेव
जीके दरसन की अभिलाषा वाली होय
रहीथी तब तिसका अलौकिक प्रेमदेख
करके एक दिन सुपने मै तिसको रंग घ
नस्याम मिलजाते भये तिनके दिव्य दर
सन को देखकर अचंभासी होयकर तब

४४

काल जागउठी श्रोर श्राचर्जके वस भई हुई इ
धर उधर चारो पासे देखने लगपडी सो मूर
ती भगवान की तिसकी द्रष्टीमे नहीं श्रावती
है ॥१२॥ चौपाई । नवनें वैठन विचरत जाहीं । सो
वत जागत वैठत माहीं । रंगनाथ मउ मूरति
नीकी । देखत रहत सदा श्रीयजीकी । दिनदि
न रंग प्रेम मदमाती । लेतन विरहें तपत तन
शांती । चंदन वाग गई इक काला । जमेपाविजे

रा॰ मं॰ ८५

ग उगन नंद लाला। विप्रसुता इकतासु सहे
ली। सुंदर नागरि रूप नवेली। देखि तासु उ
ख सकुन लागी। कौन सोचवस तव यूति त्या
गी। भईमलीन वदन सखि प्यारी। करहु प्र
कट मोहि मरम उचारी। तव गोदे कहि सिया
लि लामा। मोहि सपने छलि गये घनश्यामा
देदर मन भेलपन मुरारी। तवते कल नपर
न कछु प्यारी। कह उन सुता वदन मुसकाये

८५

विविध रूप भगवान सुहाये। कवन रूप सखि
रावरि प्रीती। लिखहु चित्र मोहि होहिं प्रतीती
तब गोटे मानस अनुरागी। हरिके चित्र उतार
नलागी। जब तहि रंग नाथ मनभावा। चित्र
चारु उरबसो सुहावा। लिखत नाथ मानस
सकुचानी। नमत नैन करकंपित जानी। बे
लीमंदमंद सुसकानी। वह [illegible]लिया सपने
मोहिराती। किलोअली उरिगा ततकाला।।

र॰
भ॰
५६

नवतें जरहुं विरहं नलबाला । बोली विप्र सुता
हित कारी । सुन गोदे मम प्राण पयारी । जो ।
तोसें मेरो सनिनेहू । तौमै रंगनाथ प्रभुपहू ।
देहूं मिलाय सखी प्रण मोरा । होहिं मनोरथ
पूरण तोरा । तव गोदे बोली कर जोरी । अब
जीवन गति तव करमोरी । रंगभवन इत जा
यसनेही । पियसन कहहू दसा मम पही । गो
दे वचन सुनत सखि प्यारी । रंग भवन इत च

ली सिधारी। दोहा। प्रथम मनो हर वागमहं।
जहं वसंत छबिछाई। गई नवल नागरि सखी
उरप्रमोद सरसाई। ४४। टीका। नवीने गोटे जो
है सो वैठती विचरती सोवती जागती रंगना
थ भगवानकी मनोहर मूर्ती कोहीं निन देख
ती रहती श्रौर रंगदेवके प्रेमके मदसे मत्त श्रौ
र विरहके तापसे तपत भई हुई। शरीरमे कु
छशांती नहीं लेनीभई तव एकदिन चंदन।

२.
भ.
४०

वागमैं जो चलीगई तहां तिसको नंदलाल जी
का विजोग डगना जाग उठताभया और व्याकु
ल होयगई तहां तिसकी एक सहेली ब्रह्मण
की कन्या अपने रूप सभाव और गुणों करकै
बडी चतुरथी गोदेका ऐसा कलेश देखककै
पूछने लगी कि हेगोदे तूंने किस सोचके व
शहोकर धीरज को त्यागाहै और माखेसे म
लीन होरहीहैं हेप्यारी मेरेको अपने हृदयकी

४८

सत्य सत्य कहो तब गोद कहने लगी कि हे हि
तकारनी मेरेको घनस्याम भगवान सपने मे
छलगये एक छिनभर दरसन देकर फिर न
रतहीं लुपत होय गयेहैं तबतें मेरेको चैन
नहीं पड़ताहै उनहीं के दरसन की अभिला
षावाली हो रहीहूं तब हे सखी मुसकाय
कर कहने लगी कि हे गोदे भगवानके वहु
नहीं रूपहैं तुमारी किस रूपसे लगन लगी

र्र
भ
५८

हे मेरेको चित्र लिष करके दिखावो जो मै जा
नै कि कौन रूपसे तेरी प्रीतीहै ऐसे सखीका
वचन सुनकर गोदे प्रेम मै मगनभई हुई
भगवानके चित्रजोहै सो उतारने लगी जब
मनकी भावना रंगनाथ भगवानका चित्र
तिसके हृदय मै आयबसा तब तिसकोलि
खती लिखती मनमै सकुचाय गई और नेत्र
निचाय करके लज्जामान होयगई फिर सखे

48

५८

से मंद मंद मुसकाय कर कहनेलगी कि इह

छलिया सपनेमैं मेरको छल गयाहै मिल क

रके नरनहीं लुपत होय गयाहै हेसखी नव

नैं हीं मैं विरहं रूपी अगनी मैं जल रहीहूं त

व ब्रह्मणकी कन्या सो सखी परम हितकार

नी जोथी गोटेको कहने लगी कि हे प्राण

प्यारी जोतेरे साथ मेरा सत्य सनेहहै तोमै प्र

णकरतीहूं कि रंगनाथको तेरे साथ मिलाय

र॰
भ॰
५९

देऊंगी और तेरे मनका मनोरथ पूर्ण कर देऊं
गी ऐसे सुनतेहीं गोद हाथ जोड़ कर कहने
लगी कि हे हितकारनी अब मेरा जीवना स
त्य करके तेरेहीं हाथ मैहै तू प्यारी अब रंगभ
वनमे शीघ्र जा और प्राणपती सों इह मेरी
दशा स्पष्ट करके सुनायदे तब गोदका क
थन सुनकर साखी जोहै सो रंगभवन को त
रनहीं चली जातीभई और जहां वसंत की शो

५९

भावाला अनसे रमणीक मनोहर बागयां आ
नंदसे प्रफुलत भईहुई परम चतुर सखी प्र
थम तहांहीं जाय प्रापतभई ।४। चौपाई । त
हं देखो इक कौतक तासा । मडुल सेज क
ल कुसम विकासा । तहां विरहे कुल श्रीपति
होई । लोटत कलनलेन पल सोई । विप्रहता
तव निकट सिधारी । हरिएक्के मडु गिराउचारी
अहो कौन तुम को हित लागी । लोटत अव

र: भ: ५:

नि विकल सखि नागरी। तब भगवान कह्यो अ
सटेरी। गोदाविरहं विकलमतिमेरी। कहहु
कौन तम कारन केही। मोहि पठ्यो अस व
चन सनेही। मैसो रंगनाथ अलिऐहीं। तबका
रन अगमन निज कैहै। तब नागरि सखि स
ब समकाई। सफलकाज निज गनत अलाई
मोहि गोद प्रभुदीन पठाई। तासु दसा वरणन
इन आई। श्रीयाको नाम सुनत भगवाना। बोले

50

वचन जोरि जगपाना । जाम विरहं व्याकुल म
ति मेरी । तव नहि नाम कह्यो सखि टेरी । अव
नहि कहहु कुसल कल मोही । पठयो कौन
हेत इत तोही । दोहा । कह्यो सखी जोई माल
कल बालहिं उर पहिरानि । होई तव प्रीतम
हित पठयो पीय गोद रतिमानि । ९ । टीका ।
तहां तिस सखीने कैसा कौतक देखा कि फू
लोंकी बडी कोमलसे जा विछी हुईहै तिस

२ भ ५१

पर श्रीपती जो भगवान सो व्याकुल भयेहुये
लोटरहेहैं श्रोर शरीरमे कुछ शांती नही ले
तेहैं तव ब्रह्मणकी कन्या सोसखी निकट जा
य करके कोमल वानीसे भगवान को पूछ
ने लगी कि कहो जी तुम कोनहो श्रोर किस
कारण अचेत श्रोर व्याकुल होकर पृथ्वी प
र लोट रहे हो तव भगवान कहने लगे कि
मै गोपे की विरह करके व्याकुल होरहाहूं ।

५१

ने अपनी कहा कि कौनहैं और मेरेको क्या
पूछतीहैं मैंतो रंगनाथहूं ने अपने आवनेका
प्रसंग कथनकर जो ईहां किस कारन आई
हैं नव प्रवीन सखीजोहै सो मनमैं समझका
य कर और अपने कारजका सफल होना
विचार कर कहनेलगी कि हेभगवन मेरेको
ईहां तुमारेपास गोदनेकों भेजाहै और तिसी
की दशा आपको सुनानेके वासते आईहूं १

२० म ५२

इसप्रकार तिसके मुखसे अपनी प्यारीकानाम
सुनकर भगवान हाथ जोड़ कर कहने लगे
कि हे हितकारनी जिसको विरहसे मेरी मती
व्याकुल होरहीहै तूंने अपने मुखसे तिसीका
नाम उच्चारण कियाहै अब तिसकी कुसल क
हो कि वेमेरी परमप्यारी गोद प्रसन्न तोहै ।
और इहभी कहो कि तेरेको ईहां किस कार
न भेजाहै ऐसे रंगप्रभुकी बानी सुनकर सखी

52

कहने लगी किहे नाथ गोदेने परम सनेह
और प्रीतीसे अपने हृदय की फूलमाला त
मारे वासते मे जोहे मै सोई लेकरके आईहे १९
चौपाई। लीजिय ललितमाल चित चोरी। भने
तास कुछु वचन निहोरी। मोहि सपने मिलि
नंद किशोरी। टेढयमन लेगे चितचोरी। मेलि
अपांग डंद हगटोने डरे नरत सदुस्याम स
लोने। नवते विरहं अनल माहिदहती। जल

रा०
भ०
५३

कत जियत परत कल शांती। ऐसो कौन कर
न कोऊ काहीं। वाहेप कर त्यागत प्रभ नाहीं
भनी वदन गोदे जस वानी। दीन नाथ सें स
कल वखानी। काहू कहूं न हिदसा उचारी
नाथ विरहे दारन दुखभारी। प्रभ विजोगतें
दिन दिन काया। होत जात हवरि सरसाया
खान पान सव दिया विसारी। प्रभ दरसन अ
भिलाषत प्यारी। चारु चौक मुकतान सवार

५३

53

त। नाथ मिलन सुभ सगुन विचारत। विक
लवहीन मीन जिमि वारी। जिमि नरफत
तव विरहं मुरारी। वार वार का कहउं व
खाना। मिलहु वेग नत त्यागत प्राना। जा
नकि हेत सुरत पतिवांधा। इसे प्रकारि
समर दस कांधा। सिसुपालादि गरव न्र
पगारी। ल्याये रुकमनि जीति मुरारी। दो
हा। मेरीवार उदार तव काहगही निठुराई

र॰
भं॰
५४

59

दीन दया द्रुम कलप कस दीन दया बिसरा
ई ।७। टीका। अब भगवन इह सुंदर माला
जोहै सो अपनी प्यारी की पठी हूई जानकर
लीजिये और जिसने निहोरेसे उच्छ वचन
भी कहे हूयेहैं सोभी स्रवण लीजिये कहतीहै
कि मेरे को नंदलाल सपने मै मिलकर मो
हित कर गयेहैं और अपना दरसन देकर
मेरे चित्तको चुराय करके लेगयेहैं नेत्रोंसे

नेत्र मिलातेही मानो जादूकरके फिर नन
काल माधुरी मूर्ती वाले स्यामसलोने नेत्रोही
लुपत होयगयेहैं तबतें मेरेको विरह की अ
ग्नीजोहै सो दगध कर रहीहै हृदय शांती
को प्रापत नही होताहै ऐसी किसी के साथ
कौन करताहै जोवा है पकड़ कर त्याग देता
है हे दीना नाथ गोदेने जिस प्रकार कहाहै
सो मैने आपको सुनाय दियाहै तिसकी दसा

२° मे
५५
55

मै का कथन करूं हेदीन वंधू तुमारी विरह
करके अतनसे दुखी हो रही है और तुमारे वि
योगसे तिसकी कायादिन दिन दुबली होती
जातीहै खान पान सब बिसारे हुये तुमारे
दरसनकी अभिलाषा वाली हो रहीहै और
प्रतीदिन मोतियोंके सुभ चौंकरचकर हे दी
नवंधू तुमारे आवनेके सगुन बिचारती रह
तीहै और जलके बिना मछली आकुल होती
जैसे

है तैसे नाथ तुमारी विरहमे तड़फतीहै और श्वा

ती नहीं लेतीहै अवमै वार वार क्या कथन

करूं तिसको शीघ्र दरसन देवो नहीं तो प्रा

णोंको त्यागदेवेगी और तिसकी इहभी प्रा

र्थनाहै कि भगवन तुमने जानकीके वास्ते

समुद्र को वांधा अर रणमे विजय कर राव

णको मारा फिर सिसुपाल आदिक राजयों

का गरव हर करके रुकमणी को जीतकर्के

56

लेआये तां ते अब मेरी बार हे उदार प्रभु इहका निठुराई करी है अर्थात जो हृदय को कठोर कर लिया है और हृदयाके कलप वृक्ष अब दीनो के उधारने वाली सो अपनी दया कैसे विसार दई है ।४९। चौपाई। द्रुपद सुता जग नाथ उबारी। गरुड छाड गज की रखवारी। हृजेगो पी गौतम मुनि बाला। प्रभु सुमरत जग कीन निहाला। मैं हूं नाथ पद पदम अलीनी। मोपेक

स नटया प्रभु कीनी। कौन चूक मेरी भगवाना।
होयतो छिमिय भक्त बरदाना। जानि अनन्य
चरन निजदासी। करिय गृहण लखि दरसन
प्यासी। सुनि सखि वचन रंगभगवाना। प्रेम
नेम गोटे हृदजाना। भनेनेह प्रीति रसडवानी
सुनहु सत्य सहचरि सयानी। जब गोदे साथि
आवत नीके। तब मोहि कछुन सुहावन नीके
चितै चकोर चंदजिमि राती। चात्रिक चहत र

रा॰
भ॰
५८

हत जिमि स्वाती । तिमि गोदे हमरण हमका
ना । छूटत साखी पलक नहीं ध्याना । गोद वि
रह विकल मति मेरी । तव मख हानि संदेस
सखिपरी । आज भरोस कछुक जिय आवा
तव नेहनि कछु धीर वंधावा । दोहा । रंगना
थ अस भनत मख पठित मालनिज प्यारे
सखितें सादिर लेत कल लीन कंठ इतधारि
टीका । राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी जोहै सो

भी जगतमै हेनाथ तुमने उवारी श्रोर गरुड

को त्यागकर गजकी भी रक्षाकरी फिर ब्रज

की गोपी श्रोर गौतम मुनीकीनारी श्रहि ।

ल्या इह भी तुमारे स्मरण ने निहाल होय

गईं ताते मैभी हेदीनाथ तुमारे चरन कम

लोंकी भ्रमरीथी मेरे पर कैसे दयानहीं क

रीहै कि मेरेसे कोई अपराध होय गयाहै

यदि ऐसाभी होवे तो हे दयानिधान तुमत

रा॰
भा॰
५८

माकरने जोगहो अपने चरनोकी हढदासी
और दर्सनकी पयासी जानकर मेरेको गृह १
ए करलीजिये इसप्रकार सखीके मुखसे व
चन सुनकर रंगभगावान गोदेका प्रेमनेम
जोहै सो हढ और सत्य जानतेभये फिर सनेह २
की भीगीहूई वडी कोमल वानीसे कहनेलगे
किहे सखी अवतू मेरे हृदय की सत्य सत्य सु
एकाकि जव गोदेकी सुधी आवतीहै तव मे

रेको और कुछ नहीं भावता है जैसे राज़ी मे चं
द्रमा को चकोर देखता है और चातिक स्वा
ती बूंदको मांगता रहता है तैसे ही मै अपनी
प्यारी गोदेका स्मरण करता रहता हूं हेस
खी तिससे मेरा ध्यान एक पलभर भी नहीं
छूटता है गोदेकी विरहं करके मेरी मती ।
व्याकुल होय रही है आज तेरे मुखसे इह संदे
स सुन करके हृदय मै कुछक धीरज और भ

रा॰
मं॰
५५

59

रोमा आयाहै ऐसे कहिकर रंगभगवान सो
गोदकी भेजीहुये माला सखीसे लेकर वदेस
नमानसे तुरत अपने हृदय मे पहिरलेतेभये
चौपाई। सुनहु सखी तव मालनदीना। मान
हु प्राणदान मोहि कीना। जोहम आजमाल
नहीं पावत। तोतनतें जियरो कढि जावत।
अस कहि कमलँ गिर धारी। करमंदरि जन
नगल उतारी। सखिकर दीन हरषि भगवाना

माल

१८

५५

बहुरि बदन मह बचन बखाना। जाय देहु स
ब सुग्रीव करपानी। पढी मोर इह जुगल नि
सानी। कहहु बहुरि अस बचन सुहावा॥
उरका नगर रुचिर मन भावा। हम से सुभ
गा संबर छावहिं। तहं अवतार सकल भ
म आवहिं। सुर ऋषी देव महा ऋषी भारी
जरिहें सजन भक्त मम कारी। तहं नवक
रन माल सुखदाई। परिहें अब सुग्रीव मम

भ॰ आई। तव तुम्हार मन वांछित कामा। होहिं
६॰ सुफल कर संसति रामा। हरिमाव सुनत।
गिरा सुखदेनी। लखो सचित डठ्ठि भई बर
हनी। करि प्रनाम पद पदम मुरारी। लैबि
दाय डुत चली सिधारी। दोहा। गोदेपं आलि
आयतव हरष भरि मन माहिं। कमल माल
मुद्रा दई नई नागरी कहिं।१९। टीका। फिर
भगवान कहने लगे किहे सखी तैने मेरेको

६॰

इह माला नहींदई मानोप्राण दान कीयेहैं जो
कदी आजमे इह माला नहीं पावता तो सरी
रमें जीवके रहने का कोई भरोसा नहींथा
ऐसे कहि करके रंगदेव हाथकी मंदरीके
सहित हृदय की कमलमाला उतार कर
आनंद पूर्वक साखीके हाथ देदेते भये और
कोमल बानीसे कहने लगे किहे साखी इह
मेरी दोनो निसानी जाय करके गोदके हाथ

र॰
भ॰
६१

मै देदेनी और कहना कि अतसे रमणीक कु
रका नगर जोहै तहां हमारा शुभ स्वंयवर हो
वेगा और मेरे सब अवतार महोऋषी स्व
ऋषी और संपूर्ण देवताउंके सहित तहां आ
वेंगे और भक्त संतोंका समाजभी नानाप्रका
र करके आय जुडेगा तहांहे प्यारी तेरे हाथों
की सुखदायक माला जोहै सो अवश्य मै
अपने हृदय मै धारन करुंगा तब तेरी मन

६१

वांछित कामना सब पूर्ण हो जावेगी इसप्रका
र भगवानके मुखसे परम सुखके देनेवाली
सुंदर बानी सुनकर सखीने जाना कि अब वि
रहनी जोहै सोदुखसे अवश्य छूटेगी तब भ
गवानके चरनोंपर बार बार प्रणाम करके
बिदाय लेकरके सो चतुर सखी अपने स्था
नको लौटकर चली आई और पहिले गोदके
पासहीं आयकर सो रंग भगवानकी मुद्रा ।

औरि कमल माला वेडे सनमानसे तिसके हाथ मैटे दैतीभई।९१। चौपाई। पुनि प्रीतम संदेस वखाना। सुनत पाय गोदे मनुपाना। वार वार मानस अनुरागी। हरषि नाम पद वंद न लागी। साखि तव समन आनहित कारी जहिं हूटन उव लीन उवारी। वीर् कीन उ पकार नथोरा। रह निवरण कि मिहेहिं ति हैरा। गुनत सनेह रंग भगवाना। पंचसात

जब दिवस सिराना। विस्वमित्र तब समय वि
चारी। लिये संग दुइ हित सकमारी। कुरका
पुरिकहं चले सिधाई। वलभ देव नाम त
हंताई। सोहंस जाय सैन चतुरंगा। गवने
विस्व मित्र कर संगा। आये कुरका पुरम्हव
क्षाये। तहां स्वामि मठ कोपहं आये। और
हुं मानि ऋषि विप्र नरिंदा। आये विद्रुष ।
अवारज हंदा। विस्व मित्र तब उर हरषाई

र॰
म॰
६४

लिये निकट सठ कोप बुलाई। सकल मर्म
तांके समझावा। तब सठ कोप नेरेस बुलावा
दोहा। वल्लभ देव नरेस कहं अमनदेस मावे
दीन। सुमति मधुर कविराज जन नवछित
राज मवीन। सजहु स्वंवर कर रुचिर सकल
समाज अनूप। सनिलाग विरचन यथा उचि
न भूप कवि भूप। २॰। टीका। फिर प्रीतमका
संदेस जो है सो कथन किया तिसको स्रण

६४

करके गोदे मानो गये हूये प्राणोंको पायले
नी भई हरष और प्रेमसे पूरित भई हूई बा
र बार तिस सखीके चरनो का वंदन करने
लगी और कहने लगी कि हे सखी तेरे समा
न मेरा और कोइ हितकारी नहीं है देखो
जिसने विरहके समुद्रमे डूबी हूई का हा
थमे पकड कर उबार लियाहै हे वीर तेने
उपकार थोडा नहीं कियाहै इह बदला मेरे

से कव दिया जावेगा इस प्रकार हृदयमें रंगभ
गवानका सनेह विचारतीको जव पांच सातदि
न वतीत होयगये तव गोदकापिता विस्रचि
न समय विचारकर औार पुत्रीको साथ लेकर
कुरका परको चला आवनाभया तहांका रा
जा जोवल्लभदेव नाम करके प्रसिद्धथा सो भी
चतरंगनी सेना सजाय करके विस्रचिमके
साथ हो चलना भया तव चलते चलते कुरका

घरमें श्राय प्रापत हूये तहां श्रागेही सठ कोप
स्वामीजी श्रोर मुनी ऋषी ब्रह्मण पंडित श्राचा
र्ज इत्यादि सेसरा श्राये थे तब विस्तविनेने स हूये
ठकोप स्वामीको श्रपने पास बुलाय कर सं
पूर्ण मर्म जोहै सो सुनाय दिया इस प्रकार
सठकोपजी सुनकर तत काल वल्लभ देव
राजाको बुलाय कर कहने लगे किहेराज
न श्रव विलंबको त्यागकर तुम श्रोर महां

२
मं
६६

66

प्रवीन मधुर कवी राज जी मिलकर स्वयं वर
के समाज की नानाप्रकार रचना जोहै सो स
व रचायदेवो ऐसे सठकोप स्वामीजीकी आ
ज्ञा पायकर वल्लभ देव नरेस और कवीराज
जी स्वयंवरके सब समाज सजावनेमें सावधा
न होजाते भये । २ । चौपाई । रचे उतंग मंच
बहु कंचिन । खचित मणिन मन मानस वं
चिन । तने वतान चारु चहुं वोरा । फवीं सफ

६६

रस सरस चितचोरा। बिछे बिछौन छेज छबि छाने। जरकसि उगथ फेन निदराने। आसन दिव्य दिपत संचासन। आय अवनि मनुहं इ सखासन। चारु चौक चौहट मटमारी। मणि बचित्र कृत चित्रित सारी। बनी बनत वर विविध बजारू। रचना रुचिर रम्य मन हारू। विरचि कुसम कलसिंचतवारी। सर लवंक चन्द्र कोण कयारी। सघन कदलि।

२ भं ६८

कंलिन वहंह पांनी। देखि देखि चित लेतन शांनी
करत कहंव बीच मन टोना। चारिखंभ सोभि
त वहंह कोना। महादेव ऋषी महां ऋषीसा। आ
ये स्वरन सहित सुरईसा। भूपभूमि मंडिल म
महाई। जसोराजमात जगत जनुआई। बैठे जथा
जोग सबकाहू। मुनिसुर संतविप्र नरनाहू। की
न परस्पर सादर प्रीती। जथा उचित वंदन म
भरीती। आचारज निज निज कृत हरी। लगे प्र

६८

67

वेधगान सावपूरी । दोहा । तहां ग्रह ग्रह एक
थान दिव्यरूप भगवंत । सफल स्वयंवर कैद
कारन हित श्राये कृपा अनंत । २१ । टीका । तव
तिनोने वडे ऊचे मंच श्रोर सुंदर उरज कंचन
कारी करके पत्र श्रोर मणियों करके खचि
त नाना प्रकारके रचायदिये श्रोर बतान जो
साँवान सोभी वडे वचित्र नाना भांतके जहां
तहां तानदिये जरकसी विछोने श्रोर हयकी

मं.
६८

फेनको निंदर ने वाले अनेक प्रकारके उज्जल फ
र्स बड़े दिव्य आसन और प्रकाशवाले दिव्य
हीं सिंघासन सो मानो इंद्रके स्वासन पृथ्वी
पर आये हुयेहैं और अंतमे मनोहर चौक नै
महीं चौहट और मटमाड़ी मणियों करके
शोभित और नानाचित्रकारियोंसे चित्रित भां
न भांत के सुंदर और रमणीक 'बाजार फू
लोंकी नाना प्रकारकी भिन्न भिन्न कयारी ।

६८

जल करके सींचीहुई सरल वंक और चन्दरको
ण जो अति करके शोभा पावतीहैं और वडी
छबीली कदली खंभोंकी मनोहर पंकतीकि
जिनको देख देख चित्र त्रिपती को प्रापतन
हीं होता और बीच बीच कदंब बृक्षो की अ
त्यंत शोभाहोरहीहै चारो कोनोंपर बडेभा
री चार खंभ सजे हुयेहैं और तहां देवऋषी
महाऋषी और देवताउंके सहित देवराजजो

२
भ.
६९

इंद्रहै सो अपनी सब थजसे आय कर विराजा
हूआहै और भी भमी मंडिलके अनेक राजा
आयहूयेहैं मानोतहां एक जगत की जमात
जडरहीहै सनी देवता संत ब्रह्मण राजा सब
कोई अपने अपने जथा जोग आसनो पर
आनंद पूर्वक वैठे हूयेहैं और सबने रीती
अनुसार जैसे जैसे योगपथा परसपर वंदन न
मसकार किया आचार्ज लागजोहैं सो अपनी

६९

69

अपनी कृत अर्थात कविता प्रबंध बडे सावधा
र्वक गायन करने लगे फिर एक से आठ भग
वानके दिव्य रूप जो हैं तिस स्वयंवर के सफ
ल करने के वासते सो भी तहां चले आवते
भये ।२१। चौपाई । इक इक मंचन पर सब बैठे
गोराछवि पयोधि महं पैठे । पाछे रंगनाथ प्र
भु आई । उच मंच सोभा सरसाई । भे आसीन भ
क्त सुखदाता । नैन नलिन स्यामल मृदुगाता

२८ उर विसाल बन माल विराजी ॥ मूरति
मे: कोटि मदन छबिलाजी ॥ चंदन तिलक
७. माथ मन हरना । मुकट मंजु छबि जाय
नवरना । निदरत बदन बिमल बिधु सो
भा । अलक स्याम मति मानस लोभा ।
कच मेचक मन मधुप समाजू । बसन
पीत डुति दाम निलाजू । अस सरूप १
भगवान अनूपा । देखि देखि सुर नर
७.

मुनि भूप। अहो भाग निज गुनत सवा
हीं। हम समधन्य जगत थियनाहीं। कि
ये अनक हठ डुरलभ जोई। देखे सल
भ नैन भरि सोई। तहि अव सर सठ
कोप प्रवीना। विस्व चित्त सन भाषण
कीना। अव गोदेहिं वोलिय मन माना
होय स्वयं वर वेद विधाना। दोहा। विस्व
चित्त असमञ्जनत इत गोदेहिं लीन वुला

रं
भं
७१

ये। सखि ल्याई पर आभरन नष सिष सकल सजाय। २२। टीका। नव मन मान पूर्वक सब एक एक मंच पर बैठ जानेभये मानो गोदकी छवी के समुद्र मै मगन होय रहे हैं फिर तिन सबके पीछे रंगनाथ भगवान आयकर शोभाको अधिक किये हूये ऊंचे मंच पर वडी छवीसे विराज मान होते भये तिनका कैसा सुंदर ध्यानथा।

७१

7/

कि कमलों को लजादेने वाले सुंदर नेत्र। और श्याम मेघवत मनोहर शरीर वड़ेको मल और हृदय जो वशाल है तिसपरशो भा देतीहै तुलसी की माला माथेमै चंद नका मनोहर तिलक और तैसेहीं सीसप र शोभा देताहै सुंदर मोर मुकट चंद्रमा की आभाको निंदरने वाला निरमल मुखा रविंद और मुनियोंके मनको हरने वाली

२॰ भ॰ ७२

माथेपर छूटी हुई स्याम अलकें तैसेहीं भ्रम
रयों के समाज वन स्यामल केस बिजली
को लजादेने वाले पीत वस्त्र श्रोर कोटिका
मदेव की छवी को हरने वाली माधुरी मू
रती ऐसे भगवानके अनूप रूपको देख
कर देवता मुनी ऋषी राजे महाराजे सब
अपने अपने भागों की शलाघा करने ल
गे कि आज हमारे समान जगत मै धन्न

७२

कौनहै जिनोने सो भगवान कि जो।
अनेक जतन और हठ कियेसे देखने
दुरलभ होते हैं आज सहजेही नेत्र
भरकर मनभाव देख लियेहैं तब ति
स समय सठकोप जी विस्मचित्त सो।
कहने लगे कि अब मनमान पूर्वक
गोदे को बुलाय लेवो जो स्वयंवर का
समय आय गयाहै वेदकी विधी अ

र° मं° ७३

73

नस्कार सब किया जावे तब विस्व।
चित ऐसे सुन कर तत काल गोदेको
बुलाय लेते भये सखी जो परम चत
र और सयानी थीं सो तब सिख।
मं
भूषणों शृंगार कराय कर और दि
व्य वस्त्र सजाय कर बडे मन का
र से तहां लै आवती भई। २२।

चौपाई। सोदेह्रूप सील गुणखानी। तीनलो
क नायक मनमानी। रति रंभे उरवसि विधु
नारी। जासुरूपछवि चितवनहारी। वरनि
नजाय तासु कछु सोभा। देखि सकल सु
रनर मुनिलोभा। तवपितु भैया प्रीति जु
तवानी। जाथें हमरी मति हुलसानी। ता
के उर वनमाल सुहाई। देहु स्वयंवर सुता
मिलाई। सखीनाम जाको अनुग्राहा। तहि

२ं
भं
७५

75

सठ कोप वचन अस काहा। इकसत अस्हरू
प साखिदाये। रंगनाथ भगवान सुहाये। तव
गोदाके संगसिधारी। कहहु तिनहुं गुननाम
उचारी। तव सखिगहिन करन करगोदा। लै
गँनी उरमहि प्रमोदा। हरिकेरूप दिखावनला
गी। कहि गुणनाम ठाम अनुरागी। जोकेमं
त्रमंचपढि गजानी। तहिप्रभाव वरनन साख
माती। दोहा। प्रमप्रकार दसमात गुन कथित

व

सवन सभवानि।रंगनाथके निकट जब ले

आई सषिमानि।२३।टीका।सोगोदे कैसीहै

कि रूप सील और गुणोंकीखोनी तीनलोक

के नायक भगवान जोहैं तिनके मनमें मा

नीहुई रती जो कामदेवकी स्त्री और रंभा उ

रवसी और चंद्रमाकी स्त्री रोहनी इहसबनि

सके रूपकी छवीको देख देख मोहित हो

तीहैं तिसकी शोभा कौन वरणन करसके

सुर नरमुनी सब देख कर मोहित होरहे हैं
तब ऐसी रूपकी निधी गोदेको पिताजो है ।
सो प्रीती पूर्वक कहने लगे किहे पुत्री अब
स्वयंवरमे तेरेको जिसके वरनेकी रुची और
प्रीतीहै तुं आनंद पूर्वक तिसके गलेमे इह
वनमाला जोहै सो डालदे इतनेमे आनुग्रह
नाम करके जो सखीथी तिसको सठकोप स्वा
मीजी कहतेभये किहे चानरी तुं गोदेके सा

धरेहोकर इह एकमैं आठ भगवानके दिव्यरूप
जोहैं तिनके नाम और गुण भिन्न भिन्न भ
ली प्रकार कथन करतीजा जिसपर गौदेकी
मतीमानेगी तिसके कंठमैं स्वयंवर मालमेल
देवेगी ऐसी आज्ञा पाय कर सो निपुण सखी
गौदेका हाथ अपने हाथ मैलेकर भगवानके
रूप दिखावनेको आनंद पूर्वक लै जातीभई
इसप्रकार जिस जिस रूपके पास जाती तिस

रं॰
भं॰
७८

79
76

तिसका नाम और गुण प्रभाव सब कथन
करके सुनायदेती ऐसे गोदेको भगवानके दि
व्य रूप दिखावती और गुण प्रभाव कथन
करती करती जहां रंगनाथ भगवान बडे शो
भासे विराजे हुयेथे तहां आय पहुंची ।२३। चौ
पाई । सब रूपनतें सरस बसेषे । रंगनाथ गोदे
दृगलेषे । पुलक्या तन मन मोद उमंगा ।। छं
कोछबी मानस प्रभु रंगा । करत मनहिं मनदं

उप्रगामा। सोवनमाल करन सउगामा। रंग
नाथ कल कंठ सुहाई। सानहल उतदीन
मिलाई। जन जमान ग्रसदेखि सवाही। जैजै
सवर करहिं चहुंघाही। नभतें सुरन सुमन
झरि लाई। हरषि दीह दुंदभि वजाई। सुरनर
मुनि मन मोद अपारा। भरिरह्यो मंगल समा
रा। देखि दिव्य वधु भगवन नीके। भेखि सम
न सुरनर नृपजीके। तहिछिन आय कमल

२ भ ७८ 77

भव तोहो। लागी सुरन सभा सदजोहो। भये
रंग प्रभु गरुड सवारा। रविससि चारु चमर
करधारा। मारुत करत विजन सिवकाई। कर
ऊबेर कलछत्र फलाई। संभु इंद्र उर मोदप्र
कासा। धरिकरन कमल कलग्रासा। सुरकि
न्नर गंधर वननाना। साजेनिज निज हाथिर।
विमाना। द्वारका नगर तहां मनलोभा। श्री
वैकुंठ देत मन सोभा। दोहा। विस्व विमलकहे

८

धन्य धन कहत धन्य सबकोय । जहिप्रसाद
हम आज जग सकल कृतार्थ होय । २४ ॥
टीका । नव सब रूपोंसे अनसे करके अधिक
रंगभगवान को देखकर शरीर पुलकमा
न होयगया और मनमै आनंद उमड आया
रंगनाथजी की छातीमै गोदजो है सो उनम
न होयगई मनमै हीं वार वार दंड प्रणाम
करके स्वयंवर माला जोयी सो आनंद पूर्व

२० भे० ७८

क भगवानके कंठमे डालदेतीभई इसप्रका
रदेखकर जहांलग जन जमात जुडी हुईथी
सब जैजैकार शब्दको उच्चारणकर उठी
ओर आकाश मार्गतें देवताउंने नानाप्र
कार फूलों की वरषा करदेई ओर वडी दी
रघ उंदभीका घोर भीमचाय दिया सुरन
र मुनियोंके मनमे महा आनंद प्रापत भ
या ओर संसारमे जहां तहां मंगलही पवि

सरण होय गया इसप्रकार भगवानका दि
व्यरूप देखकर देवता राजे मुनी सब आव
र्नेको प्राप्त हो जातेभये तिस समय तहां
कमलभव जो ब्रह्माहैं सोभी आय गये तव
रंगभगवान आनंद पूर्वक अपने वाहन
गरुड पर आरूढ अर्थात सवार हो जाते
भये सूरज और चंद्रमाने झुलावने केलि
ये हाथमें चामर धारन करलिये मारुत

२ं
भं
८५
79

जो पवन सो पंखेकी सिवकाई करनेलगा ।
और कुबेरने हाथमें छत्र धारन करलिया शे
ष और इंद्र हाथोंमें सुंदर चमर धारकर आ
नंदमें मगन भये हुये भगवानके सनमुख
स्थित हो जातेभये किन्नर गंधर्व और देवताओं
ने नानाप्रकारके अपने अपने विमान सजा
य लिये तिस समय तहां द्वारकानगर जोहै ।
सो मानो श्रीवैकुंठकी शोभा देताभया और

विस्वचिन्नके सबकोई ऐसे कहतेहैं कि इह
पृथवीतलपर धन्य और सन्मानके पात्रहै दे
खो कि जिसके प्रसादसे हमभी आज जगत
मे सब कृतार्थ रूप होय गयेहैं। २४। चौपाई
पुनिकर जोरि रंग प्रभुआगे। विनय करन
नेमरन गति लागे। श्री सनकोप भवन उत
साहु। नाथ सुता मन करहु विवाहु। एवमस्
तु भगवान उचारे। विस्वचिन्न तहं पूर्वकिया

रा० मं० ८ 80

रे। रच्यो बिबाहू सकल सुखदाता। सोनजा
य कछु बरनन बाता। देव ऋषी महं ऋषी
अचारज। आये तहं प्रधान मत आरज। स
जे समाज सब रुचिर बिबाहू। भवन भवन मं
गल उतसाहू। लागे होन अनेक प्रकारा
साजि सुभग वर वेद निवारा। गृह गृह धजा
पताक सुहाये। कलित कलस केचिन छ
बिछाये। बिसकरमा कहं भयो रजाई। रचन

नगर रमणता सुहाई। तासु नदेस पाय भगवाना। सुजेण नगर बैकुंठ समाना। वापीन उरग कूप मनभाये। चौक बजार चारु विरचाये। मंजु नवल वाटिका अरामा। मणिन खचित कल केलिन धामा। दोहा। ताल तमाल कदंब कल कलप जब विरचाय। अंब खंभ कदली किये मनहुं पंथ भिर लाय॥ २५॥ टीका। फिर हाथ जोड कर रंग भगवा

२. भ. ८८

नके आगे नम्र होयकर विनती करने लगे।
किहे कृपानिधान अव हमारी इह प्रार्थनाहै
जोआप सब कोप स्वामी जीके घरमे चलक
र वेदके साथविधी पूर्वं विवाह करिये त
व भगवान मनककै एवमस्तु कहतेभये।
कि ऐसेही करूंगा तब विसष्टादिकजी सबको
पजीके घरमै चले गये और तहां विधीके अ
नसार विवाह की ऐसी संदर सब रचना र

क

चाय देई कि जिसकी शोभा कुछ वरणन नहीं
की जाती है देव ऋषी महाऋषी और वडे वडे
आचारज कि जो आरज धर्ममै प्रधान थे तहां
सव चले आये जहां लग विर्वहका समाज था
सव समायागया और घर घरमै सुंदर मंगल
जो है सो होने लगे वंद निवार धुजा पताका
कंचिन के कलस इत्यादि मनोहर रचना जहां
तहां भली प्रकार सवको गई तिसके उपरांत

अर्थात सृष्टि

रा०
भ०
८२

82

नगरकी रमणीकताई और सजावटकेलिये
विस करमाको अज्ञाहोनीभई तिसने भगवा
नकी आज्ञापायकर ततकाल नगरको वै
कुंठके समान शोभावाला करदिया वापी
जोवाउली तडाग जो तलाव कूपजो कूये सेह
र बाजार और भांत भांतके चौक वडे मनोह
र नाना बाग और बागीचे केबिन और मोलि
यों करके विचित्र अनेक प्रकारके धवलधा

म और ताल तमाल कदंब जंब जो जामण

कलप थंब इत्यादि सब बृक्षोंकी नानारच

ना करदई और चारो ओर बडे सुंदर कदली

थंभ जो हैं सो रचाय दिये ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ रची

सुमन वाटिका नियारी । और रहे बरन बरन

फुलवारी । बेलि वितान भान बहु पासा । ज

नु समाज ऋतुराज विकासा । कूजन खग

न द्रुमन बहुरूपा । गुंजत अलिकुल सुमन

२० भं० ८३

अनूपा। जहंन हंविमल वारि वर पावन। रचनाललितसुग्र मनभावन।
कमन होय रम्पन सुरन्यारी। जहां भवन ना
यकपग धारी। आये सजन विवाह अनूपा।
लिये संग सर मनि सरभूपा। अस प्रकार
जव पुर छविराना। रंगनाथ नव चकी व
राना। हर विरंचि मातल समदाई। वरुनकु
वेर मेर जमराई। दिसन पाल महिपाल प
धाना। दल जन किन्नर सरनाना। गीरवाए

गुह गंधर्व चारन । निज निज चढि विमानम
न हारन । बलि बरात इंद्रा पति संगा । चलेजा
त उर हरष उमंगा । अपसरादि गंधर्व कल
गाना । करत जात मगनान नगाना । छवि ज
न छत्र सीस प्रभु सोहीं । चलत चारु चामर म
नमोहीं । अगनि जंत्र छूटत नभ काहीं । वि
करत नाग वाजिहु नाहीं । धूम धाम जन च
ली बराता । करत कलित कौतक मगजाता

२
भ
८४

84

मागद सूत बंदिजन नाना । करत जात विरदा
वलिगाना । पठित वेद ब्रह्मा चलिआये । सव
निसान बजन बहु लागे । मंद मंद तहं चली
बराता । पुरवासिन उरहरख नसमाता । दोहा
धाये देखन नारि नर नगर चहुंवोर । प्रभुम
रति छवि के सकल तकि तकि लेत नठौर । २६ ।
टीका । फिर न्यारी न्यारी फूलों की वाटिका अ
थीत वाड़ी नाना रंगो के फूलों से शोभित और

मगर

चारोंपासे सुंदर वेली उलझीहुई और वेलियें

केहीं वनान जैसे साय वान नने हुये होतेहैं इ

स प्रकार मानो रितुराज जोव सेतेहे सो जहांत

हां छायत होरहाहै वृक्षोंपर पंछी नाना प्रका

रके शबद करते और फूलोंपर भ्रमर गुंजार

ते अनेसे शोभापावतेहैं वडासुंदर निरमल

और पवित्र जल तैसेही सीतल मंद सुगंध।

तीन प्रकारकी पवन जोहै सो चलतीहै तिस

र॰ भ॰ ८५

अस्थान की ऐसी रमणीकता कोंं नाहोवे कि
जहां सर्व भवनोके नायक भगवान चरन धा
र कर विवाहन आयेहैं और मुनीऋषी देव
ता और देवताउंके राजाको साथ लयायेहैं
इसप्रकार जब घरकी शोभा होयगई नव रंग
नाथ भगवानकी बरात जोहै सो चढनीभई।
शिव ब्रह्मा इंद्र वरुण कुबेर धर्मराज दिगपा।
ल रुद्र यक्ष किन्नर गंधर्व चारन देवता और

देवताओंके गुरू वृहस्पती इत्यादि सव अपने ।
अपने सुंदर विमानो पर चढ़कर और वरा
ती वनकर लक्ष्मीके नाथभगवान जोहैं ।
तिनके साथ शोभाको अधिक कियेहूये सव
चले जातेहैं अपसरा और गंधर्व रस्तेमे नाना
प्रकारके नाच नचाना और गाना वजाना क
रते जातेहैं और वडीखूवीसे छत्र और चमर
भगवानके सीसपर फूलते अत्यंत शोभापाव

२॰ भ॰ ८६

तेहैं अगनी जंत्र जो आतस वाजीहै सो जब आ
काशको छूटतीहैं तिससे हस्ती वड़ा चिङ्कार ।
शबद करते और वाजो जो छोड़े हैं सो है नाव
तेहैं वडेधूम धामके सहित बरात चलीजाती
और मारगमे अनेक कौतक होते जातेहैं माग
ट सूत वंदीजन जोभाट लोगहैं सो नानाप्रका
र करके सुंदर बिरदावली गायन करते जाते
हैं और आगे आगे ब्रह्मा वेद पढ़ते जाते सर्वो

की घोर धुनी और नाना प्रकारके बाजे जोहैं
सो बाजते जातेहैं बरातभी मंद मंद गतीसे
चलीजातीहैं पुर वासियोंके हृदय मे सुखन
हीं समाता सब नारी नरजोहैं सो देखनेकी
लालसासे जहां तहांसे धाय चले आवते हैं
और भगवानकी मनोहर मूर्तीको देखकर
मोहित भये हुये कुछ ठौर नहीं लेते ।२६ ॥
चौपाई । कहत परस्पर पुरकर नारी । अलि

१° मे°

८७

87

अनूप छबि उलह निहारी। ललित स्यामसुड
मूरति नीकी। सखिमोहनि मनु मोहनि जीकी
अस प्रकार जब हेरसि थोरे। रंगनाथ छबि
अनलुत थोरे। मोर मुकट माथे अभिरामा।
दिव्य पुनीत पीत पट जामा। उर् बिसाल सर
फल कृपाला। दिपत कलित कौस्तुभ मणि
माला। अंगदादि भूषण भुजभाये। बेनुनाथ
जस नाहिं नगाये। कुंडल लोल करन मडवेना

१४

सुभग सीस चंद्रक सुखदैना। भाल तिलक
श्रीखंड विराजा। अधर बिंब नासिक सकला
जा। वदन मयंक सरद छबिनिंदा। ऊटल वि
कर मेचक अलिवृंदा। लोचन नलिन नवल
भ्रू बांकी। निदरत कोटि चंद्र रविकांकी। वृषभ
कंध वल पल दलषंडा। नागसुंड भुज दंड उदं
डा। अंकुस कुलिस कंज धजधारी। उदर सुरे
वर रेष मरारी। दोहा। सावहूल कोटि रूपानन

रा०
मा०
८८

बरन स्याम घनस्याम। अरुन बरन जलजात
लषि रीझि निकर पुरभाम।२४। टीका। पुरकी
सब नारी नर कहतेहैं कि अहो दुलहकी छबी
अतिसै ही अनूप और प्यारीहै देखो इह ललि
त स्याम मनके हरने वाली कोमल मूर्तीजो
है सो अतिसै शोभाधमान और मनको प्यारी
भावतीहै इसप्रकार जब अतुलत छबीवाले
रंगनाथभगवान सठकोप जीके द्वार पर।

१५

प्राय प्रापत भये तिस समय भगवानकी कै
सी शोभाथी कि माथेपर बड़ा सुंदर मोर म
कट और तैसेहीं बड़े दिव्य पीत वस्त्र और म
नोहर नामा बड़े विशाल हृदयपर शोभाय
मानहै अनंत प्रकाशवाली कौस्तुभमणिओं
कीमाला अंगद जो भुवबंद इत्यादि भुजोंमे स
जेहुयेहैं भूषण जिनके और कानोंमे पड़े
हुयेहैं मकराकार कुंडल तैसेहीं सीसमे

२. भे. ८९

89

शोभादेतीहै वशीकरणदायक चंद्रकमणी म
स्तकमै चंदनका तिलक बिंबजो कस्तूरीक
लहै तिसको लज्जादेनेवाले लालओष्ठ पक्क
जो तोता तिसके समान मनोहर नासिका
और सुंदर चंद्रमाकी छवीको हरनेवाला
सुंदर मुखारविंद भ्रमरयोंके समाजको लज्जा
देनेवाले स्याम और कुटिले बालेकेस कम
लोंवत सुंदरनेत्र और सुंदरभ्रौं वांकी अर्थात

१४

त्रिवलीमवें वृषभ समान कंधे और हस्तीके से उवन भुजोंके दंड अंकुश कलस कंज धज इह चार प्रकारकीहैं उदरमे जिनके रेषा और सिं हवन कटी जोकमर कोटि चंद्रमाको आभा को हरनेवाली जिस भगवान की सुंदरफोंकी और कमलवत लालीमय जिनके कोमलच रन ऐसे नखसिष मनोहर घनस्याम भगवा नकी महादेविकर शिरकी सवनारी जोहैं सो

त

रीझकर मोहिंहो जानीभई ।२९। चौपाई। तहं

खकनान चौक मन भाता। सुहो ऋषिन सुरि

मदगाता। महं ऋषी ब्रह्मऋषी हरषाई। लागे

पढिन वेद समुदाई। तहो रंगभगवान कृपा

ला। हर समाज जनदीन दयाला। वैठेउर प्र

मोद सरसाई। सोअनेन छवि वरनिन जाई।

तहं ब्रह्मा अनसे अनुरागे। हार चार कर बाव

न लागे। करहिं गान कल मंगलनारी। पुरकर

२ म ५०

सकल ललित छबिवारी। हंस गवनि मृगसा
वक नैनी। नागरि नवल मञ्जुल पिकवैनी।
समय सरस सम वदन उचारी। देतीरंग ना
थकहं गारी। मणिगण देव सुमन लुटावैं
सुरतरु कुसुमनकी फरिलावैं। रंगनाथशो
भा छबिनीकी। पुर नर नारि देखि सीयजीकी
रहीचित्रवत चखन निहारी। प्रेम मगन तन
दसा बिसारी। द्वार चार ह्वैगो जवनाहा। गईव

रा॰
भ॰
५८
91

रान बासजन जाहीं। अमिय पाक पावन संभा
रू। व्यंजन दिव्य अनेक प्रकारू। षटरस चारु
बरनि किमि जाई। बिस्वचित्त नहीं दीन पठाई
जस रुचि बिरही जौन सरकाहीं। गोदे जनक।
कौन फरमाहीं। रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध सुहाई॥
बिस्वचित्त गृह सरबस छाई। दोहा। जनजमा
ति सब जगत की सुरगण तेतीस कोटि। खा
न पान पहरान की लष्यो न कैाने टोटि। २८।

१८

टीका। तहां रीतीके अनुसार ऋषियोंने आनंद
पूर्वक मोतियों का चौक जो है सो पूरदिया औ
र महाऋषी ब्रह्म ऋषी जो हैं सो बडे हरषसे
वेदका उचार करनैलगे तब रंगनाथ भगवा
न शोभा और आनंद को अधिक किये हूये
सब देवताउंके समाजके सहित तहां विराज
मान होजाते भये फिर ब्रह्मा जो हैं सो हरषसे
विधीपूर्वक हारचार कर गावने लगे तब हंस

२॰
भं॰
९२

गामनी मृगनैनी और पिक बैनी परम चतुर
पुरकी सुंदर नारी सब मिलकर बडे शुभमंग
ल गायन करने लगी और समयके अनुसा
र रंगसमूको गारीभी देने लगीं देवताजोहैं
सो कलप वृक्षोंके फूलोंकी बरषा बरखने ।
फिर मकता मणियोंको भगवान पर निछाव
र करते और लुटावतेहैं पुरके सब नर और
नारी प्रेमकेवश शरीर की दशा भुलायेहुये ।

चित्रके समान इकटक नेत्र जोडकर रंगनाथ
भगवानकी अनंतछवीको देख देख मोहि
त होते जातेहैं इसप्रकार जब द्वार चार हो
गया तबवरात बाजे बजते हुये अपने बा
स अस्थान मैं आय प्राप्तभई तिसतें उपरां
त विष्णुचित्तजीने बडे प्रेम और सनमानसे
अमृतके समान षटरस करके एक नानाप्र
कारके भोजन और व्यंजन जोहैं सो सबतरहा

ह्रीं पदायदिये जिस देवताको जैसी रुचीभई।
गोटाके पिताने तैसेही तिसको परितोष किया
तिस समय दिइ सिद्ध ग्रोर नवनिद्ध इह सब
विस्वचिंतके घरमे ग्रायकरके ठायत होय
रहीथी सब जगतकी जन जमात ग्रोर तेतीस
कोटि देवता जोथे कसीकोभी खान पान ग्रो
र पहिंगानकी कछु टोट नहींरही। २८। चोपा
ई। भयो तोष सबकर मनभावा। सुरनर मनि

जन सकल अन्हावा। निज निज सदन मनोर

थ पायो। मह्यो सुजस महि मंडिल छायो। त

व विधि विस्मचित गृह आई। भने वदन वरणि

ग सुहाई। लगन विवाह रंग भगवाना। इहिग्र

वसरसव सुनहु सुजाना। तोते करहु हरषि स

वकाहू। मंगल नवल अमल उतसाहू। तव स

व कोप आदि मनिराई। गवने जन वासहि अ

तुराई। रंगनाथ मन जाय वखानी। नमत वि

२ भ ५४ ९५

नय जक्र जगपानी। नव कृपाल सुन सवन

समाजा। चलिआये लखि समय सकाजा। वि

स्व चित गृह जब पग धाहो। सनकादिक म

व स्वसती उचाहो। मंडप रचन रुचिर चतुराई

कहिन जाय कछु लावन नाई। खचित खंभ

कदली कलपावन। पदम राग फल सुमन।

सुहावन। दिव्य सिलप कृत अंडगा सोभा। स

र समाज लखि अदभुत लोभा। दोहा। दिपत

न

३३

दीप मणि कालरैं कल करनन चहुं वोर। प
व प्रगट मणि जटित कल ज्वलत जनहुं चित
वोर। ३९। टीका। तब सबका यथाजोग्य सन
मान और परितोष होताभया सुर नर मुनी
जन सब आज्ञापायगये प्रत्येकने जथारुचि
अपना अपना मनोरथ पाया पृथवी मंडिल
पर महा सजस जोहै सो छायन होय गया
तब विधीजो ब्रह्मा सो विस चिनके घरमैं।

रं॰
भं॰
९५

९५

आयकर कहनेलगे कि होभाई अब रंगभू
के विवाहके लगनका पहो समयहै सब
कोई हरष पूर्वक नानाप्रकारके सुभमंगल
और उतसाह जोहैं सोकरो ऐसे सुनकर पुर
मे अनेक मंगल और गायन होनेलगे पडे
और सब कोप स्वामीतें लेकर और जो मह्ा
मुनीसर्य सो ततकाल वरातीमै आय कर रं
गनाथ भगवानके आगे हाथजोड कर विन

नी करतेभये तव भगवान कृपानिधान सम
यज्ञानकर सबदेवताउंके समाजके सहित
आनंद पूर्वक चलेआये जब दीनबंधूने वि
खचित्रके घरमै चरन कमलधारे तव सब
देवता मुनी ऊंची स्वरसे स्वमती शास्त्रको उ
चारन करतेभये जिस मंडपमै भगवान आ
यकरके विराजमान होने वालेहैं जिसकी
मनोहर रचनाकी कुछ शोभाकही नहींजा

नौ कंचिनके कदलीखंभ और मणियोंकके खचित कियेहुये शोभापावतेहैं तैसेही पद्मराग जोहीरे तिनकी सवफूल वेलियोंकी रचना मनको भावतीहैं और दिव्यशिलोंसे जटित मनोहर अंङन कि जिसको देखकर देवतागणभी मोहित होयगये और रतनो कीगूंदी हुई फालरें जो चारो ओर फलकर हीहैं तैसेही ओतसे प्रकाशमान मणियोंके

२

दीप और मणियों हीं खचित सुवर्नके सुंदर
पात्र जहां तहां धरे हूये शोभा पावतेहैं ।२९।
चौपाई । कंचिन रतन खचित अतिडीठी । मंडि
त मंजु जुगल कलपीठी । बिसुचित्र कर हर
षि सुरारी । निज करक मलगाहित सुखभा
री । संजुत सुर समाज समुदाई । किये प्रवे
स सुभ मंडप आई । तहं सुर ब्रह्म रुषी अनु
रागे । विधिजुत वेद पठन सबलागे । लगेपाअ

रा॰
म
५८

९७

वारहोन सभरीनी। विस्वविन नव सादिरसी
नी। प्रभ कहं रतन पीठ वैठायो। महामोद
सवकर मनछायो॥ दछण दिसि गोदे ग्रा
सीना। आनंद उदधि मनहुं मनलीना। न
हांहहस्पति अवसर जानी। यसो ऊसागो
दे पितपानी। विस्वविन अंजलि जलधारी
पकरि कलिन कर कमँ ऊमारी। रहहिंग
पति मंगलमूला। ताेपें सदा प्रवि अनकूला

ल

२८

मोहि निज चरन कमल कलदासा। गुनन रह
हिं निनविस्व प्रकासा' भ्रमसंकलप पतिन
दुलसाना। गहि कर कंज रंग भगवाना। दो
हा। गोदाकर कर नाथके करि विनंति धरि
दीन। चलोजान जल चवन पथ प्रेम विक
ल मतिकीन।३०। टीका। कविन श्रोर रतनो
से खचित भई हुई मनोहर दो चौको इस प्र
कार सब दिव्य समाज जोहै सो सजाहुआथा

२०
भ
५८
98

तब भगवान विस्वामित्रका हाथ अपने हाथ कमलमै पकडे हुये सब देव मंडली के सहित बडे आनंद पूर्वक सभ मंडपमै प्रवेस करतेभये तहां ब्रह्मऋषी और देवऋषी जो थे सो हरषमै मगन भयेहूये विधी अनुसार सब वेदका उचार करने लगे और आचार जो है सो सभरीतीसे सब होनेलगा तबविस्वामित्र ने बडी प्रीती और सनमानसे भगवान

को त्याग करके रतनोकीदिव्य चौकी पर वि
ठायदिया और दक्षण दिसामे गोदेको आ
सीनकरदिया अर्थात विठायदिया तव इ
सप्रकार गोदे और भगवान को विराजेहू
ये देखकर सुरनर मुनी सब परम हरष
को प्रापतभये तिसेते उपरांत बृहस्पती जी
ने समयजान कर विस्वचित्रके हाथमे ऊ
सायरदेई और विस्वचित्र अंजलीमे जल

२१ भ ५५

99

भर कर और हाथमें कन्याकाहाथ लेकर इ
ह संकल्प पढनेलगा कि हेपुत्री इह मंगलोंके
मूल तेरे रंगनाथपतीजोहैं सो तेरेपर सदैव
अनकूल अर्थां प्रसन्नहीरहैं और मेरेको आ
पने चरन कमलोंका निजसेवकही जानते
रहैं ऐसे विनती कर विश्वजित जोहैं सो रं
गभगवानके हाथमें गोदेकाहाथ देदेतेभये
तिससमय तिनके नेत्रोंसे प्रेम जलका प्रवा

२६

ह चलाजाताहै ग्रौर मतीजोहै सो भी प्रेम क
रके ब्याकुल होयगई ।३०। चौपाई । पानि गृह
ण जब भयो मरारी । महा प्रमोद छयो छिति
सारी । रहसी रहनी नहिछिन सावभीमेरा । व
दन रंग नायक कहि दीन्हा । नहिछिन धरनि
व्योमचहुं जाहीं । मचेशोर डुंदभि महाही ।
चौदस भवन जेति धुनिछाई । सब्रप्रसून सम
न फरिलाई । विसचित्र जग धन धन मला ।

२ म ५

सुरनर सकल भनत अनुकूला। नेति नेति
जेहि निगम न रूपा। धरि प्रगट निज अदभु
त रूपा। रंगनाथ भगवान सुहाये। तासु सुद
नस्वभ वाहन आये। सिव ब्रह्मादि इंद्र सुर
नाहीं। रंगदेव छबि छकि के स वाहीं। नव गोदे
कर रंग गहाई। दियो सपन भांवरि हरषाई
अनल होम कीनो भगवाना। विस्वचित्त नव
विनय बखाना। दीननाथ मम सरवस जेता

१९०

लीजै दायज कृपा नकेता। मोकहं चरन कमल निजकीजै। अनुचर भ्रमर रीति रतिदीजै। प व मस्त कहि दीन दयाला। कोहवर गये जरी जहां बाला। भामनि तहां नारि अनुरागी देन निसंग रंगकहं लागी। कैंचति कोउ प ट पीत मुरारी। हसि हसि करन कूट के।। पारी। कौकर चुंभक देत करनारी। विय वि लास परिहास उचारी। को ऊ कहत सखी।



र॰ भं॰ ९२

डलहन कारे। पै सुशील गुण निपुण निहा
रे। गोदे रंगनाथ सुख भावन। मेलनिहि लह
कौर सुहावन। रंगदेव गोदे मुखनीकी। मेल
हिं [illegible] कौर सुखदमनजीकी। सो प्रमोद अ
नमित सुख सोई। वरनहिं एक वदन किमि
कोई। भामनि वाल वृद्ध नरनैयां। वार वार सु
व लेत वलैयां। दोहा। रंगदेव करभयो सुत
भवन मोद मद व्याहु। गये वहुरि जनवास।

कहे हरषि भवन सद नाह ।३५। टीका। इस प्र
कार जब पानि गृहण होय गया तब संपूर्ण पृ
थ्वी पर आनंद ही छाय त हो जाता भया ति
स समय भगवान आपभी स्वमतो शंखको
उच्चारण करते भये तब पृथ्वी सेलेकर आ
काशतक चारो ओर दुंदभी के शवदका आ
नंतशोर मचजाता भया और चौदोंहीं भव
नोंमे जैजैकार धुनी छायत होय गई देव

रा० भा०
१०२

ना गण आकाशसे पुष्पों की नाना प्रकार वर्षा
करनेलगे सब सुर नर मुनी सब हरषसे प्र
फुलित भये हुये विस्वचित्र को धन्य धन्य कह
तेहैं कि देखो जिस परमात्मा को वेद और पुरा०
सब नेति नेति कथन करतेहैं कि कुछ अंतन
हीं पाया जाताहै सो परमात्माभगवान आज प्र
सन्न अपना अद्भुत रूप धारकर इस विस्व
चित्रके घरमें विवाह करनेको चरन धारते ।

भयेहैं और शिव ब्रह्मासे लेकर इंद्र और
सब देवता जोहैं सो रंग भगवानकी छबीको
देख देख मोहितहो रहेहैं तब रंगदेव गोदेका
हाथ पकड़े हुये आनंद सर्वक सात भांवरी
अर्थात सात फेरे जोहैं सो लेतेभये फिर वि
धी अनुसार अगनी होम भी करते भये तब
विस्वविस हाथजोड़कर विनती करनेलगा ।
किहे कृपानिधान अब दासकी इह प्रार्थनाहै

र॰
भ॰
९३
103

कि मेरा सर्वस्व जो है सो सब दायजमैं लेलीजिये और मेरेको अपने चरन कमलोंका भ्रमराजा नकर तिन चरन कमलोंके हीं सेवन करने की प्रीतीवाला कीजिये और सेवक पददीजिये ऐसे विस्वजितकी प्रार्थना सुन कर और एवमस्तु कहि कर कि ऐसेहीं होगा भगवान भीतर घरमैं स्त्रीयोंके समूहके बीच चलेगये तहांनारी जोहैं सो समय अनुसार भग

३॰

वानको गारी देनेलगी कोई पीतांवरको खेंच
लीहै और कोई सहसकर छूट अर्थात मस
करी करतीहै कोई हाथकी चुभक देकर।
फिर हाथकी तारी वजावती और परिहास
करतीहै कोई कहती किहे सखी इह दूलहा
कालाहै कोई कहतीहै कि कालातोहै परंतु
परम सुशील और गुणोंमैं भी परम प्रवीन
देखोहै तव गोदेजोहै सो भगवानके सखैमै

र॰ भ॰ १०४

104

मिष्टान देतीहै ओर भगवान गोदके मुखमेंदेते हैं सो आनंद ओर सुखजोहै सो एक मुखसे कहानहीं जाताहै जवा बाल वृद्ध जितनी स्त्री जडीहुईथीं सो वार वार सव रंग भगवान पर वलिहारे होतीहैं इस प्रकार सर्व भवनोंका आनंद देनेवाला रंगनाथभगवानका सुंदर विवाह जोहै सो होताभया तिसके उपरांत जहांवरात उतरी हुईथी रंगमहलमें सुखपूर्वक

नहांहीं आय करकैं विराजमान होय जाते भये ३१

चौपाई। उदय ग्रहण सठ कोप प्रवीना। जथा उचित मन हरष मलीना। विनय वराई भवन वनशांती। किये प्रवोध सरन वहु भांती। पाय देव सनकार महाना। लागे भवन सजस साव नाना। सानंद वहरि रंग प्रभुकाहीं। ल्यायेललित भवन निजमाहीं। विरचि विविध व्यंजन मन भाये। पाक पुनीत आन अधिकाये। नाना १

रा० कंद मूल फल मेवा। प्रभुहीं जिमाय कीन ह
भ० विसेवा। जेवनार विरच्यो मुनिज्ञाना। भोजन
१०५ भूरि दिव्य पकवाना। षटरस रुचिर स्वाद
105 सब भांती। तहं मुनिंद वृंदारक पांती। वैठिल
गये जेवन जिवनारा। किये जाम रुचि जेवन अ
हारा। स्वरन लीन जब भोजन पाई। लगिगई
नव सभा सुहाई। दिये सवन कर पाननवीरा
उमह्यो मनहु मोदनिधनीरा। सुर मुनि विप्र।

हूं दछिनराजे। निज निज सज धज साजि बिरा
जे। नव सटकोप बिस्व चित तोहो। ग्रोर हूं
बृंद ग्रचार जनाहो। दिव्य ग्राभरन बसन मं
गाये। सबकहूं जथा उचित पहिराये। दोहा।
सनमाने सब बिप्रमनी। करि संतोष सबभां
ति। छयो सकल कर उर रुचिर ग्रति प्रमोद
सव शांति।।२२। टीका। नव सूरजके उदय
होतेहीं सब कोप स्वामीने नाना बिनती ग्रौर

भ॰
१०५
106

बड़ाई करके सब देवताओंका यथायोग्य आ
दर सतकार और भली प्रकार परितोष जो
है सो किया देवता गण ऐसे आदर सनमा
न को पायकर और अतसे प्रसन्न होयक
र नाना सुजस और बड़ाई को गायन करने
लगे तिसतें उपरांत आनंद पूर्वक रंगभग
वान को अपने मंदर घरमै लेआये और ना
नाप्रकारके अमृतके समान पवित्र व्यंजन

श्रौर अनेक सुंदर भोजन बनवाय कर ना
ना कंद मूल श्रौर फल मेवयोंके सहित बडी
प्रीती सतकारसे भगवानको जिमायकर
सब प्रकारकी सेवाजोहै सो करतेभये फिर
श्रौर अनेक भांतके दिव्य पकवान श्रौर
भोजन व्यंजन षटरसके सहित रचायकर
बडे सनमान श्रौर प्रेमसे महांमुनियों श्रौ
र देवताउंको जिमावते भये तहां जैसी ।

२०
भा०
१०७

जिसकी रुचीहोतीभई तिसका तैसाहीं परि
तोषभया इस प्रकार जब देवताउंने भोजन
पायलिया तब इंद्र सभाजोहै सो सजगई
सबको माल मुड़ीके वासते पानोंके बीड़े
ल्यायदिये सर्वके हृदय मे हरष परि पूर्ण
होरहाहै मानो आनंदका एक समुद्र उमड़ा
हूआहै देवता मुनी ऋषी और राजे सब अ
पनी मजलसमे विराजे हूयेहैं तब सबकोप

स्वामी और विस्वामित्र और भी वृद्ध आचारज
सब मिलकर बड़े दिव्य वस्त्र और भूषण लाय
कर सबको यथा योग्य प्रीती सनकारसे
पहिराय देते भये जब इस प्रकार मुनी ऋषी
देवताओंका भली प्रकार सनमान और परि
तोष होयगया तब सबकोई ऐसे सनकारको
पायकर अपने अपने हृदयमें परम सुख
और शांतीको प्राप्त होजाते भये ।३२। चौपाई

र॰ भं॰ १०८

108

करहिं सकलधन धन सुख गाई। विप्रचित्त
कर विमल बड़ाई। ऐहिं न भयो होहिं संसारा
अस कै भाजन सुजस उदारा। बिछुरि सभाग
नि विविध सराहती। हरषि गये जन बास ब
राती। चौथेदिवस रंगपति पावन। निज सुम
रल कीन कल आवन। नवनहे उचित जथा
विधि रहयो। चौथी चार चारु सब भयेयो। त
हि निसि रंगनाथ अभिरामा। निवसे विस्व वि

नकल धामा। गोदेसहित हरष मनलीने। हास विलास रास रस भीने। नव निसि शेष उठ च तुपाई। सठकोपादि प्रवर मुनि गाई। आचार ज जन जरि समुदाये। आये भवन द्वार सुख छाये। जगत नाथ जागन हित नीके। छंद प्रबंध ललित प्रीय जीके। रवि रवि नवल मधुर पद पावन। गाय मधुर स्वर लगे जगा वन। नव गोदे जन प्रभ सुखपागे। प्रातकाल

र० भ० २९

गायन सुनि जागे। दोहा। करि सनान पट आ
भरन सजत सकल उतसाह। भवन गवन क
हे उदत हुत भये भवन सद नाह॥ ३३। टीका।
तब सब कोई धन्य धन्य कहि कर विस्वामित्र
की बडाई करने लगे कि इसके समान कोई
जगतमें है ना भया ना होगा सर्व सजनोंका
सुभ पात्र सत्य करके यही है ऐसे अनेक प्र
शंसा करके सभा जो है सो अपने अपने विष

99
109

३६

र जानीभई औार वराती जन सव अपने वास अ
स्थानको चले आये तव चौथे दिन रंग भगवा
न आनंदसे अपने ससरालके घरमै चले आ
ये तहां विधी पूर्वक संदर चौथी चार जो है सो
सव होताभया तिस रात्रीको रंगभगवान अ
पने ससर विसविसके घरमै हीं निवास कर
तेभये गोटके सहित सारी रात हासविलास
औार आनंद मेहीं मगन रहे जव चार घडी न
रा

२ भ ११०

बाकीरही तव सवकोप स्वामीसे लेकर और म
नी आचर्य सोष्ठे सो सव मिलकर भवनके द्वार
पर चले आये और जगतपतीके जगाने के
वासते वडे सुंदर छंद प्रबंध और नवीन पद
रचकर वडी मधुर स्वरसे गायन करने लगे
तव प्रात काल ऐसे मधुर गायन को सुनकर
गोदके सहित भगवान कृपानिधान ततका
ल जाग उठतेभये और सौच सनान इत्यादिस

२७८

व करके फिर दिव्य वस्त्र और भूषण पहिर
कर अपने घरको जाने की अभिलाषावाले
होजातेभये ।११। चौपाई । सठकोपादि विभ्र ।
वित जेते । रावन भवन नायक लषि तेते ।
लगे बिदाय करन सबनारी । कंचिन रतन
रुचिर कृत कारी । सजी सुभ्र सिवका सुखे
पालर । माणिक विमल दिपत कल फाल
र । छये उछाउ छोर जरकारी । मंजुमाल ।

मणिवीच सवारी। निरखत मनहुं ग्रहत वि
माना। लायेउ अजर साजि मनमाना। विसवि
न दंपति वड़भागी। रंगनाथ चरनन अनुरा
गी। गोदे संज्जुत दीन दयालैं। दी विठाय स
भग सुखपालैं। करि परिछन आरति उता
री। प्रेमवार हुग लेत नवारी। गोदे मातव
रन भगवाना। गहित करन साखि विनय व
खाना। दीन नाथ गोदे सुकुमारी। रहीमे

हि इह प्राणन प्यारी। पुर कर सारि नारि न
र साषी। मैनिज दृग पुतरी इव राषी। साधुस
रल चित सील सदाहीं। अति निदान जानति
कछु नाहीं। सोहि पति जन पद पंकज आप
न। लहि अल अलनि समन संतापन। इहि
कहं गुनि निज चरनन चेरी। दीननाथ निज
दया घनेरी। रावत रहहु सदा इहि हाला।
बार बार इह विनय कृपाला। बिस्वमित्र पु

२ नि जग कर जोरी। विनय वदन कछु कीँनयो न
भं० री। तव सिव का प्रभ स्वरन उठाई। जनवासहिं
११२ ड्रन चले लिवाई। गोदे मात देखि अकुलानी।
कफन विरहं वस रोदन वानी। धुर कर ना
रि मारवी स्वमदाई। रोनि विथन उरथीव विहा
ई। गोदे विरहं मनहुं निधिनीरा। वहो जात
नजि लोचन नीरा। दोहा। सठ कोपादिक वि
स्वचिन आन लोग पुरवास। विलपत सव। २५

करुणा विवस रोरो भरत उसाह ।२४। टीका।

तब सठकोप स्वामीसे लेकर विस्वविल श्रोर सब मुनी भगवानके जानेकी वार्ता सुनकर तत्काल बिदाय करने की त्यारी करनेलगे कंचिन की रचना करके जडीहूई स्वेत पाल रें श्रोर मोतियों की गूंदीहूई सुंदर फालरें ते सेही जरकसी वडे मनोहर उक्काड कि जिनके बीच मणियों की मालारची हूई शोभा पावती

२०
भ
११३

हैं इस प्रकार मानो इंद्रके विमानो को लज्जादे
ने वाले विमान जोहैं सो सजाय कर और ल्गा
य कर सुंदर और उ.नके बीच राखदिये तब वि
स्वचित और तिनकी स्त्री दोनो रंगभगवान
के चरन कमलों की प्रीतीवाले जोथे सो अ
पनी पुत्री गोदेको और रंग भगवान को बडे
स्नेह और सतकारसे तिन विमानोके बी
च बिठाय देतेभये और फिर निछावर कर

113

११३

के अर्थात तिनके सीस पर धन वार कर हे

दर आरती उतार तेभये तिस समय तिनके

नेत्रोंसे प्रेम जलका प्रवाह चलाजाताहै तब

गोटे की माताने भगवान के चरन कमल

पकडलिये और विनती करनेलगी कि हे

दीनानाथ इस पुत्रीजोहै सो मेरेको प्राणोंसे

भी प्यारीरही परके सब नारीनर इस बातके

साक्षीहैं जो मैने इसको नेत्रों की पुतली के

२०
म
११४

समान कैसे पाला और राखो है इह तो साधस्व
धे स्वभाववाली सदासील और अनसे नदान
कुछभी जानती नहींहै हे दीनबंधु मेरेको।
पतीके साहित अपने चरन कमलोंके भ्रम
री भ्रमरा जानकर और गोदेको अपने चर
नोकी चेरी समझकर सदैव इसपर दयाद्दष्टी
हीं राखते रहो मेरी बार बार यही बिनती है
फिर इसी प्रकार विस[illegible] चित्त भी[illegible]हाथ जोड

११४

114

कर बार बार बिनती करनेलगे तब देवता
ऊंने रंगभगवानका बिमान जोहै सो उठाय
लिया और जहां बरात उतरी हुईथी तहां
आनंद पूर्वक लैआये गोदकी माता पुत्री
को जाती देखकर व्याकुल होयगई और
बिरहके वशहोयकर बडेदुखकी बानीसे
रोदन करने लगी तैसेही सब पुरकी ना
री और सखी गणभी गोदके बिजोगसे ।

रा॰ मं॰ ११५

व्याकुल भईहुई रुदन करतीहैं मानो गोदा
के विरहका समुद्र उमडाहुआ तिनके नेत्रों
के किनारोंसे उछल कर वहा चला जाताहै
सदकोप स्वामीसे लेकर विस्वक्सेन और
जितने मुनीऋषी और पुरवासीथे गोदा
की विरहसे अधीर भयेहुये आसू भर भर
कर रोवतेहैं।२४। चौपाई। उत गोदा जात रं
गउदारा। गरुड जाननिज भये सवारा। गेह

115

११५

गैरु गगन दुंदभी बाजी। चौदस भवन जैति
धुनिछाजी। विधिमराल शिव नंदि सवाहू
चढ़े शक्र ऐरावति बाहू। सिखी स्वामि का
र्तिक साव भीने। वरुण सवोसन आसन
कीने। पहुप विमान धनद छविछाये। च
ढे महिष जमराज सहाये। और हेमकल
देव गण नाना। है अरूढ़ निज रुचिर वि
माना। रंगनाथ प्रभुसंग सहाये। प्रमुदित

रं०
भं०
॥९६

रंग नगर कहं आये। आन भक्त सतजन अनु
रागी। लिये छत्र चांमर बडभागी। करत जा
नसेवन जगत्राता। अस से हत पथ नाथवि
ख्याता। तव गोटे कहं दीन दयालू। वन उपव
नगिरि ग्राम रसालू। पावन सथ्र सरित स
रजोई। चलेजात दिषरावत सोई। देषि प्र
काल भक्त थल पावन। भने वचन गोटे म
न भावन। इहि थल वसहिं भक्त ममप्यारा

॥९६

जास प्रकाल नाम निज धारा। चौरजवृत संत न हितजासा। आपु नहिन नेमक धनआसा एकवार आये गृहसाधू। अति लख्यत मम नाम अराधू। रहयानभक्त अन्न कछुगेहू। भयो दुखित भाम निजतनेहू। मोर सम ए करत वनमाहीं। गयो पथक जन लूट न कांही। कह्यो नपथक पंथतहि कोई। भूखे संत सदन लखिसोई। लागयो रुदन।

र॰ मे॰ ११८

करन अकुलाई। तवमै वनो पथक अलराई लहेउमोहि लेत विन गवना। सदिन जिमाय सेन सुभ भवना। दोहा। असप्रकार त्रिभुवन पती गोदरति मति काहिं। दिखरा वनप थ ललितथल गये रंग पुरमाहिं। २५। टीका। कहो गोदके सहित रंग भगवान वडे आनंदसे अपने गरुडवाहन पर सवार हो जातेभये तव आकाशमे इंदभीजोहै सो

११८

वाजने लगी ओर चौदाहीं भवनोंमे जैजैका
र धुनी छायत होजातीभई जिस समय ब्र
ह्मा जोहैं सो हंसपर ओर महादेव नंदीप
र इंद्र ऐरावती हसतीपर स्वामी कार्तिक
मोर पर ओर वरुण भी अपने सुखासन
पर कुवेर पुहप विमान पर जमराज महि
ष अर्थात संडेपर ओर जो देवतागणहे
सो भी सब अपने अपने सुंदर विमानो पर

र॰
भ॰
११८

चले हुये रंगनाथ भगवान के साथ साथ
ही रंगपुरको चले आवते भये इनते मित्र
और भक्त संत हितकारी जो थे सो वड
भागी हाथोंमे छत्र चामर धारन किये हुये
मारगमे भगवान का सेवन करते जाते हैं
ऐसे रंगभगवान की अदभुत वरात जोहै सो
मार्गमे अत्यंतही शोभा देती भई नव गोदेकोभ
गवान वडे सुंदर वन और उपवन गरीजो परवन

११८

11 8

और सुंदर ग्राम बडी शोभावाले पवित्र नदी ।
और सरोवर जोहैं सो सब दिखावते चले जा
तेहैं तब आगे प्रकाल भक्तका पवित्र आश्र
म देखकर भगवान कहने लगे किहे गोद
इस स्थलमें मेरा परमप्यारा भक्तप्रकाल ना
म करके प्रसिद्ध जोहै सो निवास करताहै ।
और तिसने इह बनधाराहुआहै किसंतोके
वासते चोरज कर्मकरना अर्थात रसते चल

२० मे ११५

नेवालेयोंको लूटना और तिनकाधन संतोंको। देतेथेपरन्तु आप कछभी ग्रहणनहीं करते एकबार तिसके घरमें साधुजो आयगये सोक्ष धाकरके अत्यंत डरवी होरहेथे तिनको केव ल मेरेही नामका आधारथा और इहां भक्त के घरमें भी तिसदिन अन्नमात्र कछु नहींथा तिसनें स्त्रीके सहित सो मेराभक्त परम कले शको प्राप्त होताभया तव हृदयमें मेरेको

119

११५

समरता समरता पथक जनोको लूटनेके बा
सने बणको चला जाताभया देव योगसे ति
सदिन तिसको कोईभी पथिक अर्थात रस
ते चलने वाला नहींमिला और बनमें सेनों
को भूष जानकर दुखीभयाहुआ रुदनकर
नेलगा तबमें अपने भक्तका कलेश विचार
कर तरतहीं तहां पथिक जायबना मेरेको
देखतेंही तिसने ततकाल लूटलिया और।

२० भ० १२०

सोइ धन लेकर और घरमै जायकर आनंद पूर्वक संतोको भली प्रकार भोजन जिमाय दिया इसप्रकार भगवान कृपानिधान अ पनीप्यारी गोटेको सुंदर थल मारग और नदीवण सरोवर इत्यादि दिखावते हूये आप ने वास अस्थान रंगपुरमै आय प्रापतभये। ३५ चौपाई। तहं सुरगण मनीस समुदाई। कविस णम पदलेत विदाई। वार वार जे जैनिउ चारी।

१२०

२२

अथ खेटाकरन पिसाच चरितं। दोहा। खेटाकरन पिसा
च की कथा श्रवन मनरंज। वरनउं पद किंचन मनी सु
मरि कमल पदकंज। चौपाई। एक समय हाटा वनिवा
सू। जसे कमल दीनन उरव हासू। हक मणि सेजन स
दा निवासा। करहिं विनोद प्रमोद प्रकासा। नवरुक
मणि प्रभु पद सिरनाई। पानि प्रक जग विनय सुना
ई। दीननाथ मोरे मन आसा। सो पूरकरहु समन भ
व त्रासा। देहु पुत्र इक कृपा निधाना। सोहिं रुचिर

५५
भै-
१

जहँ बेस प्रधाना । गुण प्रबीन सब लोग उजागर । शा
स्त्र शास्त्र विद्या बल सागर । गिरिवर रुचि स्वनि स्वकम
नि रामा । मरेव भ्रमसकाय भने घन स्यामा । मोर स
मान स्रवन नव गेहा । उपजहिं प्रबसि नकुकु संदे
हा । मोहिनै अधिक रतन मनि धामा । होहिं विदत स
व लोक ललामा । जाहं स्रवन हितमै सब प्यारी ॥ बस
हिं जहां कैलास अगारी तहां करहुं तप सहित विधाना ॥
उनहिं रिझाय लेहुं वरदाना । तोरे देहुं बड़रि सत आई ।

निज सदृश सदा सुखदाई । दोहा । अस कहि कीन्यो से
न हरि भवन सेज मदु सैन । रही एक जब जाम निसि
जागे कृपानकेत ॥ टीका । नाभा दासजी कहते हैं कि
हे संतो अब चेटाकरन पिसाच की बड़ी मनोहर गाथा जो
है सो जैसीक मेरी बुद्धी के अनुसार होसकती है कृष्णप्रभा
त्मा के चरन कमलों को हृदयमे धारकर वरणन करता हूं
एक समय द्वारिकामे किजहां रुकमणीके सहित कृष्ण
भगवान सदैव निवास करते और नाना प्रकार के आनंद

2

और विलासों को भोग रहियेथे तहां रुकमणी हाथ जोड़ क
र और चरनोंपर सीस नायकर बिनती करने लगी कि हे
कृपानिधान मेरे चित्तमें एक आसा होरही है सोआप कृ
पाकरके मेरी ऐसी आसा को पूरण करिये सो क्या है कि मे
रेको पुत्रदान करिये परंतु कैसा पुत्र हो कि विद्यागुण
शस्त्र शास्त्रमें परम प्रवीन और संपूर्ण जदवंसमें प्रधा
न और लोगोंमें उजागर होवे ऐसे रुकमणी की गद्गद
वानी सुनकर भगवान मुषसे मुसक्यायकर कहने

लगे कि हे प्यारी तेरे वरमें निश्चय करके मेरे समान
ही पुत्र उत्पन्न होवेगा किंतु वही और गुण बलताई
मे कुछ मेरेसे भी अधिकही होवेगा अब मैं हे रुकम
णी तेरे पुत्रके वास्ते जहां कैलास पर महादेव वासक
रतेहैं तहांजायकर विधी अनुसार स्थित होयकर
तप करनाहूं और तपके प्रभावसे शंकर भगवानको
रिझायकर तिनसे वरदान लेऊंगा और फिर आयक
रके तेरेको अपने समान शक्ती और सामर्थ्यवाला स

२४ भ० ३

दव सुखौंकी निधी उत्र जौ है सो देऊंगा इसप्रकार क
रि कर्कै भगवान कृपानिधान तेह्रा भवनमै कोमल
सेजा पर विराज मान होयगये औरजब पहर भर रात
बाकी रही तब दीनानाथ्य जाग उठते भये १ चौपाई।
त्रब हूर हर रादन मुखवानी। सौच सनान कीन सु
ख मानी। करि विधिजत भनि मजन भावा। नेरौ स
हसर धेनु मंगावा। कये दान सब उज गण काही ॥
आये वजीर सभा सद मांही। हदय हरष हरित जउरा

ये । उद्धव सात्यकि लीन बुलाये । आये बहुरि सकल पु
रवासी । कृस्न कमल मुख दरसँ आसी । दंडप्रणाम धर
नि धर सीसा । करहिं रटन जै जै जिगदीसा । नहिं कोटि
ससि सदृस आये । सभा मह बलराम सुहाये । उदै स
भ्य छवि निरषत रामा । भये प्रमोद मोद घनस्यामा ॥
कनका मन बलराम बिठाये । दसा दसि जदुनाथ
सुहाये । कृतवर्मा सात्यकि अभिरामा । आये सभा मह
गुणधामा । कृस्न कमल पद बंदि सुहाये । बैठे उर प्र

२२ भ° ४

मोद सरसाये । नहि अवसर मागद अनुरागे । पढन वंद न विरदा वलि लागे । कियो न कीर्तन सोर अपारा । स भा द्वार चढे वीर अपारा ॥ उग्रसैन महाराज उदारा । आय इंद्र छवि हरन हजारा । उठे मल्लान सुभट जन सारे । मा दिर भवन नरेस जु हमे । न्टपवंद वसुदेव कुमारा ॥ प्र निनस लागि गयो दरवारा । दछण राम वाम जदुवी रा । वीच विराजत भूप मधीरा । आये पुनि उद्धव नहि टामै । वैठे करि प्रणाम वन स्यामै । सुमति प्रधाननी

४

नि मन नागर। उरन देव वल जासु उजागर। असुरम
नुज सब मेदनि राई। मानत जहि सासन सिरनाई ॥
दोहा ॥ असु उद्धव मनि धीरकहं जडुकुल क्रमदमये
कु। सवजादवँ सनाय सुख भयो वचन अनसंकु।
२ टीका ॥ नव कुसु देव हर हर हर सुखसे उचारने
हुये सोच सनान सब करके पवित्र हजन जोहै सोक
रने भये फिर तेरा हजार गौऊ मंगवाय कर वडे सन
कारसे ब्राह्मणोंको दान करके तिसने उपरांत आनंद

२२
भं०
५

एवंक सभाके बीच चले आये ब्रह्मा उद्धव और सात्य
की भी बुलाय लिये श्रवासीभी हर्षसे हर्षितभये
हूये भगवान के दर्शनकी अभिलाषा वाले होकर
सबचले आवने भये और पृथ्वी परमाथा धरकर
कृपा सिंधूको दंडप्रणाम करने और जैजैकार बुला
वनेहैं फिर ब्रह्मा कोटिचंद्रमाकी आभावाले सभा
के बीच बलरामजीभी आयगये तिनके आवनेसे स
भाके सबलोग उठखडेभये और चनप्रणाम भगवान

५

नेभी अपने हृदयमै परम हरष और सुखमानते तव
स्वर्णके सिंहासन पर वल रामजी विराय लिये सो
दरनी और भगवान कृपानिधानके विराजमान
होय गये कुलवरमा और मान्यकोभी जड्नाथजी
के चरन कमलोंपर प्रणाम करके सभाके वीच वैठ
जातेभये तव मागद सूत जो भाटजन हैं सो सुखसे
नाना प्रकारकी विरदावली जो है सो पढ़ने लगे त
कीवजनभी सभाके द्वारमै अनेक प्रकारका घोरक

११
मे
६

6

रतेहैं और इंद्रकी अनेक छवीको हरनेवाले नरेसउ
ग्रसेन महाराजभी आयगाये तिनको देखकर सव
सूरवीर उठखडे हूये और सीस नायकर वंदना कर
नेलगे और राजा उग्रसेन नम्र होयकर भगवान कृ
पा निधानको वंदना करते भये फिर सभाजोहै सो
यथावत लगजाती भई दहने वलराम और वांये घन
स्याम वीचमे राजाउग्रसेन फिर तहां उद्धवजी भीआ
यगाये और घनस्यामके चरनोपर प्रणाम करके वैठ

जातेभये सोउद्धवजी कैसेहैं कि जिनके वल प्रतापके आगे सुर असुर और मानव्य सब कांपते रहतेहैं ते वडेप्रेम उद्धवजीको जडकुल कुमदों के चंद्रमा कुलप्र धानमा सवजादवोंको सुनायकर वचन जोहै सो कहते भये २ चौपई ॥ मैं नृपहित कैलास सिधारऊं ॥ करि प्रसन्न रुद्रदास निहारऊं ॥ और रहुं कछु काराज मोहि आसा । तुम जडवीर सकल वलरासा । मैजो लौं आवऊं फिरि नाहीं ॥ तौलौ तुवयहि थीर समाही

भे
८

गाविङ्ग मजरा नगर संभारी । यथा उचित मति ज
नेन विचारी । केसी केस मल संभारा ॥ सैवह्राय
संगार श्रमिपारा । उग्रसैन कहं तिलक सवारो । श्री
वंडे विदन श्रसार संवारो ॥ जिन जिन वैर कियो मो
हि संगा । ते प्रचारि मारो महि रंगा । पौड्रादिक श्र
जहं न्रपक्रोधी ॥ श्रेहिं मोर सठ प्रथम विरोधी ॥
विन्तमम सुन नगर श्रनिह्रारी ॥ आवहिं प्रवसि
मूढ हितकारी । तातेमा विधान तमकैकै । ररूड

८

दिवस निसि आयसु मागि कै । राषिहु अलापक दरवा-
जा । रहहिं चारि दिसि बीर समाजा । बिनाचक्र श्रेकि
न प्रमाहीं । आवा गवन करै को नाहीं ॥ जनि की
जो कवि बिघन अहेरैं । राषिउ बन्ह नगर चौफेरैं । बहु
रि कह्यो मानकि मन नाथा । श्रीमहाव सघ्र सिखावन
गाथा । दोहा । बीर धीर विक्रमि बिदन नवगुण नी
ति निधान । षड्ग धनुष धरि पहरी कलकवच कुंड
दसनान । कीजो रैन न सैन भटी रहहु सजग निज

२२
भ
८

द्वार। करहु जथा सासन भनै अग्रज समति विचार।

३। टीका। हे उद्धव मैं अब नृपके नमित्त कैलासको जाता हूं तहां महादेवको प्रसन्न करके तिनका दरस न पाऊंगा अरु और भी कारजको मेरेको अछु आसा है हे जदुकुलके वीर तुम सब भलीप्रकार सामर्थ्य हो अब ऐसे करना कि जबतक मैं लौटकर नहीं आऊं तब तक तुम सब धीरजको धारकर और सावधान रहि कर अपने नगरको जैसे जानो तैसे संभाल राखना

२

तुम जानते हो कि मैंने रण में केसी कंस और मल्ल चा
णूर आदि सब तलवार की धार में बहाय दिये हैं
और उग्रसेन को राज तिलक देकर बड़े बड़े भारी अ
सुरों को मार दिया है और जिस जिसने मेरे साथ वैर
भाव दिखलाया मैंने तिस तिस को रण में प्रचार क
र हर हर कर दिया है देखो पौंड्रादिक बड़े योधी राजा
अबी तक मेरे महा विरोधी जीवते जागते हैं सो मेरे वि
ना सूना नगर देखकर अवश्य चढि आवेंगे और

२२ भं ५

कछु अनर्थ नहीं करेंगे ताते भाई तुम भली प्रकार शास्त्र
धारकर रात्रीदिन अपने घरमें सावधान रहना केवल
एक दरवाजा खुला रखना और चारोंई दिसामे वीरयो
धोंको जमाये रखना चक्रके चिन्ह लगे विना घरमें कोई
आना नहीं पावै और देखना कहीं वनमें शाकार खे
लनेको मनचले जाना नगरके चारोंपासे सेना स्थित
कर देनी फिर भगवान सात्यकीको शिक्षा देने लगे
कि हे सात्यकी तुम बडे पराक्रमी वीर धीर और नीती

मैंभी परम चतुरहो खड्ग धनुष कवच इत्यादि सबवी
र शास्त्रोंको धारकर रात्रीभर जागते रहना और द्वारकी
भली प्रकार सावधानतासे खबर रखनी बलरामजी
की आज्ञाके अनुसार सबकारज करना ।३। चौपाई
सुनि नदेस जदुपति हित सानी । भने वचन सात्य
कि सुखमानी । तव प्रसाद भगवन मोहिकाहीं ।त्रि
भुवन भटिन भीन कछु नाहीं । कबहुं कि इंद्र वरु
ण जमराजा । विधि कुबेर संकर दलसाजा । आवहिं

२२
भं०
१०

10

कोप चषक रण पीवत। उरलभ लक्षण नगर समजी
वत। छूटत सोर बाण धन गाढे। जाहि सीस रणमे
रनि छाडे। छितके भूप कौन किन लेवे। तब प्र
साद सब स्याम परेवे। सोई करिहो मे दीन दयाला।
भनहिं वदन जस राम कृपाला। तब बल करे प्रभुक
हो उचारी। सुनहु मोर अग्रज हितकारी। हारावति
मरे सब साव छावा। रह तम्हार जडवंस सहावा॥
रनकर रतण जतन विचारी। कोइ जथामति फर

१०

हिं तुमारी । अस सुनि भै नाम सुखे गाथा । याकर
कवन सोच जड नाथा । ऐसो कौन वीर जग माहीं ।
मोर अकृत आवहिं पुर माहीं । दोहा । जो के प्रीय
नहो प्राण निज नहिं न काम धन राज । सो आवहिं
पुर लखन सम त्रिभुवन साजि समाज ४ ॥ टीका ॥
ऐसी भगवान की परम हित की भीगी हुई आज्ञा
सुनकर सानु की हृदय मे सुखमान कर कहने ल
गे कि हे दीनानाथ तुमारी कृपा प्रसाद से मेरे को

२२
भं·
॥

मेरुणी जगतके सूर वीरोंका कुछ भी भय नहीं है जो क
दी इंद्र वरुण कुवेर शंकर रुद्र भी दल साजकर औरको
पसे उनमत्त होकर चढ आवें तो भी मेरे जीवते नगर
का देखना दुर्लभ ही समझें अर्थात तिनको क्या साम
र्थ है कि नगरको देख सकें मेरे धनुषके गाढे बाण
छूटनेसे समराण भूमीमें सीस छोड छोड कर जावेंगे
और पृथ्वीके राजे तो किस गिनतीमें हैं आपके प्रता
पसे मेरे आगे सब सहज हैं हे दीनबंधु मैं सोई करूंगा ॥

किजो वलरामजी आज्ञा करैंगे इसप्रकार सात्यकी के
वचन सुनकर भगवान वलरामजी सौं कहने लगे कि
हे हितकारी आपना द्वारिकामै इहां तुमारा जदुवंस जो है
सो सव भलीप्रकार परिपूर्ण होरह्या है अव इसकी रक्षा
तुमारे आधीनहै जैसा तुह्ही विचारमै आवे तैसाही ज
तन विचार कर इस जदुवंसकी रक्षाकरनेमै सावधान
रहना असे भगवानकी शिक्षा सुनकर वलरामजी क
हने लगे कि हे कृपा निधान इस वारता का कौन रचना

२२
भ०
१२

सोवहै और जगतमे ऐसा कौन सूरवीर सामर्थ्यहै जो मेरे होते घरमे आय सके और घरको देखसके जिस को राज और धनकी कछु कामना नहीं और अपने प्राणभी प्यारे नहींहैं सो शत्रुवन समाज सजाय कर मेरेन गरके देखनेको आवेगा ४ चौपाई। उग्रसैन कहे सौं बहुरि रसाला। दीनन देस वदन नंद लाला। घरक र रहहु सदा रखवारे। तब सामर्थ्य सुभट मरदारे॥ तजहु भवन जनि सासन मोरी। तमरे विदत अधम

२२

रिपुघोरी। अनिजउ वेसिन कहं जउराई। श्रीमुख भेसा

सन दीन बनाई। रहहु सकल अग्रज अनसारी। क

वहु सजगा अरकर रखवारी। अस प्रकार करि सब

न सिषावन। आय भवन कमला मन भावन। वैन

तीयहुत लीन बुलाई। परे वरन खग जैति अलाई।

नाममर्म सव वदन उचारी। दीन नाथ डुत कीन स

वारी। चले पनद दिसि कहं जउ नेहू। सुमरत सुघ

द भाल कल चेहू। सुरसमाज अभसेग सवाही। अस

२२
भं
१३

13

तति करत गगन पथजाही ॥ वदरी वनकरे कम
ल विलोचन ॥ आयेभक्त सेन दुष मोचन ॥ वहती
जहां कलष कलिभंगे । सीतल विमल वारि वरगं
गे । दोहा । तहां वास वहु काल करि हरत वधन आभा
रि । कीर अंबंड तप दीन दयानिधि जारि । ५ । टीका
फिर उग्रसैन को भगवान आज्ञा देते भये कि हे राज
न तुम वल सामर्थ करके सरव गुण निधान हो घर
की भलीप्रकार रक्षाकरनी मेरी वार वार यही आज्ञा

सवदीन

१३

है कि घर और घरको त्याग कर कहीं जाना नहीं क्योंकि
तुमारे सिरपर बड़े बड़े भारी शत्रु हैं सो समयही देखते
रहते हैं जिनका दाउ नहीं खाना तिसतें उपरांत जदु
नाथजी महाराज सब जदु वंसियोंको कहनेलगे कि
हे भाई तुमसभ बलराम जीकी आज्ञाके अनुसार र
हना और भलीप्रकार घरकी रषवारी मे जतन करना
और सावधान रहना इसप्रकार सबको शिक्षा करके
फिर भगवान कमला कांतजो हैं सो अपने घरमे चले

२२ भे १४

आये और तहां वैनतीय जो गरुडजी हैं सो बुलायलि
ये तब खगपती आवतेहीं चरनो पर माथा नावतेभये
तिनको भगवान अपना सब वृत्तांत सुनायकर फिर
तत काल तिनपर अरूढ अर्थात सवार हो जाते भ
ये और हृदयमें महादेवजीको सुमरँ हूये आनंदसे ते
यनद दिसीको चलपडे तब देवताउंका सब समाज
भगवाके साथ साथ अकाश मारगमें अस्तुती करता
चला जाताहै दीनबंधु और भक्त संतोके सुखदायक

भगवान जो हैं सो चलते चलते वदरी वनमैं आय प्राप्त भये और जहां कली कालके पापोंका नास करने वाली सीतल और निर्मल जल करके युक्त गंगा वह तीथी तहां वहुत कालतक निवास करके हनासव आदि सरवाय देनेका वडा घोर पाप जोथा सो अखंड तप करके सव जलाय देते भये ।५। चौपाई । जहां मारि रावण रण माहीं । कीन उग्रतप रघुकुल नाहीं । सुर ऋषि सिद्ध सेन मुनिनाना । करहि सदा

तप हित कल्याना । सो बदरी बन अमल अनूपा । पहुंचे
वे जबन है जड़ जलभूपा । तहि बनके मुनि हे दनि
वासी । हृत कमल पद दरसन आसी । आय लेन सा
दर अगवाना । भनत वदन जै जै भगवाना । दंडप्रणा
म करत अनुरागे । बार बार प्रभु चरनन लागे । पहुंचे
सांझ समय जड़ राजा । करि आवणी लिये मुनिन स
माजा । सकल मुनिन कहं कस जुहारो । आसिष व
चन मुनिन उच्चारो । गहि न विजन वो मर हवि साथैं

सेवन लगे मुदित जडनाथें । लषिप्रम प्रीति मुनि तिन
समुदाई । उतरे म्हूमि नज्या घराई । वलन वदन
पंकज भगवाना । लागे कुस केदक हन नाना । न
हि वदरी कानन फल पावन । जहें जहें आश्रम मुनि
न सुहावन । देषि मुनिन जन कृपा निधाना । हरषि
करहि वंदन सनमाना । मुनि स प्रीति आश्रम लै जा
ई । अर्घ्य पाद्य आचमन कराई । केदमूल फल भोज
न चाहू । प्रभहि करावन अमिय अहाहू । प्रमकी

२२
म
१६

16

गरहरा मुनिन मनकारी । चलेजात वसुदेव कुमारा
भृगु अगस्त वसिष्ट सहाये । भरद्वाज गौतम मुनि
राये । व्यासदेव नारद वलमीका । औरऊ सब हरि
दास अलीका । जैजै रटत चहूंन दिसि जांही । जथा
निरषि नवनीरद कांही । करत कैकिकल मंजुलवा
नी । महा प्रमोद मोद मन मानी । दोहा । कछुक दूर
जब जायकै निरषि सुथल घनश्याम । वैठिजाये उर
सुमरि हर भक्त कलपद्रुम काम ।६।। टीका ।।६

६

और रावण को रण में मार कर जैसे रघुनाथजी ने ब
डा भारी उग्र तप किया है और जैसे सुर ऋषी सिद्ध
साथ मुनी जन कल्यान की प्रापती के वासते बडा घो
र तप करते हैं सो तिस निरमल बदरी बण में जब
जडनाथ जी महाराज आय प्रापत भये तब तिस ब
ण के निवास करने वाले संपूर्ण मुनी भगवान के च
रन कमलों के दरसन की आसा वाले जै जै कार बुलाव
ते हूये दीनानाथ के लेने के वासते आगेसे चले आव

११
भं
१८

ने भये और प्रेमके वश भये हुये भगवान के चरनोप
र वारवार दंडप्रणाम करने लगे दीन बंधु को नहीं आ
वने मे सांझ समय होयगया मुनियों का समाज वा
री पास शोभा दे रहा है तब भगवान हाथ जोडे हुये स
ब मुनियों को वंदना करते हैं और वे आनंद पूर्वक स
ब आसीसा देते हैं फिर भक्ती प्रीती से हाथोंमे चमर
पंषा इत्यादि लेकर भगवान कृपा निधान की सेव
काई मे तत्पर होय गये इस प्रकार मुनियों की

२८

भक्ती सिवकाई देखकर भगवान प्रसन्न होयकर गरुड
से उतरकर पृथ्वीपर चलने लगपडे ऐसे पाउंके चल
नेसे दीन बंधुके कोमल चरनोंमे वनके कुसकांटे औ
र कंकर जोहैं सो चुभजातेभये तहां निमबदरी वनमें
जहां जहां मुनियोंके पवित्र आश्रमथे सो मुनि समाज
को साथ लिये हुये कृपानिधान सब देख देख सबका
बंदन और सतकार करते जातेहैं और मुनी जोहैं सो
आगेही आयकर भक्ती पूर्वक घरमे लेजाते और सन

२२
भ
१८

मानसे अर्घ पाद आचमन करवायकर बड़े मधुर कंदमू
ल फल और अमृतके समान भोजन जो हैं सो भगवान
को अहार करावते हैं इस प्रकार भक्तहितकारी भगवा
न मुनियोंका सतकार ग्रहण करते हुये चले जाते हैं औ
र अत्री अगस्त वसिष्ट भरद्वाज गौतम व्यासदेव नारद
वालमीक इत्यादि सब मुनिंद्र और भगवानके दास भक्त
जैजैकार रटते हुये चारो पासे मिले हुये ऐसी शोभा औ
र आनंदसे चले जाते हैं कि जैसे नवीन बादरको देख

१८

देख कैकी जो मोर हैं सो वड़ी हर्षकी वानी करते और प्र
सन्न होते हैं तव कुंकुक हर जाय करके भगवान भक्त
न्ह देखदान वड़ा संदर थाल देख कर हृदयमें महादेवको
स्मरते हुये नरहरी वेट जाते भये ।६। चौपाई ॥ मुनि
समाज बड़े वीर विराजा । फवे वीच जड़ कुलमहारा
जा । विनवहिं सब इकटक दृगकीने । मानऊं मोद म
होदधि लीने । सादिर कलिन कुसासन आनी । प्रभुक
हेदीन मुनिन सुखमानी । नेमवन वड़े रिजगल कर

२२
भं०
१५

जोरी। लागे करन बिनंति अघोरी। नाथ सदा हम का
नन बासी। तव पगाना पद पंकज आसी। काकीरहे
सेवन उपचारे। हमरो सब बस नाथ तिहारो। तव
मुसकाय भने गिरधारी। सुनहु मुनीस महो तनपथा
री। मै करुणा तव जाचन हारा। अहं सदा मुनिदास न
मारा। सिव तप करन हेतन वदेसा। मैकीन्यो उव
बिपुन नवेसा। जहि बिधि होहि प्रसन्न उमीसा। क
ह्यि अब सोई जतन मुनीसा। सुनि मुनिंद प्रभ भगवन

१९

वानी । वोले वचन अमृत जस पानी । दीनवंधु दीननहि
त कारी । सव महेस मानस संचारी । दोहा । चाउजा
त भगवान सम दियउ वडाई तास । प्रभु सुमरे मान
स पीय भक्त संत जन दास ॥ ८ ॥ टीका । सव मुनियों
का समाज जो है सो चारो ओर शोभा देता भया और वी
च मे जदनंदन भगवान विराजे हुये छवी पावते हैं सव
मुनी ऋषी इकटक नेत्र जोड कर भगवान के रूप को
देखते देखते महा आनंद के सरोवर मे मगन हो रहे हैं

२२
भं
२
20

और कसा का दिव्य और बड़ा पवित्र आसन लाय कर
के भगवान के आसीन होने अर्थात् बैठने को विछा
य देने भये फिर हाथ जोड़कर और नम्र होयकर विन
ती करने लगे कि हे भक्तपाल हम जो हैं सो सदैव व
णों में ही निवास करने वाले हैं और भगवन नित्य तुम्हा
रे ही चरन कमलों के दर्शन करने की अभिलाषा रख
ते हैं आज हमारे धन्य भाग्य हैं जो दीनबंधु ने घर मे आ
यकर दरसन दिया है यद्यपि हमारा सर्वस्व सब कृपा

२

निधान हमारा ही है तथापि हृदय मैं संकोच होता है कि
दीनानाथ का ईस समय क्या सेवन और उपचार करिये
ऐसे मुनियों की वाणी सुनकर भगवाँन सर्वेसे नम्र
ह्वायकर कहने लगे कि हे तपधारी मुनीसरो तुम मे
रा वचन सुनो जो मैं तो सदैव तुमारी ही कृपा को जा
चता रहता हूं और तुमारे ही चरनो का दास हूं महादे
व भगवान का तप करने के वास्ते हमारे देस विषे
ईहां वन मै आय निवास ~~किवासे~~ किया है अब कृपा

२१
भ०
२१

करके सोई जतन कहिये कि जिससें त्रिपुरारी भगवान स
हजेंही प्रसन्न होजावें इसप्रकार भगवान का वचन सुन
कर सब मुनी लोग हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि
हे दीनानाथ हे दीनबंधु तुमजो हो सो सदैव महेसजीके म
नरूपी सरोवरके हंसहो अर्थात सदैव तिनके मनमेंही
निवास करतेहो हेदीनहितकारी तुमजिसको चहतेहो
तिसको वड़ाई देतेहो तुमको अपने भक्त संत और दास
जोहैं सो सदैवही प्यारेहैं ।७। चौपई । तबभगवान भने

२१

सडु बागी । मैं अब शंभहि जावन लागी । इहि थल निव
सि करहु तप वेसा । सुंदर साधि समाधि अवेसा । तुम
निज निज अब जाहु सिधारी । मोहि मानस अनुकूल
विचारी । नव मुनि वेदि बरन भगवाना । निज निज
आश्रम किये पयाना । इत उत्तर सुर सरि तट माहीं ।
वैठे करि आसन दृढ नाहीं । गरुड जान निज बोलि सु
रारी । हीनर जायस बदन उचारी । सुमरन फिरि कीजे
इत आवन । करहु गवन अब भवन सुहावन । करि स

२२ मं० २२

एराम नव खगपति पाये। इत भगवान भक्त सुखदाये। बैठे साधि समाधि प्रवेशा। प्रेरो प्रान ध्यान ब्रजेशा। मूंदे नैन बांधि गति मनकी। हैगई दसा चेतनागत ननकी॥ इस प्रकार जडपति तपधारे। सेकरदेव अराधन लागे। सुरमुनि देखि उग्रतप नाथा। विसमित भनत परस्पर गाथा॥ दोहा। सकल जगतके ईस इह जडकुल कमल दनेस। इनकहू धरत समाधि कही जानिन परहि उदेस॥ ८॥ टीका। नव भगवान बडीकोमल

२२

वाणीसे कहने लगे कि हे संत भक्तो मैं अब शंभु भग
वानके रिझावने वास्ते इसअस्थानमैं वास करके अ
खंड समाधी लगायकर अति उग्र तप जो है सो करूं
गा अब तुम सब मेरे को प्रसन्न जानकर आनंदसे अ
पने अपने आश्रमको चले जावो ऐसे भगवानकी
आज्ञा सुनकर सब मुनी तत्काल चरनोंपर सीस ना
यकर जै जै उचारते हुये अपने अपने आश्रमको च
ले गये तब ईश्वर भगवान कृपानिधान महादेवको म

मरकर गंगाजीके किनारेपर दृढ आसन करके बैठ
जातेभये और गरुडजीको पासबुलाय कर कहने
लगे कि हे खगनायक अबतुमभी अपने स्थानको
चलेजावो परंतु ध्यान रखना कि जबमैं स्मरण करूं
गा अर्थात् तुमको याद करूंगा तो तत्कालमेरे पास
आयजाना विलंब नहीकरना ऐसे दीनानाथकी आ
ज्ञा पायकर गरुडजी चरनोपर प्रणाम करके अपने
आश्रमको चले जानेभये तब ईहां भगवान दशामे हार

मै प्राण चढ़ायकर और अखंड समाधी लगायकर मन
की गती को रोककर नेत्रौं को मूंद लेते भये शरीर की दशा
चरन जैसी अचेत होय गई इस प्रकार भगवान तप मै तत्पर
होयकर शंकरदेव का आराधन करने लगे तब देवता औ
र मुनी ऋषी भगवान का ऐसे उग्र तप देखकर बड़े आ
चर्ज को प्राप्त होकर परस्पर कहते हैं कि संपूर्ण जगत
के ईश्वर जड़ जल कमलों के प्रफुलित करने वाले सूर्ज
स्वरूप परमात्मा जो हैं सो इनको समाधी धारना और

२२
भं
२४

किसी देवताका ध्यान करना इह कारण कछु जाना नहीं
जाताहै ।८। चौपाई । इन मुनीस अस करहिं विचारा ।
उनसमाधि पथ हम उदारा । दीप सिषासम जबकोइ
लीना । ताकु अचलचित ध्यान प्रलीना । नवकौतुक अस
देखि सुहावा । विहसे शंभु मानस सुखपावा । जब शं
कर अस मुख बस काने । हरगण निरखि सकल विस
माने । तिनमें रह्यो एकमति नागर । येंदाकरत पिसाच
उजागर । विन संकर गति ज्ञान नजांके । शिव शिव रटत

दिवस निसि तांके । चेरा बांधे कानन माहीं । सिव तजि आ
न सुनै कानि नाहीं । जो नरु देव सुनावहिं आना ॥ का
टि सीस तहि नयन कृपाना । करहिं बोध चेटा हरषाई । शिव
शिव शिव सुभ सबद अलाई । बिहसे शंभु बिन कारन
जानी । सो बोल्यो जोगिन जगपानी । कहहु नाथ कछु
अनुचित बागी । नव कृपाल सेवक अनुरागी । इह दि
टाई लषि मोर सहाना । त्रिमिय अनाथ नाथ भगवाना
नाथ बिहसन बदन बिन हेतू । मोहि उपज्यो संशय ह

पैं
२५

घकेन्ह। जोमोपे भगवन नवनेहू। तो इन्ह हरियनाथ
मेदेहू। दोहा। मुनि पिसाचके वचन अस संकर कृपा
नकेत। लागे भनन प्रसन्न मनसो विहसत निजहेत॥
९॥ टीका॥ ईहां मुनी लोग ऐसा विचार करतेहैं और
उन्हा समाधीके रसते ध्यानमे लीन होकर जडनंदन
जीने दीप सिषाके समान चितको अचल और स्थिरक
रलिया तव ऐसाको नक देखकरके अति प्रसन्नहोयक
रं महादेवसे हस पडते भये इसप्रकार महादेवको हसते देख

२५

25

सिवजी

व

कर तिनके गणजोहैं सो परम आश्चर्य को प्राप्त होय गये तब तिन गणोंमें एक चेटा करन नाम करके एक बडा चतर गणथा कि जिसको जगतमैं शंकरदेव के विना ओरकोई सूझता नहींथा अर्थात एक शिवजी कोंही जानताथा और रात्रीदिन शिवकोंही रटता रहताथा कानों में चेटा बांधे हुये शिवके विना और किसी का नाम नहीं सुनताथा जोकोई तिसको थोड़ोदे कर किसी देवताका नाम सुनायदेता तो तत्काल

खड्ग से जिसका सीस काट देता और शिव शिव उचा
रकर बैठेका महा शबद करने लग जाता था तहां सो
शिवजी को कारन के बिना ही हसने हूये देखकर हाथ
जोड़कर बिनती करने लगा कि हे कृपा निधान मेरी
कछु अयोग्यसी बानी है परंतु दीन बंधु तुम मेरे को अ
पना सेवक जानकर और मेरी ढीठाई बिचार कर त
माही करियो सो क्या है कि नाथ तुमारे अकारन हसने
का मेरे हृदय मे बड़ा भारी संशय उतपन्न भया है जो

भगावन सेवक जानकर जो मेरेपर तुमारा सनेह ओरषी
नीहै नो आनुग्रह करके मेरे हृदयके इससंदेह को हरक
रिये इसप्रकार पिसाचके वचन सुनकर कृपाकेधाम शं
करजीहैं सो अपने निस हसनेका कारन जिसप्रकार कह
नेहैं आगे कथन कियाजानाहै । ९ । चौपाई । दीनदया
ल भक्तअनुगामी । बदरीवन आये मम स्वामी । मोरहेत
सुर नर मुनि मंडा । बैठे सोपि समाधि अखंडा । लषिन
परन प्रवरज इहगाथा । करनकौन कौतुक जडनाथा॰

मे ८८

अस मन की गति अगम अगाधी। जायन कोटि जनन मति साधी। हम उनकर पद पंकज केरे। सदा अनन्य मधुप रवचेरे। सो साहिब स्वामी जउ नेहू। करत ध्यान हमरो सव केहू। अस विचारि मैं इस्यो नगाई। इद्यो न हेत ध्यान कछु भाई। तव पिसाच जगजो दित पानी। नायसी स बोल्यो मदु वानी। तम तें अधिक कौन जग ईसा। तुम ऊं ईस सामर्थ्य गरीसा। संभु कह्यो नहिं जानसि मूढा। मम भ्रम तव गरुडने गूढा। याके प्रेइ नतम अधिकारी।

८८

तोते हमनहिं कहत उचारी। नवपिसाच अस विनय
उलाई। सेवहु दिवस नाथ सिवकाई। करि लीनी
भरिमोद महाना। अब करुणाकरि कृपानिधाना।
जानि चरन अनुचर अपनाई। देहु भक्ति मोहि सह
ज सुहाई। भने वदन संकर नव वानी। जो मोहि भ
जहिं सजन अनुरागी। देहु पदारथ सब नहि काही
भक्तिदान मोहि समरथ नाहीं॥ दोहा॥ भक्ति पदा
रथ देनकहुं समरथ दीन दयाल। इष्टदेव मम क

२२
भ०
२८

पातन श्रीवर श्रीजड़पाल । ९० । टीका । शंभु कहतेहैं
किहे येटाकरन दीनदयाल श्रीरभक्तपाल श्रीजड़ नेदन
भगवान मेरे स्वामी जोहैं सो वदरीवनमे आये विराजेहैं
श्रीर मेरे समरण श्रीर श्रराधनके वास्ते श्रखंड समाधी
लगाय कर वैठगयेहैं श्रवमेरेको इह श्रचरज कुछल
घा नहीं जाना कि भगवान कौन कौनका करतेहैं तिन
के मनकी श्रगाय गतीहै सोतो कोदि जनन कियेभी
जानी नहीं जाती मै उनके चरन कमलोंका भमरे वन

२८

एक सेवक हूं वे मेरे साहिब और स्वामी हैं देखो तिनकी
आश्चर्ज लीला कि सो परमात्मा अब मेरे ध्यानमें स्थित
होय रहे हैं हे पिशाच मैं एही विचारकर हसयाथा और
कारन तोकोई नहीं है ऐसे महादेवका वचन सुनकर
पिशाच जो है सो हाथ जोडकर कोमल वानीसे विन
ती करने लगा कि हे भगवन तुमारे से अधिक और को
न जगतमें ईश्वर है तुमही सर्व सामर्थ्य भगवान हो तब
शंभु कहने लगे अरे मूढ तेरेको समझता नहीं है मेरे अ

एकान्तन्न गूढसे गूढ परम गूढहै तिसका तूं अधि
कारी नहींहैं तिसीतें मैं उचारण नहीं कर सकता हूं
तब पिसाच फिर विनती करके कहने लगा किहे दी
ना नाथ मैं आनंदभरकर तुमारी सेवा जोहै सो बहुत
काल तक करलईहै अबदासको अपने चरनोका से
वक जानकर यही कृपादान करो जोमेरेको सहजे
ही मुक्ती प्रापत होवे ऐसे तिसका वचन सुनकर श्री
कर भगवान कहने लगे किहे पिसाच जो मेरे भक्त

मेरेको प्रेम पूर्वक भजते हैं मैं तिनको जगतके सब प
दार्थ देता हूं परंतु भक्ती दान जो है तिसके देनेकी मेरे
को सामर्थ्य नहीं है भक्तीपदार्थ देनेको केवल दीनोंके
हितकारी मेरे इष्टदेव श्रीजडनंदन भगवानही सामर्थ्य
हैं १०॥ चौपाई ॥ सकल जगतके अंतरजामी । भक्त मे
न सज्जन अनुगामी । कहु पिसाच करजोरि निमामी ।
मोहि बताय दीजे निज स्वामी । कहि विधि होहिं सरन
उनकेरी । जरहिं त्रास भ्रम मन करमेरी । देहु बताय

२२
भं
३.

30

जतन सखख सैना । प्रभु तुमार देखउं भरि नैना । कहिय
ल वसहिं गरीब निवाजा । हर हर राजँ जउ राजा । ह राज
नि पिसाच सहु गिरा सुहाई । बोले वदन हरखि गिरि
राई । तब कीन्यो मम प्रभु पद रागा । याते मोहि मान
स भीय लागा । तुम पैं मोर भई प्रति प्रीती । लखि जउ
पति पद पदम प्रतीती । मिलन सहज अब जतन सुरा
री । मोहिनें सुनहु भक्त व्रत धारी । हरन भार मेदनि अ
वतारा । लीन्यो जउ जल प्रकट उदारा । देन सुजस मो

३.

हि श्रीजदुराये। खत जावत बदरी बन आये। बैठे मायि समाधि प्रवेसा। जहि सुमरत छूटहिं भव दंडा॥ दोहा॥ जो नमरे मनकामजन मुक्तिपदारथ लेन। सो बदरी बन जायके भजहु हरि दिनरैन ॥ ११॥ टीका॥ फिर भगवान कैसे हैं कि संपूर्ण जगतके अंतरजामी हैं और भक्त सेन सज्जन जनोके परम हित कारी हैं तब पिसाच हाथ जोडकर कहने लगा कि हे कृपा निधान अब कृपाकरके सोई जतन कहिये कि जिससे मेरे को

आपके ऐसे दीन बंधु स्वामीकी सरण प्राप्त होवे और मे
रे मनका मनोरथभी सफल होवे मैंतिस भगवानको ने
त्र भरकर देखूं सो देवता और देवताओंके राजाके पालने
वाले जडुराज भगवान किस स्थानमें वास करते हैं ऐ
से पिसाचकी कोमल वानी सुनकर शंकरभगवान प्र
सन्न होयकर कहनेलगे कि हे पिशाच तैंने मेरे प्र
भुके चरनोंमें प्रीती और प्रेम कियाहै इसतेने मेरेको
ते परम प्यारा देख पडताहैं तेरी जडुनाथ जीके चर

५

तोमैं प्रीती देखकर मैंभी तेरे पर प्रीती वाला होयगया
है अब तें जदुनंदन महाराजके मिलनेका सहजही
जतन जोहै सोमेरेतें श्रवणकर जो तिस भगवानने
पृथ्वीका भार उतारनेके वासते जदुकुलमैं प्रकट अ
वतार लियाहै सो अब मेरेको सजस देनेके वास्ते दीन
वेष ब्रजकी जाचना केलिये वदरी वणमैं आयेहैं और
जिस परमात्माके स्मरण करनेतें जगतका सब भय
छूटजाताहै सो तिस वणमैं अखंड समाधी लगायके

२२
भ.
३२

रवैठे हृयेहैं अवजो तेरे चितमें सकी पदार्थ लेनेकी का
मनाहै तो वदरी वनमें जायकर तिस परमात्माका
रात्री दिन स्मरण कर ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ जुरायाय जद्यपि
भगवाना ॥ मिलहिं नकिये जतन हठ नाना ॥ पै जहा
सरल कपट गतहोई ॥ स्मरहिं दीनयाल कहेकोई ॥
अविरल भक्ति प्रेम लहि तासा ॥ होत प्रकट उनरमासि
वासा ॥ पूजहिंनास मनोरथ सारी ॥ सदा कृपाल भ
क्तहितकारी ॥ ताते तव वदरी वन जाई ॥ जतनतिसक

पट भजहु जडराई । देखि अनन्य प्रेम भगवाना । रीझ
हिं निरखि दीन वरदाना । प्रभु कहँ केवल प्रेम प्यारा ॥ गु
णहिं न जान नीच संसारा । सुनि संकर सुख गिरा सु
हाई । हंटाकरन चरन सिर नाई । गवनो वेग हरषम
रमाना । जै जदुपति जै जदुपति गाना । लिये संग बहु
रंग घनेरी । विविध जमान पिसाचन केरी । जहि थल
फूल समाधि जडाना । नहि थल कहे कीन्याति नपा
ना । स्वान सहस्र संग निज लीने । सकर सारहूल व

२२ भ॰ ३३

न चीने । दोहा । रटि जैजै हरि कृ करत देत भगत प
र छेरि । नादवाद नाना करत थरझयाय श्रुति टेरि ९
टीका । शंकर कहते हैं कि यद्यपि भगवान दुराराध्य
हैं अर्थात बड़ी कठिनतासे अराधे जाते हैं और नाना
यतन हठ कियेसे भी प्रापत नहीं होते हैं परंतु जहां
स्वये स्वभावसे कपट छलसे रहित होकर कोई दीन
वंधुका स्मरण करे तो तिसकी निःकपट भक्ती
और पवित्र प्रेम देखकर भगवान तुरत प्रकट होय ३३

कर तिसके मनोरथको सफल कर देतेहैं क्योंकि दी
ना नाथ सदैव भक्त हितकारी और भक्तोंके अनुसारी
हैं ताते हे भक्त तुम बदरी बनमें जायकर और हृदय
में निशकपट होयकर भगवानके भजनमें तत्पर
होयजावो तबतुमारा दृढ प्रेम देखकरके दीनबंधु
तुरतही रीझजावेंगे दीन दयालको संसारमें केव
ल प्रेमही प्यारा है ऊंच नीच जाती बडाईको भगवान
कछु नहीं जानतेहैं इसप्रकार संकरदेवके मुखसे

२२
भं०
३४

34

द्धित दायक वचन सुनकर येदाकरन गतकाल बर
नो परसीमसनायकर जैइरी जैइरी रटना हुआ भां
त भांत के पिसाचोंकी जमात और अनेक शकारी
स्वान साथलिये हूये जहां बदरी वणमें हुल्म परमा
त्मा समाधी लगाये हूये बैठेथे तहां को चलपड़ता
भया तब चलता चलता बदरी वणके बीच आयक
र तिन शकारी स्वानो अर्थात कुतयोंको सब पिसाचों
के सहित बाराह और शेर उन्मादि मृगोंपर प्रेरकर जे

३४

हरी जैहरी ऐसा शवद उकारने ग्रौर मारो धरो धरो
मारो इहघोर शोर चारो ग्रोर करतेहैं ।१२। चौपाई
गर्हित जीव कानन समुदाई । हनत वदन जैजै
हरिगाई । करत भीत रवकानन चारी । खेग मृ
ग जीव निकर धनिहारी । भागे जात चहूंन दिसि
त्रासे । डरिविन दीन निजप्राण निरासे । मच्यो सोर
कानन अतिघोरा । करीकि हरि विकरत चहूं वो
रा । करिपिसाच गायल वहु जीवैं । खोवैं प्रमस्व

२२
भं
३५

35

रुयर बड्रपीवें । बारबार जैजैति बखानें । हमहूं ब्रह्मा
व दीन भगवानें । तिनमहूं श्रमको परहा नजानी ।
जहि जैजै हरि रहो नवानी । गाम कृस्न गोविंदउचारें
जैजैजै कहि जीवन मारें । खगमृग उरपन जान प
लाई । लागे जान पिसाच पिक्काई । घरभर मच्यो
विघुन बड्रयारी । जहं तहं फिरत पिसाच दिखाही
चेटा करन करत श्रमचागी । हम आये इन जडपति
लागी । तोते देषहु कानन भाई । कहिस्थल श्रहें भ

क सुखदाई । रुषान कथन संभ भगवाना । खोजडु
कानन कृपानिधाना । करि दरसन डरलँ जडराई । लै
ऊजनम फल संसति पाई । दोहा । चेटा करन व खान
ग्रस स्वनि पिसाच समुदाय । जडे नहे खोजन लागव
न राम कृल सुखगाय । ६३ । टीका । फिर जीवों को
पकड पकड कर और जडनाथ की जै बुलाय बुलाय
कर मार देते हैं तब वन के खग मृग जीव जंतु जो हैं सो
धीरज को त्याग के हुये सब भागे चले जाते हैं और प्राणों से

भ

निरास भयेहुये भयके वश दीन और दुखी होरहेहैं इस
प्रकार वर्णमें बड़ा घोर शोर मच जाता भया कि हरजो
और करी जो हस्ती सो भयभीत होकर चिक्कार शब्द
करते फिरतेहैं और पिसाच जोहैं सो अनेक जीवोंको घा
यल करके तिनका रुधिर पीवते और मांस खावतेहैं
और बार बार उल्लासकर कहतेहैं कि भगवानने आज
हमको उदर भरकर अहार दियाहै तिनमें ऐसा कोई
नहीं देख पड़ा कि जिसने जेहरी जेहरी वाणी उचारण

२२
भ
३६
36
जय
३६

नंहीं करी सव राम कृष्ण गोविंद उचारते औरजीवोंको मा
रतेहैं खग म्रग डरते हूये आगे भागे जातेहैं और को
पसे तिनके पीछे पिसाच लगेजातेहैं वणमे वारेपासे
खर भर मच गया जैसा तैसा पिसाचही देखपडतेहैं त
व वेटा करन कहने लगा किहेभाई हम ईहां जडनंदन
भगवानके दरसन मेलेके वासते आयेहैं तोने अब ति
नकोही देखो और भालो कि सो कृष्ण निधान कहां औ
र किस थलमे वास करतेहैं शंभू भगवानका कथन

२२
भ०
३१

अन्यथा नहींहै निसभक्त सुखदायक जदुनंदनके खो
जनेमें शीघ्र यतन करो और तिनकी चरन शरनको प्रा
प्त होवो फिर भगवानका दुर्लभ दर्शन पायकर आप
ने मन वांछित फल प्राप्त करो और जगतमें जनम सु
धार लेवो इस प्रकार चेटाकरनकी बानी सुनकर सवगो
पीजोहैं सो मुखसे कृष्ण कृष्ण उचारते हुये भगवान्
को जहां तहां वनमें खोजने लगजाते भये १३ चौपाई
खेलत मिस प्रवेश वनमाहीं। ते हेरत सब जदुपतिकाहीं

को

२८

हैी। जहं लगा रहैजीवबन चारी। भागे जात ड्रविनदि
सिवारी। तिनकर आरत शोर महाना। परिगो अवन
हंयर भगावाना। लागे सोचन सोच विनासा। कौन
उपद्रव विघुन प्रकासा। जहिंहित खगमृग कानन
वासी। भगे जात निजप्राण निरासी। को आयो इनक
र डरवदाना। लेतन विकल जीव थिर गाना। खान
सोर इक बोर महाना। तिमि पिसाच धावनतवन नाना
वीव वीव जैजै धुनिकरहैी। मोरनाम अभिरामउचरें

२२
मं
३८

हीं । नोलो विष्णन जीवनि यथाये । करनसोर आरत ग्र
नराये । लघिजीवन दाहन डषब्याधी । सहिनसके
प्रभ कुसो समाधी । नैन उघारि वियो भगवाना ॥
परे दृष्टि थावन गण स्वाना । तिन पाछे पिसाच सम
दाई । थावन विष्णनजीव डखेदाई । दोहा । थावन
भस्त गुह्य गात सब करन सोर कछु भयन । देखेउ
कहिथल श्रीहिं काल कुसल कमल दल नैन ॥ ५४ ॥
टीका ॥ पिसाच जोहैं सो शकार खेलने के वहाने

३८

मे वनामै जइनंदन भगवानको खोजने फिरतेहैं तिनके भयसे वनाके सब जीव जंतू व्याकुल होकर चारो दिसामै भागे चले जातेहैं ऐसे तिनके डरखकी महा प्रकार भगवान दीन सावदान के कानोमै जोपडी तो सब व सोचोंके हर करने वाले भगवान सोचके वश होकर कहने लगे कि इह वनामै कौन उपद्रव उतपन्न भयाहै कि जिससे वनाके विचरनेवाले खग म्रग प्राणोंसे निराम होकर भागे चले जातेहैं ईश्वर

इनको डरवे देने वाला कौन आया है जो जीव व्याकुल भये हुये धीरज नहीं लेते हैं कहीं स्वान जो करते हैं तिनका शोर अनमे कर के है और तैसे ही जहां तहां पिसाच समूह धावते फिरते हैं और मेरे नाम से जैजे शवद उचारते हैं इनने मे वनके जीव जंतु वडी डरवेकी वाणी उचारते हुये भगवान के निकट आय जाते भये तव तिन जीवों का अत्यंत डरवे देखकर दीनवंधु महाराज नहीं सके समायी जो है सो छुटगाई जवनेत्र उचारकर कृपासिंधुने देखा न

३५

व अनेकही स्वान धावते हूये देखपडे और तिनके पीछे
जीवोंके दुखदायक अनेकही पिसाच वणमे धाये चले
आवतेहैं और निरभय होकर परसपर ऐसा पुकारते आ
वतेहैं कि देखो शीघ्र देखो कि कमल नैन कृस भगवा
न किस अस्थानमे विराजमानहैं ।१४। चौपाई । भक्त
अखिल सथर कीरपाना । आवत करत कुलाहल नाना ।
जैजैजै भगवान उचारें । धाय धाय कानन मृग मारें ॥
करत अटन अस प्रेतनिकाया । आयगये सनमुख जदु

गाया । तिन पाछे वहु कानन माहीं । देखिपस्यो प्रका
स वहुंगाहीं । मानहु उदय विघन नमस्सारी । मस्हो प्र
कास क्षयोदिस वारी । इमत पिसाच निरूप कराला
लहत लेव कच दसन विसाला । करत अटन कानन
वहुंपासा । मस्से विकट कटु वचन प्रकासा । दोहा ।
घेरे उरंगगान वाल निज किल कलात मुखवाय । हस
न हरिन पटरहन रत डरत हवरी काय ।५। टीका ।
कैसे भी पिसाच हैं कि जीवों का मांस खावने और रुधिर

पावते वडा शोर करते चले आवते हैं फिर जैजैकार उ
लावते और वणमें धाय धाय कर म्लगोंको मारते हैं इ
सप्रकार अटन करते करते पिसाच जो हैं सो भगवान
के सनमाख चले आवते भये और तिनके पीछे वणमें
चारोंपासे अनंत प्रकाश देखपड़ा मानो वणमें एक
सूरज उदय होय गया है और अनेकंसी भयानक रूप
वाली पिसाचनी कि जिनोंके वडे लंबे केस और लंबेही
दांत और मुखमें महा कटु वचन गोदीमें लियेहुये वा

लक किल कलात शाह करके मात खोलेहुये शा
रीरसे नगन हसती औार रोवती पापोंकी भरी हुई
देहसे क्रृशप अर्थात इवलीसी जहां तहां धावती
फिरतीहैं ।१५। चौपाई। रुदन करत बोधत अस
वालैं। भेटव आज अवसि नंदलालैं। नास पेत।
लिय मंडिल माहीं। लख्यो क्रस जग पेतन काहीं
सोचत मनमहं कृपानकेत। अध मपिसाच नाम
ममलेत। को रह पाप पुन्न वडदोऊ। जिमिविष

५१

खोय अमिय पियकोऊ। मोरनाम समरत उवे
धेसू। मुक्ति जोग इहजोग प्रवेसू। याविध भनत
नाथके वाचा। चलिआये इत निकट पिसाचा।
वदन कराल लंब वपुधारे। पीतलोम लोचन
अरुणारे। दीहदसन नासिक अति भावन। अ
नसे अमंगँरूप अपावन। तीनताल लग हव

ला

विदेहा। हाहा हीही वचन अनेहा। भवत म
नुज अमख कर लीने। मनुज अंतनतन आव

२२ भ ५२

न कीने। मानुष रूपधरि पियत वहुवारा। स्तन क मनुज जग कंपन धारा। वदत अनेक भांति मुखवानी। आवत चल्यो सकुच चित्तत्यागी दोहा। हसनव कन वहु वदन अन जंघवेग व लपाय। नरु टूटत कंपन धरन उभय तरुन द नुराय। ६। टीका। नव सोपिमावनी रोने हूये वालकोंको प्रवोध करती हैं कि मत रोवो आ ज हम नंदलाल महाराज का भेटोंगी अर्थात

५२

मिलेंगी नव निस पिसाच मंडिलमें हमसथमा ।
त्मा देखेनें को देवनेभये ओर हृदय मै सोच
ने लगे कि देखो इह अधम पिसाच जोहैं सोमे
रा नामलेतेहैं जाननहीपरता कि इहकोई देवता
पुनपापहैं इह तो ऐसा संजोगहै कि जैसे किसी
ने विष खायकर अमृतको पानकर लियाहै तै
सेही इनोने सर्व दोषोंके हर करने वाला मेरा
नाम सुमरण कियाहै तांतें इहमुक्तीके योग्य ।

स्
भ॰
४२

और शलाकाके लायकहैं इसप्रकार तीन वंधु
के कहने कहते सो पिसाच निकट चले आव
ते भये सो कैसेथे बड़ा कराल मुख और तैसेही
लंबा शरीर पीले रोम और लालनेत्र लंबेदांत
और बड़ीभयानक नासिका सिरसे पाउंतक अत
से अमंगल रूप और तीन ताड़ प्रयंत ऊंची
सी काया हाहा हीही मुखसे बड़े हावे वचन मा
नुष्योंका मांस खावने और लहू पीवने और मा

४२

43

नुष्यों की ही पहिरी हुई गले मे आंदरां भरेहुये

मानुष्यही कंधोंपर उठाय हूये नानावानी वा

लते और अनेक प्रकार हसते बकते अभय

होकर चले आवतेहैं ऐसे तिनके तीव्र जंघोंके

बलवेगसे वृक्ष टूटते और पृथवी घर घर कां

पतीहै।२६। चौपाई। चंद्राकरन भनन असवा

नी। कवदेखब हमसारंग पानी। निवसत क

हां वदरि वननाथा। गिरेगगीव गहन गति।

ऽऽ
म
४४

44

छाया। माधुरि स्याम सरूल वरमूरति। संभ्रम
नत नहीं हृदय विसूरति। कहौ होहिं राजन
अबमोहू। साधि समाधि हरन भव सोहू। कौन
पाप पूरब हम कियऊ। जहिते जोनि प्रेत जग
लियऊ। पै हम सहस आजन कोई। परम पुन्य
भाजन भवहोई। जोकेदरस दिव्य भगवाना।
होहिं सरन दुरलभ सबदाना। अस प्रकारसो
चत मन माहीं। चेटा करन अनुज जनमाहीं।

हेरत बिपन बिपुल श्रम पाई। आय गयो स
नमुष जडराई। प्रभु कहँ प्रेत मनुज मनले
खी। बोलि उठो मवे वचन कुभेषी। अहो।
कौन तुम इत कहि लागी। बैठे ध्यान लीन
बडभागी। ईहाँ समूह पिसाच कराला। अट
न करत कानन सब काला। दोहा। स्वानसि
कारी श्मन इत फिरत बदन बहु बाय। तुम
नडरत निरजन बिपुन बैठे ध्यान लगाय। ९

टीका। नव घंटाकरन पिशाच जोहै सो ऐसेक
हनेलगा कि हमकव नेत्र भरकर भगवान
कृपानिधानको देखेंगे सोगिरेहूये गरीव ज
नोका हाथ पकडने वाले इसवदरी वणमै
कहां वासकरतेहैं शंभूका कथन विसरता
नहींहै श्याममाधुरी ग्रौर कोमल मूरतीवाले
भगवान सत्यकर्के हैं परंतू काजाने कि स
माधी लगाये हूये कहां विराज [illegible] माने हैं

हमने पूर्व जनममैं कौन पाप कियाहै कि।
जिससें जगतमैं इह पिसाच जोनी पाईहै प
रंतु आज हमारे समानभी धन्नका पात्र ज
गतमैं कोई नहीं है कि जिनको आज भग
वान भक्त सुख दानका दिव्यदरसन कि
जो देवताऊंको भी दुरलभ होताहै होने
वालाहै इस प्रकार कहता हुआ चेंटा कर
न अपने भ्राताके सहित बडे प्रेमसे खा

२२
भ॰
५६

जता खोजता भगवानके सनमुख आय जा
ताभया तब जडनाथ जीको मानुष्यवत देख
कर चेंटाकरन लगेहे सो कहनेलगा कि अहे
तुमकोनहो और ईहां ध्यान लगायकर कि
सकारन बैठरहेहो देखोइस वणमें तो महा
भयानक पिशाच रात्री दिन फिरते रहतेहैं औ
र अनेक ही सिकारी स्वान मारावोले हुये ।
मार मार करते धावतेहैं तुम ध्यान लगायेह

५६

46

ये इस निर जनवणमें बैठेहो का तुमारेको
ऊछुभय नहीं लगताहै ।१७। चौपाई । अति
सुक मार अंग मृदु लोने । चित वत चित चु
रात मनुटोने । कलित कमल दल नैन न
वीने । रूपरासि मनसिज छबिछीने । ललित
नील अंबुज तनुकाया । अतसे वचित्रँ मनभा
या । इंद्र कुबेर वरुण किधौंकोऊ । कैगंधर्व किं
नर सुर होऊ । जानिन जाय तुमार प्रभाऊ ॥

रू१

२९
मं.
५७

मनुज प्रकट कहिं सत्यजनाऊ। महा विक
ट कटु मनुज अराती। तुमन उरत लखिप्रेत
जमाती। घंटाकरन कथन हनिकाना। म
खमसकाय भने भगवाना। हमदुवौ जउवे
स मझारा। भक्तहेत लीन्यो अवतारा। संभस
रणकैलासमसि धाये। लखि जामनि इत विष्
न वसाये। तुमहो कौन कहो हमकाहीं। कहि
हिं फिरहु वदरि वनमाहीं। यौंसेवक भत शेक

त

५८

एकोऊ । अभय फिरहु कानन कलदोऊ । मुनि
निवास वदरी वनमाहीं । कौन वताय दियोत
मकाहीं । परद्रोही नास्तिक सठ प्रानी । आवत
ईहां न अग्ग अभिमानी । सेवत सुर ऋषि सिद्ध
सदाहीं । अभय होत श्रीजुत भवमाहीं । पर
द्रोही पापी सठ पोहू । ईहां होत संकुल दुखसो
हू । तातेतुम पिसाच जगभाई । अब न जाहु
आगल वनधाई । वैठे मुनिन वृंद तप हेतू ।

२२
भ०
५८

करहु नइत म्हसानन प्रेतहु। अपरजीव इहि।
का तन केरे। होत विकल तव स्वानन हेरे
कवहुं कि सासन निदरि हमारी। तम प्रेरे
वन स्वानसि कारी। तो हम भाति सेवक स
व भांती। तमहिं हनव वानन धरिछाती।
दोहा। हम रक्षक वदरी विपिन भाति जीवन
सुषदान। कौन इक्छत हमरे इन्हे उषदाय क
रि सुप्राण। ५८। टीका। फिर पिसाच कहताहै

५८

कि तुम अतसे ऊमार अवस्था और कोमल
अंगोंवाले वडेसुंदरहो तुमारा दरसन जोहै
सो चित्तको चुरायलेताहै सुंदर कमलोंके
समान तुमारे नेत्र और रूपकीरासी मानो
कामदेवकी अनेकछवी को लज्जादेतेहो
और नीले कमल वतहै शरीरकी शोभा।
इह तुमारी मनोहर मुद्रा अति करके मन
को भावतीहै तुमकहो इंद्रहो किकुवेर कि

२२ वरुणहो अथवा किंनर गंधर्वहो कि कोई
भ० देवताहो तुमाराप्रभाव कछु जानानहीं जा
४९ ताहै हेमानुष्य तुम सत्यकरकें वताउ कि
कौन होतेहो क्योंकि इहप्रेतोंकी जमातीजो
है सो महा कठिन और हमानुष्योंकी शत्रुहै तुमइसतें डरते
नहीं हो ऐसे वे का कथन सुनकर भगवान मनमें मुसका
टाकरनपिशाच यकर कहने लगे कि हे पिशाच हम जडवे
सी तपी हैं और हमने पृथ्वीपर भक्तोंकेवा
४९

सतेहीं अवतार धारन कियाहै शंभूके दर
सनहित कैलास को चले जातेथे राधीसान
कर ईहांबणमेहीं वासकर लियाहै अवतस
अपनीकहो कि तुम कौनहो ईहांवदरी वण
मै किसकारन फिरतेहो कितुम कोई शोक
रके गएहो जोदोनो अभय होयकर वण
मे विचरते हो ईहां मुनियोंके वास वदरी व
णमै तुमको किसने वताय दियेहैं इसवण

सू
भ
५
50

मै परद्रोही नास्तिक जड पापी कदाचित
नहीं आय सकतेहैं ईहांतो केवल देवता
ऋषी मुनी सिद्ध सदैव जप तप भजन क
र कर और अभय होय कर कल्यान को
प्रापत होतेहैं इह कैसाभी वणहै कि जिस
मै परद्रोही पापी प्रथम उष्ट निवासकरके
संसर्ग उत्वदोषोंसे छूट जातेहैं तोते हे पि
साच अब तुमभी दोनोंभ्राता आगे वणमै

५

धावन मत करो क्योंकि तहां मुनी ऋषीश्व
रसमाथ आनंदसे बैठे हुये तप करतेहैं तिन
के बीच तुमको जायकर शकार खेलना ।
जोगनहींहै इतर और जो जीवहैं सो भी तु
मारे श्वानोके भयसे व्याकुल और दुखी हो
यरहेहैं तांतेजो अब तुम हमारी इस आज्ञा
को उलंघन करके वण मै शकारी श्वानो
को छोडोगे और जीवों को दुख देवोगे ।

११
भ॰
५१

तो फिर हम जो हैं सो सब्ब प्रकार करके मुनियों के सेवक और जीवोंके सुखदायक हैं तुमारेको छाती पर कर बाणोंसे हन न कर देवेंगे अर्थात मार देवेंगे हम इस वणके सब जीवजंतू और मुनि। यों के सहित रख वारे हैं हमरे होते इन को डुख देने वाला अपने प्रा। णों का शत्रु कौन है ॥ १८ ॥ ।

5

५१

चौपाई। तौते असविचार उरकरिहैं। तेहठि जाइ रसनअघा

सनयरिहैं। प्रेत तुमार अतोन नवीना॥ हमजानतन स

ब वहत प्रवीना। प्रेतभवन भगावन सुनि नीके। तेहि

गाये प्रचर जगति जीके। इहमानुष कस जानि नजाई

सनि सनेह मन गिरा अलाई। मम अभ्रकर इहरवोउ

बनैहैं॥ नरे ऋति उदयदिवस हमजैहैं। असकहि प्रेत

हरषजुत होई। लगे हनुमंत भजन निजदोई। सुनहु म

नुज अब मरमहु मारा। जैजैजै जग सिरजनहारा॥

२२
भ
५२
52

हम पिसाच रत उदित मलीना । चेटाकरन नाम अभि
माना । सेवक संभ वचन मनकाया । इह मम सैन
ध्यान समुदाया । मैं बांध्यो चेटा फुनि मांही । जहितें स
ग्यो नाम हरिनांही । करि सेवा सुचि संभ अघोरी । मो
पायो मुक्ति जुगल करजोरी । नवजन्म भयो संभ भँगवाना । सोऽहं तोतन
वसनह रजाना । दोहा । अस कहि चेटाकरन उर सुमरि चरन भँग
वेत । जै जै जै जडुनाथ कह्यो लागणो भजन अनंत ९९
टीका ॥ तांते हे पिसाच असा हृदयमे विचार कर ईहां

है। आसन लगायकर बैठजावो हमनेमारा वृतांत जो है
सो सब सुनना चहते हैं तब धेन भगवानका ऐसा कथन
सुनकर आश्चर्ज केवश होकर बैठगया और मनमे क
हताहै कि इहमानुष कैसाहै कछु जाननहीं पडता इस
ने कैसी सनेहकी भीगी हुई बानी उचारन करीहै इह
अवश्य मेरे प्रभुका खोज बनावेगा तब तहां जानहोते
हम जावैंगे ऐसा विचारकर धेनजो है सो भगवानके च
रनोको सुमर कर और जैजै शबद बोलकर हरषसे भरा

२२
भ
५३
53

हृष्ठा अपना वृतांत सब कथन करने लगा २१ चौपई
खेटाकरन नाम अस मोरा ॥ डरन दंभ दूषन रतचोरा ।
असमष अहार सदादिन राती । दुषदायक जीवन जग
घाती । निरदय कुटिल क्रूर कटुवाचा । परद्रोही नि
दक अपराचा । निमिउद्र अनुज मोर रत दोषू । वमु
पिसाच सब आमिष पोषू । मे सब विध रत दूषन भारी ।
व्रतेसन जोग कृपाल मुरारी । अस उर समझि कृस
भगवाना । येन कृस मन वचन वखाना ॥ मैसिव

नैं जब विनय सुन्योरी । जाग्यो भक्ति जुगल करजोरी-
नव भाष्यो शंकर मोहि बाना । हैं इक हृस भक्ति क
र्दाना । नवमैं नेम्रु जुक्त जगपानी । वृषभ नाथपैं
विनय बखानी । सो हरि जलय स्याम छबिमाना ॥
कमि कृपि करहिं मोर जब गाना । मैंगाथ्यो चेटाक्रु
नि माहीं ॥ हरिको नाम सुनऊं जहि नाहीं । विम्र
देव निंदक सबकाला । कहि सेवा प्रभ दीन दयाला
दोहा । मोपेरी जहिं कृपानतन कूल कमल दल नैन

२२
भ॰
५८
54

गुनि सेवक पद दीन लखि देहिं मुक्ति सुखदैन २
टीका ॥ पिसाच कहता है कि चेटाकरन मेरा नाम
है और मैं पापी देखी सर्व दूषणों का भरा हुआ हूं सदै
व रात्री दिन मांस ही मेरा आहार है जीवों का दुखदा
यक और ज्ञानी निरदय महा कौटिल और दुरवादी
परद्रोही निंदक और कुकरमी हूं ऐसे ही सर्व दोषों
का भरा हुआ हूं मेरा आना और पिसाचों की सब से
ना भी मांस आहारी है इस प्रकार मैं तो सर्व दोषों की

२

निधी है वाव मन जोगा भगवान कृपा निधान हीहैं
ऐसे कहिकर बेटाकर पिसाच जोहै सो कृलपरमा
त्माको कहने लगा कि मैने जब दीनतासे बहुत वि
नती करके महादेवसे मुक्तीदान मांगा तब मेरे को
शंकर भगवानने कहा कि मुक्ती पदार्थ देने को सा
मर्थ एक कृल परमात्मा हीहै और तो कोई नहीहैं
तिसपर मैने हाथ जोड़कर फिर विनती करने ल
गा कि हे त्रिपुरारी देव मोक्षकीके दायक स्वामि मेव

२२
भ·
५५
55

वन शरीरकी अभावाले भगवान मेरीदीनको कैसे
सुधी लेवैंगे क्योंकि मैंने कानोंपर चंदा बांधा हूआ है
और हमारे नामके विना निस परमात्माका नामक
वी सपनेमेभीनहीं सुना विस्नू भगवानका सदैव नि
दकेही रहाहै अब सो कमलनैन और कृपाके धाम
कृष्ण परमात्मा कौनसेवासे मेरे पर रीझेंगे और कौन
गुणासे अपने चरनोका सेवक जानकर मेरेको सर्व
सुखोंके देनेवाली भक्ती जोहै सो दान करेंगे ॥ ३०

५

चौपई ॥ तब शंकर अस मोहि बखाना । कृपानिधा
न कृस भगवाना । जानजि कपट भजइं हरि काही
तौ असाध तमरे कछु नाही । फेरहिं अवसि दीन दु
खहारी । दयादृष्टि निज नगनघ यारी । तबमै बि
नय कीन करजोरी । शंभु बसहिं कहो नंदकिशोरी
कहु शंकर बदरीवन मांही ॥ बसहिं हरन जन त्रास
सदांही । मैकहु कौन यतन नंदलालैं । देखउं दृ
ग भरि दीन दयालैं । हर भगवान कह्यो तब मोही ॥

२२
भं
५६
56

गावत पंथ श्रम वेरन कोही । नवमे नाम रूप रटह
लागी । पूछ्यो शिव सो नेश्रुत वागी । हर कहत अज
अनादि अन यामा । अच्युत अनघ अनेंत अनामा ॥
गुण अतीत अवगत अविनाशी । सरव रहेँ सब घ
ट न प्रकासी । हरन हेत भव भेद निमारा । जड कु
ल हृत लीन अवतारा । सिंधु नीर हारावनि माही ।
इष्टदेव मम वसहिं नहोहीं । दोहा । सुनि शिव म
ख उपदेस श्रम वार वार पग लागि । आयो वदरी

त

विपन करहि क्रमनि कपट छल त्यागि ।२१। टीका

पिमाव कहना है किजब मैने इस प्रकार कहा तब

शंकर भगवान मेरेको कहने लगे कि हम परमा

त्मा कैसे कृपा निधानहैं जो कपट छल को त्यागकर

तुम तिनको भजोगे तो तुमारेको कुछ असाधन

हीहै सब सहजही होजावेगा सो तब परजो परवन

थारने वाले हरीहैं तुमारेपर अवश्य अपनी दयादृष्टी

पावैंगे और तुमको सफल करैंगे तब मैने फिरहाथ

२२
मं
५८

जोड़ कर विनती करी कि हे भगवन सो दीन याल ने
द लाल महाराज कहां और किस स्थल मे वास करते
हैं तव शंकर कहने लगे वे दीनो के उद्धार और आसह
रने वाले भगवान बदरी वनमे वास करते हैं मैने फिर
प्रार्थना करी कि हे गौरीनाथ मै जिस दीनानाथ को
किस यतनसे नेत्र भरकर देखूंगा तव शंभू ने कहा
कि मारग के जानेका ही श्रम है और तो कोई विलंब
नहीं है फिर मै भगवान का रूप विहंग चक्र नाम

दाम आदि सब पूछा कि वे परमात्मा कैसे हैं तब शंक
रदेवने उत्तर दिया कि सो जगत नाथ भगवान स्वतेप्र
काशिक अनादी हैं अर्थात तिनकी आदभी नहीं और
र अयाम है कोई वर भी नहीं पापों से रहित अविनाशी है
तिनका नाम भी नहीं अनंत और अनाम हैं अर्थात
तिनका अंत नहीं और कोई नाम भी नहीं है गुण और
गुनी से रहित घट घट मै प्रकाशिक और सबसे न्यारे भी
हैं पृथ्वी का भार उतारने के वास्ते जदुकुल मै हुए

२२
मे
५८
58

नाम करके अवतार धारन कियाहै और समुद्र के किनारे द्वारावती जो द्वारिका है तहां मेरे सो इष्टदेव वास करते हैं इसप्रकार मैं कुटिल और कुमती शंभु भगवान के मुखसे उपदेस सुनकर और तिनके चरनों पर बार बार सीस नायकर छल और कपटको हृदयसे त्यागकर ईहां बदरी वनमें आय प्राप्त भयाहूं २९॥ चौपई॥
अब खोजत इनाफिरउं बिहाला। सोन पैउं प्रभुदीनदयाला। हृयान होहिं कृष्न त्रिपुरारी। मोरे जियभ

रोस यह भारी ॥ जामनि जानि बसङ्ग यहि ठौरें । खो
जङ्ग उदय होत छनि भौरें । जोन मिलहिं इत कृपानि
धाना । तो द्वारावति करङ्ग पयाना । सवैया । सुरस
रन्न ब्रह्मण सो श्रीप ती पै नित्य वास करन्न सुहाये ॥
करता हरता भरता जग को परनी परना सुभ सेज पो
ढाये । आनंद कंद प्रमंद सुछंद छिमाकर वेद निवा
ज कहाये । देखत आज सोऊ भरके दृग हैं हरि मरति
मैन लजाये । सेवत सेवत बीति गये बङ्ग शंकर पाद

२२ भै
४६

सरोजन काहीं । भोगत भोग लग्यो तनरोग लख्यो
नहीं जोग अजोग तटाहीं ॥ जान कढ्यो निन आश्रम रे
जहीं सुकृत बीज मिल्यो कहू नाहीं । आज दया करि
दीन विचार दियो उपदेस महेस महाहीं । जाय अभय दु
न देखव दोरिके गौरीके नाथको नाथ कृपालैं । कोम
ल कंज सो रंज पदंगरि भेगरि भीन भवैं सब कालैं । दी
नके ईनहैं दीन पंडीत सिखीकल कोट विराजतभालैं
भाग उदय लखिहौं अमलोचन सोच विमोचन देव

८

कि लावैं । दोहा । मै अति पतिन पिसाच षल क्रमति
दुष्ट दुराचारि । आजजाय पदपरसिहौ श्रीपति प्रथम
उधारि २२ । टीका । अब ईसे खोजना खोजना विहाल
होय गया है सो दीन दयालकेही मिलने नहीं है और
शास्त्र भगवानका कथनभी झूठा नहीं है मेरे हृदयमै
दृढ विश्वास है कि रागीको ईश्वर निवास करके ग्यानका
ल सूरजके उदय होनेही वनामै भली प्रकार खोजें
गा जो कदापिकाल भगवान ईश्वर ना मिलेंगे तो हारि

२२
भ.
६०
60

काको चला जाऊंगा और दीनबंधु को अवशण मि
लेगा कैसेभी दीना नाथहैं कि संसारमै सरवीरों
को शरणा देनेवाले और पतियी जो नीर समद्र हैं
जिसमै वास करने वाले जगतके करता हरता औ
र शेषनागकी सेजापर सैन करने वाले आनंद रू
प और आनंदसेही अपनी इच्छासे विचरने वाले म
हैव कल्यान रूप लमाकी खानी दीनोका उद्धारक
रने वाले ऐसे भगवान की कोटिकाम देवकी छ

अथतलसीदास चरित वरणनं । दोहा । भ
क्त जनन मन कुमद कल ससिमहेश वि
कसान । भक्ति महातम कथन अव कर
हुं श्रवण सुखदान । श्रीरघुवीर सरोज
पद प्रेम भक्ति प्रदवाहु । हारन दुरमति ।
दोष दुख दारन विषय विकारहुं । चौपाई ।
मदमता रवि सुरसरि सोहा । अंतर वेदि द
स मनमोहा । धन्य भूमि सव संसति गाई ।

२५
भं०
१

सेवत मुनिगण संत सुहाई। तुलसी एक
ल जुगल असनामा। तहां निवास कर
हिं अभिरामा। जब तुहिं भयो दास्पति ग्रे
हा। तब भरत भयो जनक तजि देहा। जन
नी जियत आस जग खोई। निजपति सव
सह गामनि होई। मनमत यथा निरं कु
सनागू। तिमिह तेउ तुलसी वडभागू।
पितुयत पाय मत मद होई। जीयजंत स

ऊच लाज सब खोई। लगेपो निवास करन
कलधामा। निरत निरंत्र रमन निजभामा
अवसर पाय पुत्र उपजावा। जनु निज हृ
दय मनोरथ पावा। एक दिवस तोकर श्री
य नारी। मात्रिभवन सामीप विचारी। वि
न एकै तुलसी अभिरामा। आई तहां त
जन निजधामा। पाछे तुलसि सदन निज
माहीं। देखो आय प्राण प्रीयनाहीं। मा

१५
भ
२

श्री भवन गवनिजिय जाना। कौन नस
दन अन्न जलपाना। मरुत वेग जनु धा
वत धावा। निज सुसराल हरष उत आवा
त्य विलोकि दारुण विसपागी। वदन ।
विविध विस कारन लागी। मैइन कछुक
काज वस आई। अबहिं जाइ निज भव
न परई। तव विलंव कछु सदन नको
ना। आवामोहि पाछिल मति हीना।

२

गाहा कवन काज असमोरे। सो अब करहु प
कट कछु मोरे। तव तुलसी अस वदन उ
चारा। तव वियोग नहिं सकहुं सहारा। मै
जव पीये सदन निज आवा। तव दरसन
हरगनाहिन पावा। सो अस सत सदन वि
नतोरे। भासन लगेपा विपुन समभोरे। त
व कोमल अंगी मृग नयनी। मै आवा व्या
कुलपिक वैनी। पति सव सनत भाम।

५५
भ०
२

3

असवानी। बोलीवदन वचन रिससानी॥ मू
ढ़ हिता हित नसमझु नजाना। विषय ग्रंथ
निज दशा भुलाना। कवन मदन विविक
सखिलागी। धृति संतोष दीनसव त्यागी
जाएँ पति मोहित नवेरहा। सोतो होइ वा
मकर देहा। भूल्यो वृथा कवन गुणलेखो
सार असार विचार नदेखो। ओहोकौन ज
म काम सनेहू। नसपति कवहुं राम पद।

२

नेह। दोहा। ७५ जहिं अवरिल भक्ति मयह
चिर प्रेम संसार। तौलव धन्य प्रयास विन
भवजल तरहु अपार।।१।। टीका। नाभादा
सजी कहतेहैं कि हेसंतो भक्तजनोके क्रम
द रूपी मनको विकासने वाला अर्थात
खिडावने वाला अब औेर भक्ती का संदर
महात्म जोहै सो कथन करताहूं इसको
प्रीती पूर्वक कान देकर श्रवण करिये।

ह

२१
भ॰
४

इह कैसाभी महात्मयहै कि श्रीरघुवीरजीके
चरन कमलों को पवित्र भक्तीके देनेवाला
और जमनाके बीच मे एक अंतर बेथी मनो
हर देसजोहै तहांकी बड़ी सुंदर पुण्य भू
मी कि जहां संत साध मनीजन सदैव निवा
स करतेहैं और तिसी भूमीमे तुलसी नाम
करके एक ब्राह्मण कि जिसको सकल भी
कहतेथे बास करता भया जब तिसका विवा

सर्वदुखदोष और दुरमती
केनासकरनेवाला और वि
षयविकारोंकेटारनेवा
लाहै कहतेहैं किगंगा

ह होय गया तब पिताजो है सो कालके व

श होय जाताभया और माता भी जगतमे

जीवने की आशा त्याग करके पतीके सा

थ सती होयकर जलमरी तब तुलसी जो

है सो मन मतिया स्वतंत्र अर्थात अपनी

इच्छा अनुसार जैसे निरंकुश हस्ती होता

है तैसेही अभय होय कर विचरने लगा

और पिताका धन पायकर मद मत्त होय

२५
भ
५

कर सब सकुच और लाजको त्यागे हुये अ
पने सुंदर घरमे वास करने लगा और स्त्री
के प्रेम के वश होयकर रात्रीदिन तिसके
साथही रमन और विलास मे लीन रह
नेलगा तब समय पाय करके तिसके घर
मे पुत्र जो उत्पन्न भया तो मानो हृदयकी
सब अभिलाखा पूरण होय गई एकदिन
तिसकी स्त्री अपने माता पिता का ।

तव पीछेसे तुलसीजी घरमे आया और अपनी

घर सामीप विचार कर तुलसी के पूछे वि
नांही अपने घरसे निकल कर नेहो को
चली आई, प्राण पयारी को नेहो घरमै न
ही पाया जानलिया कि माझी भवनमै अ
थीत अपने माता पिता के घरमै चली ग
ई है तिसकी विरहसे घरमै कछु अन्न जल
खान पान नंही किया ततकाल पवन के
समान वेगधारकर धावताहुआ अपने ।

२१ भं० ६

स्मशाल के घरमे चलाआयाथा तब ही तिस
को देखकर बडे क्रोधमे अनेक प्रकार ति
स्कार करके कहने लगी कि मै तो ईहां कु
छ कार्जके नमित्त आईथी और घरको अ
भी चलेजाने वाली हूं तूने छिन भरभी वि
लंब नही किया है उसीके हीन मेरे पीछे
पीछे ही धावता चला आयाहै अब मेरे को
बताओ कि तेरको ऐसा कौन काम रहा ।

६

तब तुलसी कहने लगा कि हे प्यारी मेरे
को तेरा वियोग सहारना वडा कठिन है
मै जब घरमै आया और तेरा दरसन नही
पाया तोब सुना घर मेरेको कानन जेवु
ण है तिसके समान भासने लगा तब हे
कोमल अंगी मृगनैनी और कोकलाबै
नी तेरी बिरहके वश भयाहुआ मै इहांधा
वता चला आयाहु इसप्रकार पतीके म

भ
८

ऐसे वचन सुनकर शोभा मनी क्रोधसे कहने लगी कि हे मूढ तैने हिता हित तो कुछ नहीं जाना केवल विषय करके अंध भया हुआ धावता चला आयाहै अहो जड विचारतोकर कि शरीर के कौन । विवेक सुखके वास्ते तैने धीरज और संतोष सब त्याग दियाहै और हे पती जिस परके मोहित होरहाहै ॥

सोतो हाड और चामकी कायाहै हुयाहो
कौन गुणपर भूलाहूआहै तेरेको सार
असार का कुछ विचार नहीं है अहो आ
णपती जैसा तैने स्त्रीमे सनेह कियाहै
कवी असा प्रेम और सनेह अवरिल भ
क्ती के सहित रघुनाथजीके चरनोमे भी
होवे तोतू संसारमे धन्य धन्य होय कर
इसभव रूपी अथाह समुद्र से जतनके विना

सहजेहीं पार होजावें ॥ ८ ॥ चौपाई । जब प्रस
न्न वान सीयमासो । विषय विकार सा
रम्यग सोग्राहो । जलसि इकांत सस्य चित
होई । विषय उपाधि सकल सीयखोई
मनहिं करत नहिं देव प्रणामा । कानन
चल्यो सुमरि सियरामा । भयो विरक्त जा
नि सीय नीके । बोली वदन वचन मदुनी
के । जन्ति जाहो त्वयित पतिप्यारे । चलहु

८

संगमै नाथ तुमोरे। मंद मंद तुलसी तव व
चना। भाषन श्रवन कथन कछु करना। क
था अलाप परस परजोई। ताकेर अवधि आ
ज मन होई। कोकर मात पिता सुत दारा
इह मिथ्या गेयव परिवारा। तव प्रसाद सु
नहो हितकारी। मै अब भयो कृतार्थधारी
गुरु समान कीनो उद्धारा। दीया मोर हित
भलो विचारा। जानो आज जनम जगमाहीं

२५
भ
८

भयो सफल संशय कछु नाहीं। ह्वांह्वां धन्य
धन्य मृगविवानी। वार वार प्रभु वदन वखा
नी। चलेवेग कानन पथलीना। देखिह
गन प्रभु लखे प्रवीना। अति संदेह अवम।
अकुलाई। रुदन करत पाछिल नहिधाई
नव नलसी सरनू वरनीरा। देखिस सुरपति
सीय रघुवीरा। तहं कौन विस्राम नवीना
मानस भयो सोच नवलीना। को आधार भ

नहूं अब काहा। अस प्रकार चिंतत जिय
राहा। तव सपने नहि जनक सरूपा। का
हु वैसव भक्त अनूपा। लगेपा प्रबोध कर
न असताहू। रामनाम सदृश सनकाहू
तारक मंत्र आन जगनाहीं। सुर किंनर
गंधर्व सबाहीं। जासु उचारण तें अगाबो
ई। सकत होन संसय नहीं कोई। जप तप
यग्य दान व्रत धरमा। तीरथ अटन अन।

५५
भं॰
१

के हृद करमा। सब कर सारभूत जगाए
हू। राम राम सखि रटन सनेहू। अस वि
चारि निज मानस ताना। सीय वर भजहु
सकल सुखदाता। दोहा। जब लग जिय
न प्रयंत निज रटहु राम सियराम। अंत
लेहु निज बहुरि तजि राम धाम अभिरा
म।१।टीका। जब इस प्रकार स्त्रीने तान
रूपी बाणमारा तब कामादिक विषय वि

10

रका म्रग जो है सो ततकाल वधकर दिया
तव तुलसी इकांत और स्वस्थ चित होय
कर सब विषय उपाधियों का चित्तसे त्याग
कर और तिसको मनमें ही दंड प्रणाम
करके रघुनाथ जीको स्मरना हुआ वण
को चल पड़ता भया तव तिसको विरक्त
जान कर स्त्री जो है सो कोमल वानीसे क
हने लगी कि हे प्राण प्यारे अब मोंकोमत

२५ भ ॥

जावो भोजन पायलेवो मैंभी तुमारे संगही चलतीहूं ऐसे स्त्री का वचन सुनकर तुल सी मंद मंद कहने लगा किहे भामनी अब कछु आगे मत कथन करना जहांलग वा तो आलाप अर्थात कहना सुणनाहै तिसको मानो आज अवधी होयगईहै किसके बांधव और किसके मातापिता और किसके स्त्रीपुत्र भ्राताहैं इह परिवार तो सब मिथ्या रूपही है ॥

हे हितकारनी अब तेरी कृपा प्रसादसे मे
रे को सब भली प्रकार जान पडा और मै
कृतार्थ रूप होय गयाहूं तैने मेरे साथ अ
त्यंत हित और उपकार करके गुरु समा
न उद्धार करदियाहै आजमै धन्यहूं और
धन्य मेरा जनम भी जगतमै सफल भया
है इसमै कुछ संशय नहीं इस प्रकार ।
वार वार शलाघा और धन्य धन्य कहि क

११
भ०
१२

रके तुलसी जो है सो वनके मार्गको चल
पड़े तब तिसको ऐसे विरक्त भये देखकर
स्त्रीभी व्याकुल होयकर रुदन करती कर
ती पीछेही चलपड़ती भई तब तुलसी
सरजू के किनारे पर आय पहुंचा तहां
सीये रघुवीरजी की मनोहर मूरती का
दरसन करके फिर तहांही विश्राम कर
ता भया परंतु हृदय मे सोच और विचा

र

र करतागहै कि अब मेरेको कौन आधा
र होवे और मै किसका भजन करूं ऐ
से हृदय मै सोच कर रहाथा जो तुरत
ही निद्रा आयगई सपने मै क्या देखता
है कि एक कोई वैस्नव भक्त जिसके पि
ताका रूप धारन किये हुये प्रेमा अवा
य करने लगा कि हे पुत्र रामनामके
समान संसारमै और कोई भी तारक ।

मंत्र नहींहै कि जिसके उच्चारणतें किंन
र गंधर्व और देवता इहसव उपदेवों
से छूट कर संदर मकीको प्रापत होते
हैं जप तप यज्ञदान ब्रत तीरथोंका भ्र
मन इत्यादि अनेक धर्म करम जोहैं
सो तिन सबका सारभूत एक राम
नाम का स्मरण और रटन करनाहै
ताते ऐसा विचार करकैं हेउत्र सर्वसहोवोकेटने

॥ भं॰ १२

13

वाला सीधे रघुनाथ जीका भजन जोहै सो

ई करतेरहो और जबलग जीवो तबलग

राम चंद्र भगवानके चरन कमलों को

हृदय मे धार कर नित्य तिनकी भक्तीमि

व काई मेही लीनरहो फिर अंत शरीर ।

को त्यागकर तिनके ही परम धामको

जाय करके प्राप्त हो जावो ।२। चौपाई ॥

उदय अरन तोरे मनभाई । तुलसी माल

स॰
भ॰
प

ललित सखदाई। काहू देहिं संजल मनमा
ना। लेत सकर हु भजन भगवाना। तुल
सी देखि सपन शुभ जागा। प्रात हरषि सं
जुत अनुरागा। राम मंत्र तारक संसारा।
लीन्हा हृदय भक्ति जुतधारा। आवा सरजु
तीर हरषावा। करि सनान पूजन मनभा
वा। कीन ललित दरसन सीयरामा। तव
आवा वैसव अभिरामा। तुलसि माल कर

लेत सहाई। तुलसि दास कहं दीन सजाई
लेत माल निसि स्वपन विचारा। लगेपाम
जन सिय राम उदारा। संजुत भक्ति गवन
पुनि कीना। शिव पुरि आय हरष मन ली
ना। असि सरिता तट ह्व मन पासा। विव
वि कुटीर कीन निज वासा। तन पर राम
भजन गुण गायन। निसिदिन करहिं श्र
वण रामायण। यथा लभ्य संतोष विवा

५५ भं० १५

री। भोजन करहिं भक्त ब्रतधारी। कृपाप्रसा
द धनुष धर पानी। विरचित ललित संस्
कृत बानी। अलि विचित्र कलका असहोय
तुलसिदास जगविदत बनाये। समयएक
निसि स्वपन मझारा। राम सरूप ध्यान उर
धारा। तब भगवान बदन अस काहा। तु
लसी मोर भक्त तुव राहा। मैं प्रसन्न लोगन
हित मानी। तुम कहं करहुं कथन असबानी

15

१४

मोरन देस भक्त वरपाई। भाषा कवि प्रबंध
सब ठाई। रामायण कलकाठ रचावहु।
उपर हू आप लोक उपरावहु। लछुमति
लोक काल कलिमाहीं। जानिन सकहिं
संस कृतकाहीं। इहिमैं होहिं लोक हित
भारा। रामायण कृत हाविर नमारा। पढ
हिं सुनहिं सादिर नर सोई। पावन प्रीति
भक्ति रत होई। सो मोरे प्रीय प्राण समाना

२५ भं १६

16

तिनहिं देहु अभिमत जगनाना । तुलसीदे
हि स्वपन निसि माहीं । जान्यो कृत्य कृत
निज काहीं । उठ्यो प्रात जत भक्ति अभेवा
वंदित गण पत्तादि सवदेवा । मंगल मूल
मंगला चरना । सादिर प्रथम भक्तिमत
वरना । बहुरि प्रनाम करत दिनराती ।
पुराण कीन ग्रंथ इतिभांती । ससिइव उदि
न नाम तुधदेवी । विकसे ननकु कमद ग

१६

बसेखौ। अवलो देस दिसांउन नाना। एज
न लोक सकल सनमाना। गाय गाय भ
व जलध अगाधु। तेरे जात जन तुलसि प
साह। दोहा। तदनंतर अदभुत चरित भ
यो जवन मनहाह। सोसादिर अब कबहुं
कछु कथन बदन निजवाह।२। टीका॥
फिर वैसव रूप भगवान कहतेहैं कि हे
तुलसी सूरजके उदय हूयेतें तेरको कोई

४ भ. १८

सनमान पूर्वक प्राप करके सुंदर तुलसी
की माला जो है सो देदेवेगा सो परम सुखे
दायक माला तुम लेकरके भक्ती प्रीतीसे
भगवान का भजन समरण जो है सो करो
तब तुलसी श्रमे स्वपनको देखकर जाग
उठा ओर प्रातकाल होतेहीं बडे हरष श्रो
र प्रेमसे जगतमे तारक मंत्र जो रामनाम
है सो भक्ती प्रीतीसे हृदयमे धारन करले ॥८॥

ताभया तिसके उपरांत सुंदर सरजूके कि
नारे पर आय कर बडे आनंदसे सनान
किया फिर प्रीती पूर्वक सब नित्य नेम औ
र पूजन करके सीधे रघुनाथ जीका दर
सन जो है सो किया तब इतनेमें तहां ए
क वैश्नव जन हाथमें तुलसी की माला
धारन किये हुये आय प्रापतभया और
तुलसी को देखकर अपने मारगको ।

॥ भ १८

चलागया तव तुलसीदास तिस माला।
को पायकर और रात्रीका स्वपन सत्य जा
नकर श्रीरघुनाथजी के भजन और स्मर
णमै लीन भया हुआ भक्तीप्रीती वाला
होयकर वडे हरषसे शिवपुरी जो काशी
है तिसमै चला आया और असीनामा न
दीके किनारे पर हनूमान जीके अस्था
नके पास कुटिया रचाय कर निवास।

१८

18

करने लगा रघुनाथ जीके भजन और गु
ण गण गायन करनेमे ततपर रहता औ
र रात्रीदिन सुंदर रामायण की कथा जो
होती सो भक्ती प्रीतीसे श्रवण करता भोज
न जोहै सो प्रालब्ध के अनुसार जैसा प्रा
पवतता तैसाही संतोषसे पाय लेता तब
समय पाय करके तिस तुलसी दासने रा
मचंद्र महाराज की कृपा प्रसादसे वडी ।

सुंदर संस्कृत वाणीके काव्य रचायकर।
जहां तहां जगतमें प्रसिद्ध करदिये एक स
मय रामीको श्रीरघुनाथ जीका ध्यानजो।
हृदय मैं धारन किया तोदीन वेष सपने मैं
प्रगट होयकर कहने लगे कि हे तुलसी
तूं मेरा भक्तहैं मैं प्रसन्न होयकर औरलो
गोंका हित विचारकर तेरेको कहताहूं।
कि तू मेरी आज्ञापाय कर अब भाषा मैं

ऐसे रामायण काव्य की रचना कर जिस
से आपभी उधार और लोगोंका उद्धार
भी कर क्योंकि कलीकालमे नष्टबुद्धी
वाले लोक संस्कृत वाणीके जानने को
सामर्थ्य नहीहैं ताते भाषा सुगम वाणी
जोहै सो रचोके इसमे लोगोंका बहुं भला त
होगा और रामायण भाषा कृत तुमारी
जो मनमान पूर्वक प्रीती भक्तीसे पढें ।

५
म
२०

लेनेगे सो मेरेको प्राणोंके समान प्यारे ।
होवैंगे और मै तिनका मनवांछित फल
सब पूरण करूंगा इसप्रकार राजीको स्व
पन देख करके नलसी अपने आपको ध
न्य धन्य मानताभया प्रात काल होतेही
उठकर सोच सनान आदि सब नित्य क
र्म सोहू सो किया फिर गणपती से लेक
र सबदेवता ऊंको वंदना करके प्रथम स

२०

वे मंगलोंका मूल मंगला चरन जो है सो
भक्ती प्रीती पूर्वक वरणन किया तिसतें
उपरांत रात्रीदिन यतन और श्रम करके
रघुनाथ जीकी कृपासे संपूर्ण ग्रंथ पूर्णक
रदिया नव चंद्रमाके समान तिस ग्रंथको
उदय भये हूये देख कर सर्व उपजन श्रेष्ठो
न बुद्धीमान जो है सो कुमदें वन विकास ।
मान होय जाते भये अर्थात खिड जाते भये

२५
भं.
२१

अब लग देसदिसाओं मे सब लोग तिस ।
अदभत काव्य रामायणका बडी प्रीती भ
क्तोंसे ए जन सनमान कर रहेहैं और ति
सको श्रद्धा पूर्वक गायन कर कर तुलसी
दास जीके प्रसादसे इस संसार के अथा
ह समुद्रको जतन के बिना सहजनेही तरेजा
तेहैं अब इससे आगे एक और बडा अदभु
त और मनके हरने वाला चरित्र जोहै सो

२१

कथन करताहूं हे संत भक्तो इसको प्रीती
से कान देकर श्रवण करिये ॥१। चौपाई ॥
तुलसी दास नियम अस कीना। कासी क
रहिं न सोच प्रवीना। असि सरिता तट ज
न सदाहीं। करि शौचादि भवन निजमाहीं
आय करहिं निजकृत अनुरागा। श्रीरघु
वीर चरण मन लागा। तहां शेष जल सो
च सदाहीं। अरत भक्त आम्र द्रुममाहीं।

२५
भ
२२

तहिद्रुम वसहिं प्रेत इकभारी। करत सपान
सौच निनबारी। तहिते अति प्रसन्न मनवा
नी। तुलसि दासकहँ तास बखानी। तव प्र
सात मोहि भक्त महाना। अवलौ रसो मिल
त जलदाना। इह उपकार तोरहित कारे। वि
सरहिं महि न जनम सतधारे। तोते मै प्र
सन्न अवतोही। देहुं रुचिर वरमांगहु।
मोही॥ अस प्रकार जव प्रेत अलावा॥

२२

तुलसी सुनत हृदय बिसमाया। कोतव
कवन मुनि असकाहा। इहां कलेश कव
न हित साहा। मोरे सोच वार अस पाई।
जो तुवलीन नृपति अधिकाई। कहिस
प्रेत तव भक्त उदारा। मोर वृतांत सुनहु
अवसारा। पूरव जनम मोर द्विजधामा।
विंधदेस छिन पत अभिरामा। मैतोकर
उ परोहित मानी। पैनिंदक द्विजद्वेष प्रदा

२४ नी। परम लोभ रत गत मत करमा। हृदय
भ० ववेक न धरम अधरमा। छिन पत हिविरदा
२२ न हनवीने। राख हु सदन डजन कछुदी
ने। अनथी संत देखि हग जोरा। सेन पात
इव वकेहु नथोरा। निज करकाहु मानिक
वि झठी। दीनन कवहु अन्न भरिमुठी।
करम वचन मन कीन नकाहू। कछु उप।
कार प्रीति उतसाहू। दोहा। एक दिवस अ
२२

ति त्रिषत इक अनथि आव मम द्वार । नाह
कराबा पान मै बार विविध प्रिसकार । न
हि प्रभाव मै प्रेतवपु असलीन्या संसार ।
अवलग रहा हृमिलन मोहि सौच सेष
तव वार ।४। टीका । तुलसी दास जीने प्रे
मा नियम धारन किया हुआथा कि कासी
मै दिसा सौच केवी नहीं करतेथे वाहरक
हीं असी नामा नदी के किनारेपर जायकर

दिसाफिरते और सौच करतेथे तव सौच ।
करनेसे जो पीछे जल बच रहताथा सोत
हो एक आम्र अर्थात अांब के बृक्ष पर ।
सदैव डारकर अपने आश्रम को चले आ
वते और रघुनाथजीके चरनो मे चित्त को
लगाये हूये तहां आश्रममे अपना नित्य
करम सब करतेथे तव एक दिन सौचक
रके तिस बृक्षपर जल जोडारा तो तहां एक

बडा भारी प्रेत निवास करताथा और तिन।
के सौच का बाकी बचा हुआ जल जो तहें
पडताथा सोई नित्यपान करताथा तिसते
सो प्रसन्न होय कर तुलसी दासजी को
कहने लगा कि हे भक्त श्रेष्ठ तेरी कृपातें
मै अब लग बडे आनंदसे जलपान करता
रहा हूं तांते इह तुमारा उपकार मेरेको।
सौ जनम पर्यंत भी विसरने वाला नहीं है

२१
भ०
४४

इसतें मै तुमारे पर अत्यंत प्रसन्नभयाहूं अव
कृपा करके मेरेसे कछुवर मांगलेवो मैदेने
को सामर्थ्यहूं इस प्रकार जव प्रेतने कथन
किया तव तुलसी हृदय मे वडा आश्चर्ज मा
न कर कहनेलगा किहेभाई तूं कौन है औ
र कातेरी घ्रनीहै ईहां किसकारन ऐसा क
लेश सहार रहाहैं जो मेरे सौचके जलको
पायकर तेने हृदय मै वडी तृपती मानीहै

तब प्रेत कहने लगा कि हे भक्त प्रधान जो मे
रा वृतांत सुणना चहते हो तो सुनो मै कथ
न करता हूं कि मेरा पूर्वला जनम जो था सो
ब्राह्मण के घर मैथा ओर विंध देस के राजा
का मै वंसमानी उपरोहितथा परंतु कैसा
था कि महा निंदक ओर ब्राह्मणोंका द्वेषी
परम लोभी सतकरमों से रहित हृदयमे
धर्म अधर्मका कुछ विवेक विचार नहीं

२४
भं.
२६

रख लाथा और राजाजो दान करता था सो
कुछ ब्रह्मणों को देता और बाकी सब घर
मेंही रखताथा और अतिथी संत साधु ।
को आवते देखकर जलमरता और संत
पानके ग्रसे हूये पुरषके समान बकउठ
ताथा अपने हाथसे रुचीमान कर कदीकि
सीको मुठीभरभी अन्न नहीं देताथा मनव
चनकाया करके भी किसी के साथ ।

२६

कबी कोई उपकार नहीं किया एक दिनको
ई एक अतिथि उरघ आतिकरके तृषतभया
हुआ मेरे द्वारे परजो आयगया तो तिसको
मैने बहुतनही निरादर और तस कार करके
जल पिलाया तिसके अपमान से मैने सं
सारमै इह प्रेतका शरीर धारन किया और
तिसी प्रभावसे अबलग इह तमारे सोच।
का जल मेरेको प्रापत होता रहाहै ॥ ४ ॥

५५
भ०
५८

चौपाई। तव सुख्खो तुलसी असनासा। ईहां आय तव कवन अजासा। प्रेत वदन अस गिरा प्रकासी। अवसर एक भार नृप कासी। आये ससिधर दरसन काहीं। मोहि पन लाभ विपुल मन माहीं। नृप तें लेहुं दान मन भावा। अस निज हृदय गुनत जब आवा। मारग डस्यो भुजंग भू परयो। तरफत तुरत प्राण परिहरयो। आये लेन धरम जम पायक। तव

५८

हर किंकर भीम विनायक। बोले इह ननर।
क अधिकारी। तब यम हनन गिरा उचारी।
इह सठ आवलोभ विनलागी। हर दरसन
कछु हृदय नरागी। सठकहेउ हमसन देहु
पठाये। तब हर किंकर वदन खलाये। य
द्यपि कथन सत्य सब तोरा। कासि प्रभाव
तदपि बरजोरा। करहिं निवास बाहिर या
बनाई। दंडकाल भैरव बध पाई। रामभक्त

श्री
भं०
२८

कर नित मनमाना। रहिहैं करत सौच जल
पाना। तहि प्रभाव कासी कल आई। होईहैं
योग्य सकल सुखदाई। इह प्रसंग सज्जन स
व मोरा। अब वर मांग जवन रुचि तोरा। सेतो
हि मन वाञ्छित फल चाहू। देतलेहु सदगति
सराहू। सुनि अस प्रेम वचन हरषाये। बोले
तुलसि मनहिं मुसकाये। जो वर हृदय देन
रुचि तोरे। तोपरि वार सहित अब मोरे। सीय

राम दरसन सुखदाता। देहु कराय हरन भ्र
मगाता। प्रेत सुनत अस वदन उचारा। इह
सामर्थ्य अगम संसारा। भक्तसहु पै सुनहु
उपाये। जहितें राम जनन सुख दाये। अविर
भूत प्रभु होहिं तुमारे। दीनानाथ भक्त हित
कारे। हनुमत भवन निकट सुख दायन।
पावन कथा होत रामायन। तास श्रवण
हित जठर सरीरा। गलत रामकृत जीरण

चीरा। आवत प्रथम लुकट गहि हाथा। निव
ल काय कंपत सव गाथा। पाछिल जातउ
न अतिदीना। राम सरोज चरन मन लीना।
साधुभेषधून लखहिं नकोई। हनुमत भक्त
रूप श्रम सोई। दोहा। कथा श्रवण करि जाहिं
जव मंद मंद सकुमानि। तव पाछे लगि चर
न तव पकरि लेहु करुन पानि।५। टीका। तव
तुलसी दास तिस को पूछने लगे॥

कि भाई इहां तुम कौन जतन से आयेहो प्रेत
कहने लगा कि एक समय मेरा राजा जोगी
सो महादेवजीके दरसन करनेके वास्ते का
सी पुरीमे चला आवता भया और मैं धनके
लोभसे कि राजासे दानलेऊं साथही चल
पड़ा तब मारगमे सरपने जो डंस किया तो
मैं ततकाल तड़फता तड़फता मृत्युको प्राप
तभया अर्थात मरगया परम राजके हुत।

२१
म
२०

जोहैं सो मेरे लेने को आयगये तब तिनको
देख कर शिवजी के गण कहने लगे कि इ
स को तुम मत हाथ लगावो इह नरक का
अधिकारी नहीं है तब यम राजके दूत क
हने लगे कि इह अधम जोहै सो इहां केवल
धनके लोभसे आयाहै हृदयमे कछु शिव
जीके दरसन की अभिलाषा वाला नहीं है
तोते इस जनको हमारे साथ भेज देवो हम

30

२०

यम राज के पास लेजावें गे ऐसे तिनकीवा
णी सुनकर शिवजीके गण कहने लगे ।
कि हे यमदूतो तुमारा कथन यद्यपि सब
सत्यही है तद्यपी कासीका प्रभाव जो सब
से है अब इह पुरके बाहिर जाय करके निवा
स करेगा और शरीरमें काल भैरव का दंड
पावेगा फिर राम चंद्र जीके भक्तका सनमा
न पूर्वक नित्य सेवका जलजोहै सो पान ।

५५
भ.
३१

31)

नारहेगा जिसके प्रभाव से इह कासीमे मुक्ती
योग्य होजावेगा हे सज्जन इस प्रकार इहमेरा
प्रसंगहै अब जो तेरे मनकी रुचीहै सो वर
मांग मैतेरे मन वांछित फलको पूर्ण कर
के फिर आप सद् गतीको प्राप्त होय जाऊं
गा ऐसे प्रेतकी वाणी सुनकर तुलसी दास
जी मुखमे मुसकाय कर कहने लगे कि हे
भाई जो तेरे हृदयमे मेरेको वरदेने की रुची

३१

है तो सर्व लोकोंके देने वाला और पापोंके
हरने वाला परिवार के सहित श्रीरघु
नाथजीका दरसन जोहै सो मेरेको कराय
देवो तब प्रेत स्तुत करके कहताभया किहे
भक्त लक्ष्य रहु बातो होनी तो बडी कठिनहै
परंतु एक उपाय करताहूं कि जिससें दी
न जनोंका उद्धार करने वाले श्रीरामचंद्र
महाराज तमारेको प्रत्यक्षदरसन देदेवें सो

११
भं०
३२

क्या है कि हनूमान जीके आश्रमके पास स
वै रोगोंके देने वाली बडी पवित्र रामायण
की कथा होतीहै जिसके श्रवण करने के
वास्ते वडाहूट शरीर और कुष्टरोग करके
गलाहूआ फटे हूये प्राचीन वस्त्र और हा
थ मे सोटी धारन किये हूये निरबल ।
काया और माथा कांपता हूआ प्रथम ।
ही आवता और सब के पीछे जाता है ।

रघुनाथजीकी भक्तीमै लीन परम दुखी औ रदीन साधू भेषधारे हूये कोई लखनहीं सकता सो रामचंद्रजीका भक्तोंमै प्रधानभ क्त हनूमान है वे जब कथा श्रवण करके सहजे सहजे आनंद पूर्वक चलपडेगा तब तुम पीछेसे शीघ्र हीं जायकरके तिसके चरन पकडलेना।५। चौपाई। यद्यपि कर हिं भक्त हठ नाना। तद्यपि तुमनतत जहू प

२५
म
३३

33

गयाना। नव प्रसन्न मन मरुत कुमारा।
देखि भक्त हित रुचिर तमारा। जो कछु क
रहिं कथन सखवानी। हित जत लेहु सत्य
सवजानी। भक्त राज मंजुल गुणधामा। हो
हिं तमहिं अब देउ प्रणामा। प्रेम वदन अ
मरित प्रकासी। भावा अभय सकुच गत
कासी। तारक मंत्र लेत हरषाना। कृपा प्र
साद शंभु भगवाना। कौतुक प्रेम वृषभ नि

३३

जवोई। हर हर रटन भयो हर सोई। तव तु
लसी अनुराग बढाये। करि सनान पूजन
रघुराये। आये प्रथम भवन हनुमाना। त
हो समाज संत जन नाना। देखन देखत क
रि प्रणाम अनुरागे। कथा पुनीत श्रवण
करिलागे। हनुमत जठिर रूप अतिदीना।
तुलसिदास नैनन निजचीना। कथा अंत
जव दीवि सिधारे। तिन निज भक्ति प्रेम स

२५
भ
२४

जन मोरे। पाछे संत बहु वल हीना। तुल
सी यथा श्रवण निजकीना। कंपत नयाल
कट गहि पानी। गावन्या मंद मंद सख मा
नी। नव तुलसी पाछिल नजिदीना। सनम
ख होत चरन गहि लीना। हाहाहा श्रम ज
ठिर उचारा। मैहखिन जानत संसारा। सायु
सपर्शी करहु जनि मोरे। शिलादीन कवन
श्रमतोरे। काकर भ्रम पकरो जन मोही।

२४

३५

वेचो कवन कपटि अस मोही। नव तुल
सी अस विनय उचारा। आन कवन मोहि
वेचिन हारा। तुमहे चरन अव वेचिनमोरे
पैनतज कुं पद पावन तोरे। तवतो निभए
भक्त सियरामा। विदत सकल जग हनुम
त नामा। अव नउराहु मरम निजस्वामी।
कृपा नकेन जनन अनुगामी। करम वच
न मनसेवक जोई। तासु तजन प्रभ उचित

२५
भं
२५

नहोई। होइ प्रसन्न रामसिय प्यारे। अस तुल
सी जब विनय उचारे। हनु मत हरषि वद
न तब काहा। तुलसी कहा काज तब।
काहा। जब प्रसन्न मारुति अस जाने। तु
लसि दास चरणन लपटाने। दोहा। बो
लेकब करुणा तन राम सहित परिवार
हर्षीगो चर होहि मोहि भगवन भक्त उ
दार। सिय रघु वर दरसन लषन विथन

य

35

तुलसि जन पाय। हनु मन बारद सरद
जनु वदन वचन वरसाय।६। टीका।
प्रेत कहताहै कि हे भक्त यद्यपी सो वहु
त हठ भी करेगा तदपी तुम चरनोको
नहीं छोडना फिर अंतको जब पवनका
पुत्र प्रसन्न होय करके और तुमारा हि
त देख करके जो कुछ मुखसे कथन
करेगा सो निश्चय करके सब सत्य हीं

२४ भं. २६ — 36

जान लेना है सर्व गुणों के धाम भक्तरा
ज अब मेरी तुमको दंड प्रणाम होवे इ
स प्रकार प्रेम भावसे उच्चारण करके।
फिर आनंद पूर्वक मंजुघ को त्यागे हु
ये अभय होय कर काशी मे चला आ
वता भया तहां सर्व दोषों के दूर कर
नेवाले तारक मंत्र को पाय कर महादे
व के कृपा प्रसादसे कौतुक द्वारा शरीर

२६

को त्यागकर शिव शिव रटना हुआ शि
वका रूपही होयगया तब तुलसी दास
स्नान आदि नित्य करम और भजन क
रके रघुनाथ जी को समरता हुआ प्रथम
हनूमान जी के स्थान पर चला आया त
हां संत भक्तों का सब समाज जुड़ा हुआ
था तिसको देख कर भक्तो प्रीतीसे प्रणा
म किया फिर परम पवित्र रामायण की

कथा जो होयरहीथी तिसको श्रद्धा पूर्वक
श्रवण करने लगा तव तहां हनूमान
जीका दीनवत वडा हुइ शरीर तुलसीदा
स नेत्रों मे देख कर पहिचान लेताभया
तव कुछ कवरके पीछें का अंत होयग
या श्रौर सव लोग भक्ती प्रीतीसे प्रणाम
करके अपने अपने आश्रमों को जानेल
गे तो सवके पीछे सो निर्वल श्रौर वृद्ध से

कथा

३८

न कि जैसा तुलसी दासने श्रवण कियाथा
तैसाहीं माथा कांपते और हाथमै मोटी धार
न किये हुये सहजे सहजे सुखपूर्वक चलप
ड़ता भया तब तुलसी भी पीछे पीछे लाग
चला कुछेक दूरीपर जायकर पीछेको त्या
गकर ततकाल सनमुख होतेही चरन प
कड़लिये तब सो हृष्ट देख कर हाहाहा ऐसा
शब्द उचार कर कहने लगा कि हे साधू मेरे

५
भ०
१८

घनहूं सबलोग जानतेहैं मेरे साथ मनस्पर्शी
कर इह तेरे को किसने शिक्षा देईहै श्रोर कि
स केभ्रमसे तैनेमैरेको पकडलिया ने
रेको कि सक पती ने छललियाहै ग्ररेसाथ
छोड का कोई कुष्टीके साथ भी स्पर्श कर।
ताहै तब तलसी नेम्र वाणी से कहनेल
गा किहे हठ मेरे को ग्रौर कौन ॥
छल ने वाला है एक तम हे।

१८

38

छलना चहतेहो परंतु मै अब तुमारे चरनो
को कबीनहीं त्यागूंगा तुमतो साक्षात रघु
नाथजीके प्रवीन भक्त हनुमन नाम करके
सब जगतमै प्रसिद्धहो हे कृपानिधान हे
रघुनाथ जीके प्यारे भक्त अब अपना भेद
कों छिपावतेहो ओर दासको को निरास।
करते हो नाथ इह कों कर होय सकताहै
किजो मन वचन काया करके अपना सेवक

हो तिसको त्यागदेना है सीये रामजीके प्या
रे अब मेरको अपने चरनो का दास जान
कर प्रसन्न होवो और मेरे मनोरथ को स
फल करो इस प्रकार जब तुलसी दास
ने विनती करी तब हनूमान जी प्रसन्न हो
यकर कहने लगे कि हे तुलसीदास अब
कहो तुमारा कौनकार्ज है जब इस प्रकार
पवन के पुत्र अनकूल देख तब तुलसीदा

39

स चरनोपर सीस धरकर कहने लगे किहे
दयानधी अब दया करके इह कहिये जोभ
क्त हित कारी और भक्त उद्धारी रामचंद्र भ
गवानका परिवार के सहित मेरेको कब ।
दरसन होवेगा प्रेम सीय रघुवीर जीके द
रसनके महा व्याकुल और प्यासे तुलसीके
नेत्र पायकर हनूमानजी प्रसन्न होयकर
मानो सरद बादरके समान सुंदर वचनोंको

बरषा जोहहि सो कर दैते भये ।८। चौपाई ॥ बि
जय दसमि कर दिवस सुहाये । चित्रकूट
दरसन रघुराये । तोरे होहिं सहित परिवा
रा । अस हनुमत जब बचन उचारा । बल
सि दास करि दंड प्रणामा । भक्त सुखद सु
मरत सियरामा । ब्रह्मानंद बारि जनु हुडे ।
निरतन लगेपा प्रेम जुत हूडे । इत हनुमान भ
क्त रघुराई । भये प्रेम गत कथा सुनाई । बिजयदसमि

कर दिवस सुभागे । तुलसि दास अब सेवन
लागे । श्रीरघुवीर विमल गुणगाते । आये
चित्रकूट हरषाते । एक दिवस अदभुत अ
सदेखा । नगर लोग जन हरष वसेषा ।
लीला दसम करन कललागे । निज निज
हृदय प्रेम रसपागे । तोजिमि विजन कंध
दसगृहे । पुष्पकवि मल विमान अरूढे ।
सीय राम लछमण हनुमाना । अंगद जन

सु
मं
पं

सुग्रीव सुजाना। रावण भ्रात जाम नलनीला।
आन सकल भक्तसेवक सीला। तजत गेह
आश्रम सुखमानी। चलेजात मंगल रजधा
नी। ग्राम अनूप रघुवर छविदेखी। कोटि
कविन मतिलाजत लेखी। काहिन सकत
कछु अदभुत सोभा। तुलसिदास देखत
मनलोभा। मोह विवस जीय लाखो सुही।
ला। विरचत नगर लोग इहलीला। यद्यपि

५१

हृदय जानि अनुकरणा। तद्यपि राम रूप म
न हरणा। रहेउ निवासि तुलसी मनमाहीं।
छूटत तुति हष्टि हगनाहीं। गयेउहरजव रा
म विमाना। तुलसि दास मानस अकुलाना।
प्रेम विवस तन दसाविसारी। मोस रूप रघु
वर उरधारी। दोहा। चलेजात मारग विक
ल मिले मरुत सुत आय। धरेउवेस वैस
व विमल तुलसि वदन हरषाय। कहिम

अरु सब आज मैं चित्रकूट मतिधीर। जो लीला

होवी हरन हृदय हरन रघुवीर। देखे जु तुम

जु नजाय कस भक्त वत्स हनुमान। तव बो

ले अस पवन सुत वदन मंद मुसकान।

तुलसी मोहि विसमय विपुल इह लीला भग

वान। कबहू होत तव सन्यो जग आसन मा

स सुजान ॥७॥ टीका। पवन पुत्र कहते हैं कि

हे तुलसीदास विजय दसमी के दिन चित्रकू

५२

भं॰ ५२

५८

दमै तेरेको परिवार के सहित श्रीरघुनाथ
जीका दरसन होवेगा इसप्रकार हनूमान
जीने जव मावसे उचारण किया तव तुल
सी दास दंडप्रणाम करके हृदयमै रघु
नाथजीका सुमरकर मानो ब्रह्मानंद मै
मगन भयाहूया प्रेममे नृत्य करने लग
जाताभया और ईहां राम चंद्रजीके भक्त ।
हनूमान तुलसी दासको सव कथा सुना

२५ भं ५३

यकर ततकालंही त्तपत होयगये तव वड़भागी तुलसीदास जोहै सो विजय दसमीके सुभदिन को अभि लाखासे श्रीरघुनाथजीके निरमल गुण गण गायन करता हुआ आनंदसे चित्रकूटको चलाआया तहां एक दिन ऐसा अदभुत चरित्रदेखा कि नगरके सब लोग मिल कर आनंदसे विजय दसमी की सुंदर लीलाजोहै सो करने।

५३

लगेहैं तो जिसप्रकार रावणको जीत कर
और सुंदर पुष्प कविमानपर आरूढ हो
य कर अर्थात चढकर रघुनाथजी महा
राज जानकी लक्षमण हनूमान अंगद ।
सुग्रीव विभीषण जामवंत नल नील इत्या
दि और सब सेव कों के सहित गोहके आ
श्रम को त्यागकर अपनी सुंदर राज धानी
को चले जातेहैं तैसेही रघुनाथजी की प्रत

यो० वा०
नि०
५५

पद्मनीको कि जिसकी कुछ शोभाकही नही
जाती और जिसकी उपमा कथन करने को
कोटि कवी जनोकी बुद्धी भी थकत होय
करके लज्जाको प्राप्त होतीहै तिसको दा
स देख करके मोहित होयगया और मो
हके वशभया हुआ इसी विचार करताहै
कि इह नगरके लोगोंकी रची हुई लीला
है यद्यपि हृदयमें जानलिया कि इह अनुकरण

५५

अर्थात नकलहै तद्यपि मनके हरने वाला
राम सरूप जोहै सो तुलसी के हृदमै नि
वास करगया नेत्रोंकी दृष्टी जो जुटरही
थी सो छूटती नहींभई इतने मे जब रघु
नाथजीका विमान हर चलागया तब तु
लसीदास मनमे व्याकुल होय जाताभया
और प्रेम करके शरीरकी सब दशाभी भू
लगई रघुनाथ जीका सोई सरूप हृदयमै

धार करके चलपड़ता भया नव आऊलभये
हुये को मारगमे जाते जाते पवन पुत्र हनु
मान जोहैं सो वैस्नव रूपधारे हुये मिलप
ड़तेभये तिनको तुलसीदास पहिचानकर
वड़े हरषसे कहनेलगा किहे भक्तोंकी र
क्षा करने वाले हनुमान जी आज मैने चि
त्र कूटमै जो मनके हरने वाली वड़ी अपूर
व रघुनाथजीकी विजय दसमीकी लीला

५५

नेत्र भर कर देखी है सो तो तुमारे भी देखने
के योग्य है जाय करके क्यों नहीं देखते हो
ऐसे तिसका वचन सुनकर हनूमान जी
मुख से मुस क्याय कर कहने लगे कि हे
तुलसी मेरे हृदय मे बड़ा आश्चर्ज आवता है
कि इह लीला रघुनाथजी की कबी तुमने
इस महीने मे भी होती सुनी है ।१। चौपाई
सुमकरु भयो भक्त भ्रम काहु । तुलसि व

५५
भ
५६

46

चन सुनि हनुमत नाहू। चित्र कूट करहु बहुरि
सिधारा। सोउ सब लीलादि प्रकासा। देखा
भक्त हगन कछु नाहीं। बिनाउल सखुन
सबकाहीं। कहत सकल कछु हमहिं न।
भासा। इहां संत लीलादि बिलासा। तुलसी
सुनत कथन तिन काना। कीन सुमर्ण ब
चन हनुमाना। अहो राम मोहि कुटिल म
लीना। उरमति उरगाचार चित चीना। कीन्हा

५६

महत देव निजमाया। भूलेपा हृदय कवन
भ्रमछाया। जोमोहि रघुवर भवन प्रकासू
भासेपा लीला लोक विलासू। असकहि
दीरघ स्वर अधिकाई। लगेपा करन रोदन
अकुलाई। मुनिलोगन विलपत विचारा
दीन्हेपा करि नमकार निकारा। नव तुलसी
आश्रम निजमाहीं। आयलगेपा निदरन
निजकाहीं। मोहित विपिन अन्न जल त्या

सु॰
मं॰
५८

गी। भये निरन निद्रा वड़भागी। दोहा। तब स्वपने नही मरुतसुत अनसे प्रीतिसरसा य। लगे प्रबोधन वदन निज बार बार हर षाय। टीका। पवन पुत्र कहने लगे कि हे भक्त प्रवीन तेरेको इह क्या भ्रम उतपन्न भ याहै और तूं कैसी बातें करताहैं तब तु लसी दास ऐसे हनुमान जीके मुखसे वच न सुनकर फिर चित्र कूटको चला जाता

४८

भया तहां जायकर जो देखने लगा तो सो उ
तसव और लीला तिसको कुछ भी देखन
हीं पड़ी तब चिंता करके व्याकुल भया ह
आ सब को पूछता भया कि हे भाई ईहां ली
ला विलास जो हो रहाथा सो अब कहांगया
तब लोग स्मरण करके कहनेलगे कि हे सं
त हमने तो ईहां लीला विलास नेत्रों मे कु
छ देखा नहीं है इस प्रकार तिनका कथन

सु०
भं०
५८

सुनकर तुलसी दास हृदय मै हनूमान जी
का वचन स्मर्ण करके कहने लगा कि य
हो राम चंद्र भगवान ने मेरेको कुटिल और म
लीन दुराचार और दुरमती जानकर अपनी
माया करके मोहित कर दिया कि जिसतें मै भू
लगया और मेरे हृदय मै कौन भ्रम छायत
होयगया जो मेरेको भगवान रामचंद्र महाराज
लोगों की लीला विलास भासते भये ऐसे कहि करके

व्याकुल भया हुआ बडी दीर्घ स्वरसे रोदन क
रनेलगा तब लोगों ने स्नान कर तिसको वि
लपत अर्थात वा उलासा जानकर तिसका
र करके तहांसे निकाल दिया तब तुलसी
अपने आश्रम मे आय कर अपने आपको
बहुत निंदने लगा फिर मोहित और व्या
कुल भयाहुआ अन्न और जलत्याग करके
तिसी चिंतामे सोय गया तब स्वपने मे ति

सको हनूमान जी आय कर वडी प्रीतीसे
वार वार जिसप्रकार प्रवोध करतेहैं सो आ
गे कथन किया जाताहै ।८। चौपाई । धन्य ध
न्य तुलसी वड भागे । श्रीरघुवीर चरन अनु
रागे । सुर दुर्लभ दरसन भगवाना । देखो
जाय दृगन भरि नाना । श्रवन करहु चिंता ।
जीय भाई । मन वच करम भजहु रघुराई ॥
सिद्ध संत तापस मुनि नाना । देखहिं ज्ञान ह

हि भगवाना। कोसामर्थ नदेखिन हारा। अग
म देव दरसन संसारा। तोरे धन्य भाग जग
लेखे। जोप्रतक्ष इनहै ननदेखे। सुंदर वान म
रासन धारी। सुभग वदन वरन घन कारी।
वारज विमल नैन अह न्यारे। भृकुटी कुटि
ल घ्राण शुकवारे। दाडम दसन कुंद कलि
लाजा। जटाक्रीट कल सीस विराजा। वलक
ल वसन भेष मुनि सोहा। भाल विसाल ति

२५
भ०
५०

लक मन मोहा। भज आज्ञान मान खल मो
चन आयत हृदय हरन जन सोचन। अंगअ
नेग कोटि छवि हारन। पावन अरुन चरन
जलजारन। ज्ञान किल खन सहित भगवा
ना। सग्रीवादि वाम पद पाना। मरहित भ
क्ति प्रेम सरसाये। सो आनंद कछु बरनिन
जाय। सनमव चरन पादिका धारे। भरत
सनेह अवधि हित कारे। हरष नीर नैनन

50

५०

स्तुत कीने। जगकर ब्रह्म भक्ति मन लीने।
हनुमत ओर दृष्टि दृग जोरे। पुलकित हरष
प्रेमनहीं थोरे। अग्र भाग लंकेश वभीषण
देखत वदन काम मनतीषण। अंगद जा
म नीलनल लोहीं। दीन नाथ परिवारन
सोहीं। गगन निकर सुर हृष्ट विमाना।
वरषत सुमन जैतिरव नाना। असउरधर
हु ध्यान रघुराई। तुलसी होहु कृतार्थभाई

सुं॰
भं॰
५१

अस हनु वचन पषावे समाना। कीने तुलसि दास जव पाना। दोहा। भयो अमरवन भक्ति जुत सो कुध्यान रघुराय। तुलसी उरधरि म रून सुत चरन नम सिरनाय। ९। टीका॥ हनूमानजी कहते हैं कि हे श्री रघुवीर जी के चरन कमलों की प्रीती वाले तुलसीदासते धन्य हैं कि जिसने देवताओं को भी दुरलभ भ गवान कृपानिधान का दिव्य दरसन आजनेत्र

५१

भरकर देखाहै अब हृदयमें कुछ चिंता सोच मत करो मनवचन काया करके रघुनाथजी का भजन और स्मरण करो देखो कि सिद्धसा ध तपस्वी मुनी ज्ञानीजोहैं सो सब भगवानको ज्ञान दृष्टीसेही देखतेहैं प्रतक्ष को ई देखत होता नहीं है इस संसारमें बहुत कठिनहै । तेरे जगत मे धन्य भाग्य हैं कि जिसने दीना नाथ प्रतक्ष नेत्र भर कर देखेहैं कैसेभी दीन

रा॰
भ॰
५२

वंधूहैं कि सुंदर धनुष बाणके धारने वाले व
डी शोभा वालामुख और स्याम मेघवत शरी
रकी शोभा कमलोंवत लाली मय विशालनै
त्र कुटिल भृकुटी अर्थात टेढी भौंवें शुकजो
तोताहै तिसके समान सुंदर नासिका दाडम
और कुंदकलीको लजादेने वाले दांत सीस
पर शोभा देताहै जटाका मुकट वलकलजो
भोजपत्र तिनके धारनकिये हुये वस्त्र और म

52

नियोंका भेष मस्तकमें मनोहर तिलक लंबि
यांभुजा और विशाल हृदय कामदेव की को
टिछवी को लज्जादेने वाले सलम अंग कम
लोंके समान लाली वाले कोमल चरन जान
की और लक्ष्मण जी के सहित विराजमान
सुग्रीव आदि सेवक बडी प्रीती भक्ती से चर
नोंको मरदन कर रहे हैं सो शोभा कुछ क
थन नहीं की जाती और मनमाव चरन पार

53

का अर्थात खडावां धारन किये हुये नेत्रोंमे ह
र्ष नीर भराहुआ दोनोहाथ जोड कर प्रेमकी
अवधी भरत जो हैं सो भक्ती मे लीन हनुमान
की ओर नेत्रोंकी दृष्टीजोडे हुये स्थित हैं और
सनमुख भागमे लंकापती बभीषण कि जिस
को रघुनाथजीके चरणारविंद देखनेकी कुछ
थोडी प्रीती नहींहै और भी सब अंगद जामवं
त नलनील इत्यादि सबको करके रघुनाथजी

परिवारनभये हूये शोभादेतहैं आकाशमे दे
वता गण विमानो परचढे हूये आनंदसे पु
ष्पों की वरषा करते और जैजै शबद उचारते
हैं हेतुलसीदास नम प्रेमसे रघुनाथजीके ।
ध्यानको हृदयमे धारकर जगत मे धन्य ध
न्य और कृतार्थ रूप होयजाओ इस प्रकार
जब तुलसीदासने अमृतके समान हनुमा
नजीके वचन पानकिये तब भक्तोके सहि

भ
५४

न अमर रूप होय कर और हनुमान जीके च
रनो पर बार बार सीस नाय कर रघुनाथजी
का सोई ध्यान हृदयमै धारन कर लेताभया
चौपाई। अभय लागा विचरन संसारा। राम
नाम उरराखि अधारा। अवसर एक विप्रजन
काहू। पीडतव पुष राज रुजताहू। निबल
कृशप दारद रतदीना। अति लखन मन विक
ल मलीना। मारग लेत विपुल विस्रामा॥

४
५४

आवा तुलसि दास कलधामा। रवि मध्यान
गगन नव छावा। राम राम अस वदन अ
लावा। तुलसि दास कहं लगेपा पुकारन
नेसुनि राम शबद भव तारन। आये निक
सि बहिर निज गेहा। देखा गलत कुष्ट उ
जदेहा। रामभक्त तुलसी वनदाया। तासु
वदन अस वचन अलापा। जाहु सनान
करहु उज गंगा। इह तव वपु राजरुज।

५५
भं.
५५

55

भंगा । ब्रह्म हत्यादि पाप अव छोरे । मिटे प्र
माद राम सब तोरे । विप्रदेव सरि देगा अ
नाई । भोजन करहु भवन मोहि आई । सो
उन सुनत तुलसि असवानी । मज्जन च
ले गंग सुखमानी । प्रमुदित जायदेव स
विनीता । तास भगण जब की नसरीता । ते
हरसरि जग किलष निवारण । तापर भ
क वचन दुख हारन । उभय प्रसाद विप्रव

५५

रकाया। मानहु आज नवल उपजाया। विप्र
विलोकि चरित विसमाना। आवा नलसि
भवन हरषाना। देखि नलसि कौचिन वन
काया। अतसै प्रीति माखे वचन अलाया। ती
नवार अस विप्र सुजाना। रटहु निरंतर वदन
सिय रामा। दोहा। नव नलसी माखे वचन
सुनि विप्र मुदित जगनैन। तीनवार सिय रा
म रव रटो भक्त सुखदैन। ९। टीका। फिर

२१
भ:
५६

56

तुलसीदास अभय होयकर और हृदयमै राम
नामका आधार राखकर संसार मै विचरनेल
गा तब एक समय कोई ब्रह्मण कुष्टरोगका
ग्रसाहुआ निरबल और शरीरकरके कृश प
दारद्रीऔर दीनभूख करके व्याकुल और
मन मलीन मारगमै बहुत विश्राम लेता
हुआ तुलसी दासजी के घर मै आय प्रा
पत होताभया और मध्यान समय मै ।

राम राम उचारण करता हुआ तुलसीदास

को शुकारनेलगा तव इस प्रकार तिसके

मुखसे राम शब्द सुन करके तुलसीदा

स ततकाल घरसे वाहिर निकल आये औ

र तिस ऋष्ट रोगके ग्रसेहूये ब्राह्मण को

देखकर राम भक्त तुलसी दासजी राम

राम दयाके वश होय कर तिसको कह

ने लगे किहे ब्राह्मण अव जावो गंगाजी

मे आनंद पूर्वक स्नान करो इह तुमा

रा राजरोग जो है सो सव हर हो जावेगा

और ब्रह्म हत्यादि भी घोरपाप तुमारे।

श्रीरामचंद्र जी की कृपा प्रसाद से सव छु

ट जावेंगे हे ब्राह्मण श्रीगंगाजी मे स्ना

न करके फिर शीघ्र ईहां हमारे घरमे

आयकरके भोजन पावो तव सो ब्राह्मण

ऐसे तुलसी दास जी की वाणी सुनकर

५८

बडे आनंदसे गंगाजीमै स्नान करने को
चलागया जब तहां जाय करके देवनदी
के जलमै प्रवेश किया तब जगत के सब
पाप निवारने वाली श्रीगंगा और तिसपर
सरव दोषोंके हर करने वाला श्रीरामचंद्र
जीके भक्तका वचन इन दोनोंके प्रसादसे
ब्रह्मण की कायामानो आज नवीनही उप
ज आईहै इस अदभुत को देखकर ब्रह्मण

सु॰
भ॰
५८
58

आचर्ज के वश भया हूआ हरषसे तुलसीदा

सकेघरमैचलाआया
नबरामभक्ततुलसीदा

स जी तिसकी कंचिनवत काया देखकर प
रम प्रीतीसे कहने लगे किहे ब्रह्मण अब
तुम मुखसे तीनवार सीये राम शबद जो
सर्व दोषोंके हरने वालाहै निरंतर करकेउ
चारणकरो इसप्रकार तुलसीदास के मुख
से वचन सुनकर ब्रह्मण नेत्रोंको मूंदकर
और इकाग्रचित होयकर तीनवार भक्त सु

खिराधक सीयराम एहु जोहै सो उचारणक
रता भया ।९। चौपाई । बांह गहित तुलसी
नबलाये । ताहु सदन निज हरषबढाये । स
बकर देखत पंकति माहीं । दीन जिमाय पा
क नहि काहीं । तब सुनि विप्रलोग उरमा
रे । सकल परस्पर ताहु उचारे । ब्रह्म हत्या
दि पाप जहि कीन्हा । ताहु प्रथम तब पंक्ति
दीन्हा । अब न सपर्शी करब हम तोरा । इह तब

२५
भं
५५

पाप कौन नहिं घोरा। नलसी कहिस वट न नमकराई। चलहु शाश्री विश्वस्वर भाई। नव इहिकर बीडा करिलेहो। वृथान स कल दोष मोहिदेहो। बिप्रहुउ असस् नन त अलाये। हमहु करव बीडा असजाये होहिं सविन संदेह हमारा। असस प्रकार जव जठिर उचारा। जो इहि उज हृषत क रपाना। सरभी करहिं याम सन माना।

५५

तौ निरलेप पापगन राहा। तुलसी सनन्त ह
रषि असकाहा। इहतो वचन सत्य अवतोरा
पैअव कथन आनकछु मोरा। जव अस पे
न ग्रास करिलेहीं। सैलरूप नंदी गणजेहीं
मेतहि कहं भोजन हरषाई। सवकर देखत
देहु जिमाई। तोनहोहि कछु हृदय संदेहू।
राम प्रसाद सुइ उजपहू। लोग सनन्त अस
मानि हुलासा। आयेविम्ब नाथ प्रभपासा।

५५
भ°
वृ°

60

तुलसी तासु विप्र कहुँ लीने । आये राम चरन
चित दीने । प्रथम ग्रासउज नाथ करावा । सु
रभी लीन प्रेम जुत पावा । बहुरि विपात्र परिभो
जन नीके । देत विप्र कर प्रमुदित जीके । कहु
वृषव हरमन मखजाई । देहु भक्ति जुत ताहि
जिमाई । दोहा । आशु समीत रघुवर चरन तुल
सि वदन मनमान । लागे असतुति करन क
ल वृषव राज भगवान । जो इह दीन दयानि

वृ°

श्री राम सुखेर सुखेगाय। ब्रह्मस्तन उठलेदे खेते सप्ते सोतल जगजाय। ता तव इहि कर करनकल परनि संग परभार। सबकर दे खेन करहु अब वृषभ प्रवर आहार। ॥ टीका तब तिस ब्रह्मण को बाहसे पकड कर तल सी रामजी लेआये और सबके देखते अपने घरमे पंक्तीके बीच बैठार कर आनंदसे भो जन जिमायदिया इस प्रकार तिसको धरके

लोग ओर ब्राह्मण सब देखकर तुलसी दास
को कहने लगे कि अरे अधम इहतो ब्रह्मह
त्यादि पाप करके हूवतहै तुम इसको पंक्ती
मे बैठार कर भोजन जिमायदिया अवहे ज
ढ हम तेरे साथ कभी स्पर्श नहीं करेंगे तैने
तो इह बडा घोर पाप कियाहै तब तुलसीदा
स तिनका कथन स्रुन करके कहनेलगे कि
भाई अब तुम विश्वेश्वर भगवानके भवनमे

चलकर इस ब्रह्मण की भली प्रकार पीक्षा।
करलेवो मेरे को सब वृथा क्यों दोष देतेहो
तब वृद्ध वृद्ध ब्रह्मण जाथे सो स्नान करके स
ब कहने लगे कि हम इसकी अवश्य पीक्षा
करलेवेंगे जो इसके हाथसे गऊ ग्रास कर
लेवेगी तो इह दोष और पापसे रहित होजा
जावेगा और हमारे हृदय का संदेह भी स
ब मिट जावेगा नहीतो इह निश्चय करके

२५
भ॰
६२

62

दूषनहीं है ऐसे तिनका वचन सुन करके
तुलसी दास हरषसे कहनेलगे कि भाई
इह तुमारा कथन तो सब सत्यहीं है परंतु
अबमेरा वचन भी सुनो कि जब इस के हा
थसे गौ ग्रास कर लेवेगी तब पाषाण रूप
नंदीगण जोहै मै सबके देखते तिसको भी
भोजन जिमाय देऊंगा फिर तो कुछ संशय
नहीं होगा रघुनाथ जी की कृपासे इह बस

शुद्ध और निरदोष समझा जावेगा इस प्रकार
सब लोग स्नान करके बड़े हरष को प्रापत भ
येहुये विस्वनाथ के भवन मै चले आवतेभये
तब तुलसीदास रघुनाथजी के चरनोको स्
मर कर प्रथम तिस ब्रह्मण के हाथसे गऊ
को ग्रास करवाया सो तिसने प्रसन्न होयक
र तुरतहीं खायलिया तिसतें उपरांत एक
पात्रमै भोजन धर कर और तिस ब्रह्मण के

४
भं.
६३

63

हाथमें देकर कहा कि अब सनमुख जायक
र पाषाण रूप नेदी भगवान जोहैं तिनको इ
ह भोजन निमायदेवो इसप्रकार तिसको क
हिकर और आप तुलसीदास रघुनाथजीके
चरन कमल हृदय में धार कर नृष वराज
जो नेदी गणहैं तिनकी अनेक प्रकार अस्तु
ती कर कर बिनती करने लगा कि हे कृपा
निधान हेदीन दयाल जो इह ब्रह्मण राम श

६३

वद के उचारण करनेसे जगतमै ब्रह्म हत्या
दि पाप और दोषोंसे न्हत्य है तोहे संगप
र सर्व पृथ्वीका भारधारन करने हारे
नंदी भगवान अब सबके देखते तुम इस
ब्राह्मणके दियेहूये भोजनको प्रीती पूर्वक
पाय लेवो ।।१।। चौपाई । जब तुलसी अस बि
नय उचारे । तब प्रसन्न हरगण हुंकारे । अ
दभुत दिब्य रूप पाषाना । भक्तहेत भोजन

२५
भ॰
६४

हविमाना। अथो वटन देखत समुदाये। ली
न वृषव वर भोजन पाये। निज निज सकल
लोग विसमाने। वटन सवर जे जे ति अलाने
विप्र हेद पंडित समुदाई। तुलसि दास।
कर अस्तुति गाई। उज हिं अदोव उं
द गात जाना। धन्य धन्य सव वटन व
खाना। राम नाम अस देखि प्रभाहू।
भयो प्रवर वैस्नव उज ताहू॥

६४

64

निजकरहूं कृत्य कृत्य जग जानी। रामसरोज
चरन रतिमानी। दोहा। सादिर लेन विदाय
नव तुलसि चरन सिरनाय। विचरन ला
गेपा अभय उज निज अभिष्ट फलपाय। ए
टीका। जव इस प्रकार तुलसीदास जीने।
विनती करी नव प्रसन्न होय करके नंदी ग
णजोहैं सो हुंकार शब्द करते भये और व
डे दिव्य अदभुत पाषाण रूप जोथे सो भक्त

के नमित्त सीस झुकायकर सबके देखते बडी

रुचीसे भोजन पायलेते भये इस चरित्र को दे

खकर संपूर्ण लोग बडे आश्चर्ज को प्रापत हो

य कर मुखसे जैजै शबद उचारन करणे ल

गे ब्राह्मण और पंडित विद्वान जोथे सो सब

तुलसी दासकी नाना प्रशंसा और बडाई क

रके धन्य धन्य करते हूये तिस ब्राह्मण को

दोष और पापोंसे रहित शुद्धरूप जानते भये

६५

इस प्रकार राम नामका प्रभाव देखकर सोब्रा
ह्मण एक महा सुष्टवैभव होयगया और
अपने आपको जगतमे सफल जानकर र
घुनाथ जीके चरन कमलोंकी प्रीतीभक्ती
वाला होयकर तुलसी दासजीके चरनोपर
बार बार सीस नावताभया फिर सनमान पू
र्वक तिनसे विदाय लेकर आनंद मे मगन
भयाहुआ अभय होय कर पृथवी पर विचरने

लगा। ८९। चौपाई। एक समय तुलसी करथा
मा। आवा चौर हरन धन कामा। भेदन भि
त्ति करत अगणूक्ता। एवस्यो भवन भक्त त
वमूक्ता। देखत हरान गाफ रखवारे। कम
ल नैन धनु सायक धारे। स्याम नाग सेउ
भज देऊ। वीर धीर जन प्रवल प्रचेडा। नत
कर ज्ञास अवस अकुलाना। निकसि वहिर स
व चलो पलाना। करत विचार वहुरि फिरि।

६६

आवा। मोरे हृदय कवन भ्रम छावा। जो अ
स करि प्रवेश चित भवना। छूहैं अहो भा
गि कत गवना। अस विचारि इरव पयहा
रा। चोर जाय जव हगन निहारा। सो जनि
हंग धनुष सरधारु। ठाढ़ो सजग विश
रववारु। सकोन चोर जोर हग भागा।
हृदय त्रास जनि पाछिल लागा। अस नहि
करत गता गत नाही। गई रयन निकसी

दिन नाहा। कीन्हो गवन अंत निजगेहा। बीते
तीन दिवस असनेहा। चतुरथ दिवस बहुरि
सठ आवा। तबहूं न समय हरन बिन पावा
जासु रटत सब भक्त उबारे। सोऊ न केत न
लखि रखवारे। हारेउ चोर अंत अस देखी।
निजबल निबल चलन नहिं लेखी। बिस
मत तुलसि दास पै आवा। निज हनोत सब
दीन सनाथा। तोरे भवन धनुष सर धारे॥

लोचन जल नवरन चनकारे। आकृति सिंह। पीठ पट पीना। कोटि कलोन देखि जहि भीना महाभक्त जन भूषण चारू। देखन चाहुं प्रकट मनहारू। तुलसि सुनत मानस हरषाने। ता सु वदन अस वचन अलाने। दोहा। नमदेख कव कमल हग अस संदर छवि वार। एनको टेउ कर चेउ सर मदन मार रखवार्। १२। टीका नव एक समय तुलसी दासके चरैम एक अय

स चोर धनके हरने को जो आया तो रात्रीके
समय सन्ध मार कर घरके भीतर प्रवेश क
रगया तहां क्या देखताहै कि कमलोंके स
मान नेत्रोंकी शोभा वाले और धनुष बाण
धारी हस्तोंके संडवत जिनकी भुजोंके दंड
महा प्रचंड वीर धीर तुलसीदासके रखवारे
ठाढे हुयेहैं तब चोर तिनको देखतेही भय
के वश व्याकुल होयकर निकल करके बा

बाहिर को भागचला और फिर हृदय मै वि
चार करके लौट आया मनमै कहता है कि
मेरेको इह कौन भ्रम उतपन्न भयाहै जो औ
से धनवाले घरमै प्रवेश करके वडे अच
रजकी वातहै जो खाली हाथही भागच
लाहूं ऐसे विचाॅकर तिसी रसतै जायकर
जव भीतर की ओर देखा तव सोई धनषवा
ण धारी वीर धीर तुलसी भक्तके रखवारे

स॰
भ॰
६९

मन

डाके छुपे हैं तिनको देखकर चोर मन खे नेत्र
नहीं जोइसका हृदय मे अभिमान कर भा
गचला और कांपता जाताहै कि मन कोई
पीछे लागा आवताहै इस प्रकार सो चोरक
भी आवता और फिर भागता ऐसे गतागत
करते को तहां रातही वतीत होयगई और
सूरज निकल आया अनको अपने घरमेंच
ला आया इस प्रकार आवने जानेको तिसको

६९

69

96 ~~66~~

अथहरिदास चरितं। दोहा। सुनङ्ग ललित मन
भावनी गाथा संत सुजान। जासु सुनत श्रुति ल
खिपै भक्तिप्रभाव महान। गूर्जर देस प्रसिद्ध इ
क विप्रश्रमाधरनाम। तासु पुत्र हरिदास जग
विदित सकल गुणधाम। चौपाई। सो अतिरसि
क भक्त भगवाना। सेवत भूप विविध मनमाना।
खानपान लगवस्त्र सुहाई। देहिं जे नगर लोग
समुदाई। हरिहिं रुचिर नैवेद लगाना। पाछे भ

क्ति प्रेम सरसाना । मृग विहंग वनचर पसु कांही
हरि स्वरूप जानि जिय माहीं । करहिं विभक्त भक्त
उपकारी । एक दिवस छिति पति हितकारी । जमुना
तीर दास हरि पांही । आगा भक्ति भव मन माहीं ।
करि प्रणाम सब आसन ति कीना । सुधरस गंधि
तैल कल दीना । सादिर भक्त सहष कर लीने । ता
धाकुस चरन विन दीने । रवितन याकर वारि
मझारा । भक्त प्रधान दीन तवजारा । सोआसदे

रिभूपहितकारी। मानतभयो छोभ उरभारी।
चितदैलीन तैलवरतेहू। खोयो हृथा आजक
सपहू। असउर गुनत विपुल पछताना। भक्त
रूप तवलीन सिजाना। सिषकहुं वोलि कियो
समुझावन। अव इहि देव भवन मनभावन
लैजावहू संजत सनमाना। करिहैं दिव्यदरस
भगवाना। गुरु सासन मंजल असपाई। चले
नाम सिष भवन लिवाई। सोविलोकि कल भ

९९
भ०
२

गवनसोभा। दंडप्रणाम करत मनलोभा। सप्रेम
गोपि नैलनिजछाई। भवन दैव परिश्रमपाई। ऋ
षिचंद्र कर ग्रंगनलागा। देखिचकित अस भाषन
वागा। जारिहीन जमुनाजलपही। प्रवकस सजो
ह्लस्कलदेही। जान्योभक्ति प्रभाव सुहावा। नंजि
हरिभवन हरषवसम्रावा। भक्तचरन नेमतनसिर
नाई। निजग्रनवित सव दमाकराई। चलोमदन
निजलेन विदाई। न्टपसन कीन कथन सवग्राई।

२

दोहा॥ इह अद्भुत हरि धरणिपत सचिव महाज न सारि। साधु साधु लागे भनन भक्ति प्रभाव निहारि॥ ११ टीका। हे संतजनो अब और मन को भावनी सुंदर गाथा जोहै सो श्रवण करिये कि जिसके श्रवण करनेतें भक्ती का महा प्रभाव प्रकट देख पडता है गुर्जर देसमें एक बडे प्रसिद्ध श्रसापर नाम करके ब्राह्मण होते भये तिनके पुत्र सर्वगुणोंके धाम हरीदासजी जगतमें उ

५९
भ॰
२

जागरहूये सो कैसे कि प्रेममें उनमत्त और भग
वानके बडे रसिकभक्त रात्रीदिन जिनकाराजा
भी सेवन सतकार करताथा और खानपानलग
इत्यादि वसत जो नगरके लोगदेते सो प्रथम
भगवानको नैवेदलगायकर पीछे भक्तोंप्रीति
से वनके विचरनेवाले जीव मृग पशु पंछी इ
त्यादियोंको हरिरूप जानकर बांटदेतेथे नव
एकदिन राजाका एक बडा अधिकारी सेवकज

मनाके किनारे हृदयमें भक्तीभाव राखकर हरी
दासजीके पास चलाआया और चरनोपर प्रणाम
करके मुखसे अनेक प्रकारकी प्रसन्नताबडाई क
रताभया फिर तिसने बडी उत्तम सुगंधीवाला
सोंधा अर्थात अतर जोहै सोनिकालकर भेटाकी
रीतीसें भक्तप्रधानके आगे राखदिया तब परम
उदार और निसकाम हरीदासजी तिसअतरको
सनमानसे लेकर राधाकृस्न राधाकृस्न रटतेहु

८९
भ.
४

ये जमनाजीके जलमैडारदेतेभये इसकौ नरककोदे
खकर सोराजाका अधिकारी अचरजके वशभया
हूआ वडेलोभकोप्रापतहोयगया और हृदयमें ।
विचार करनेलगा किदेखो इह उत्तम अनूपजो
मोलदेकर लियाथा इससाधूने क्या हुथाही खो
घटियाहै ऐसेसोच करकर हृदयमें वहूतही प
छतावताभया तबभक्तरूपने तिसके चिंतनसो
चको देखकर अपने शिष्यको बुलायकर समका

४

यादिया कि अवतं मनमान र्वक इसको भगवानकेभव
नमे लेजा जोइह नहांजायकर कृपासिंधुका दि
व्यदरसनजोहै सो पावे इसप्रकार गुरूजीकी आ
ज्ञापाय कर शिष्य लेकरके तिसकोभगवानके
भवन मै चलाआया तववे दीनवंधुके भवनकी
शोभा देखकर मोहितभयाहूआ वार वार दंड
प्रणाम करनेलगा और क्या चमतकार देख
ताहै कि तिस अपने अंतर की सुंदर सुगंधी

९९ भा० ५

जोहै सो भगवानके संपूर्ण भवनमें फैल रहीहै और कमलचंद्र प्रभूके मनोहर अंगोंकी भी लगा हुआ शोभाको उदय कर रहाहै इस अदभुतको दे खकर वे अचरजके वशभयाहुआ कहनेलगा कि देखो कैसे चमत्कारकी बातहै कि जो अनर मेरे सनमुख देखनेही भक्तप्रधानने जमनाके जल विखें डारदियाथा सोई अनंत अवकमलभग वानकी कायाका सजाहुया शुभ सुगंधीकी प्र

५

वलताको दिखाय रह्याहै तवतिसने केवलभक्ती

काही अनंत प्रभावजोहै सोजानलिया ओर भग

वानके भवनसे निकलकर भक्त प्रवीनके पास

आयकर वार वार चरनोंपर सीसनाय करके अ

पना अपराधक्षमा करावनाभया ओर फिर आ

नंदसे विदाय लेकर घरको चलाआया तव रा

जाके पास जाय कर जिसप्रकार चमतकार दे

खाथा सो प्रकट करके सबसुनायदिया ३५४

१९ दमुन को सन करके राजामंत्री अधिकारी और पं
६ डित विद्वान जो थे सो भक्ती का प्रभाव जानकर अ
पने अपने मनसे सबही साधु साधु शब्द को
उच्चारन करने लग जाते भये।१। चौपाई। तब इ
क दिवस आन जन काहू। करत अटन कल
नीरथ नाहू। जमुनातीर दास हरिपासा। आवा
हृदय हुलास विकासा। मलीसपर्श ललिन
नहि पाही। दीनीतास दास हरिकाही। भक्तस्व

कललेन सहाई। करिस्तमएी मानस जडराई।
प्रेम अगम अतिभाव कुमारी। नहिदेखेन दीन्हा
दुतउरी। जानिअमोल दिव्यमनहरनी। तेउखोत
कछु सकहिं नवरनी। भक्तविलोकितास सुथि
मारी। करिप्रवेश जमना वरवारी। अंजलि वारि
शरकरा भरिके। भनत वदन नहि सनमुखे थ
रिकै। अवतम तात तजत उरहानी। निजमणि
ललित लेहु पहिचानी। ते अदभुतनिज सहश

४९
भ.
८

मारी। देखत दिव्य मणी मनहारी। जगकर जोरि चरन गहि लीने। विनय वदन नेम्र बहु कीने। सेवक बन्यो करम मनबानी। गुरुहि ब्रह्म सदृश नियजानी। दोहा। करि निवास कछु काल तहां लग्यो करन सिवकाई। गुरु सेवत गुरु कृपातें लीन परम पद पाई। २। टीका। तव एक दिन कोई एक पुरुष तीर्थयात्रा करता और भ्रमता भ्रमता जमना के किनारे बडे आनंद। ।

उत्साहसें हरिदासजीके आश्रमपर आय प्राप्त
भया तिसके पास एकवडी दिव्य सपर्श मणी
अर्थात पारसमणीथी सो हरिदासजीको भगवा
नके भक्त संत महात्मा जानकर तिसमणीको
निकाल करके रुची पूर्वक भेटाकी रीतीसे तिन
के आगे रखदेता भया और कहनेलगा कि म
हाराज इह सर्व अर्थोंके सिद्ध करने वाली मणी
आपके लायक है कृपा करके इसको गृहण क

रिये ऐसे तिसका कथनस्तन कर और अज्ञाह
वीदेख कर भक्त प्रधान तिस पारस मणीको ले
लेनेभये और तिसी समय थोड़ी देरके पीछे हृ
दयमे कृष्ण भगवानका स्मरण करके तिस पार
स मणीको तिसके देखनेही जमुनाके अगाथ
जल विखें डार दिया तब वे पुरुष देखकर और
मनके हरनेवाली दिव्य अमोल मणी जानक
र डरती भयाहुआ कछु बोलनहीं सकताहै ऐ

अथहरि राम चरितं। दोहा। अव समझ संसय ह
रन करनविमल मनचाह। भक्तिमहातम करहुं
मै कथन विदत संसारु। चौपाई। भक्त स्रष्ट हरिरा
म सुहाये। इंद्रय जीत विदत सव गाये। नृपसनस
खभाव गुणसागर। विद्यावेद धरम पथ नागर। ता
हापक श्रान नहं साधू। रामनाम निज हृदय अराधू।
नहि हानि भूमिदान कनराऊ। देखि आनमिद्ध
सवकाहू। मिथ्याभन्यो भूपसननेही। पृथीनाथ

९२
भ
१

सुनि नाक्षिन पही। मूरुछवन्यो अनचिन अधिकारी
असप्रकार सेवकपद उचारी। दीन्योप्रति हृदय नर
राई। दीनत्रास हतिभूमि छुडाई। देखि अनर्थ साधु
अकुलाना। रोदन करत सरण हरिरामा। आवत
विथा सकल निजवरनी। दीन सुनाय उष्ट सेवक
रनी। तवहरिराम दयारसपागे। तासुवदन अस
भाषणलागे। त्वपपें जॉयथा वन आई। देहुं संतन
व विथा सुनाई। असकहि भक्तसष्ट हरिरामा॥

य

ग्रायभूपभवन नजिधामा। पाछिलसाधु स्वमग्रपि
कारी। ग्रावाहृदय ङखित निजभारी। ग्रजहुं वद
नहहिराम नभाखो। नहिनिज विनय एष्यमकरि
राखो। राकुसनन करिक्रोध ग्रपारा। कीन्योवि
विध साधु त्रिसकारा। नवहहिराम कीन संभाष
ण। काग्रव करहु भूप इहि ग्रासन। सनननदिं
दू मैान धरिराहा। नेमन वदन वहुरि ग्रसकाहा
महाराज भिद्व महि वरना। सोइहि करनाहि

९२
भ०
२

नहिं निधरना। नव हरि नाम सफुट मरववानी। सुन

हु भूप अस वदन वखानी। भिन्न भनन सम सव

नेरे। पै आवहिं अवसन मरवमेरे। दोहा। जो मिथ्या

अस कथन नहि तो नवदन कहु गाथ। निकसहिं

निरखन सवन अव देखि लेहु नरनाथ। ८। टीका।

अव सरव संशयोंके हरनेवाला और मनको सं

दर निरमल करनेवाला भक्तीका प्रभावजोहै सो

कथन करताहूं एक भक्त जनो मे । ।

२

उत्तम और इंद्रय जीत भगवानके भक्त हरिराम
जी नाम करके प्रसिद्ध होतेभये तिनकाराजाके
साथ मैत्रेभाव और वशीभूतीथी और भक्तप्रधा
न गुणोंके समुद्र वेदविद्या और धरमके मारग
मे चलरहे तहां एक और साधू रामनामके स्म
रणवाला वासकरताथा तिसको राजाने कछु
धरम अर्थ जमीनदी हुईथी सोएक और संन्यासी
साधू देखकर द्वेषसे राजाके साथकुवंही आयक

र के कहनेलगा कि हृथीनाथ इहभूमी इसकीन

हीहै और इहमूरुष हृथाही तिसका अधिकारी

वनबैठाहै इसप्रकार तिस संन्यासीने मिथ्याक

थन करकर राजाके हृदयको फेरदिया और ति

स साधूसें वेभूमी छडवायदेई। तब इस अनर्थको

देखकर व्याकुलभया हूआ वेसाधू रोदन करता

करता हरिरामजीकी शरणकोचलाआया औ

र आवतेही अपनी सब विथ्या वारता तिसङ्क्षकी

५२
भ०
२
3

करनीके सहित सब सुनाय देताभया ऐसे सुनक
र दयाके वशभयेहुये हरिरामजी कहनेलगे कि
हे संतन्ह धीरजको धारणकर मेरेसे जहांतक ब
नपड़ेगा राजाकेपास जायकर तेरादुख कलेशास
ब सुनायदेऊंगा ऐसे कथन कर कर भक्त सुहह
रिरामजी आश्रमको त्यागकर राजाके भवनमे च
लेआये तिनके पीछे पीछेहीं सो भूमीके अधिका
र वाला साधभी परम डरतो और निरास भयाहुआ

९२ म० ४

आयगया अबीहरिरामजी कुछबोले नहीं थे कि इन
नेमै निससाधूने अपना दुःख कलेश जोथा सो सबय मेही सुनायदिया राजासुनतेही वडे कोपसे तिसका
निरादर करकर निवारण करनेलगा तव हरिराम
जी देखकर कहनेलगे कि राजन क्या अव इसको
ग्रासणकरताहै राजासुनकर मौनहोयगया फिर
हीनभावसे हाथ जोडकर कहनेलगा कि महारा
ज मेरेको अमुक संन्यासीने सुनायदियाहै जोइहमू

४

मी इसमाधकी नहींहै तवरोखसे हरिरामजी कहने
लगे किहेराजनवे संन्यासी सत्यही कहताहै पंरत
अव मेरे मनमुखआवे जोइसमै तिसने कुछ मिथ्या
कथन कियाहोगा अर्थात झूठ कहाहोगा तोतिस
के मुखसे कदाचित कोई भी वचन नहीं निकलेगा
हेराजन अव सवके देखने तुम इस वारताको प्रक
ट अपने नेत्रोंसे देखलेवो ॥१॥ चौपाई। जोनहिसत्य
कथन कछुकीना। तोवोलव प्रणमोर प्रवीना। रा

९२ भ० ५

याकूल चरित इह चाहू। देखहु भूप विदन मनहा
रू। जहि प्रह्लाद कीन रखवारी। खंब फोर हरना
कस मारी। कस न होहिं सो संत सहैया। अस कहि
हृदय भक्त सुखदैया। कृपासिंधु भगवान चिता
रन। लगेउ द्रुपद जामति तियनारन। मै प्रणकीन
दीन दुखभंजन। दुजसुर धरणि धेनु मनरंजन। तव
नरेस निज हृदय लासी। वेग बुलाय लीन संन्यासी।
बैठो आय मौन मन मारे। सकत न हिन कछु वचन उचारे

हि०

वार वार नव भूप अलावा। सोहतांत अवदेहु स्वना
वा। यद्यपि रिसकि भूपवरकाह्ना। तद्यपि चकित
मौन धरि राह्ना। करन सयन करि कह्नत बुझाई।
मौरे कछु सामर्थ्य नराई। भूप देखि अद्भुत विस
माना। करत प्रणाम चरन हरिरामा। सोहृति
दीन संत नहिकाहीं। चलोसहहरषि भवन निज
माहीं। भक्तसहु हरिराम सहाये। सादिर नृप
नैं ह्रोन विदाये। आय ललित आश्रम निज राजे

सुमरत भक्त करन सबकाजे। भित्र सो इ निकट नर नाह्रां। राहाबैठ मैान धरि नाहां। एकल देखि धरन पतिवरना। भाखेह्न सत्य कवन करधरना। तासुएक ट नवगिरा उचारी। सेप्रभु ह्रदय हेष निजधारी। इहश्रन्न चित कछु वदन अलावा। जाहि परिएा म प्रकट अवपावा। असकहि धरणि नाथ निजका ह्रीं। निदरन लग्यो विविध मनमाहीं। दोहा। अस इह चरित वचित्रवरमै गायो ह्रिराम। जासु सुन

५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त जगभक्ति जनहोहिं सफल फरकाम।३। टीका। औ
रजोतिसने सत्यकथन किया होगा तोमेरापणहै
कि बोल उठेगा हेराजन इह श्रीराधाकृस्नका म
नके हरनेवाला अदभुत चरित्र तू प्रकट विलो
कनकर अर्थात देख जिसपरमात्माने प्रह्लाद
की सहायताकरी और खंबफोड करके हरनाक
सकोमारा सोसंत सहायक भगवान मेरीकोंना
पैजराखेंगे ऐसे कथन कर कर द्रोपदी और

५८ भं. ८

षष्ठी श्रीराम अहिल्याके तारनेवाले भक्त सुखदायक कृपाके समुद्र भगवान जो हैं तिनका स्मरण करने लगे केहे गौर्वल्लभ पृथ्वी देवताउंके हृदयको आनंद देनेवाले भगवान मै इह प्रणकरचुका हूं अब आप दया करके मेरे इस प्रणको सत्य करिये ऐसे प्रार्थना कर कर मौन होयगये तब राजाने हरषसे ततकालही तिस संन्यासी को बुलायलिया सो आयकर मनमारे हूये ।

८

मौन धार कर बैठ गया मुखसें कुछ बोल नहीं स
कता नवराजा तिसको बार बार कहता भया कि
साधु अब सो वृत्तांत प्रकट करके सुनाय दे यद्य
पि राजाने कोपसे भी कहा तथापि सो अवरजके
वश मौन हुआ बैठा है हाथकी सैनों से जणाय
कर कहता है किमेरेको बोलनेकी कुछ सामर्थ्य
नहीं है इस अद्भुतको देखकर राजा अचरजको
प्राप्त होयगया और हरिरामजीके चरनोपर दं

९२ भं० ८

उप्रणाम करके सो भूमी स नमानेमें ति सो साधू
को देदेता भया वे आपनी दान भूमी को पायकर आ
सीस्या देता हुआ आनंदपूर्वक घरको चला गया
ईहां भक्त प्रधान हरिरामजी भी राजासे विदायहो
य कर हसल हस्त रटते हूये आपने आश्रममें च
लेआये और वे संन्यासी जो था सो मौनधारे हूये त
हां राजाके पासही बेठ रहा तब राजा तिसको अ
केले जानकर कहने लगा कि हे साधू सन्यक

८

हो वे किसकी भूमी रही सो कहने लगा कि प्रजापा
लमैने द्वेष और कपटसे इह अनर्थ मिथ्याही क
थनकियाहै तबराजा तिसका कथन सुनकर अ
पने आपकी बहुतनिंदाकरनेलगा कि इसमुझ
के कहनेपर मेरेसे अनुचित पाप होयगयाथा इ
रिरामजीकी कृपातें मै इस अनर्थसे छूटगयाहूं
इसप्रकार इह अद्भुत चरित्रजोहै सो मैने य
थामती कुछ गायन करदियाहै इसको श्रद्धा

पूर्वक श्रवण करनेसे भगवान की भक्तीके सहि
न हृदय की सर्व सफल होजातीहैं। इतिश्री भ
क्तविनोद ग्रंथे भगवद भक्ति महात्मे भाषाटीका
यां हरिराम चरित वरणनं नाम सरगाः

मिहां सिंह कृते

कामना

९८ भ. ५

राजकुमारी नहांसे निरास होय कर अपने
माता पिता के घरमै चलीआई नहां तिसको
तिनोनेभी नहीं राखा अंत को फिर भीषमजी
के पास आय गई और दीनवन हाथ जोड
कर वडी दुखकी भरी हूई वानीसे विनती
करने लगी कि हे कृपा निधान मेरेको अब
माता पिताने भी घरमै नहीं राखा है तांते मै
निरास और निरासन होय करके फिर तुमा

१८ भं० १८ 10

रीहीं शरणको आई हूं।३। चौपाई। तमरे हेत ज
नक गृहमाहीं। रहनदियो मोरे प्रभनाहीं। दियो
निकारि कहां अब जाऊं। कांके निज दुष दुसह
सुनाऊं। तव संतन सुत परम उदारा। अबमोहि
करिय नाथ सुईकारा। ननर जो कियो मोर अ
पमाना। तोदेडंगी तोहि अपजस नाना। भीष
म सुनत कथन अस तासा। कछुकरोष वस
वचन प्रकासा। पानि गृहए तिय मोहितसा

१०

नामाको देदई औार् जो ध्रव ध्रवका दो राज।
कुमारीथी सो भीष्मजी आनंद पूर्वक अपने
हमरे भ्राताको देदेते भये तव ध्रवका निर्भ
य होकरके कहने लगी कि हे राजन मैने
तो अपनावर तेहो स्वयंवर मेंही पायलिया
हुआहै अब हमरा वर देतेहो इह क्या अनी
ती करतेहो औसे तिसकी विप्रीत वानी सुन
कर भीष्मजी सहार नहीं सके हृदय मे जा

ते भये कि इहतो विभ चारनी है तिसको
ततकाल हीं तिरस्कार करके निकालदिया
और कहाकि मंद जहां तुमारा वर है तहांहीं
जावो तव सो राजकुमारी भीष्म जीको को
पायमान देख करके अपना अनुचित ढमा
करावनेके वास्ते वहुत ही विनती करती
भई परंतु भीष्मजी नहीं माने तिसके वहुत
कहनेपर वहुत नहीं कोप करते भये तवसो

ना। नवकान हृयारार मषहाना। जगनि स्त्रीक
रहन प्रण मोरा। इह निसफल भामनि हठ
तोरा। नवहं अंबका विह्वल वखान्या। भीष्म
देव कछु एक नमान्या। हूं निरास नव विकल
अचेतू। कानन गवनि त्रिये नपहेतू। परम
राम सन नहीं स्व हेला। भयो नास कलकान
न मेला। करि प्रणाम जग पानन जोरी।
भृगू नंदन सन भूपकि शोरी। दोहा। वर।

१८ सो विनय वृत्तांत निज करि रोदन समुदाय
भे॰ रोम रोम दाया विवस भये सुनत मुनिराय । ५
११ टीका। राजकिशोरी अवका जोहै सो फिर क
हतीहै किहे नाथ तुमारे कारन पिताने मेरे
को घरमे नहीं रहने दिया ततकालही निका
ल दियाहै अब कहा किसे कहां जाऊं और आ
पने जीये का दुसह दुख कि जो नहीं सहा
जाताहै किसको सुनाऊं हे संतनके नंदन भी

प्रभदेव तुम उदारता की नधी हो अब कृपा क
कै मेरे औगुनन ना विचारिये नाथ अपनी किं
करी जान कर मेरेको गृहण कर लीजिये न
हीं तो जेकर मेरा अपमान हीं करोगे तो हे
कृपा निधान मे आपको बडा भारी अपजस
देऊंगी तब भीषमजी तिसका ऐसा कथन
सुनकर हृदयमै कुछक रोष करके कहने
लगे कि हे भामनी स्त्रीकापानी गृहण अर्थी

१९ भ० १२

न विवाह जोहै सोतो मेरेको कदाचित करना हीं नहींहै तं इह अपना वृथा हठ क्यों करती हैं मेरातो जगत मे निश्चोकहीं रहनेका प्रणहै तेरा विवाद झगड़ा सब निसफल ही है ऐसे भीष्म जीके कहने पर अंबकाने फिर वहुत ही हठ किया और वहुत ही कहा परंतु संतनु कुमार एक नहीं मानते भये। तव सो राजकन्या निराश और व्याकुल हो

१२

करके तप करने की अभिलाषासे वनको च
ले गई तहां वन मै व्याकुल फिरती फिरती
को दैव योगसे कहीं परस राम जी मिलगये
तिनकोदेख कर सो राज कुमारी वडीदीन हो
यकर चर्नोपर प्रणाम करती भई और फिर
दोनोहाथ जोडकर परम दुःखकी वानीसे रो
दन करके अपनी दशा और वृतांत जोथा सो
सब सुनाय देतीभई। इस प्रकार तिसका दुःख

१९
भं॰
१२
13

ओर संताप हन करके मुनिनाथ परमरामजो हैं सो रोम रोम दयाके वश हो जानेभये अर्थात तिनके रोम रोममे दया प्रवेश कर गई। ४। चौपाई। हरिसरूप मुनिनाथ उदारा। परम राम विख्यात संसारा। जहंलग ब्रह्म शास्त्र जगमाहीं। मुनि सबोंनि सब भीषमकाहीं। सर्व सिखाय सकल सुविधाना। रहो मोर भीषम शिष राजा। सो नकरेहिं मम वचन विराजा। परम मु

नीते परममुनीसजियजाना २

नीस निज हृदय विचारी। तासु कहेउ मनराज।
कुमारी। तुमरे गृहण करन हित जाई। हम भी
पसेउ कहव बुझाई। सो हमार सासन वस अहीं
तुम कहं अवसि गृहण करि लैहीं। कबहुं कि
मन्यो न वचन हमारे। तो मैं देखन अबहीं तुमा
रे। यदपि रह्यो सिषमोर वीरारी। तद पिता सह प्र
तिकूलविचारी। हनहुं प्रचारि समर सर प्रेरी
को समर्थ सासन जगमेरी। जो न सीस धरि।

लेहि अखंडा। परस राम ममनाम उदंडा। जा
स कुठार धार नियवारी। त्रिक्षिक बार क्षत्र द
न मारी। इते वहे बार कछु नाहीं। नाम वचन
निस फल किमि जाहीं। अस कहि कृपन अक
न हग कीने। चले परस कांधर धरि लीने। दो
हा। आय गये कुरुक्षेत्र महं भृगु नंदन रणधीर
चले सुनत भीषम धरन सीस चरन मुनि धीर। ५
टीका। कैसे श्री परसराम हैं कि साक्षात भगवा

न का रूप संपूर्ण जगत मे प्रसिद्ध और जहां
लग संसार मे प्रसिद्ध है सो भीषम जी को परस
रामजी ने ही सिखाये हुये थे इसते मुनीनाथ
क अपने हृदय मे जानते थे कि भीषम मेरा
शिष्य है सो मेरे वचन के विरुद्ध कबी नही हो
गा अर्थात मेरी आज्ञा को कबी नहीं टारेगा
इसप्रकार हृदय मे विचार कर परसराम
जी तिस राजकुमारी को कहने लगे कि हे पु

१८ भ. १५

जी तेरे गृहण करनेके वासते हम भीष्म को जाय करके कहेंगे सो हमारा शिष हमारी आज्ञाके अधीनहै तमारे को अवशप गृहण कर लेवेगा और जो कदाचित हमारा वचनन हीं मानेगा तोमैं अवी तमारे देखतेही यद्यपि मेरा शिष्यभीहै विमाव जानकर रणमें ललकार कर असे वाण मारूंगा कि जिस को ततकाल प्राणोंसे रहित करदेऊंगा। ज

15

१५

गनमें ऐसा कौन सामर्थ्य है जो मेरी आज्ञाको
शीसपर धारण नहीं करता मेरा परसराम
नाम संपूर्ण जगतमें सूर्यके समान उदय है
और जिसके कुठार की समुद्ररूपी धारामें इ
कीसवार संपूर्ण पृथ्वीके क्षत्री डूब चुके हैं
जिसका कुछ पार नहीं पाया जाता है हे राज
कुमारी सो ऐसे परसराम का वचन कैसे
निष्फल हो जावेगा इस प्रकार वचन कहे।

१८
भी॰
१६

16

कर कोपसे लालनेत्र कियेहूये परन्तु जो कृष्ण
जीहैं सो कांधेपर धारन करकैं चल पडते भये त
व चलते चलते भगनेदन जो पृथवीके संपू
र्ण राजाऊंको महां क्रूरहैं कुरुक्षेत्र पर आय प्रा
प्तहूये तहां भीष्मजी गुरुजीका आवना सुन
कर तिनके चरनोंकी धूडीको सीसपर धारने
की अभिलाषासे आगेंही लेनेको चल पडतेभ
ये ।५। चौपाई । आयलेन अगवायन राई । सुन

मघ होन लकट इव जाई। कहि कहि धन्य भाग
प्रभ मेरे। गहे चरन भृगु नंदन केरे। छिछि कु
सल सुभ आसन दीनो। विनय वडाई विविध
विधि कीनो। भयो बहुरि जग जोरत पानी।
धायो चरन कवन हित स्वामी। कहिये दीन ना
थ अन सासा। मैं मन वचन करम प्रभु दासा
तव मुनि नाथं कह्यो अस वानी। इह नृप सुता
अंवका स्यानी। हित जन मोर वचन अनुसारी

१८ भ. १८

कबहु गृहण कल्पान नमारी। नव भीषम कर। मोरि वखाना। याहित मै भगवान प्रण ठाना। कबहुं नकबहुं गृहण नवकाहीं। जोलो ग्रहैं प्रण नव माहीं। सुनत राम ग्रस भीषम वानी। भेन वचन मानसारिस मानी। जो इह उत दीन न वमोही। परे समर सुकव नप तोही। मोर ग्रघर वचन जगटरना। ग्रहो ग्रवसि भीषम नव मरना मै डरगम जानत संसारा। जास नितव बीस इक

१८

बारा। किये भूमि निज भुजबल भारी। कोपिन
परसु प्रचंड प्रहारी। तब भीषम कहु जग कर
जोरी। सुनहु विनय भृगु नंदन मोरी। छत्रीजा
ति समर नहिं डरई। डरै तो अवसि नरक महं
परई। वरमा धरम जउ रण करना। विप्र जुकं
पकै आपु न करना। किये निदरु राम मति
जबही। रह्यो ना जग भीषम भट तबहीं। दोहा
अहैं एक उर शाप तव सो नदिहेहु मुनिराय

१८ करहु जइ भावत जथा समर सुभट इव आय ६

भ० टीका। इस प्रकार जब भीष्मजी मुनीको आगे

१८ लेने के वासते गये तब सनमुख होतेही दं

18

ड समान चरनो पर गिरपडे फिर दोनोहाथों

मे चरन पकड कर विनती करने लगे किहे

भगवन मेरे धन्य भागहैं जो आपका दरस

नपाया ऐसे कहिकर और कुसल पूछकर

फिर प्रीती भक्तीसे ल्यायकर सुभ आसनपर १८

विछायदिये औौर अनेक प्रकारकी विनती औ
र बडाई करकर कहने लगे किहे दीना नाथ
मै मनवचन काया करके आपके चरनो का
सेवकहूं अवजिस कारन ईहां चरन धारेहैं
सो आज्ञा मेरेको कहिये औसे भीष्मजीको वा
नी सुनकर मुनियोंमे प्रधान परसराम जी
कहनेलगे कि हे भीष्म मै तुमारे पास इस न
मित्तआयाहूं इह अंवका नाम कर्के राजाकी।

१८ भ. ५५

कन्याजोहै इसको तुम मेरे वचन से हित मान।
कर गृहण कर लेवो तुमारी सर्व काल कल्या
ण होवेगी तब मुनी नायकका कथन सुनक
र भीष्मजी हाथ जोड़कर कहने लगे कि हे भ
गवन मैं इसके निमित्त प्रण कर दिया हुआ है
कि जब लग शरीर मैं प्राण हैं तेरेको कबी गृह
ण नहीं करूंगा इस प्रकार भीष्मजीकी वानी
सुनकर परसरामजी हृदयमें क्रोध करके क

१५

हने लगे कि हे राजन इस सो मैंने उत्तर दियाहै इ
सका फल तेरेको रणके पडने पर सफल पडेगा
मेरा जगतमे अखंड वचन टलना अहो भीष्म
केवल तेरा मरनाहीहै मै संपूर्ण लोगोंमे प्रसि
द्ध बडा उग्रराम अर्थात अनसे कठिनहूं कि जि
सने अपनी भुजोंके महा प्रतापसे घोर परशु
के प्रहार देदेकर कोपसे पृथ्वीको इक्कीसवा
र निःक्षत्र कर दियाहै ऐसे परसरामजीको उ

१८
भं.
२०

ग्र वाणी सुनकर भीष्मजी हाथ जोडकर कहने ल
गे कि हे भृगु नंदन अब कृपा करके मेरी विन
ती सुनिये जो इस छत्री जाती ना रणसे कदापी
काल नहीं डरता है जो डरै तो अवश्य नरक का
अधिकारी होता है छत्रियों का धर्म है रणमे
लडाई करना शत्रुको जफावना अथवा आ
पजुफजाना जव मुनी नायक ने पृथवी को
नछत्र किया तव देखिये जगतमे इस वीर शि

२०

रोमणी भीषम नहीथा हे भृगुनंदन एक त
मारे शापसे डरताहूं सो कृपाकरके ना दीजि
ये और जड जैसे चित्तको भावताहै तैसे सूर
वीरोंकी रीतीसे रणमें निधडक आयकरके
करिये।६। चौपाई। विप्र वचन वल विदत म
हाना। देखहुं विप्र भजन कस जाना। जनम
नमाव भृगुनंदन आजू। करिय समर निज
गरब दराजू। राखिय अवन नाथ कछुपाछे

१८
भ.
२१

ह्ननिय समर सर तीक्षण आछे। परसराम स
नि भीषम वैना। उठे नरन्त ष्टरि रिसनैना। धरे
धनुष सर विषम कराला। जास देषि कंपत म
हि पाला। उन संनन सन सुभट प्रधाना। धरे
त्रूण कटि कर धन बाना। उभय वीर सम स
मर करुरा। उठे प्रचारि करन कलजूरा। देत
उजन धन विविध प्रकारा। चष्ट्रो जान गांगे
य उदारा। राम चष्ट्रो रथ वेद तुरंगा। प्रकत

२१

ब्रत सारथि अभंगा। हन्यो प्रथम भीषम पद
रामा। तानि धनुष सरस्तभग प्रणामा। दियो
असीर वाद भगनाथैं। हनि निशाव भट भी
षम माथैं। तापर संतनु सुत करजोरी। की
न्यो विनय वहोरि वहोरी। मै सेवक तव स्वा
मि सनेहू। तजिय नाथ हठ आपन पहू। कि
येन परस राम सई कारा। तव भीषम अस
विनय उचारा। दोहा। मै अदोष भगनाथ अ

१८
भ॰
२२

व कविय धरनि रणवीर। तव अमरष भर पर
स धर सरथन किये प्रहार।७। टीका। भीषम
जी कहतेहैं कि हे भगवन ब्रह्मणके वचनका
महा बल तो मेरेको विदतहै परंतु ब्रह्मण की
भुजों का बल प्रताप जोहै सो अब देखेंगा कि
कैसा होताहै हे भृगुनंदन आज कृपा करके
अपने दासके मनमाव शरीर का जितनाक
गरवहै सो निकाल लीजिये अब कुछ पीछे

२२

क्षिपाय कर नागाविषे वर्णामै जहांतक होसक
ताहै अपने तीक्ष्ण और प्रचंड वाणों के प्रहार
कर लीजिये इस प्रकार भीषमजीका कथन
श्रवन करकें परसराम जी नेत्रो मे क्रोध भर कर।
ततकाल उठ खडे हूये और जिसको देख कर
पृथवीके बडे बडे राजा सब कंपाय मान होजा
ते तिस महा क्रूर धनुष और बाणको हाथमै
धारण करलेते भये और उन्हो संतनके पुत्र।

१८ वीरथीयों मै प्रधान भीषम जी भी जड़नाथ भग
भ वानका स्मरण करके त्रुणजो उड़ीहै जिसके
२२ सहित अपने धनुषवाण को धारन करलेते भ
ये इस प्रकार दोनो वीर क्रोधसे भरेहुये रण
मै जड़की अभिलाषा वाले होते भये नव गं
गेय जो गंगाके पुत्र भीष्म जी वीरहैं ब्राह्मणों
को अनेक प्रकारके दान देकर आनंद पूर्वक अप
नेरथपर चढ़वैठे अरुजनवृन सारथी को लेकर ।
२२

परसराम जीभी चढते भये तब रण भूमी मे। आयकर भीषम जीने धनषमे वान जोड कर पहिले परसरामजी के चरनोको प्रणामकी री तीसे मारा अर्थात प्रणाम किया और उधरसे परसराम जीने भीषमजीके माथेको वाण मारकर लहूदर असीर वाटजोहै सोदिया तिसपर संतनं के पुत्र भीषम जीने फिर हाथ जोर कर। वारवार विनती करी किहे नाथ मै सेवक औ

र आप स्वामी हो कृपा करके इह हठ अपना त्या
ग दीजिये इस प्रकार यद्यपी भीषम जीने वहुत
हीं कहा तद्यपी भगुनंदन नहीं माने तव भीष
म जीने नम्र वानी से फिर कहा कि हे मुनीनाथ
क मै वहुत करि करके अदोष हो चुका हूं मे
रे को कुछ दोष नहीं है अव आनंद पूर्वक आई
ये रणभूमी मे सन्नद्ध हो कर जुद्ध करिये ऐ
से संतनु कुमार के वचन सुन नेहीं भगुनंदन

२५

परम कोपसे लरन बाणोंके प्रहार करने लगे प
डे ।८। चौपाई ।उत संतनु सुत मन अनषाये । लागे
हनन बान अनुराधे । गुरु सिष जुगल परम प
रचाढे । करहिं समर आयुध विस गाढे । वीरव
धान सबल भुज जोरैं । छाडत विसष बान दहुं
ओरैं । सरस निरस सम सुभट उदारा । हरि उत
र उत बरह्म अब तारा । खेलत फबन फाग जिमि
होरी । लाल गुलाल उडत दहुं ओरी । वीरन वीर

रंग निमि राते। सर अबीर रणधीर उडाते। सुरग

ण समर सुर लखि लोभा। चढि विमान नभदे

खन सोभा। भीम सुभट भीषम रणकारी। तैसे

हिं परस राम धनुधारी। तिनहुं कीन जस जंग।

अपारा। तास विउल भारत विसतारा। ताते क

छु संछपत कथोरा। तेईस दिवस भयो रणघोरा

राम सुभट वर भीषम कांही। जीति सको रण

मेटनि नाहीं। तवकरू परस धरन उर हारी। सुन

रुं अंवके भूपकुमारी। दोहा। जीत्यो जाय नमोहू
नैं भीषम सुभट सिरताज। जस भावत नस कर
रु तव तजिभरोस ममआज। ८। टीका। और उ
धरसे भीषमजी भी परम कोपसे भरे हूये वडे
तीक्षण बाण जो हैं सो वडी चंचलतासे छोडने
लगे इस सबको नगत के ओरसिष दोनो वीर
प्रधान रणभूमीमे स्थित हो कर परस्पर अत
मे गाढे बाणोके प्रहार करके अपनी अपनी

१८
भ०
२६
26

भजनोंका प्रबंध बलजोहै सो दिखावने लगे सर
सना और निरमसतामै दोनो बराबर ईहां हरी
अवतार भनी और इहां ब्रह्म अवतार भीषम
जैसे फागुनकी होरी खेलने मै दोनो ओरसे ला
ल गुलाल उडने शोभादेतेहैं तैसेही वीर रंगमै
राते हुये वीर दोनो ओरते अवीर रूपी वाणों
को रणफगवामै धीरज धार करके उडावतेहैं
ऐसे तिन सब वीरोके रणकी शोभाको देवता

डेके समहू लोभी होकर अकाशमे विमानो प
र चढे हूये देखते हैं और वडे प्रसन्न होतेहैं
भीषमवीर् केसेहैं किरणमे अनसे कठिन
और् तैसेही धनुख के धारने वाले परसराम
भी महा उर्गम तिनोने जेसा अपार जुद्ध किया
है तिसका भारतमे बहुत विसतारहै इहां सं
षेप करके कथन कियागयाहै तेईसदिन त
क तिनका वडाघोर युद्ध होताभया परसराम

जी भीषम वीरको रण भूमीमे जीत नहीं सके त
व परस्तु जो कहाहै तिसके धारने वालेमनी
हार करके तिस अंबके नामा राज कन्याको क
हने लगे किहे पुत्री इह सूर वीरों मे प्रधान भीष
म जोहैं सो तो मेरे से जीते नहीं जातेहैं इनकी
भुजोंके अपार बलका कछु पार नहीं पाया।
जाताहै ते अब मेरे भरोसे को त्याग कर जैसी
तिसको भावतीहै तैसी कर।८। चौपाई। अस

२८

भ
२८
९

कहिराम समर नजि गवना। भीषम आय लौटि निज भवना। विजय वाज वहु वाजन हेतू। दीन्यो सासन सुमति नकेतू। लग्यो होन पुर मंगल नाना। मोद प्रमोद न जाय वखाना। पुनि जव कौरव पांडव केरो। भयो विरोध अनर्थ घनेरो। धरम सवन कहं द्यूत खिलाई। जीत्यो सकुनि कपट सरसाई। जग दस वरष दियो तिन काहीं। राजनिराम वास वन माहीं। वीत्यो

१८
भं.
२८

बरष चार दस जबहीं। सजन कटक कुरु नाय
क तबहीं। चल्यो लरन अमरष सरसाये। प्रीति
अनंत कछु बरनि नजाये। नव भीषम बहु नी
ति बखानी। समझायो कुरु पति अभिमानी
पै नमन्यो मानस हंकारी। भये मौन नव भी
षम हारी। भटि क्रुप द्रोण देव ब्रत जेते। वैठे
सभा स जोधन तेतें॥ निजनिज उर तिन सोच नथो
रा। होहि अवसि अब भारत घोरा। नव भीष

२८

म निज सुजस विचारी। बोल्यो वदन वचन व्रत
धारी। हरिन मह्यो मोह मन धीरा। कह्यो कंठ
कल गिरा गंभीरा। सुनहु सभा सद जोधन रा
ई। मोर वचन प्रण हृदय लगाई। जोमै सुवन
भगीरथी केरो। तो इह सभा मइ हठ मेरो ॥
दोहा। कौरव पांडव दहुंन दल वीच हरष सर
साघ। करहुं सविधि वीरन विदन जदुपति ए
जनजाय। ९। टीका। निस राज कुमारीको श्रे

१८
भं०
५५

२९

से कहि कर परस रामजी रणको त्याग कर च
ले गये और इहां भीषम जीभी लौट कर अपने
घरको चले आये तब जे केवाजे जोहैं सो वजाने
की आज्ञा होतीभई घरमें नाना प्रकारके मंगल
जोहैं सो होने लगे आनंदकी चरचा कुछ क
ही नहीं जाती फिर जब कौरवों और पांडवोंका
परस्पर विरोध होगया और धर्म पुत्र राजा यु
धिष्टरको सकुनीने कपट करके ज्वये मे जी

५५

तलिया और बारां वरष तक राजसे निरास करके वणमै वास देदिया तोजब चौदा वरष वतीत हो गये तब कुरु नायक दुरजोधन जोहै सो सेना का अंतत कटक सनाय करके कि जिसका अंत नहीं आवता परम कोपसे पांडवोंके साथ जु द्ध करनेको सामर्थ हो ताता भया तब तिस अ भिमानी को भीषम जीने अनेकप्रकार नीती के वचन सनाय सनाय कर वह नहीं समझाया

१८ भ० ३०

परंतु सो हंकारी और मूढ़ एक नहीं मानता भ
या तब भीषमजी उनको हार कर मोन होय
रहे तिस समय वीर धीरोंमे प्रधान कृपाचार्ज
द्रोणाचार्ज और देवव्रत इत्यादि जितने उरजोध
नकी सभामै वैठे हूयेथे सोसव अपने अपने
हृदयमै उनसे चिंता और सोच कर रहेथे कि
अव अतेपनहीं चोर जव होवेगा तव भीषमजो
हैं सो अपना मनमे विचार कर वडे आनंद औ

३०

की भावीको कथन कर कर फिर ~~श्री विव~~ ति
स गऊको लेकर नामदेव जो हैं सो अपने घरमें
चला आया तहां अपनी गऊओंके साथ गऊको
तिसकी भली प्रकार सेवाकी और ईहां जब
तिन मलेछोंने राजाके पास जाय करके सब
वृतांत सुनाया तब राजा सुनकरके बडे अच
रजके वश होयगया तत्काल घरसे धायक
र और नामदेवके पास आयकर बडे दीनभा

४३
भ.
१००

बसे हाथ जोड़कर बड़ाई करनेलगा किहेसंत सिरोमणी हेभक्त प्रधान तुमको साक्षात जगन्नै मे पूजनेके योग्यहो इहमहाप्रूरख और बुद्धी केहीन लोगजोहैं सो तुमारे चंद्रमाके समान अमृतके भरे हूये प्रभावको कैसे जान सकतेहै हेभक्त उत्तम तुम कृपा करके इनके अपराधको क्षमाकरो क्योंकि तुम संत सदैव दयाकी मूर्ती होतेहो अब अनुग्रह करके मेरेसेजो

100

१००

मनकी अभिलाषा और रुचीहै सो मांगिये मैं आनं
दसर्वक देताहूं ऐसे राजाका कथन सुनकर नाम
देव प्रसन्न होय करके कहने लगा किहे राजन
मेरेको लेनेदेनेकी कुछभी अभिलाषा और रुची
नहींहै केवल एक नामकाही आधार राखताहूं
इह राम नामका अतुलित धन जोहै सोतो गुरुम
हाराजके प्रसादसे मैंने पायाहूं आहै और किसी
से क्या मांगूं इसप्रकार यद्यपि नामदेवने बहुत



४३
भ
१०१

हीं कहा तद्यपि राजा एक नहीं मानता भया वार
वार विनती करकर और तिसका हठ जो है सो
तोड़कर जोरावरीसे एक बड़ी सुंदर और कोमल
सेजा जो है सो दे देता भया नामदेवने लेकरके रा
खलेई जब राजा विदा होयकर अपने घरको च
ला गया तब पीछे नामदेवने सो सेजा उठाय कर
के नदीके प्रवाहमें बहाय देई फिर संध्याके सम
य घरमें बड़े सुंदर पकवान बनवायकर प्रीतिभ

१०१

ऋीसे संत जनोंको भोजन जिमाया और यथायो
ग्य सबका आदर सतकार किया।१२। चौपाई। पा
छे आप स्वस्थ चितहोई। पायोपाक वछाव श्रम
खोई। अस प्रकार कछु दिवसबिताहू। भाखोजा
य भूप सनकाहू। सोनमार सिजानर राई। नाम
नरंगानि दीन वहाई। सनत नाम अस भूपतिवानी
उर अमोल सिछा निजजानी। मिलन आजसेवक
संगलीने। आवा नहो कपट चितदीने। नमवच

८३
भ०
१०२

नकछु प्रथम जनाई। वहुरि कहत अस वदन बुझाई। जेतम कहं हरि भक्त प्रवीना। सेष्ट्रव सिज्जाक विहीना। सोदेहो मोहि जीरण जानी। लेहो नवल सोद मनमानी। नृप कर वचन मरम जनपाई। नामदेव मखिगिरा अलाई। चलहो प्रजापाल अमठानी। सोसिज्जा निजलेहु पिछानी। असकहि नृपहिं लेतनदि तीरा। आये नामदेव मतिधीरा। तहां भक्त निज भक्ति प्रभावा। वार मझार सरित

१०२

दिखरावा। कोटेखहिं हगभूप खजाना। परि म
लिल सिज्जा बहु नाना। अगनित देखि चकित
चित भयो। भक्त चरन नम्रन सिर नयो।
करि अनेक भाव विनय बड़ाई। निज अनुचित
नृप क्षमा कराई। होन विदाय भवन निज आई।
सब लोगन कहं दीन जणाई। नामदेव मोरेहि
तकारी। सज्जन साखद भक्त ब्रतधारी। इनसन
सदा सरल चित होई। ताखहु मे त्रिभाव सब

८२
भ०
१०३

कोई। सोरठा। अस न देस न राई। करि सादि सरिस कार सव। लागे करन वडाई। नामदेव कर विविध प्रकार। देवहु भक्ति प्रभाव। सो निंदक अति यमन गण। अब प्रसन्न मन गाव। मैत्रि भाव जन सज्जन सब। दोहा। तांते संकुल धरम मध संसृति भक्ति प्रधान। भक्ति उरषक र राखेहिं सदा टेक भगवान। अब आगल त हि भक्तिकार चमतकार मन भाव। करहु कथन

१०३

जहि सुनत द्रुत उरत दोष मिटजाव ॥२२॥ टीका

तिसतें उपरांत भक्त प्रधान फिर आप भोजन

पाय करके श्रमको निवारण करताभया ऐ

से जब कुछ दिन बतीत होयगये तब किसी

ने राजाको जाय करके सुनायदिया कि महार

ज सो तुमारी देईहुई सेजा नामदेवने भीमान

दीके प्रवाह मे बहाय देईहै ऐसे तिसका क

थन सुनकर मिलनके बहानेसें सेवक स

४३
भ०
१०४

मह साथलियेहूये और तिनमें कपटराखेहूये रा
जानेहै सोतसो चला आवताभया तब पहिले न
म्रताईके वचनोंसे प्रणाम करकर फिर पीछेक
पटसे कहनेलगा किहे भक्त प्रधान मैने तुमको
सेजाजो देईथी सोतो अब जीरण अर्थात पुरानी
होय गईहे फेर करके मेरेको देदेवो और तिसके
वदले और हमरी नवीनसेजा जोहै सो लेलेवो
ऐसा कपटकरके युक्त राजाका वचन सुनकर

१०४

१०४

नामदेवजी कहनेलगे किहे प्रजापाल यद्यपि त
मको भ्रमहोवेगा तद्यपि मेरेसाथ चलो और अ
पनी सुंदर सेजाजोहै सो पहिचान करके लेलेवो
ऐसे कहिकर राजाको साथलिये हूये नामदेवजी
नदीके किनारे परचले आवतेभये तहां अपनी
भक्तीका अद्भुतप्रभाव जोहै सो नदीके जलवि
खें राजाको दिखावतेभये कहनेलगे किहे रा
जन इस जलमें देख और जौनसी तेरी सेजाहै

४३
भ०
१०५

सोपरि चान करके लेले नव राजा नदी मै नौका क
ने लगा नौका देखता है कि नहां जलमै अनंत
सेना अधिकसे अधिक पड़ी हुई है जिनका कुछ
अंतही नहीं आवता है नवराजा अचरजकेवश
व्याकुल होयकर दीन भावसे चरनोपर गिरपड़ा
फिर सावधान होयकर भावसे अनेक प्रकारकी
असतुती और वडाई कर कर अपने अपराधका
क्षमा करायकर फिर विदा होकरके घरको चला

105

१०५

जाताभया तहां नगरके सबलोगोंको बुलायकर
समझायदिया कि इह नामदेव जी मेरे परमहि
तकारी और बड़े सज्जन सुखदायक भगवानके
दृढ भक्तहैं इनकेसाथ सबकोई हृदयसे कपट
और छलको त्यागकर सरलसूधे चित्तहोयक
कै सदैव मैत्रीभावहीं राखै इस प्रकार सबलोग
राजाकी आज्ञा को बड़े मन मानसे स्वीकारक
रके नाम देवकी अनेक श्लाघा और बड़ाई।

४३
भ.
१०६

106

करनेलगे देवियेभक्तीका प्रभावकि वे महा निंद
क और शत्रु मलेछगण जोथे अब सोई प्रसन्न
होय करके मैत्रीभावसें भावसें नानाप्रकारका
सजस और वडाई जोहै सो गायन करहै हैं
नाभादास जी कहतेहैं किहे संतो ताते संसार
मै सब धरमोविषे उत्तम और प्रधान केवल
भगवानकी एक भक्तीहीहै भक्तीमान पुरषकी
दीनबंधु सदैव पेज और टेकराखते चले आये हैं

१०६

इसप्रकार इहनामदेवकी भक्तीजोहै सो गायन की
गईहै अवआगे और तिसकी भक्तीका वडामन को
भावना चमतकार मे कथनकरताहूं कि जिसके श्र
वण करनेसे शरीरकेपाप और दोषइत्यादि सवदूर
होजातेहैं ।२२। चौपाई। अवसर एक पडोसिन आला
लागी अकस्मात कछुज्वाला। पायकफकोर प्रवलतर
वारी। नामदेव गृह पहुंचिदिवारी। लागी रुचिर
सदन जवजारन। सामीपकजन देखि निवारन।

४३
भ०
१०८

निज निज आय सकल करिहेला। जरेयो भक्त अन
र जनमेला। नव निरवापन हेरवि दिवारी। नामदेव
सबदीन निवारी। एकल आउ भवन हरिजाई। हरि
मरति मादिर सवदाई। जनसमाज हजन हरषा
ई। ताखोभवन वहिर झुत ल्याई। कहत वदन न
मन करजोरी। दीनयाल करुणा सवनोरी। तुम
हूं देव वसन विनयहू। मोहिदीन्यो सवदीन सनेहू
तुमहूं लीन अव कृपानिधाना। मैनहृदय चिंता क

१०८

छुमाना। नाथ रजाय सीस धरिलेवा। करहु जवन
मनभावति देवा। असकहि हरष नीर दृगबाढ़ा।
अग्रभाग हरि मूरति ठाढ़ा। निर नत वदन वि
मल पदगाई। दसा प्रेम कछु वरनिन जाई। तो
लो सकल धाम धनजारी। भई शांति नव आपु
दिवारी। सीतलभई भसम जवगेहा। नवस जत
न हरि भक्त सनेहा। हरि मूरति इत शारतिवा
री। कीनस्थापित भूमिसवारी। अस प्रकार जन

८३
भ०
१९८

नीजत नासा। वसत वहिर वहुदिवस विनासा। वोली एक दिवस महतारी। वहिर अनप स्वन वारि वयारी। तांते प्रभुहिं खेद निज होई। कर हू नकेत जतन किन कोई। सासन मात स्वामि उख लेखी। नामदेव करि सोच वसेखी। सोर ठा। नवल भीन विरचाय। जोरिकाठ संज्ञत ज तन। एक दिवस नवधाय। विपन लायवे हेत तिए। २२। टीका। नव एक समय नाम देवके

१०८

१९८

निकट वासी पडोसी जोथे तिनके घरमै कहीं अकस मातहीं अगनीजो लगगई तोव पवन का वेग पाय करके दगध करती हुई नामदेव के घरमै आय पहुंची तव तिसका सुंदर घर जोथा तिसको जलाने लगी इतनेमै पडोसी जोहैं सो तिसके निवारण करनेकेलिये अपने अपने घरोंसे धाय करके आयगये मानोभ क्त प्रधानके अंगन मै एकमेला जुडजाताभ

४३
भ०
१०५

या औैसे जब अगनी आपहीं कुछ शांतीको आपन
होायगई तबनामदेवने सबको निवारण करके
अपने अपने घरोंको भेजदिया पीछे अकेला
आपहीं घरके भीतर जायकर भगवानकी मूर्ती
को उठाके सब समाजके सहित लेकरके तत
कालहीं वाहर चलाआया और तहां अंगनमे
राखकर और दीनभावसे हाथजोडकर विनती
करने लगा किहे दीनबंधु इहसब तुमारी कृपा

१०५

109

हीहै क्योंकि मेरेको धनवस्त्र इत्यादि सब तुमने
हीं दियाथा और अबतुमनेहीं लेलियाहै प्रभु
इसमै मेरेको चिंता कुछभीनहींहै मैने आपकी
रजायके सीसपरधारन करलियाहै अबजैसी
मनकीभावनीहै तैसी करिये ऐसे कहतेहुये
का नेत्रोंसे हरषरूपी नीरजोहै सो वहाचलाजा
ताहै और भगवानके सनमुख स्थित होयकर
प्रेममै मगनभयाहुआ मावेसे वेडे ललितपद

४२
भ॰
११॰

गायन कर कर नृत्यकरने लगजाताभया जिस समय तिसके प्रेमकी दशाजोहै सो कुछकही नहींजाती तबलग सब घरबारको जालकर अ गनीजोहै सो आपही शांतीहोयगई जब घरकी भसम भलीप्रकार सब सीतल होयगई तब भ क्तप्रधान उठकर और देव अस्थानकी ओर जो भसमहै तिसको यतनसें निवारण क र कर और प्रीती भक्ती से सुंदर ॥

११॰

लेपन देकर फिर तहां मनमानसे ल्यायकर भग
वानकी मूरती अस्थापित करदेताभया इसप्रका
र नामदेवको तहांमाताके सहित वाहरहीं वा
स करनेको कुछदिन वतीत हो जानेभये तव
एकदिन माता कहनेलगी किहेपुत्र ईहांवा
हरतो धूप सीत पानीपड़ता और पवनचलता
रहताहै इसतें भगवानको वहुत कलेश हो
ताहोगा तुम घर वनाने और छप्पर वांधने

४३

भ०

का क्यों नहीं यतन करते हो ऐसे मानाका क
थन स्रवन कर और स्वामीका कलेश देखकर
सोचके वश भयाहुआ नामदेव श्रम करके
भिमीजो देवालहै सो नवीनहीं उसार कर औ
र यतनसे लकडीकाठ सब जोडकर फिर ए
कदिन त्रिण जो फूसहैं तिनके ल्यावनेके वा
स्ते जंगलमेंचला जाताभया। २३। चौपाई। नहं
जाय त्रिण काटि निकाई। बांधि जतन जतनसोंम

उठाई । चलोधाय गैारव सिरभारा । पंथावेद कि
मि सकहिं सहारा । द्वैअसकत मारग परिहीना
देखि ललित चलक्काय नवीना । परसो परनि
निद्रा हुतआई । नव भगवान भक्त सुखदाई ।
वतसल भक्त रूप नहिधारा । लीन उठाय सी
स त्रिणभारा । नामदेव कर सदन सुहाये । अ
खिल लोक मंडिन प्रभु आये । लागेभक्त प्रक्का
दनगेहा । दीननाथ हरिदीन सनेहा । नव हरगेद

८३
भ॰
११२

रवि विपुल अमगाता। भनत वचन लालन सावे दाता। अवपरि हरहु सदन सतकामा। करहु अनाथ पाक जलपाना। तात अछादिन मेघ रहावा। करहुकालि कल सदन सुहावा। मानवचन सनि प्रेम समेता। सत्यवचन भनि कृपानकेता। रहे विरचत भक्त निजधामा। विग सवारि सकल प्रभकामा। सोरठा। भनोज ननिपेंश्रय। अवमै जा वहुं मनिन नट॥

११२

112

पावन उदिक अनाय। आय करहुं भोजन भवन
टीका। तब तहां जाय करके त्रिण जोखेड आदि
क फसहैं सोकाटे औार तिनको यतनसे बांध
कर भार बनायकर औार सीसपर उठाय करके
चल पडताभया सो औसे गौरव अर्थात बडेभारी
भारको भक्त लछमन कैसे सहार सकताथा अ
शक्तभयाहुआ मारग मे एक सुंदर अस्थान
औार सीतल छाया देख करके तहांतिसभार

को डालदेता भया और आप भ्रमसे अचेत और
व्याकुल होय करके पृथवीपर लोटगया तहां
तिसको निद्राजो आयगई तोसर्व लोकोंके पा
लक भक्त हितकारी और भक्त सुखदायक भ
गवान नृवृत नामदेवका रूपधार कर और त्रि
णोंकाभार सीसपर उठायकर तिसके घरमै च
ले आवतेभये तहां आवतेही दीनानाथ और दी
नसनेही भगवान वडी प्रीतीसे अपने भक्तका

घरजोहै सो बनावने लगपड़े ऐसे तिनका प्रमदे
खकर माताबड़े सनेह और प्यारके बचनोंसे
कहनेलगी कि बलिजाऊं पुत्र अब घरकाकाम
छोड़देवो और सनान करके भोजन पायलेवो
अब इतना कामजो पीछे रहाहै पुत्र कलको ब
नायलेना ऐसेप्रेम करके शुचित माताका वचन
सुनकर भगवान सत्यवचन कहिकर अपने
काममैलगेरहे अर्थात भक्तका घरबनावनेरहे

८३
भ०
११५

नव दीनबंधु अपने हाथोंसे पीछरही सबकारज सवार कर और अपने भक्तका घरभली प्रकार बांधकर फिर माताके पास आयकरके कहने लगे किहे जननी मैनेतेरी कृपासे घरका काम स ब सवार लियाहै अबमै नदीके किनारेपर जाय कर और तहां सनान कर फिर घरमे आय करकेभो जन पावताहूं।२५। चौपाई। असकहि गवनकीन सुरराया। उहांपंथ मोहिन कृतमाया। नामदेव ।

११५

निद्रागत भययौ। सोत्रिणभार नदेखेन पययौ।
सोच विवस मानस अकुलाना। नरन भवन क
हूंकीन पयाना। आय जननि सब विथा उचारा
गवनो काहूलेन त्रिणभारा। मानसनन अचर
जवसहोई। सुनभ्रम भयो कवन मतिमोही। अ
वहू अवक्कादि सदन निजधीरा। गयो करन मज्ज
न नदितीरा। सुनिभ्रम मैान संदिहग रहयैा।
करन हार करज करि गययैा। धन्य जननिन

८३
भ॰
॥५॥

115

व जनम सुहावा। जहि इन दृगन दरस प्रभु पा
वा। मैं हुन भागजा सहित लागी। आयउं कृपाल धा
म निज त्यागी। भेय नमंद सफल इहनयना। ना
मदेव अस बिलँन बयना। मात बिलोकि ताम प
छताावा। भनत वदन निज वचन सुहावा। परिह
रि सोच तात अवजाई। हरिहिं हविर नैवेद ल
गाई। सोवका। करहु अन्न जल पान। अस प्रका
र जननी वचन। नामदेव उरमान। करि स्नान सरि

५

॥५॥

नाविमल। पुनिसादिर प्रभुकीन। भक्तिभाव एन
न सकल। पाछे आप प्रवीन। पावा भोजन जन
नि जन। दोहा। अस प्रकार इह चरित मै नाम
देव करगाव। जासुसनत सधाविमल हृलभक्ति
उरछाव। २५। टीका। ऐसेकहि करदेवों के देव भ
गवान चलेजाते भये और इहांमारंमे मायाकर्के
मोहित भया हूआ नामदेव निद्रामे जोजागा तो
क्यादेखताहै कि वेत्रिणोंका भार नहांनहीहै ति

ग

४३
भ॰
११६

स करके बड़ेमोचके वश व्याकुल भयाहुआ उठ करके घरकोचलाआया तहां आवनारी माताको अपनाश्रम और उलेख सुनायकर कहनेलगा। किहे जननी मेराश्रिणेंका भारकोई उवाय कर केलेगयाहै और मै खोलीघरकोचला आयाहूं तब सुन करके माता हृदयमै बड़ा अचरज मानकर कहनेलगी किहे पुत्र क्यातेरी बुद्धी विवेक कुछ भ्रम होयगयाहै तूंनो अबी घरका

११६

सबकाम सवारकर सनान करनेको नदीके कि

नारेपर गयाथा इसप्रकार माताका ववन सु

नकर नामदेव मौन होयगया ओर नेत्रोंकोमूं

दलेनाभया फिर थोड़ी देरके पीछे नेत्र खोल

कर कहनेलगा कि अहो करन हारजोहै सो

मेरे घरका कारज करगयाहै हेजननी तूं धन्य

हैं ओर धन्यतेरा जनमहै कि जिसने इन नेत्रों

करके भगवान कृपानिधानका दरसनपाय

४२
भ०
११८

लियाहै मेरे जैसाजगत मै कौन अभागीहै किसि
सके लिये दीनवंधु अपना परमधाम त्यागकर
मेरेघरमे आये और इह महामंद मेरे नेत्रसफल
नहींभये अभागियोंने दीनानाथका दरसननही
पाया ऐसे नामदेव ह्रदयमे वडीहानी मानकर
विलापके वचनोंसे वार वार कहताहै नवमाता
निसका विलाप और पछताना देखकर प्रीती
सें धीरज देकर कहनेलगी हेपुत्र अव सोच म

117

नकरो जावो भगवानको नैवेद लगावो और फिर
आनंदसे आय करके भोजन पावो ऐसे माताका
वचन मानकर नामदेवने तुरत सनान करके
भक्ती प्रीतीसे भगवानका पूजन किया और फि
र आयकरके माताके सहित आनंद पूर्वक भो
जन पाया नाभादास कहतेहैं किहे संतो इसप्र
कार नामदेवकीभक्ती कि जिसके श्रवण क
रनेसे हमसभगवान के चरन कमलोंमे प्रीती

४२
भ०
११८

118

और श्रद्धा उपजनीहै मैने गायनकीया है ।२५। चौपा
ई। अब इह आन ललित मनभावन। नामदेव क
र भक्ति सुहावन। करहुं कथन निजमति अनुरू
पा। जासुसुनत हरिभक्ति अनूपा। उपजहिं हृद
य सकल सुखकरनी। किलष औघ दारद दुख
हरनी। एक दिवस नहि सदन रमाला। धरे तिल
क मद्धा वनमाला। आवा अतथि संत जनकाहू।
हर हर हर सुमर्ण सुखजाहू। नामदेव मन ता

११८

स वखाना। मैन्हधावन भक्त प्रधाना। तांते अवभो
जन नवलपाई। वेगदेहु मोहि भक्त जिमाई। असस
नि नामदेव तहिकाहा। आज इकादसि कर व्र
तवाहा। तवकस करहु पाक रविपहा। मोरेहृद
य भूरि संदेहा। तांते मै तोहि पाक नदेहो। जो
अमान्न चाहो नवलेहो। जाय वहिर कहुले हुव
नाई। अस सुनि भयो अतयि नुसकाई। मै तो
सिद्ध अन्न नवगेहा। करहीं अवसि मोर प्रण

४२
भ०
११५

पहा। मोरेतीन दिवस अरुदानी। बीत्यो विगत अ
न्न इहिभांती। नामदेव स्वनिता करवानी। भत
न सोच वस अचरज मानी। सुनहैा भक्त संतव
नधारी। इह अपराध छमहु मोहिभारी। आज
रुचिर हरिवासर मोरे। प्राण अधिक प्रिय वि
न वहुतोरे। तव आपन इह प्रण परि हरहैा।
वहिर जाय भोजन कहुं करहैा। जद्यपि नामदे
व वहुवारा। विनय युक्त मांव वचन उचारा। ११५

१६९

तद्यपि एक नमान्यो तेहा। कहत करहु भोजन त
व गेहा। अस हढ वचन नाम जव कहयो। नाम
देव चिंताकुल भययो। वैठोमौन भवन चितदेई
अतथी रह्यो द्वार थिर होई। अस प्रकार जव दि
वस विहावा। संध्यापरी तिमर जगछावा। नाम
देव तव आय वहोरी। भाषत वदन जुगल करजो
री। मोरी विनय संत उर धरहो। तव पुनीतव्रत
धारन करहो। ततर अमान्न लेहु तवभाई। जाय

भ. १२.

वहिर भोजन विरचाई। निजपरि तोष करहु महमा
नी। बोल्यो अतथि सुनत असवानी। जद्यपि मै त्र
ध्या कुलदेहा। तद्यपि करहुं पाक तवगेहा। नाम
देव हठतासु निहारी। वैसोजाय भवन व्रतधारी
जाग्रन करत रैन सवखोई। उदयो अरुन प्रात
जव होई। आय अतथिपें वदन वखाना। उठहु सं
त अव करहु सनाना। चलहु पाक मोरे गृह क
रैहौ। है प्रसन त्रयध्याश्रम हरहौ। अस जव नाम

१२.

देव नहिकाहू। अनथी संत मौन धरि राहू। सोर
गा। निकट आय मतिधीर। विसमय वस देखन
लगे। वदन निवारन चीर। भाषतीन मन वनसा
ई। टीका। अव आगे नामदेवकी भक्ती की औरव
औ अदभुत और मनोहर गाथा कथन करताहूं
कि जिसके श्रवण करनेसे पापोंके समूहका
नास करनेवाली और सरव सुखोंकेदेने वाली।
हासु भगवानकी भक्तीजोहै सो हृदयमै हडकरो

४२
भ॰
१२१

तीहै एकदिन तिसके घरमै संख चक्र गदा पदम
इन चिन्होंकरके चिन्हत और तिलकमाला धारे
हूये हरी हरी उचारण करताहूआ एक अतथी
संत आय प्रापतभया और नामदेव को कहने
लगा किहे भक्त स्त्रप्रमै तथा करके आकुलहो
य रहाहूं ताते तूं मेरेको अबी भोजन जिमायदे औ
से तिसका वचन सुनकर्के नामदेव कहनेलगा किहे
संत आजतो एकादशीका व्रतहै तूं इसदिन विवेकेसे

१२१

भोजन मांगताहैं मैंतो आज कदाचित भोजनन
हीं देऊंगा जो कबी सहके अन्नकी इछाहो तोले
लेवो और कहीं वाहरजाय करके भोजन वना
य लेवो ऐसे स्वन करके अनथी नमसकाय कर
कहनेलगा मैंतोसिद्ध अन्न अर्थात वनाहूआ
भोजनहीं तेरे हथसे पाऊंगा इह मेरासत्य प्रण
है हेभक्त मेरेको तीनरात और तीनदिन भूखे
प्यासे को वीत गयेहैं तव नामदेव स्वन करके

बडे अचरज और सोचकेवश होयकर कहनेलगा
किहे संत महात्मा तुमकृपा करके मेरे इस अ
पराधको क्षमाकरो और मेरी विनतीको मानो
देखो आज इह भगवानका दिन मेरेको प्राणों
सेभी अधिक प्याराहै तुम अपने इस हठको त्या गदेवो कहींबाहरजाय
करकेभोजनकरलेवो इ सप्रकार यद्यपि नामदेवने बहुतही कहा तद्य
पि सो एकनहीं मानताभया कहनेलगा किमै
तो अवश्य तेरे घरमेंही भोजन करूंगा जब इ

जब इस प्रकार नामदेवने अनथीके वचनको व
डा हठकेदेख तबचिंता करके व्याकुल भयाहूआ
मौन होय करके घरमै इकांत जायबैठा और अ
नथी तहांही द्वारेपर स्थित होयरहा ऐसे जब
सूरज अस्त होनेलगा और संध्यासमय आय
गया तब नामदेव फिर आयकर और दीनताई
से हाथ जोड़कर कहने लगा कि हे संत उदार
दया करके मेरीविनती को मानो और सुंदरव

नकोधारन करो जो ऐसा नहीं करतेहो तो सूका अ
न्न लेकर और वाहर कहीं भोजन वनाय कर अ
पना परितोष अर्थात उदर भरना करलेवो ऐसा सु
नकर अथर्ती कहताभया कि मैं यद्यपि क्षुधाक
रके व्याकुल होयरहाहूं तद्यपि तेरेही घरमें भोजन
पाऊंगा अपनाप्रण कदाचित नहीं छोडूंगा तवना
मदेव जिसका हठ देखकर हृदयमें सोच करता
हुआ घरमें जायवैगा जागरन करनेको सारीरात व

तीन होयगई जब प्रातःकाल होते सूरज उदयभ
या तब ब्रतधारी संतके पास आयकर कहनेलगा
किहे महात्मा अब उठो और स्नानकरो फिरमे
रेसाथ चल करके आनंदसे भोजनपावो और त्
षाके श्रमको निवारणकरो इस प्रकार जब नाम
देवनेकहा तबवे संत मौनहीं रहा कुछ उत्तरनहीं
देताभया इतनेमें नामदेव अचरज के वशभया
हुआ तिसके पास आयकर और मुखसेवस्त्र।

उबाय कर जो देखनेलगा तोवे अनथी संत मराह्
आ पाया।२६। चौपाई। अस अचरज नहि दशा निहा
री।नामदेव आकुल उरभारी।लग्यो करन रोदन
पछुताये।इतउत नगर लोग सुनिआये।कहि हु
तांत सब तिनहिं सुनावा।इह अचरज सब कर
उरछावा।भनन लाग सब देव रजाई।तोरे नहि
न दोष कछुभाई।जोमृत भयो कहन अस लागू।इ
हि समसकार करन अबजोगू।नामदेव तब गिराउचारी

मैतोभयो पापरत भारी। त्यधारत व्याकुल जहि
गेह्ना। भरतवस भयो ग्रनाथि दुजपह्ना। लागेपा प
रम दोष मोहिभाई। करहिं लोग ग्रप वाद निका
ई। तोते चिता विरचि निज करना। इहि सन मो
र परम ग्रव जरना। जोतव करहु निवारण ग्रा
ई। तमहिं सपत नारायण भाई। सनत लोग वि
ता कुलभारी। ग्राई रुदन करत महतारी। मो
रे तात कवन ग्रवलंवा। तोहि सन देखि जिय

८२
भ०
१२५

व कस अंवा। मातेतजहु पुत्र प्रणपहू। परिहरि
शोक चलहु निजगेहू। जद्यपि मात अनेक वखा
ना। नामदेव कछु एक नमाना। सोरठा। नव ले
गान सनमान। विधि मंजन म्टन संतकहूं। ल्याय
धरनि समसान। दाह करन हित राखयो। २७।
टीका। तव ऐसे नामदेवने तिससंत को मरे हू
ये देखा तव अनेक प्रकार पछताय करके व्या
कुल भयाहुआ रोदन करने लगा ऐसे तिसका

125

१२५

इतन सनकर लोगजोहैं सोधाय करके आयगये
तब नामदेवने तिनको सब वृतांत सुनायदिया
सो सुन करके बडे अचरजको प्रापत होयगये
और कहनेलगे किहे भक्त इह भगवान की
भावीका चमतकारहै तेरेको इसमै कुछभी
दोष नहीं है अब इह देव इछासे जोसाधु मृ
तहोय गयाहै इसको समसान भूमीमै ले
जायकर दगधकरदेना योगहै तबनामदेव

४२
भ.
१२९

कहने लगा किहे भाई मै तो महा पापका अधि
कारी होयगयाहूं देखो जिसके घरमें व्याक
रके व्याकुलभयाहुआ अनथी संत कालवश हो
यगयाहै मेरेसिरपर वडाभारी पापचढगयाहै
और मै अपजसका भागी होयगयाहूं लोगमेरी
सर्वकाल निंदा किया करेंगे तातें अब मेरापही
धर्महै किमै अब चितारचाय करके इसके सा
थहीं जलमरूं जो कदाचित इसवारतासे नमरूं

१२९

रेको निवारण करोगे तोभाई तमको भगवानके
चरनोकी सगंद होगी ऐसे सुन करके लाग सब
चिंताके वश उदास होयगये इतनेमे नामदेव की
माताभी रोदन करती हुई धाय करके चलीआई
और बडे विलापके वचनोसे अनेक प्रकार समझा
नेलगी किहे पुत्र मेरेको कौन आधार रहा तेरेको
दुःख देखकर मै कैसे जिऊंगी। तांते हे पुत्र तूं आप
ने इस हठको त्यागदे और चिंता शोकसे नहतप्तहो

यकर अपने घरमे बैठ कर भगवानका भजन सुम
रण कर ऐसे माताने यद्यपि बहुतही कहा और स
मझाया तद्यपि सो एक नहीं मानताभया तबलोगों
ने जाना कि अनर्थी संतको मनभयेहूये बहुत बेर
हैय गईहै ततकाल सनान देकर यथा योगय वस्त्र
से आछादिन करके फिर बिधीवत उठायकर और
लाय कर समसान भूमीमे राखदिया। २८ ॥ चौपा
ई ॥ पाछिल नाम देव इन आई ॥ ॥

चिता जतन जन करन बनाई। उरु धरि संत सीस ग
न सोगू। बैठ्यो सिड करन जन जोगू। भे उद्योगक
रत जब ज्वाला। हस्यो तरत प्राव वदन रसाला। क
रहु ज्वलत जनि पावककाहीं। मैकौ अनाथ्य संत
मत नाहीं। तोर भक्ति हद्द देखन कारन। मै कीन्ह
कौतक अस धारन। नामदेव सुनि अचरजमानी
लागे भनन वदन मृदुबानी। कौतव नाम क
वन कहि आये। कृपासिंधु तब मुख मसकाये।

भ० १२८

भने अनाम नाम मम भाई। आश्रम जाति विगत पितु माई। निज इच्छा विचरत महि आवा। समय रम तव देखि सुहावा। उपज्यो महा मोद लखि मो ही। मागहु भाव जवन मन तोही। नामदेव तव मानस जानी। लाग्यो भनन जोरि जुग पानी। जो तव से प्रभु मे लौ लीने। वंदहु तव पद परम नवीने। जो प्रसन्न अब जन पर ऐहो। तौ निज चरन भक्ति दृढ दैहौ। चलहौ सदन दीन पग धरहौ। म

न प्रसन्न भोजन कछु करहीं। अनथी भेषलोक वैना
यक, भक्त कलप द्रुमदीन सहायक। हरषत गव
नि भक्त गृह आये। नामदेव सादर अनवाये। ह
रि मूरति कहं प्रथम सुहावा। प्रेम सहित नैवेद
लगावा। कृपासिंधु कहं वह रिजिमावा। भक्तिभा
व जुत भोजनभावा। भक्त भवन आनंद समेतू।
पायोभोजन कृपानकेतू। वहुरि भक्ति वरदेत स
हाये। दीननाथ निज लोक सिधाये। नामदेव अ

स चरित निहारी। भयेलोक अचरज वसमारी।
लगे करन भाव विविध प्रसंसा। अस कृपाल भ
य भक्त विधंसा। होत भक्ति वस भक्त उवारन।
कौतक करत लोक मन हारन। सुजन जाति मं
त्र आचारा। जहिलग धरम करम संसारा। जप
तप जोग जतन व्रतदाना। सबतें प्रीये भक्ति भ
गवाना। दुरलभ मोछ धन्य जन सोई। जाके हृद
य भक्ति हृढ होई। दोहा। करहिं भक्ति भगवान

जैसेंाकर कृपा निधान। करहिं आपु जनजानि निज
भक्ति रुचिर भगवान। २७। टीका। तब पीछे नाम
देव आयकर ततकाल अपने हाथोंसे चिखावना
यकर तिस रतनभयेहूये संतका सीसजोहै सोआ
पने उरु अर्थात पट्ट पर राख करके मानो जोग
मारगके सिद्ध करनेको ध्यान होय करके बैठजा
ताभया इतनेमे जब चिखाको अगनीकालांहू दे
नेलगे तब तिस समय शावजो मरदाहै सो मख।

भ० करके वडा अट्टहास शब्द करताभया अर्थात वडा
१३० हसताभया और कहने लगा किहोभाई मनकहीं
अगनीलगावतेहो मै कोई अनर्थी संत और म्लेच्छ
पुरुषनहींहूं केवल तेरी दृढभक्तीके देखनेके लिये
मैने इहकौतक धारन कियाहै तबनामदेव म्लेच्छ
रु अवरजको प्राप्तभया हुआ वडी कोमल वाणी
से कहनेलगा कितुमारा क्या नामहै कौनहो कहांते
आयेहो तबकृपा निधान म्लेच्छसे नमस्कार करके।
१३०

कहनेलगे कि भाई मेरानाम तो अनामहै और
मेरा आश्रम जाती मातापिताभी कोई नहींहै अ
पनी इच्छासे पृथ्वीतल पर विचरने को आयाथा
इहू तेरा सत्य धरम देख करके मै अत्यंत प्रसन्न
होय गयाहूं अब तेरे मनको जो भावताहै सो व
रमांग मैदेताहूं तब नामदेव हृदयमे जान करके
वडीदीनताई से हाथ जोडकर कहने लगा किहे
कृपानिधान तुम जोहो सोईहो मेरी तुमको दंड

४२
भ०
१३१

प्रणामहोवे और हेदीन बंधु जो आपमेरे परप्रसन्न
भयेहो तोकृपा करके यही वरदेवो किमै जहांजा
ऊं तहांही आपके चरनोकी भक्तीजोहै सो मेरे हृ
दयमै वसीरहै और भी इह प्रार्थनाहै कि प्रभुआ
व मेरे घरमै चलिये और आनंद पूर्वक भोजन
पाईये ऐसे नामदेवकी विनती सुनकर भक्तों
के कलप वृक्ष दीनहितकारी और तीन लोक
के नायक भगवान हरषसे प्रफुल्लित भयेहुये

१३१

ततकालही भक्तके घरमै चले आवतेभये तब नामदेवने संतरूप भगवान को बडे सनमानसे सनान करवाया और फिर भगवान की मूरती को किजो घरमै स्थापितथी नैवेद लगाया तिस तें उपरांत वडीभक्ती और प्रीतीसे भगवान को भोजन जिमाय दिया इसप्रकार भगवान कृपानि धान अपने भक्तके घरमै वडी प्रीती और रुची से भोजन पायकर फिर खसती खसती अर्था

४२
भ०
१३२

कल्यान कल्यान कहतेहूये अपने परम धामकोच
लेगये ऐसे नामदेव की भक्तीदेषकर सबलोग अ
चरजके वशहोयकर तिसकी अनेक प्रकार शला
घा और बडाईकरने लगे नाभादास कहते है किहे
संतो ऐसे दयाके समुद्र भक्तोंकाभय हर करनेवा
ले भगवान भक्तजनोंकी भक्तीके वशहोयकर आप
ने नाना कौतक जोहैं सो करतेहैं देखिये कि यज
न जानी मंत्र आचार जप तप जोग जतन साधन ॥

१३२

व्रत दान इत्यादि संसारमें जहांलग धरम और स
करमहैं इनसवतें भगवानको भक्ती प्यारीहै दी
ना नाथकेवल भक्तीपरहीं रीफतेहैं सोवजी उत्त
महै और सो पुरषभी धन्यहैं कि जिनके हृदयमें
इहभक्ती दृढहोवे जोपुरष निसकपट होयकर
के भगवानकी भक्तीकरतेहैं तिनको अपनेदास
जानकर भगवान आपतिनकी भक्ती करतेहैं। ९
चौपाई। आगे आन ललित मनभाई। नामदेव क

भ० १३३

रभक्ति सुहाई। करहुं कथन कछु अवर गाथा। उप
जहिं सुनत भक्ति जडनाथा। काहु देस कर वनक
सुजाना। महाधनक धृति धरम प्रधाना। विट्ठिल
प्रभु दरसन अनुरागी। आयो भक्तिमान वडभागी
लिये संगधन विविधप्रकारु। कनक चैलमट्टाम
णिचारु। तव भीमा सरिता तट आई। कीन सनान
वैस सुख पाई। पुनिविन वसन आभर्न नाना। वि
धिवत नाम कीन तलदाना। विप्र हेद आये नहि

१३३

ठाहीं। दैदै तुलादान तिनकाहीं। सब कर यथा इछ
न मनभावा। कीन वैस परि तोष सुहावा। पुछे व
हुरि विप्र गणसोई। काहुदान बिनुरहान होई।
रह्योभूलतें जवन निरासा। मैपठहैं नहिभाग अ
वासा। धनक कथन सुनि उज समदाई। बोलेव
दन वचन हरषाई। नामदेव असनाम सुहावा।
वैस्नव संतभक्त हरिभावा। गुण संपन्न सीलव्रत
धारी। हृदय अजाचक परउपकारी। भक्ति निरत

५२
भ॰
१२५

वरजित अभिमाना। रहा सएक भक्त भगवाना। उ
जन वचन सुनि धनक प्रवीना। सुनतहिं बोलि सास
न असदीना। तहिपें तात वेग लवजाई। करि अने
क मुख विनय बडाई। ल्यावहु जथा जनन जिय
जानी। सिसु अस सुनत जनक मुखवानी। कर
तप्रणाम भवन जनगवना। आवा नामदेव कर
भवना। जुगकर जोरि चरन सिरनावा। भन्योनम्र
पुनि वचन सुहावा। दोहा। नाथ जनक मम दरस

१२४

नव अभिलाषन मनमाहिं । तौ तैं चलहु कृपानि धी करहु सफल नहि काहीं ॥ ८ ॥ टीका । अवश्या गे और वडी आश्चर्ज मनके हरने वाली और भ गवानकी भक्तीके उतपन्न करने वाली नामदे वकी भक्तीकी गाथा जो है सो कथन करता हूं एक किसी देसका कोई वैस वडा धनी धीरज और धर्ममे प्रवीन भगवानकी भक्तीवाला सो वर्ण भूषण वस्त्र मणी मुद्रा इत्यादि नानाप्रका

५२
भ०
१३५

135

रका द्रव्य साथलिये हूये विट्ठल भगवानके दरस
नकी अभिलाषा वाला भयाहूया तहां आय प्रा
पतभया तब आनंद पूर्वक भीमानदीके निरम
ल जलमैं सनान करके फिर कंचिन अन्न वस्त्र
भूषण मणी मुद्रा इत्यादि धनका विधी अनुसार
सुंदर तुलादान जोहै सोकरताभया ऐसे तिसका
दान सुनकरके ठौर ठौरसे ब्रह्मणोंके समूह च
ले आये तब धनीने तिस तुलादानके धनसे सब

१३५

ब्रह्मणोंका भलीप्रकार परितोष किया जैसाजिसने
मांगा धनीने तैसाही तिसकोदिया और बडा से
दर जसलिया फिर तिस वैस्यने ब्रह्मणोंको पू
छा किभाई ईहांनगरमै कोई मेरेदानसे ऊन औ
र निरास तोनहीं रहा जोकदाचित भूलसे किसी
ने नापायाहो तो मेरेको सुनायदेवो मैतिसका
भाग तहांघरमैही पहुंचायदेताहूं इसप्रकार ध
नीका वचन सुन करके ब्रह्मण हरषसे कहने

४२
भ
१२६

136

लगे किहेदाता इस्तेरादान और मैंसबवनेपाया
परंतु एक वैस्नव संत व्रतधारी और पर उपका
री गुण सीलताकीनिधी और अजाचक जो कि
सीसे कछुनहीं मांगनेवाला भक्तीमे लीन अभि
मानसे रहित ऐसाजो नामदेवनाम करके भग
वानका भक्तहै हेधनी सो तेरे दानसे शून्य रहा
है जिसने नहींपाया ऐसे ब्रह्मणोंके मुखसे वचनसुनकर
५ धनीजोहै सो अपने पुत्रको कहनेलगा किहेतात

१२६

तब श्रीधरजाके श्रौर मालवसे श्राने कविनती ब

डाई कर कर जैसे होयसके तैसेहीं यतनसें तिस महात्माको बडे सनमान

से श्रपने साथ करकै लेश्रावो तब पिताकी श्राज्ञापाय करके बालक जोहै

सो ततकाल चरनोंपर सीसनाय कर श्रौर सब

कोंको साथ लेकर नामदेवके घरमै चलाश्रा

वताभया तहांभक्त प्रधानको देखकर चरनो

पर दंड प्रणाम करताभया श्रौर फिर हाथ जो

उकर बडी कोमलवाणीसे विनती करनेलगा

४२
भ०
१२२

किहे नाथ हम आपके देशमें गवन करते हूये ईहां हमारे नगरमें चले आये हैं और मेरा पिताजो है सो संतभक्तोंके चरनोंका सेवकहै ईहां आप की महिमा सुनकर नाथ हमारे दरसनको अभिलाखावाला होयरहाहै इसीतें मेरेको आपके चरनोंमे भेजदियाहै अब कृपाकरकें चलिये और प्रभू अपने दरसनसे मेरे पिताको सफल करिये । २८ । चौपाई । बालक गिरा ललित ।

137

१३८

सइनीकी। श्रवण सवद भावन पीयनीकी। नाम
देव सनि मानस रागे। नाम वदन श्रस भावन
लागे। मेरे नियम नात असरेहा। कौन नगावन
काहूकर गेहा। अरु नव जनक जानि मै लीना।
दानाविठ्ठल दानवित कीना। सोमोरे सादिरश्र
नरागी। चाहन देनदान वडभागी। पैमोरे नाहि
न सईकारा। अवलगमै आपन प्रणधारा। जा
चनहिन सन सनहु प्रवीना। काहूके गृह ग

62

भ.
१२८

वन नकीना। ईहांराम मोहि संजत दाया। भोजना
दि सव भवन पठाया। नृप सुत नाथ जनक नि
जपेही। भनह्ली मो नहान धन लेही। सुनवचन
सुनि बालक आवा। पितपे भनि वृतांत समझा
वा। वैस धनक सुनि बालक कान्हा। पलक प्र
माण मौन धरिराहा। वहुरि कहत अस वदन
उचारी। पुत्र होहि कल्यान तुमारी। पुनि जावहु
इन तहांसिधाई। संत चरन नमत सिरनाई। करि

138

कहि वदन मधुर सुजवानी। लावहु जथा ज
तन सुतजानी। दोहा। पिन सासन सिसपाय
इन वृद्ध पुरष नहिग्राम। लिये संग आयो सु
दित नामदेवके धाम। ४९। टीका। ऐसे बालक
की वडी सुंदर कोमल और सुख दायक मनको
भावती वानी सुनकर नामदेव प्रसन्न भयेहुये
कहने लगे किहेपुत्र मेरा इह नियमहै किमै
कवी किसीके घरमै नही गया और मैने जान

४२
भ.
१२५

लियाहै कि तेरा पिता बडादाताहै जिसने बहुत
भारीदान कियाहै सोवे तिसदानसे मेरी कुछ
सेवा सनमान कियाचाहताहै परंतु हे पुत्र सो
मेरेको स्वईकार नहींहै क्यों कि अवलगमेरा प
ही प्रणरहाहै जोकिसीके घर कबी कुछ मांगने
नहीं गयाहूं भगवान कृपानिधान मेरेको अप
नाजन अर्थात सेवक जानकर भोजन आदि स
व कुछ ईहा घरमेंही भेजदेतेहैं तांतेहेपुत्र तुमय

१३९

१२५

पने पितासें जाय करके कहो कि वेमाथ नमारादा
नमोहै सो गृहणनहीं करताहै ओसे भक्त सथा
नका वचन सुनकरके सोबालक फिर करके
पिताके पासचलाआया ओर संतभक्तके नहीं
आवनेका वृतांत जोहै सोसुनायदेता भया त
व वैसधनी ओसा वालकका कथन सुन कर
के एकपल भर आंखें मूंद कर मौन होयगया
फिर कहनेलगा किहेपुत्र तेरी कल्याणहोवे

४३
भ.
१५०.

अवतं फिर करके तहांहीं जा और संत भक्तके चरनोपर दीनभावसे माथा धरकर जिस यतनसे हो सके तैसेहीं तिस महात्माको साथ लेकरके मेरेपास चला आ इसप्रकार पिताकी आज्ञापाय कर बालकजोहै सो तिस नगरके वृद्ध पुरषोंको साथलेकर ततकाल नामदेवके घरमे चला आया। २९। चौपाई। करि प्रणाम नम्रतन कर जोरी। भनत वदन कछु विनय नथोरी ॥

१५०.

कृपा निधान मोर पितु दीना। चाहत नव दरस
न प्रभु कीना। तांते चलहु नाथ तजि श्रयना। क
रैहो सफल जनक मम नयना। दीनानाथ ता
स प्रणधारा। जोलोहो हिंन दरस तुमारा। तो
लोक रहिं पाक कछु नाहीं। अस विचारि भगव
न मनमाहीं। धारिय चरन हरन उरवदीना। वि
नय वशः विविध विधि कीना। नाम देव सिख
कर हठ देखी। पावन भक्ति प्रीति हृदि लेखी। ह

५२
भ
१५१

रषत भये बदन मसकाई। ईहांदेहू निज पित हिं पठाई। संत वचन सुनि बालवषाना। भक्त भ कि वस जिमि भगवाना। नसत्तव परि हरिमा न बराई। निजदास नवस सदा सहाई। अस ग नि दीननाथ मनमांही। कीजै कृपाधर क्रुप गनाहीं। चलिदेहौ निजजनहिं बराई। करहुस फल प्रभ दरस दिखाई। बालप्रेम लखिवचन सुहाये। हरषत नामदेव उठिधाये। आवन स

१५१

न सवन जनतेदाखी। उठो बनक लखि भागवसे
खी। आगल जाय चरन सिरनावा। सादिर लि
ये संगनिज आवा। अरघ पाद आदिक सबकी
ना। सुजन प्रेम भक्ति मनलीना। जगकर जे
रि वहुरि अस कहयै। मैप्रभु आज कृतार्थ भ
ययो। देखिदरस हग कृपानिधाना। सफलज
नम निज संस्वतिजाना। सोरठा। पुनिअस वि
नय उचार। मैचाहैं कछु कीननव। सेवासंन

४२
भ॰
१५२

उदार। सोकीजे सहइकार प्रभु।२०। टीका। नव बाल कजोहै सो वही दीनतासे प्रणाम कर कर और हाथ जोड़कर विनती करने लगा किहे कृपानि धान मेरापिताजोहै सो आपके दरसनको अत्यंतअभि लाखारखताहै तोतेकृपाकरके चलिये और दरसन देकर तिसके नेत्रोंकोंसफल करिये नाथपिताने हृदयमें हढधारलियाहै किजब लग मैंन आपकरके मेरेकोदर सननहींदेवेंगे नवलगमें अन्न जल कछु खानपान

१५२

नहीं करूंगा ऐसे विचारकर हे कृपानिधान आप
चलिये नहीं चरनधारिये और तिसके हठको नि
वारण करिये इसप्रकार बालकने दीनताईसे ब
हुत करके बिनती करी जो करी तब नामदेवजि
सका प्रेम और हढ भक्ती देखकर हरषसे मुस
काय कर कहनेलगे कि भाई तू अपने पिताको
ईहांही भेजदे दरसनमेला कर जावेगा तबइस
प्रकार भक्त प्रधानका वचन सुन करके बाल

४३
भ॰
१५२

कवडे चतुराईके वचनोंसे कहनेलगा किहेनाथ जे
सेदीनबंधु भगवान आपने भक्तोंकी भक्तीके वश
होतेहैं तैसे कृपानिधान तुम संत महात्माभी आप
ने दासोंकी सेवा और भक्तोके वश होतेहो प्रभुत
म अपनी बडाईको त्यागदेतेहो परंतु सेवकका
माननहीं त्यागतेहो तातें हेसंतस्वामी अब आपने
निजसेवक पालबिरदको पहिचानकर कृपाकर
के नहोंही चलिये और आपने दास भक्तको सफ।

१५२

ल करिये ऐसे प्रेम और चतुराई की भरीहुई बा
लक की बडी गूढवानी सुनकर नामदेव हरष
करके गदगद बानी होय गये और ततकाल
हीं उठ करके चल पडते भये तब बालकके स
हित तिनको आवते देखकर हरषसे मगनभ
याहुआ वैसथनीजोहै सो तुरत उठकर और आ
गे जायकर चरनोपर दंड प्रणाम करके बडेस
नमानसे साथले आवताभया तहां पवित्र आ

५२
भ.
१५४

मनपर विठायकर विधीवत प्रीतीभक्तीसे पूजन किया और फिर प्रेममें मगन भयाहूआ हाथजोडकर नम्रवाणीसे कहनेलगा किहे कृपानिधान आजमैं कृत्य कृत्य होयगयाहूं अर्थात जोकुछकरनाथा सोकरचुकाहूं क्योंकि सर्वदोष दारिद्रों के हर करने वाला आपका दरसन जोहै सो मैंने नेत्रभर कर पायलियाहै आजमेरा जगतमें जनमभी सफल होय गयाहै ॥ ।

ऐसे कथन करकर फिर प्रार्थना करने लगा कि
हे दीनानाथ मेरी विनती है जो मैं धन करके आप
की कुछ सेवा भक्ती करनी चहता हूं सो हे दीनद्या
ल आप कृपा करके मेरी इस सेवा को स्वीकार क
रिये अर्थात ग्रहण करिये मै आपके चरनों का
सेवक हूं । १ । चौपाई । नमत विनय धनक स्वनि
काना । नामदेव अस वचन बखाना । मैतव स
नह भक्त वडभागी आवन गहिन दान धनला

४२
भ
१५५

गी। जानत लोग मोर बनतीके। रहहूं संतोष मगा
ए निन नीके। केवल सनन भक्ति तवकाना।
तोपैं निज आगमन हचिठाना। विनदरसन मेरे
मनमाहीं। भक्त आन लालस कछुनाहीं। कर
न न गृहण दान तव जेहू। मोहि अपराध ल
मह तवपहू। नामदेव करवचन सहाये। धनी
सनन मानस हरषाये। साधु साधु कहि चरनन
रखा। नमन सीस वदन अमभाखा। तयपि।

म

कृपानाथ कछु लीजै । मोर मनोरथ सफल अवकीजै
जद्यपि सदासंत नवत्यागी । तद्यपि बालदास हित
लागी । इहकछु करहु गृहण सिवकाई । दीननना
थ मोहिदेहु बडाई । अस जब धनीनन्द बहु बार
न । विनय कीननिज वदन उचारन । तबनहि अ
हुथान असदेखी । नामदेव उरगुनन वसेखी । भग
वन भक्ति करन हठचाहू । भये करत कौतकम
नहाहू । तलमीदल इक लीन मंगाई । तापर ए

५३
भ.
१५८

146

मनाम सुखदाई । निजकर लिखो अर्थजग पाव
न । एक रुचिर रावरण सुहावन । भाखोवहुरि
मरम मृदु बोली । इहिसन देहु भक्त धन तोली
धनी सुनत मानस बिलखाई । जोरि जुगल कर
वि नय अलाई । काप्रभु कीन जाचना एहा । सेवित
हीनदास कछु रेहा । कृपानाथ उपहासन कीजै ।
जोमैदेहुं सुदित मनलीजै । सुनहो भक्त नतजहु से
देहा । मोरवचन उपहासनएहा । मे जोरई मोगा ।

भक्त तुमपाहीं । इहिसम सकल भूमि तलमाहीं ।
होहिं नकाहु विदत धन आना । धनिअस वचन
सुनत विसमाना । तलाधरत रावरण सुहावा ।
हमर ऊर कनक धनपावा । सोरठा । देखोजवहि
उठाय । भयो तलसिदल सो अधिक । तव तहि
लीन मंगाय । इत गौरव हमर तुला । ३१ । टीका ॥
ऐसे धनीके नम्र वचन सुनकर्के नामदेव कह
नेलगे किहे भक्त तुं सत्य कर्के जान मै तेरेपास

४२
भ०
१५८

धनलेनेकी इछासे नहीं आयाहूं मेरे मनको लोग भली प्रकार जानतेहैं जोमैनित्य संतोषमेंही मग न रहताहूं ईश्वरतो केवल तेरी भक्ति श्रवन करके च लाआयाहूं दरसन परसनके बिना मेरे हृदय मे और कुछ अभिलाषा नहींहै अबहेभक्त इहतेरा धनजो मै गृहण नहीं करताहूं तोमेरा अपराधहै तू दया करके क्षमाकर ऐसे नामदेवके वचन सुनकर धनीजोहै सो परम हरषके वशभया हू

१५८

आ महात्मसे धन्य धन्य उचारकर चरनोपर सीसधर
कर विनती करने लगा किहे कृपानिधान यद्य
पि मैंजानताहूं कि आप विरक्तहो किसी वस्तु
की इच्छानहीं रखतेहो तथापि दासका हितजा
नकर कृपाकरके कुछ लेलेवो और मेरे आवने
को सफलकरो मै आपके चरनोका दासहूं दया
करके नाथमेरी कुछ सेवाजोहै सो गृहण क
रलेवो और दीनको जगतमै वडाई देवो इस प

भ.
१५८

कार जब धीनीने नम्रवाणीसे बहुतवार कहा तब भगवानके भक्त नामदेव हृदयमें विचार करके भक्तीके दृढ करने वाला बड़ा अद्भुत कौतुक जो है सो करतेभये ततकालही एक तुलसीका पत्र मंगवायलिया तिसपर सरव जगतके पवित्र करनेवाला रामनाम जोहै सो आधाही एक रा अक्षर लिखकरकै धनीको कहनेलगे कि भक्तजो तेरे मनकी ऐसीही भावनाहै तो तू इस पत्रके।

१५८

साथ धन तोलकरके मेरेकोदेदे तबधनी रुन करके हृदय मे बडी लज्जामान कर कहनेलगा किहे भगवन आपने इह कैसी याचना करीहै क्यामे हमारा सेवक कुछधनसे हीनहूं हे कृ पानिधान अब मेरे को उपहास अर्थात हासी मत करिये मैजो देताहूं सो आनंदसे गृहणकर लीजिये तब नामदेव कहने लगे किहेभक्त त म संशय मतकरो इह मेरा वचन कुछ हासीन

५३
भ॰
१५९

हीहै मैने जो तुमसे मांगाहै इसके समान पृथ्वीतलपर और दूसरा धनकोई भी नहींहै ऐसे तिनका वचन सुनकर धनीने सोना अन्तर तुला जो तराजूहै तिसमे तुरतधरदिया और दूसरेपणे कुछ सोवर्न पायदिया तब तुलाको उठायकरके जोदेखने लगे तो तुलसीदल बहुत अधिक देखपड़ा तबतो धनीबड़े अचरजके वशमे याहुआ और दूसरा बड़ाभारी तराजू मंगायले

१५५

ताभया ।३। चौपाई । अस प्रकार जब नहि मन तो
ला । अर्थनाम गावरन अमोला । मणि मकतादि
हेम धनवारू । सवतेभयो नाम हरिभारू । नाम
देव तव वदन उचारा । सनहु वैस वर वचन ह
मारा । तमहू सनान दान व्रत करमा । होमय
ज्ञ तीरथ वरथ मा । जोतमहूं अवलग जगकी
ना । एक ओर सब धर हु प्रवीना । तव इहतल्प
तलसि दलहोई । आन उपाय भक्त नहिं कोई ।

सुनत बचन अमयनक महाना। जहिलग करम
धरम निजनाना। सादिर तलादीन धरिनेहू। भये
नगम नाम सम पहू। तव कैातुक अस हगन नि
हारी। धनि जत नगर लोग नरनारी। सव नि
ज निज मानस विस माये। नाम प्रभाव
देखि हरषाये। नामदेव तवगिरा अलाई
इहितें मै नलेहुं कछु भाई। अतलत राम
नाम धन चारू। विदत जास ॥

महिमा संसारू। सोपैं सोउ भक्त गुणखानी। को
जग सरस सोर धनमाना। राम नाम विनु सक
लि भाई। निरधन धनी ज्ञान समुदाई। अस मु
नि साधु संधुकहि रागे। बहु विधि वदन प्रेम
मनलागे। रामनाम धनदेखि प्रभाऊ। विपुल लो
ग मन मोद अघाऊ। दलन दोष दारद दुखमारी
रामनाम लीन्हो उरधारी। अस प्रकार हरिनाम
सुहावा। जोकर विदत महातम गावा। परम पु

नीन पुराणन माहीं। सोकछु कथन कियो कि
मिज्ञांही। पुनि संक्षपन यथामति मोरी। ईहांको
न वरनन कछु थोरी। दोहा। जास उचारणतें भयो
वारण विदत उद्धार। अरु शवरी गनकादि भे वि
कट सिंधु भवपार। पतित अजामलसे तरे वाल
मीक पथ लीन। तेरेध्यान केते पतित जिनसह
मरण हरिकीन।३२। टीका। इस प्रकार जव ह
टीका आधानाम सो अमोलवा अलर निसवडे त

राजेमैं तोला तो अनेक मणीमकना कंचिन भू
षण मद्रा इत्यादि धनजोथा सो तिस सबतें हरी
का नाम भारी होतामया तब नामदेव कहने
लगे कि है वैस भक्त अबतम अपना सनान
दान व्रत होम यज्ञ तीर्थ कीर्तन श्रवण कर्म
धर्म इत्यादि जोजो किये हैं सो सब तुलाके एक
पासे धरदेवो इसतें सो आधे रामनामवाला
तुलसीकापत्र जोहै सो बराबर हो जावेगा इस

५२
भ०
१५२

तें बिना इस बारताका और कोई यतन नहींहै ये
से स्रवन करके तिस धनीने जहांलग अपने कि
ये हूये कर्म और धर्मथे सो सब तलाके एक
पासे राखकर जो देखनेलगा तो फिर रामना
मके साथ प्रेरानहीं होताभया तब इस अदभ
त कौतकको देखकर धनीके सहित नगरके
सबलोग स्त्री पुरष जोथे सो अपने अपने
हृदयमे अचरज भये हूये नाम के प्रभाव को

152

देखकर परम हरषको प्राप्तहो जोनभये तब

नामदेव कहनेलगे किहेभाई मे इसीने किसी

का कछुग्रहणहीं क्योंकि इह अनतुलत रामना

नहींकरता

मकाधन कि जिसकी महिमा सब संसारमे वि

दतहै सो गुरोंकादियाहू आमेरे पासहै जोते मे

रे समान दूसरा जगत मे कौन धनीहै हेभाई

रामनामके विना संसार मे जोधनी कहावतेहैं

सोतो सब निरधनहीं जान पूरा सोई धनीहै जि

सके पास अन्तकालनेकिजो ... तोला नहींजाता है
सो रामनामका धनहै इसप्रकार सनकर्के सव
लोग साधु साधु उचार कर सावसे अनेक शला
घा और वडाई करने लगे वहुत लोगोंने सर्व
दोष डुख और दारिद्रोंके नास करने वाला भेग
लोंमल रामनाम जोहै सो तहांही हृदय मे धार
न करलिया नाभादासजी कहतेहैं किहे संतो
इस प्रकार इह परम पवित्र रामनाम कि जिसको

पुराणोंने विसतारपूर्वक अनंतहीं महिमागायन
करीहै मैरसे कैसे कहीजातीहै तथापि ईहां मं
दमतीके अनुसार कुछ संक्षेप करके कथन
कर देईहै इह भगवानका नाम कैसा भीहै कि
जिसके उच्चारणतें वारण जो हसतीहै तिसकाउ
द्धार होताभया और शावरी भीलनी गनकावे
स्या इत्यादिजोहैं सो इस महा कठिन संसार समु
द्रसे सहजेंही पारहोयगई और देखिये कि अजा

८३
भ०
१५४

मिल जैसे महा पापी ओर वालमीक जैसे मार्ग
लूटनेवाले ओर मानुष्योंका घानकर्ने वाले
सुंदरगती को प्रापत होयगयेहैं इनतें लेकर्के
ओर भी अनेकपापी जन कि जिनोने भगवा
न कृपानिधानका स्मरण कियाहे तिनस
बका उदार होय गयाहे । २२। इतिश्रीभक्त वि
नोद ग्रंथे भगवदभक्ती महात्मे भाषाटीका
यो नामदेव चरित्र वरणने नाम सर्गः ॥

मीहांसिंहकृत

१५४

१५५

से प्रेम रूपी जल वहा चला जाता है सो अंसलाका मांस
हाथोंमे लिये हुये आनंदमे मगन होयकर भगवानके
सनमुख स्थित होयरहा है इसप्रकार तिसको सबल
और कपटसे रहित जानकर दीन बंधु अनंत प्रसन्न हो
यगये और तिसका अनन्य प्रेम लखकर कि जिसको
दूसरेका भरोसानहीं भगवान तातनहीं प्रेमके वश हो
यकरनेत्रोंमे प्रेम जलहीं भरेहुये आनंदसे जिसप्रकार
कहनेलगे सो आगे कथन कियाजाता है ३।।। चौपाई

२२ भ० ८८

मैनिश्चय मानस लखिपाया। तुम मम भक्त वचन
मनकाया। सत्यप्रेम कीन्यो मोहिमाहीं। तुमसमा
न प्रीय हमार नाहीं। विष आमिष नहिं भोगन जो
गू। सुजनीय जानत सब लोगू। यामे कछु नहीं।
दोष तुमारा। आमिष पिसाच भोग संसारा। तुव
तन पाप परै नहीपेषा। जप्योमोर सदा नाम व
सेषा। कियो कपट गत मम पद नेहू। साधुन री
ति निरंतर एहू। लखि अनन्य तुव प्रेम नवीना।

३२

मैनिज जिय तुमरे वस कीना। तुमरी प्रीति
प्रतीति निहारी। प्रिय सेवक निज लियो वि
चारी। प्रीति विनय कृत प्रेत भुवालैं। जानिम
की हैतक नेदलालैं। सहिनसके उठि व्याकु
लधाई। भेटिलिये दुत भुजाभराई। लिपटि
गये कछु भेदन जाना। कोकपाल जड़नाथ
समाना। दीनवंधु दीननहित कारी। दीनद
यानिध दीन उवारी। दोहा। प्रभुतन परसत

३०

२२ भ॰ ८९

89

प्रेतको मंद अपावनरूप। कोटि निसाकर दि
पत मन दिपत कोटि दिनभूप।२२। टीका। भ
गवान कहते हैं कि मैंने निश्चय करके अपने
मनमे जान लिया है जो तुम मन वचन का
या करके मेरे दृढ़ भक्त हो और मेरेमे तुम
ने सत्य प्रेम किया है अब तुमारे समान मेरे को
और कोई प्यारा नहीं है हे भक्त इह ब्राह्मण।
का मांस जो है सो भोगने के योग्य नहीं है आ

लाए जगतमै भजने लायक होताहै सबलो
ग जानतेहैं परंतु इसमै तुमारा कुछ दोषन
हीं पिसाच जातीका मांसही भोगहै तेरेशरी
रमै तो पापदेखेंही पड़ना क्योंकि तैने निरंतर
करके मेरे नामका जपयाहै और मेरे चरनो
मै निसकपट प्रेम कियाहै साधुजनोकी री
तीजोहै सो पहीहोतीहै हेभक्त मै तुमारा प्रे
मा दृढ़ और पवित्र प्रेमदेखकर अपना ह

न

दय तुमारे वशकर दियाहै। और तुमारी प्र
तीती और प्रीती विचारकर तुमको मै अप
ना प्यारा और दृढ सेवक जानलियाहै ऐसे
कृपानिधान भगवान प्रेतराज की भक्ती प्रीती
और विनती को तिसकी भक्तीका कारन जान
कर सहार नहीसके तत काल व्याकुल भयेहु
ये उठकर और धाय कर भुजाभरतेहूं लपट
कर हृदयसे लगाय लेतेभये प्रेमके वशभये

३५

हुये भगवान ऊछभी शंका नहीं करतेभये देखा जड़नाथके समान कौनदीन वंधु और दीनहितकारीहै इसप्रकार मंद और अपावन रूप प्रेतभगवानके शरीरकोपावता हुआ कोटि चंद्रमा और कोटही सूरजके समान प्रभा देताभया।१२॥ चौपाई। ललित वदन अंबुक जलजाता। भुज आजान स्याम वनगाता। कचकें चितमन्न भंग समाज। उर

२२
भ
५१

91

विसाल वनमाल विराजे। पगमंजीर पीन।
तनचीरा। माथ मुकट मंडित मणिहीरा।
सोभित चारि चिन्ह मन लोभा। कहिन जा
य कछु अतुलित सोभा। वार वार मिलि ता
हि मुरारी। वैठे आसन बहुरि सुखारी। ज्ञा
न मान विज्ञान सुजाना। भक्ति मान रतिमा
न महाना। रूपमान सव शास्त्र प्रवीना।
कृपा नकेत प्रेत कहूं कीना॥

जोगि सिद्ध तापस मुनि ज्ञानी। करहिं जत
न हठ अनेक अमानी। ते अधिकार लेत न
हिं ऐसो। दीन्हो कुमत प्रेत कहं जैसो। कोह
सुर असदीन दयाला। प्रीति करत करि देत
निहाला। आन उदार कौन अस अहैं। सरन
भवन संसार छुडैहैं। विदत भनत सुख वे
द पुराना। इनहीं कर तावन अगवाना। दो
हा। इह धरनी हरयेन सुर धरति हरन उघ

२२
भ
५२

भार। इह धारन गिरवर म्हनष वारन विपति निवार। २२। टीका। फिरतिसकी कैसी शोभा कि कमलवन मावे और कमलोंवन हीं मनोहर नेत्र बडीलेबी भुजे स्याम मेघवन शरीर की उपमा और स्यामही कुंडलो वाले सुंदर केस मानो भ्रमरयोंके समाजको लज्जादेतेहैं हृदय विशाल तिस पर शोभा देतीहै तुलसीकीमाला पाउंमे सजीहुई।

मंजीर तैसेही मनको हरने वाले पीतवस्त्र
माथेपर मुक्ता मणियों करकें जटित मोर
मुकट संख चक्र गदा पद्म इहथारे हुये
हैं जिस [illegible] ने शास्त्र इसप्रकार भगवान कृपानिधानके प्रसाद
से नि[illegible]ल की कुछ शोभा कथननहीं की
जाती वार वार तिसभक्त पिसाचको मि
लकर फिर आनंद पूर्वक भगवान अपनेहीं आस
नपर आय करकें विराजमान होय जाते

भये और तिस पिसाचको भक्तहितकारी भग
वानने अपनी कृपाकी दृष्टीसे ज्ञान विज्ञा
नके सहित भक्तीमान प्रीतीमान रूपमा
न और विद्यामान भलीप्रकार सब शास्त्र
मे प्रवीन करदिया देखिये योगी सिद्ध तप
स्वी मुनी और ज्ञानी जोहैं सो अनेक जतन
हठ और साधन करतेहैं परंतु ऐसे अधि
कार को नहीं पावते कि जो कृष्णपरमात्माने

अनुग्रह करके इसप्रेन राजको दियाहै ऐसे प
भुसमान ओर हमरा कौन दीन हितकारीहै
किजो जनकी प्रीती देखकर निहालकरदेता
है और ऐसा कौन उदारहै किजो दासको श
रणभये जानकर संसारके भयसे छुडाय देता
है इनके समान यही भगवानहैं इसीने इनको
वेद पुरानोने पतित उधारन कथनकियाहै
अर्थात पापियोंके उद्धार करने को यही साम

११
भ०
५४

94

यहैं और पुनी गौ ब्राह्मण पृथवी की रक्षा क
रने वाले पुनी गोवरधन परवत को नखप
र धारने हारे और राम जो तेइयेकायसाहू
आ हसनीहै तिसका कलेश और विपती ।
हरने वाले हैं । ११ । चौपाई । प्रेत पारषद रूपध
राये । ठाढ़ भये मन मोद जनाये । तब मु
सकाय भन्यो भगवाना । सुनहू वचन मम
सुमति निधाना । जो लों वसहिं नाक सुरराई ।

तोलो नहि समान तवनाई। सरउर वसहु वि
लासन संगा। होहिंन तव समाज सावभंगा
जव इहमरहिं अमर न्पताहो। होहुनमहुं स
व अमरन नाहो। भोगि अनन्य भोगसावभा
वे। पुनिअैहौ तव लोक हमारे। निवसहीं ज
हांमोर श्रीपदासा। ममअनरूप सरूप प्रका
सा। तंहु वैकुंठ धाम तव संगा। सदा मोर से
नगि अभंगा। मागहु अवर जवन मनमाहीं

२१
भं॰
५५

तोहि अदेव कछु सजन नाहीं। चेटाकरन स

नत प्रभु वानी। अतिसनेह दाया रस सानी। है

प्रसन्न मन पानन जोरी। नाय सीस पद विन

य अथोरी। बोले पादीन नाथ भगवाना। अब

वाको कछु रह्यो न आना। मागव जोन पदम

पददासा। प्रभु दरसन सब पूरन आसा। पैसा

पै जो भगवन नेहू। तो पुनि पुनि मांगहूं वर

एहू। दीन नाथ तव भक्ति सुहाई। मम उर रह

95

५५

हिं निरंतर छाई। छुटिहिं न चरन कं जलवषी।
नी। वाफहिं नित नव विमल प्रतीती। ज्ञानवि
नय दीन नहित कारी। जो इह कथा हमार न
मारी। पढै सुनै श्रद्धा सरसाई। नहि निज विम
ल भक्ति जडवाई। दीजै दीन नाथ इव छीजै।
निज पद परम अमर करि लीजै। रहै न कलिम
ल नास सरीरा। छूटहिं जनम मरन सब पीरा।
दोहा। सुनिताकर श्रमकथन कल कृपासिंधु

भगवान। एव मन्त्र निजवदन भनि भये प्रस
न्न महान।२४। टीका। तब प्रेतजोहै सो पारष
द रूप धारकर भगवान के मनमावे स्थित
होय जाताभया तिसको देखकर दीनबंधु क
हनेलगे हेसमती प्रधान मेरावचन सुन
कि जैसे जबलग स्वर्गलोकमै इंद्र राज समाज
भोगताहै तैसेहीं तब लग तू तहां जाय कर
देव लोकका राज जोहै सो आनंद ।

सर्वकभोग तेरा सुख विलास कवी भंगना।
होगा। जब इह देवताउं का राजा इंद्र स्वर्गको
प्रापत होवे तब तू मेरे वचनसे तहांजाय क
र देवताउंका राजा बनजा और तिस देवलो
कके अनंत सुख भोगाकर फिर आनंदसे मे
रे लोक मे आय प्रापतहो कि जहां मेरे पर
मप्यारे भक्त मेरे समानही सुंदर रूपधारे
हूये वास करते हैं तहां वैकुंठ धाममे तेरे

२२ भ० ५८

साथ मेरा सदेवहीं अभंग सत संग और मि
लाप रहेगा अब जो कुछ मनकी और रुची
है तो और मांगलेवो मैंतमको देनेके लिये स
मर्थहूं इसप्रकार परम सनेह और कृपारस
कीभीगीहुई भगवान कीवानी सुनकर चेटा
करन अनसे प्रसन्न होकर और दोनो हाथ ।
जोडकर बार बार चरनोपर सीसनाय कर
बिनती करनेलगा कि हेदीन पाल और हे

दीन हितकारी भगवान अवलोकन वाकीन
हींरहा जो मैमांगूं आपके दरसनतें संपूर्णम
नके अर्थ सिद्ध होयगयेहैं और कामनासव
पूर्ण होयगईहै परंतुएक प्रार्थनाहै कि जो मे
रेपर दीन बंधु और कृपासिंधुका सनेह और
दयाकी दृष्टीहै तोवार वार इहवर मांगताहूं
किहे भक्त सनेही इह तुमारी भक्तीजोहै सो
निरंतरकरके मेरे हृदयमै छायनरहै और

स्व
भ॰
१८

तुमारे चरन कमलोंकी प्रीतीनाछुटै तिन
नकीनहीं विस्वास वढता जावै ओर हे दीन
हितकारी एक मेरी ओर भी प्रार्थनाहै कि
जो इह मेरी ओर तुम्हारी पवित्र गाथाहै इस
को जोकोई श्रद्धासे प्रीतीपूर्वक पढै अथवा
श्रवणकरै तिसको तुम हेदीनानाथ अपने
चरनकी निर्मल भक्तीजोहै सोदेवो ओर ति
सके सवदोष उाव हरकर्कै अपनेहीं चरन

कमलोंका भ्रमराविनाय गाबो कलीकाल।
की मलजोहै सो तिसके शरीरमैनारहै और
जनम मरनकी पीडाभी सब छूटजावै इस
प्रकार प्रेत राजकी प्रार्थना सुनकर भगवा
न कृपानिधान अतिसे प्रसन्न होयकर एव
मस्तु शावदजोहै सो कहते भये कि हेभक्त
ऐसेहीं होगा।१४। चौपाई। सोउज वचन प्रे
न करतोंहो। इत जियाय कौतुक जइनाहो

२२
भ
५५
99

दैस्त्रपनो प्रभु रूप सुहावा । परमधाम निज
दीन पठावा । सुरमनि सकल चरित प्रभ
देखी । मानत भये प्रमोद वसेखी । जैमकुंद
जैजै जदुराई । कहिनभ सुरन सुमन झरि
लाई । सवकर देषत सोमति धामा । येटाक
रन घरि उरकामा । चढ़ि विमान सुमरत जदु
राई । गयोमुदित सुरलोक सिधाई । नहिंअनेन भो
गसुखभोगी । वहुरि पाय गति दुरलभ जोगी

५८

हरि समीप वैकुंठ अगारा। बसेजाय उरमति उरधारा। दोहा। देखहु दीनदयाल जग कौन सरिस जदुराय। जहि अस पतित पिसाचकहं दीन्हो मुक्तिबजाय। अस इह चंदा करनकी। कथा श्रवण सावदान। पढै सुनै जो प्रीतजु न पावै पद निरवान।२५। टीका। औेर जिस ब्रह्मणका मास पिसाच बधकरके खायाथा तिस ब्रह्मणको भगवान नरत कैानकसे जि

२२ भे॰

बायकर और अपना अदभुत रूपदेकर बैकुं
ठ धामको पठाय देतेभये तब इस चरित्रको
देवता और मुनी सब देखकर बडे आनंदको
प्रापत होयगये और देवताउंने जैजै शबद
उचारकर आकाससे फूलोंकी बरषा करदई
तब चेटा करनपिसाच जोहे सो सबके देख
ते सर्वकामना करके हर्षितभया हुआ सुंदर
विमानपर चढकर जगन्नाथ भगवान कोस

मरता हुआ देवलोक को चला जाताभया ।
और वहां अनंतहीं भोग सुखभोगाकर फिर
जोगी जनोको दुर्लभ गतीजोहै सो पायक
र भगवानके सामीप वैकुंठ धाममें जाय नि
वास करता भया । नाभादासजी कहतेहैं कि
हे संतभक्तो देखिये जगन्नाथभगवान के स
मान संसारमै कौन दीन पाल और दीनहि
तकारीहै कि जिन्होंने ऐसे महा पापी और

२२ अथम पिसाचको वजाय कर मभी पदार्थ दे
भ॰ दिया और लोक परलोकमें धन्य धन्य करदि
१०१ याहै इसप्रकार इह चेटाकरनकी संदर औ
र सुखदायक गाथाजोहै इसकोजो कोई श्र
द्धापूर्वक प्रीती भक्तीसे पढैगा अथवा श्रव
ण करैगा सो जडनाथ भगवानकी कृपासे
अपने मन वांछित फलको प्राप्त करैगा ।
और भगवानके चरन कमलोंकी प्रीतीभ ।

22

११ भैं॰ क्ती वाला होकर भगवानके धामको हीं

१०२ चला जावेगा ॥ इतिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भ

102 गवद् भक्ती महातमें भाषाटीकायां चंदा । मिहरसिंहकृत

करन् चरित वरणनं नाम सरगः ॥

स्यामसरोज चरन उरधारी। निज निज गये ह
रष सरसाते। इत भगवान भक्त सुखदाते।
रंगनाथ बहु रंग रंगीले। हरन कोटि छवि
मदन छबीले। गोटे सहित सुखद रमण
वन। करि विहार घट ऋतु मन भावन। नि
वसि रंगपुर दीन उधारी। तरे अनंत जीव
संसारी। तब कछु समय पाय अभिरामा।
गोटेरूप सील छवि धामा। करन रंगनाथ

रा०
भे०
१२१

सिवकाई। गई रंगपति अंग समाई। अस प्र
कार इह चरित नवीना। मै संछपत कथन
कछु कीना। गोदे सरस भक्त संसारा। भयो
न वयो रंग पति प्यारा। जिहि हित दीननाथ
कलिकाला। धरि प्रगट निज रूप रसाला
सुर समाज जुत भक्त सनेहू। धार्यो चरन
विस्व विनगेहू। लोकरीति जुत कीन विवा
हू। देखे विदत देव सब काहू। जनि अचरज

१२१

कछु लछहनभाई। भक्तन हेत भक्त सावदाई
कान करहिं कौनक संसारा। दीन नायक
हे भक्त पयारा। भक्तहेत जानत जगसारी।
सारहल नरवेन मरारी। धारो मछ कछ
बाराह। भक्त हेत वपुसर नरनाह। वामन
राम कृस संसारा। भक्तन हेत लीन अवता
रा। नरसि भक्त हित सामल साह। वेनेना
थ जानत सवकाह। तलसिदास हित वाल

२ भ० १२२

कनीको। लीन्योचित्र छूट कलटीको। होत

रूप चुत स्हर निवारे। नाना वपुष नाथ निज

धारे। मदना हेनविस्व वहूरंगा। रहेसि नल

न अमृत्व करसंगा। भक्त प्रकाल हेन्त भगवा

ना। वने पथक सरवस्व लटाना। मीरांके वनि

गिर धर नागर। कीन लास त्रैभवन उजागर

दोहा। अस प्रकार करणायतन भक्त हेनतंत

सार। धरहि सुभेत्व वसेत्व कल ॥

करहिं अनेक विहार ।२८। टीका। तहां दीनवं
धु भगवानसें सब देवता मुनी ऋषी विदाय
लेकर और वार वार जैजैकार बुलाय कर
साम कमलवत जो भगवानके चरनहैं सो
ई हृदयमै धार कर आनंद पूर्वक अपने अ
पने आश्रमको चलेजाते भये और ईहां भक्त
भाव दायक रंगभगवान कि जो अपनी छ
वीसे कोटि काम देवकी छबीको लजादेतेहैं

र॰ भ॰ १२२

गोदेके सहित षट ऋतका आनंद भोगते औ
र रंग पुरमे वास करते संसारके अनेनहीं जी
वोंको तारदेते भये तब कुछ काल पायकर
रूपसील और छवीकी निधी गोदे जोथी सो
रंगभगवानको सेवती सेवती कौनकसे रंग
पतीके अंगमेहीं समाय जातीभई इस प्रका
र इह चरित्र जोहै सो कुछसंक्षेप करके गाय
न कियागयाहै गोदेके समान संसारमे रंग

१२२

123

भगवानका प्याराभक्त नाकोईहै नाहोवेगा।
कि जिसके वासते कलीकालमै भगवान ग्र
पना प्रसन्न मनोहर रूप धार कर सब देव
ताउंके समाजके सहित विस्त्रचित्र जीके घ
रमै चरन धारेहैं ग्रौर लोक रीतके ग्रनुसार
संदर विवाह जोहै सो किया सब देवता ग्रौ
र मुनी ऋषी ग्रैसे भगवानके ग्रदभुत रू
पको प्रसन्ननेत्र भर कर देखतेभये इसवा

२° भं १२५

नीमे कुछ आचर्ज नहीं जानना चाहिये क्योंकि भक्तोंके हेत भगवान संसारमे क्या कौतक नहीं करतेहैं दीनबंधुको जगतमे भक्तही प्यारा है देखो कि भक्तके वासते सब लोग जानतेहैं भगवानने नारसिंहरूप धारन कियाहै और भक्तोंके वासते ही मछ कछ वाराह बामन और परसराम इत्यादी रूप धारन कियेहैं तेही नरसी भक्तके निमित्त स्यामलसाह होते

१२५

भये ओैर तुलसीदासजीके वास्ते बडे कोम
ल बालक बनकर चित्र कूटमे तिलक लेते
भये कूयेमे गिरते हूये सूरदास जीको निवा
रण किया ओैर सदना भक्तके हेत भक्ति
तकारी भगवान मांसके साथ तुलते रहेहैं
प्रकालभक्तके वास्ते दीनवेष पथिक बन
कर तिसके हाथ अपना सरबस्व लुटाय दे
तेभये ओैर मीरां बाईके गिरधर नागर पती

२०
भ०
१२५

होकर जिसको तीनलोकमै उजागर कर
कर दियाहै इस प्रकार भगवान कृपानि
धान भक्तोंके वासते संसार मै नानाभेष।
धारकर अनेक कौतक और विहार करते
रहेहैं।२६। इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे भग
वदभक्ती महात्म्ये भाषा टीकायां गोदे च
रित वरणनं नाम सर्गः ॥

मिहोसिंहकृत

125

के वश होगये हूयेथे केवल एकवड़भ्रा
ता और भ्राताकी स्त्री साथथी आप भक्त
हीसे हीन और विरक्तथा एकदिन सो
जड़नाथका सेवक कहीं गांउं से फिरता फि
रता घरमै आयकर अपनी भौजाई से कहू
नेलगा किहे माई मेरेको शीघ्र जल पिला
उ जोमै त्रिखा करके व्याकुल होरहाहूं सो
तिस समय किसी काजमे जो लगीहूई थी

२२
भ॰
४

क्रोध करके बड़ी कठोर बानीसे बोलतीभई कि
अरे मूढ़ कहो तो कौन कार्ज सवारकर आया
है जिससै बार बार जलही जल पुकारता है।
कि अथवा गाड़ी हांकता हुआ बड़ा श्रमपाय
करके आयाहै अहो मंद तेरेको लज्जाभी नही
आवती बड़ाही ढीठहै जो खान पानके सम
य बाहरसे आय जाताहै फिरतो अथम सब
भी नहीं दिखावताहै हेजड़ दाखतो विधाता

४

ने मेरेको हाथ पाउंदिये हूये हैं आपको

नहीं जल लेलेना हथा मेरेको ही श्रम दे

नाहैं जावो दारिद्री चलेजावो अब मेरेको

अविकाश नहींहै अर्थात मै कारजमे ल

गीहूं इस प्रकार वज्रके समान तिसके व

चन सुनकर नरसीका मरण की इच्छा हो

जातीभई क्यों कि इह कठोर वचन जोहैं

सो हालाहल जो विषहै तिससे भी दसगु

२२
भे०
५

ण पापिहोते हैं विषजोहै सो मारनहीं देता
है परंतु इह कठोर वचन जो हैं सो राचौदि
न हृदय को जलावते रहतेहैं शक्ती जो वर
छी सूल जो त्रिसूल सरजोबाण खड्गजो
तलवार इत्यादि शस्त्रों को पुरुष हठ करके
सहारनहीं सकता है परंतु इह वचन
का बाण जो महां दुखदायक है सो
जगत मे सहारा नहीं जाता है। ८॥

५

चौपाई। अस चिंतत जीय भक्त सुजाना। च
लो धीर गत डरिवत महाना। तीन कोस
पुर वहिर सुहाये। गोप नाथ जगदीस्वर
गाये। अभय वरद दीनन हितकारी। आ
ये तहं भक्त व्रत धारी। करि प्रणाम अस
न हष्ठ लीना। तजहूं प्राण मानस प्रणकी
ना। सपत दिवस अस नास सराना। कसे
न भक्त अन्नजल पाना। ससोन जवहिं ज

२२ भ० ६

नन नवकीना। गौरव शिला करन गहिली
ना। सिव पैं राखि सीस इजनीके। भोजी भ
नन समारि निज जीके। लयपा सीस जव
शिला प्रहारन। महादेव नवभक्त उवारन
विप्ररूप धृत रुचिर नवीना। तास निवारि
प्रबोधन कीना। प्रातमज्ञान करहु कसमूढा
इहतो विदत पाप जग गूढा। मोहि प्रसन्न।
जिय जानि अभेवा। अववर मांग मांग महिदेवा

नरसी सनत अलोकि करचना। विप्र सरू
प हृषभि धुज वचना। अति प्रसन्न मानस
अनुरागा। नेत्र वचन सव भाषण लागा।
जो प्रसन्न नव जन अनुगामी। मोरेदेन चा
हु वरस्वामी। तोनिज प्रीधे वस्त मनमाना
करहु दान मोहि कृपा निधाना। नव शोक
र निज हृदय विचारा। अस प्रीधे वस्त कु
वन संसारा। जो इहि देत वचन निजकाहीं

११
भ
८

करहूं रुचिर कर मंत्रति माहीं । सबतें प्रिय
क विरव मोहि प्यारे । कुलदेव सजन हित
कारी । सो अस देहुं कवन विधि पहीं । हृद
यगुनत हर दीन सनेही । बोले वदन वचन
डव मोचन । मूंदहु वेग भक्त जगलोचन ।
मैवर देहुं उचित जस तोसा । नरसी सुनत
पलक हग जोसा । नव कौतक मथुरा हर
लाये । करि विलास जनु स्वपन सहाये । ८

तहां शंभ ग्रीय क्रल रसीला। निरत रास
मंडिल कल लीला। देखि कहत हरभक्त
सनेही। ज्ञीय समाज एव सन कसपही।
दोहा। अस विचारि तहि वृषभि धज प्रस
दाभेष वनाय। कौतक कलित प्रदीपका
करदै चले लिवाय। २। टीका। नव ऐसे वि
चार कर व्याकुल और उत्कंठो भया हू आ
नरसी तहांसे चल पउना भया नगरसे।

२२
भ०
८

बाहर तीन कोस पर भक्त जनों को अभय वर देने वाले गोपनाथ भगवान विराजे हुयेथे तिनको शरणको चलाआया तहां तिस महादेव जीको प्रणाम करके और ह ढ आसन लगाय करके ऐसाप्रण करले ताभया कि अब प्राणों को त्याग देताहूं इस प्रकार तिसको सातदिन वतीत होय गये कछु अन्न जल खानपान नहीं किया जब

ऐसे भी नहीं मरा तब हाथमें एक वज्रमा
री शिला लेकर और महादेव की पिंडी प
र अपना सीस रखकर भजाई के कठोर
वचन हृदय में स्मरण करकें सिरको जो
फोड़ने लगा तो ततकाल ही भक्तोंका क
लेश हरने वाले महादेव भगवान ज्वल
ाका रूप धारकर तिसको निवारण क
रके प्रबोध करने लगे कि अरे मूढ़ कों

आत्मघात करताहैं इह अपने आपका घा
त करना सो बडा भारी पापहै अबते मेरे
को प्रसन्न जानकर जो मन को भावताहै सो
वरमांग इसप्रकार विप्र स्वरूप शंकर देव
का सुंदर वचन सुनकर नरसीजोहै सो हृ
दयमैं परम हरष मानकर और दीन होय
करके विनती करने लगा कहताहै कि हे
दीनबंधु जोतुम मेरे पर प्रसन्न भयेहो और

मेरको वर देना चहतेहो तोहे कृपानिधान अब कृपा करके जो वस्तु तुमको संसार मे परम प्यारी है मेरको सोई दान करदेवो अर्थात देदेवो तब शंकर मन करके हृद य मे विचार करने लगे कि ऐसी प्यारी व स्तु संसारमे कौनहै जोमै इसको देकरके अपने वचन को सफल करूं सबते अधि क तो संसारमे मेरको दोनोके हितकारी।

हासदेव ही प्यारे हैं सो इसको कैसे देऊं इस

प्रकार विचार कर शंकर भगवान परमस

खदायक वचन जो है सो कहने लगे कि हे

भक्त अब तुम शीघ्र अपने नेत्र मूंदलेवो

मैं तेरे को जो उचित वर है सो देता हूं ऐसे म

हादेवका वचन सुनकर नरसी तत्काल

दोनो नेत्र मूंदलेता भया तब शंकर प्रभु सा

नो स्वपनेका विलास करके तिसको तुरत ।

१०

10

उको चला जाता भया।१। चौपाई। मारग मि
लेया नाहि जन काहू। सो विलोकि संतन
उतसाहू। प्रेरत हृदय देव भगवाना। नरसी
हृदय भक्त जीय जाना। अस विचार करि
मानस माही। तास दीन निज सुता विवाही
तव हरि भक्त दार वन सोई। लगेया नकेन
वमन उखोलोई। अस प्रकार नाकर मन
होहू। उपजे सदन सुता सुत चाहू। भक्तके

२२
भ०
१८

टंच निरन नव भयऊ। दिन दिन अधिक अ
धिक सुख लयऊ। सेवन अनाथि संत अनुरा
गा। कमल सरोज चरन मन लागा। किंकरा
हि कलवाद वनाई। निरतन कमल विमल
गुण गाई। देखि जाति जन हेष प्रका
सा॥ कौन वहिर निज पंकति नासा॥
यद्यपि दीन अधम अस दासू। तदपि
नकौन भक्त कछु रोसू॥ कमल सुमरण।

१८

भजन इहिभांती। तन पर रहत भक्त रत घां
नी। इष्ट लोक नहीं आवत नेरे। सोऊ न
जात सदन तिन केरे। अस प्रकार कछु स
मय बिहावा। तब इक गृहस्थि हरष उरछा
वा। चलन लाग द्वारा वति काही। आवाध
मत ग्राम नहिमाही। लोगन सन असता
स बखाना। मैचाहु द्वारा वति जाना। मोपे
देसा द्रव्य अधिकाई। सन्यो परत लंविक म

ग भाई। काहू नगार नगर धनिसाहू। इह
विन देहुं सकल निनताहू। नहितें पायपत्र
सावदाई। हारावती लेहु धन जाई। टोहा
ते धूरत सुनि कथन नहि कपट कूट सर
मान। बोले नरसी भक्त इक ईहां धनक घ्र
वदान।३। टीका। तव नरसी भक्तको मार्ग
मै जातेहूये कोई एकनातीजन मिल जाताभया
सो कूलभगवानका प्रेरन कियाहूआ नरसीकोपर
मभक्त

१८

और भगवानका प्यारा जान कर बडे आनंदसे
तिसको अपनी पुत्री विवाह देता भया तब
सो भक्त स्त्री के सहित होकर सुख पूर्वक
अपने घरमे वास करने लगा इस प्रकार ति
सके घरमे एक पुत्री और एक पुत्र उतपन्न
होताभया और भक्तजो है सो कुटंबमे लीन
भया हुआ दिन दिन अधिक तें अधिक सु
खको प्रापत होने लगा और रात्री दिन अ

तिथी संतोंकी सेवा करकर हंस भगवान के
चरन कमलों की प्रीती मेंही लीन रहता खंज
री खडताल आदिबाज जो हैं सो बजाय कर
हंस भगवान के आगे नृत्य और हंस के ही
निरमल गुण सदैव गावता रहता नव इस प्र
कार तिसको नाती जाती के लोगोंने देख क
र द्वेष भाव करके अपनी पंक्तीसे बाहिर कर
दिया तथापि साधु स्वभाव और क्षमा रूप नर

सी हृदय मै कुछ क्रोध नहीं करता भया ।
शांती रूप होय कर रात्रीदिन हरि भगवान
ताके भजन और समरण मै ही लीन रहता
दुष्ट लोग जो हैं सो कोई पास नहीं आवते
और सोभी तिन के घर नहीं जाता इस प्र
कार जब कुछ समय वतीत होयगया त
व एक कोई गृहस्थी पुरष बडे हरष औ
र आनंदसे हरिका दरसने को जानेलगा

२२
भ०
२०

दैव इच्छासे भ्रमता भ्रमता किसी ग्राममैं आ
य गया और वे लोगोंसे पूछने लगा कि भा
ई मै श्रीद्वारिकाको जाने वालाहूं और मेरेपा
स इह धनहै सुनताहूं कि रस्तेमें लूटिक
अर्थात लूटनेवाले लूट लेतेहैं तांते तुमारे
नगरमैं जो कोई साहूकार धनीहै सो बताओ
जोमैं उसके पास इह धन राखकर द्वारिका
की हुंडीलेलं और तहां जाय कर अपनाधन

२०

20

पाय लेऊं सोधूरत अधम तिस याचूका कथ
न सुनकर कपटसे कहने लगे किहो भाई
ईहां एक नरसी नाम करके वडा धनी और व
साहूकार प्रसिद्ध है सो तुमारे मनोर्थ को स
फल करेगा। १। चौपाई। जाहु पथिकता कर
तुम धामा। सो फुर करहिं तोर सबकामा।
तेसुकि तन अस चल्या सिधारी। आवा सदन
भक्त व्रत धारी। करनभेट अस वदन उचारा

२२
भ०
२१

21

इहयतन लेहु भक्त तव साथा। द्वारावति पैं धन
क सुहाई। मोरे देहु पत्र लिखि भाई। तहां वि
लंब विगत मै जाई। लेहु रुचिर धन आप
न पाई। नरसी सुनत कथन अस तासा।
लाखौ कीन उरजन कछु हासा। अब इहि
कर फल पावन जोगू। जो इह कीन कपट उ
र लोगू। यद्यपि आगम असंभव जाना। तद्यपि स
मरि हृलभगवाना। करहु यतन कछु हृदयविचारी।

कहिस तासु अस वदन उचारी। केन कवित
नव देहु दिखाई। मै अव लिखहुं पत्र सुखदा
ई। नव नहि गनत सपत शत दीन्हो। मुद्रा
चाहु भक्त वर लीन्हो। स्यामल साहु ओर ह
रषाई। भक्त सुष्ट पत्रिक सुख दाई। निजक
र यथा उचित लिखि दीनी। मै स्यामल मुद्रा
इत लीनी। त्रिभुवन धनी पत्र जोई मोरी।
इहि कर नमहिं आज जग खोरी। मोरे करन

२२ लेख अन सरहीं। तमहिं अवश्य देन अब पर
भ० ह्री। इह सत्म पत्रिक व्यवहारु। जोन भर
२२ हु अपज संसर्ग [illegible] मोर मोर कछु हो
हिं नथोरा। अस प्रकार जन वदन निहोरा
पत्रिक दीन पथिक करतासा। जानलेहु सा
मल धनिपासा। चलो सलेत पत्र हरषाना।
इत हरि भक्त भक्ति मदमाता। सोवित अन
थि संत उज काहीं। कीनविभगान सदन।
२२

निज माहीं। इहां वनक द्वारावति जाई। पू
छत फिरत विपुल श्रम पाई। ईहां कवन
पुर स्यामल साहू। नव भाख्यो लोगन अ
स ताहू। स्यामल नाम ग्राम इहि माहीं।
अवलो स्न्यो वनक हमनाहीं। नव निरा
स चिंताकुल भारी। वहिर नगर फिरि च
ल्यो सिधारी। मोहि सन तास कपट करि
भारा। अहोदीन श्रम वृथा अपारा। श्रम

२२ प्रकार जव चिंतन कीना। तवइक यान म
भ॰ नोरम चीना। चपल चारु स्नित तुरग सु
२२ हावन। तह्निपें स्याम वरन मन भावन।
पीत वसत सम्मत सङ्ग अंगा। हरन कोटि
छवि ललित अनंगा। सकृत तास वदन
हंकारे। तव स्यामल धनि कित हु निहारे
तासु वचन सुनि भगवन काहा। मैहूं प
थिक स्यामल धनिराहा। तव अभि लषत
२२

कवन मोहि संगा। करहु कथन निज वद
न उमंगा। पथिक सुनत अस वचन उचा
रा। मै सखो लागन उरझारा। दोहा। सव
न कथन असकी मन ईहा न स्यामल का
न
य। तव चिंता कुल वहिर पर चलेण आस
जीयखोय।४। टीका। हे पथिक अर्थात हे
द्वारिका को जाने वाले तुम तिसके घरमै
चलेजावो तहां तुमारा कार्ज सिद्ध हो जावे

२२ गा ऐसे तिनके कहनेसे सोयाऊ सुछना एक
ध० ता नरसी भक्तके घरमै आयगया और तिसको
२४ मिल करकै कहनेलगा किहे भक्त इह मेरेसे
मह्राधन लेलेवो और मै द्वारिकाको जाने
वालाहूं तहां अपने गुमासते के नाम मेरेको
हूंडीलिखदेवो जोमै तहां अपनाधन सहजे
हीं जाय करके पायलेऊं इस प्रकार तिस
का कथन सुन करकै नरसीभक्त हृदय मे

२४

विचार करने लगा कि इह दुष्ट जनोने मेरे
साथ हासी करीहै परंतु अब इस वारता
का कुछ फल होनाचाहिये यद्यपि इसका
फल प्रापत होना दुर्गम और वड़ा कठिन
है अर्थात कदाचित होनेवाला होनहीं न
यपी हृदय मे सोचकर कुछ यतन कर
ताहूं ऐसे विचार कर तिस याङ्कको कह
ने लगा कि भाई मेरेको दिखावोतो तमा

रे पास कितनाक धनहै जिसके वदले मै
तेरेको झुंडी लिखदेऊं तव तिसने नरन सो
तसौ मह्रा गिन कर्के देदई और भक्त प्रधान
ने लेकर वडे हरष पूर्वक स्यामलसाहकी
और अपने हाथसे झुंडीजोहै सो इस प्रकार
लिखी कि मैने ईहां इसकी सातसौ मह्राले
लईहै हे तीन भवनकेधनी स्यामलसाह अ
व इह मेरीलज्या तमकोहीं है और मेरेहाथके

लिखे अनुसार इह धन तुमको अवश्य देना
हीं पड़ेगा क्योंकि इह हुंडीका विवहार बहु
त सहलमहै जो इसका नाभरोगे तोमेरा और
तुमारा जगतमे अत्यंत अपजस होवेगा ऐ
से बार बार विनाय कर और हुंडीलिखकर
तिस वैस याङ्के हाथ देदेताभया और कह
ने लगा कि जाउ भाई हरिकामे स्यामलसा
हके पास जायकर अपना धनपायलेवो ।

२२ नव सो याचू आनंदसे झंडी लेकर द्वारिकाको
भे॰ चलपड़ा और ईह्रां भगवानका भक्त नरसी सो
५८ धन अतिथी संत और ब्रह्मणों का चरणेमेंबुला
य कर बांट देताभया ईह्रां सो याचू द्वारिकामे
जाय कर और जहां तहां बड़ा श्रम पायकर
पूछता फिरता है कि भाई इस नगरी।
मे स्यामल साह कौनहै दया करके मे
रेको बताय देवो जो मे खोजता ॥ ।

२६

खोजता व्याकुल होयगयाहूं नव लोगोंने ति
नको कहा कि भाई स्यामल नाम करके
साहु आजतक हमने इस नगरीमे कोई
सुनाही नहीं ऐसे तिनके मुख से वचन
सुनकर साहु अत्यंत निराश होयक
र फिर करके नगरीके बाहरको चल
पडा और कहताहै कि मेरे साथ तिस
धनी भक्तने बडाभारी कपट किया हुआ

२२
भ
२८

हीं श्रम और महां कलेश दियाहै इस प्र
कार नगरीसे बाहर जाने जाते ने चिंतनजो
किया तो क्या देखताहै कि एक बडासुंदर
रथ और तैसेही चंचल स्वेत वरनके मनोह
र जोडे तिस पर स्यामसूरती पीतवस्त्र धारी
कोटि कामदेव की छबीको हरने वाला ।
शोभाकी निधी एक सवार चढाहूआ चला
आवताहै तिस को ऊंची स्वरसे पुकार कर

२८

पूछने लगा कि तुमने कहीं स्यामल साह देखे हैं तो बताओ तब भगवान तिसका व चन सुनकर कहने लगे कि हे भाई स्याम ल साह तो मै ही हूं तूं अपने हृदय की अ भिलाषा और मनोर्थ जो है सो कहो कि मेरे साथ तेरा कौन काम है ऐसे भगवान का वचन सुनकर सो याचू जन कहने लगा कि मैने सब नगर मै लोगोंमे पूछा कि ई

सं
म
२८

हां स्यामल साह कौनहै तोसब लोगोंने प
ही कहा कि ईहां स्यामल साह कोई नहींहै
तव मै चिंता करके व्याकुल और निराश
भया हूआ नगरसे बाहर निकल कर पी
छे को फिर चलाआ। अब भागों के वश
तुम मेरेको मिल पडेहो। ४। चौपाई। नरसि
भक्त मोहि हरषि बसेको। पत्रिकदीन नामतब
लेखो। मोरेदहु धनक हरषाई। वगनमपतमतनमुद्धमहाई

२८

तव स्यामल पत्रिक सुखदाई। सादिर लेन
दृगन निजलाई। प्रति प्रसन्न भाख वचन उ
चारा। पथिक धन्य जग जनम तुमारा। जो
अस दीन आज मोहि ल्याई। तव इह पथि
क रुचिर सुखदाई। मोरे प्रीय जीय पत्रिक
माहू। अस नदीन मोहि अब लग काहू ॥
अस कहि हरन भक्त उरत्रासा। मुद्रा दीन स
पन सन नासा। निज कर पत्र लेखि भगवाना

२२ देतनाम अस वदन वखाना। इहदीजो नरसी
भं· कहंजाई। असप्रकार मात वचन अलाई।
२९ मोहि कहं सदा पत्र असप्यारी। लिखेते रह
हु भक्त व्रतधारी। भवन जोगमे पत्र तुमारे
करनेरहहु सफल मोहि प्यारे। पथिक सुन
त अस वचन सुहाये। चलोहरषि पथ पवि
कपाये। अंत्रध्यान स्यामल पथि भयऊ।
पथिक प्रथम द्वारा वति गयऊ। कवि अ

२९

२९

नेक याञा मन भावा। गवन करन नवमी पें
आवा। दुरजन देखि पथिक अस आवन। ल
गे परस्पर हास चलावन। अब दुरदसा हो
हिं कस एहा। देखिहिं आय सकल अग गे
हा। तब तहि पथिक भक्त पद आई। करि प्र
णाम अस विनय चलाई। तुमहुं धन्य सत ति
व्रत धारी। जाकर अस सेवक अनुसारी।
द्वारावती बसहिं सुखदाता। मंजुल स्याम

२२
भ०
३०

30

वरणए मड्डगाना । अति सरवांग ललित मन
हारन । वसन पीत लोचन जलजारन । कुंडि
ल करन आभरन साजा । मानहुं सत मदन
मद लाजा । सोसरूप अव विसरत नाहीं । ए
वसि रहेउ मोरे मनमाहीं । देखत लेख नरत
वितदीना । जस सत कार मोर तहि कीना ।
वरनहुं एक वदन किमि सोई । आवा जनहुं
सनाथ होई । अस कहि दीन पत्र भगवाना ।

सादिर लेन नरसि हरखाना। बार बार धरि
सीस प्रनामा। लागेपा करन भक्त अभिरा
मा। आस्न पात हरष हगछाये। काहिन
सकत कछु प्रेम अघाये। पुरजन देखि प
रम विसमाने। चले सकल निज हृदय ल
जाने। नरसि नाम्ह संजन अभिलाखा। ती
न दिवस आश्रम निज राखा। दोहा। चत्र
रथ दिवस प्रसन्न मन सादिर कीन विदाय

२२ भ० ३१

३१

चलेग पथिक तव सदन निज हरषि चरनसि
रनाय ॥५॥ टीका ॥ फिरसो याह्नु भगवानको
कहताहै कि नरसी धनीने हरषसे नमारे
नामकी मेरेको इह हुंडी लिष देईहै अवहे
साहूकार इस हुंडीमे लिखा हूआ धन मेर
को दैदेवो कैंा कि मै जुह्रा तिस धनीभक्तको
सानसे मङ्गादे आयाहूं इस प्रकार तिसके
भावसे वचन सनकर सामल भगवान ने

३१

तकाल अपने भक्तकी लिखी हूई हुंडीको
लेकर बडे मन मानसे नेत्रों पर धर कर औ
र हृदय मै परम सुख और आनंद मान
कर तिसको कहने लगे कि हे भाई तू ज
गत मै धन्य हैं और धन्य तेरा जनम है कि
जिसने आज इह ऐसी परम सुख दायक
तिस भक्तके हाथकी लिखी हूई हुंडी मे
रेको देई है इह तिसकी हुंडी मेरे हृदय को

२२ भ० ३२

ग्रनसे करके प्यारीहै ग्रोर ग्रेसी ग्रवलग मेरे
का किसीने ल्याय कर नही दीहै इस प्रकार भ
गवान वार वार कहिकर ततकालही तिसको
मातसै मुद्रा गिन कर देदेते भये फिर ग्रपने
हाथसे सुंदर पत्रिका लिखकर ग्रोर प्रीतीपू
र्वक तिसके हाथमै देकर कहने लगे कि
हेभाई इहमेरी पत्रिका तिस धनी भक्तको दे
ना ग्रोर कहना कि हे भक्त मेरेको ग्रेसी प्यारी

३२

पत्रिका अर्थात हुंडी नाम सदैवंही लिखेने र
हना मैंनमारी हुंडी भरने जोगपहु मेरेको इ
ससे सदाहीं सफल करने रहो नव सो या
त्रु दीनानाथ के ऐसे सुंदर वचन सुनकर
धन और पत्रिकाको पायकर आनंदसे चल
पडताभया तव भगवान तुरत नहांही अंत
ध्यान अर्थात लोप हो जाते भये और सो या
त्रु जोहे सो प्रथम द्वारिका को चलागया न

२२
भं·
२२

33

है भगवान की अनेक यात्रा और दरसन प
रसन करके फिर चलता चलता नरसी के
नगर मै ही चला आया तब सो हासी करने
वाले उर जन जोथे तिस को नहीं आवते ह
ये देखकर फिर परस्पर हास करके कह
ने लगे कि देखो अब इस भक्त की कैसी उ
र दशा होवेगी इह धन देने वाला आय
गया है इसप्रकार सब उह जन तमासा देखनेको

२२

साथहीं चलेआये नव तिस याङ्कने आवतेही
नरसी भक्तके चरनोपर सीस धरदिया और
हाथ जोड करविनती करनेलगा कि भक्त
प्रधान तुम संसारमै धन्यहो कि जिनका
ऐसा अनुसारी और सुखदायक गुमासता
हरिकामै वास करताहै कैसी भी शोभावा
लाहै कि सुंदर स्याम सरीर सरव अंगोकर
के कोमल पीत वस्त्रधारी कमलेलोचन मनो

२२
भ०
३४

34

हर नेत्र और कानोमे सजे हूये सुंदर कुंडल
मानो नव शिव काम देवके मदको हरने
वाली कृस्न भगवानकी ही मूरती है सो ऐ
सी मनको मोहित करने वाली मूरती मेरे
हृदय मे वस रहीहै छिन भरभी विसर ।
तो नहीं है और हमारी लिखत देखते ही
मेरेको तरत मानसो मुद्रा गिनकर देदई
जिसने जैसा मेरा सतकार कियाहै ॥

तैसाभै एक मुखसे कथन नहीं कर सकता
हूं मानोंमै कृतार्थ होकर आयाहूं ऐसे क
हिकर फिर सामल भगवान की पत्रिका
तिस भक्तके हाथमैं देदेता भया तव नरसी
दीनवंधुकी पत्रिका को वडे सनमानसे ले
कर और सीस पर धर कर वारवार प्रणाम
करने लगा हरषके आसूपात जोहैं सो ने
त्रों से वहे चले जातेहैं प्रेम करके अघाय

२२
भ.
३५

35

गया मुखसे कछु वचन नहीं निकलता
तब दुष्ट जन जोथे सो देखकर आचर्ज हो
यगये हृदयमें परम लज्जा मान कर आप
ने अपने घरको चले जाते भये और नरसी
भक्तने बडे हरष और प्रेमसे तिस याचु जन
को तीनदिन तक अपने घरमें ही राखा औ
र निज नयांही आदर सतकार करता रहा
चौथेदिन आनंद पूर्वक बडे सन मानसे ति

सको विदाय कर दिया तब सो याज्ञ् वार वार
भक्त प्रधानके चरनो पर सीस नायकर हरष
से अनेक शलाघा करताहुआ अपने घरको
चलागया।५। चौपाई। गयो कल्कक जब का
ल विहाई। करत सेन सज्जन सिव काई। अ
सनहि सता सील निधि जोई। अब सर पाय गा
रभ वति होई। बीते सपत मास जब तास्।
भई डाबाज देखि तब सास्। रही सनखा ग

२२
भं॰
२६

र्भ वति जोई। कलारीत कछु नाहिन होई। पि
न गृहनें कारज सब एहू। होहिरीत अस
तिन करगेहू। भोजन वसन द्रव्य आभरना
इहू सब जनक नाम वय करना। भाषन सा
स वदन अस नाहू। मोरे नहिन भाग्य उन
माहू। पिन नमार निरलज्ज महाना। चार
विचार नास नहिं जाना। मांगत फिरत भीष
सन साधु। निर नत निडर लेन करवाह ।

२६

करत छाट निज बांधव मारे। संसकार गत देखि नमारे। सुनि ग्रस मास वदन कडुवानी। पिय कहं लिख्यो पत्र उर मानी। ईहां मोर बांधव जन जाती। पावक वचन दहत निज छाती। जोतव इत संजत विन आई इनकर वंस रीत समदाई। करत जाहु निज भवन सिधारी नोमैहो ऊं मचित उर भारी। वाचि पत्र निज भवन सिधारी। नोमै

२२
भ०
१२

ह्रो हुं मचित उरव भारी। वाचि पत्र निज हरिवत कुमारी। उखोसि मानि खेद जिय भारी। हृद वृषभ रष्ठ जीरण गेहा। गावन्या लेन भक्त वर नेहा। राधा कृस्न विमल गुण गाता। आवा भक्त सदन जामाता। साधु दरस जीरण रथता सा। देखन लगे करन मवहासा। दोहा। सुता विलोकन कहन अस पित कस भेष कराल। तब धारत निज लाजगन आव मोर।

स्मराल। टीका। तब ईहां नरसी भक्त कोव
रमै वास करते ऋौर भगवान के गुणगाण
गावते को जब कुछ्छ काल वतीत होयगा
या तब तिसकी सीलताकी निधी जो कंन्या
ऋपने पती के घरमै वास करती थी सो सम
य पाय करके गर्भवती होय जाती भई ऋौर
जब तिसको सात महीने वतीत होयगये
तब तिसकी सास विचार करके परमउरवी

२२ भ० ३८

होतीभई क्योंकि स्त्रनात्वो अर्थात नेह जोग
भै वतीथी तिसकी कुलारीत कुछ भी नहीं
भई और कारज संपूर्ण वहके पिताके घर
से होनाथा अर्थात भोजन वस्त्र धन भूषण
इह सब तिसके पिताने ही देनाथा अब सा
त नरसीकी कन्या को कहती है कि देखो
मेरे भागों मे उतसाह नहीं है पिता हमारा
महा निरलज तिसको कुछ चार विचारही

नहीं है साधुओं के साथ मिल कर भीष मां
गता फिरता है और निडर होयकर निरत
करता और वादजा खंजरी खडताल आदि
कहैं सो बजावता रहता है ईहां तेरेको संस
कारसे हीन देखकर सब बांधव जाती नाती
के लोग छूट अर्थात मसकरियां करते हैं
और मेरे हृदय को जलावते हैं इस प्रकार
सासके मारवसे महाकष्ट अर्थात बडा कोडा

२२
भ॰
३५

वचन सुन कर और हृदय मै अत्यंत दुःख मानकर पिताको पत्रिक जो चिठ्ठीहै सो इस प्रकार लिखतीभई किहे पिता इस समय ईहां बांधव जोजाती नातीके लोगहै सो वा लीकबालीसे अनेक दुर वचन कहि कहि कर मेरेको महांकलेश देतेहैं और हृदय को जलावतेहैं जो तुम ईहां उचित समाज और धन लगाकर इनके वंसकी संस्कार।

३५

39

रीती कर जावो तो मैं इस महा कलेशसे छू
टतीहूं नहीं तो मेरा मरण ही है ऐसे जब
कन्याकी पत्रिकागई और नरसीनेवाची त
ब हृदयमें दुखी होयकर और गिलानी मा
नकर तुरतही उठ खड़ा हूआ घरमें एक जी
र्ण अर्थात पुराना रथ और तैसेही बूढ़े बैल
जोथे सो जोतकर चल पड़ताभया मारगमें
श्रीराधाकृस्नका स्मरता स्मरता अपने

२२
भ०
ध०

जमाईके घरमै आय पुहुंचा तब तिसका सा
भूभेष और हड वैलोंके सहित जीरण रथ
देख करके सबलोग हासी करनेलगे और
पुत्रीभी तिसका सो कराल भेष देखकर उ
दासी होय करके कहने लगी कि हे पिता तैंने
इह क्या किया है और कैसा भेष धारकर मेरे
ससरालके घरमै आयाहै।६। चौपाई। सब
व जाति नाति जन हेदा। तब पित करत

40

सकल सखि निंदा। अब प्रसन्न मैं जन निज
देखी। करहिं बदन परिहास बिसेखी। अब
बितजोन जनक तव पाहीं। जोफिर जाहु
सदन निजमाहीं। सुता कथन सुनि भक्त
सुजाना। अति प्रसन्न सखि बचन बखाना।
पुनि नकरहु सोच कछु एहू। कुलदैव प्र
भु दीन सनेहू। पुरवहिं तोर मनोरथ आसू
अब तुम जाय निकट निज मातू। जोजो उ

२२ भ ५१

चिन वस्त्र समुदाई। रखिहेहु मोहि वेगजणा
ई। पिन मात स्तनन रुचिर अस वानी। जा
य मास सन सकल वखानी। ते अस स्तन
न वदन मम कानी। मोरे नहिन परत क
छु जानी। अव सपमण मोहि रहा नकाहु
वार वार अस भक्त सनाहु। पितपे जाय
मास ढिग आई। स्कृत उचित वसन।
समदाई। तव कटु वचन वदन नहिमास।

५१

बोली क्रोध निरत प्रसतास्। हमहिं उचत
प्रसतर प्रवदोई। पितहें लेहु जाय किन सो
ई। उकत सास निज पित सनजाई। तास ब
दन प्रस दीन सनाई। भक्त सनत मानस
हरषाई। उझो समर्ण करत जडराई। लिये
बाद मंजल निज़ पानी। जीरण एक भवन
हरि जानी। तहां जाय मंजन अनरागा। कु
ल विमल गुण गायन लागा। प्रस प्रकार

२२
भ॰
५२

जग जाम विहाये। तव भगवान भक्त सखदा
ये। ललित रूप वैस्नव धरि लीने। सकल व
स्त संपादन कीने। भये तुरंत अंत्र गत देवा
भगवन भूत चराचर सेवा। भक्त देखि प्रभु
चरित सुहावा। वार वार चरनन सिर नावा
सकल समाज लेत हरषाता। आवावेग स
दन जामाता। उनकर वोलि नाति जन जाती
सवकहूं [illegible] था उचित जहिं भांती। भोजन व

५२

मन आभरन चाहु। देत सवन संज्ञत सतका

ह। दोहा। कवित प्रसतर दक्षणा जग जग

दीन प्रवीन। विनय करत सुख विविध विधी

हरषि विसर जनकौन। १। टीका। फिर नर

सीकी कन्या कहतीहै किहे पिता तेरीतो।

आगेही सव नाती जाती के लोग निंदा कर

तेथे परंतु अव सतत तेत्रोंमे तमारा दारि

द्री रूप देखकर सव कोई हासी कर रहाहै।

ग
भं॰
५२

हे पिता जो हमारे पास कुछ संसकारके वा
स्ते धन समाज नहीं है तो अबी फिर कर
के घरको चले जावो मेरेको जगत की हा
सी मत करावो इसप्रकार पत्नीका कथन सु
नकर बड़ा प्रसन्न होय कर कहने लगा।
कि हे पत्नी इस वार्ताका कुछ सोच मतकर
दीनोके हितकारी कृष्ण भगवान जोहैं सो
तेरे हृदयकी अभिलाषा और मनोर्थ सब

५२

अथ हरिवंस चरितं । दोहा । अव गाथा संसय हरन
करन कृस्नपदनेहु । करहुं कथन संछेप कछु सु
नहु संतगुणगेहु । चौपाई । विदतनाम हरिवंस स
हाये । गोस्वामी भव भक्त कहाये । कृस्न रटन पर
परम प्रवीना । संतन कृस्न भजन मनलीना । कृ
स्नसरोज चरन मनलाये । सदा रहत प्रभु ध्यान
जगाये । यहै अनाचित ब्रत मनमाहीं । भक्ति म
न चेतन कछुनाहीं । विधि नषेध गत भक्त अ

९५
भ॰
१

कामा। बरजित गृहस्थ धरम अभिरामा। अवसर
एक शेष निसिमांहीं। ताहि नगर इक उजवरका
हीं। कुलप्रबोध स्वपन अस कीना। भक्तमोरहरि
वंस प्रवीना। पानिगृहण निजसुता सुहावा।
तहिमन करहु विप्रमनभावा। देखिस्वपन अ
सविप्र सुजाना। संभ्रम हृदय गुनत बिसमाना
त्रियसन कीन कथन सब जाई। ते सुशील अस सुनत भलाई
पतिवर वचन सहाजनकेरा। धरहिं सीस कछु नाहिं न फेरा।

इहतो परमदेव भगवाना। दीननदेश तोरहित जा
ना। थरह्न सीसभगवान रजाई। देह्नताह निजसुता
विवाही। उपजहिं तास वंस गुणसागर। शिउभक्त
भगवान उजागर। श्रमतिथ वचन सुनत उजता
ह्न। दीननातहनिज सुता विवाह्न। ताकेवंस निगु
ण गुणखाना। उपजे परम भागवत नाना। दोह्ना
श्रम प्रकार करुणा यतन भक्तकाज जियजानि
दीनवंधु करतेरहे सदाभक्त हितमानि। ५। टीका

१५
भ
२

नाभादासजी कहतेहैं कि हे गुणोंकी निधी संतजनो अब और संसयभ्रमके हरने वाली और कृस्न भगवानके चरन कमलों मे सनेहके अधिक करने वाली गाथा जो है सो संक्षेप करके कुछ गायन करताहूं जगतमे एक हरि वंस नाम करके गुसाई प्रसिद्ध होतेभये सो कैसे कि परमभक्त हृस परमातमाके चरनकमलोंमे मनको लगाये हुये नित्य कृस्नके ध्यानमेही जुडे रहते थे और

२

प्रजाबिन ब्रतको धारन किये हुये किकिसीसे कुछ
नहीं मांगनाकेवलभक्तीमेंही मनथे औरगृहस्थ
त्यागसे रहित निसकाम मानोअचेतनवत अपनेशरी
रकीदशाभी भुलायेहुयेथे तिनकोगृहस्थ धरमसे
क्या प्रयोजनथा तबएक समय रात्रीको पिछलेपह
र तिसी नगरमें एकब्राह्मणको स्वपने में भगवान
कहने लगे कि हरिवंस नामकरके मेरापरमभ
क्त भक्तजोहै हे ब्राह्मण तूं आनंद पूर्वक तिसके

९५
भ०
३

साथ अपनी कन्याका विवाह करायदे इसमैं सर्व प्र
कार करके तेराहित होवेगा इसप्रकार रात्रीके समय
स्वपन देख करके ब्राह्मणबड़ा आमिकचिं भयाहूआ त
अचरजके वशहोयकर सोचकरने लगापड़ा और फि
र जायकरके अपनी स्त्रीके साथ सब वृतांत सुनाय
देताभया सो सुशील और परम चतुर सुणकरके
कहनेलगी किहे पती महाजनौ अर्थात बडयोंका
कहना जोहै सो अवश्य माननेहीं योग्यहोताहै कदा

३

चित फेरानहीं जाता इहलोक्आप परमदेव भगवा
नने वरा हितजानकर पतीतेरेको आज्ञादेई है
तोतेने भगवान कृपानिधानकी इससुंदर आ
ज्ञाको सीसपर धारनकरके तिस महात्माके
साथ पुत्रीकापानी गृहण अर्थात विवाहकरा
यदे तिसके वंसतें गुणोंकेसमुद्र और जगत
मे उजागर भगवानके परमभक्तजोहैं सोउ
तपन्न होवेंगे ऐसेवडी सुंदर और सुखदायक

१५
भ०
५

स्त्रीका वचन सुनकर ब्रह्मणने आनंद पू
र्वक निस संतभक्त हरिवंस जीके साथ
कन्याका विवाह कराय दिया नव समय
पाय करके तिनके वंसमे भगवान की
कृपातें परम भागवत किजो भक्तीमान
और ज्ञान ध्यान की निधी वडे संत महात
माथे सो उतपन्न होते भये इस प्रकार कृ
पाके समद्र और दीन हित कारी भगवा

५

95

९५
भ०
५

5

न सदैव भक्तोंका हित मान कर संसार
मै तिनके कार्ज जोहैं सो सफल करतेच
ले आयेहैं ।१। इतिश्री भक्तविनोद ग्रंथे
भगवद भक्ति महात्मे मिह्रांसिंह कृत भाषा
टीकायां हरिवंस चरित वरणनं नाम
सरगः ॥

तिन की ऐसे ऊखकी बानी सुन कर श्री
र रणमे बड़ा कठिन काल जान कर श्री
म राम मे कोप भरलेते भये और तुरत
ही रथको त्यागकर रथका ही चक्र सुद
र्सन के समान हाथमे धारन कर ले
ते भये तिस समय महाराज की भुजा
ऐसी छबी और शोभाको उदय कर
ती है कि मानो नलनी जो कमल है

१८
भं
७४
74

जिस की नाल पर सरोज विराजमान
हो रहा है ऐसे रथ चक्रको धार कर
भगवान सनमुख धाय चले जाते हैं त
व चरनो की मंजीर का मंद मंद बाज
ना और मनके हरने वाले पीत वस्त्रों
की अत्यंत ही शोभा देख पडती है औ
र रण की रज जो धूरी है सोभी शरीर
पर छायत भई हुई सुंदर भावती है।

७४

जैसे हीं मखकी दोनो ओर छूट करवि
थुरी हुई दोनो अलकें मन को प्यारी ल
गती हैं श्रम के चिह्न अर्थात पसीनेकी
कणी जोहैं सोभी मख पर उभरी हु
ई छपावती हैं और कोपसे नेत्रों की
लाली भी कुछ न्यारीही है वडी सुंदर
विसाल भुजा जोहैं तिन को उठाये।
हुये चक्रको ऐसे वेगसे घुमावतेहैं किजि

व

१८
भी०
७५

सको देख कर काल भी थर थर कांपने ल
गा तब दोनो दलोंमे जहां तहां बडाभारी
शोर मच जाताभया सब कोई पुकार उठा
कि देखो अब मरा भीष्म अब मरा भीष्म स
ब वीर धीर अपने अपने धनुषमे बाण ता
ने हूये स्थितहैं भयके वश थर थर कां
पने धीरज से रहित और व्याकुल भ
ये हूये तिन बाणों को छोड नहीं सकतेहैं

११
७५

चौपाई। रंग भूमि तिसि भरे मुरारी। चले चक्र
आयुध कर धारी। मनहुं राज गज पर मृगरा
जू। चल्यो जात करि गरब दराजू। देखहु उ
तिय कौन संसारू। दीन बंधु दीनन हितका
रू। जो जन हित तजि निज प्राण घालू। जन
प्राण पालन परम कृपालू। सदा बाण भग
वान सुहाई। निज लघुता निज जनन बड़ाई।
कूरम कोल मनस इत्यादी। धरे रूप भगवा

१८
भ॰
७६
76

न अनादी। भक्त न हित करहणाथ अगारा। का
न कौन बिसुन संसारा। निज बन अमन भक्तस
न हेत्। कौन कृपान केन भव सेत्। आय पाय
सन साख मद्हि रंगा। दीन नाथ भव भीन बिभं
गा। लषि सवक्र भीषम प्रभु आये। रोम रोम
तन हरष अघाये। डारि धनुष मेटनि अनुरागा
जैजैजैति भनन मुषलागा। दीन नाथ तव गि
रा वषानी। हमन गहो आयुध निज पानी ॥

दोहा। नाथ कथन सांचो अहै कहू भीषम सिर नाय। पैहों धनहों धन भयो आजस चन सुख पाय। अभ समविय निज नामक हंस कललोक विलान। चक्रपानि रथ चक्र अव धसे नाथ निजहाथ। २२। टीका। इस प्रकार रणभूमीमे कोपसे भरे हूये मुरारी भगवान रथका चक्र। जो है सो ई हाथमे शस्त्र धारे हूये सनमुख चले जाते हैं मानो गज राज पर मृग राजजो है

१८ भ.

सो ग्रनसे गरव करके चला जाहै देखो हमरे। ऐसे संसार मे कौन दीनबंधु ग्रौर दीन हित कारीहैं जो दासके नमित्त अपना प्राण त्यागा कर दासकाही प्राण पालतेहैं भगवान कृपा निधान की सदैव ऐसीही बाण चली ग्राईहै जो ग्रपनी लघुता ग्रौर दासकी बडाईही कर नी देखिये कि कूरमजो कछ ग्रौर मत्सजो म छ कोलजो बाराह इत्यादी कृपाके धाम भग

२

वानने रूपजो धारन कियेहैं सो केवल भक्तों
के वासतेही धारन कियेहैं इन भक्तोंके नमि
त दीनानाथ संसारमे क्या नहीं करतेहैं दया
के समुद्र दीनबंधूने भक्तके सत्य बनके वास
ने अपना बन जगतमे असत्य करदिया तब
ऐसे प्रण पालक भगवान को हाथमे रथच
क्र धारे हुये रणमे सनमुख आवते देखकर
भीषम जोहै सो हरष करके रोम रोम अघाय

१९
भ.
७८

78

जाताभया और ततकाल हाथसे धनुषको पृ
थवीपर डारकर जैजैजै ऐसा शब्द मुखसे उचा
रन करता भया तब भगवान नरनहीं बोलउ
ठे कि हमने तो अपने हाथ शस्त्र नहीं पकडाहै
तिसके उत्तरमें भीष्म सीस नायके कर विनती
करने लगा कि हे दीनानाथ आपका कथन स
व साचा हीहै परंतु मै आज प्रयाह्न मुखको ।
पायकर लोकोंमे धन्य धन्य हो गयाहूं अबहे

३

कृपा निधान अपने नामको स्मरण करिये जो संपूर्ण लोकोंमै तुमको चक्रपानी कहते औार इसी नामसे सब जगत मै प्रसिद्ध हो तांते सोई वक्र यद्यपी रथ काहीं है हे दीनबंधु तुमारे हा थमै धारन किया हु आहै ।२३। चौपाई। कृपा सिंधु हित कीन नथोरा। निज प्रण हारि रखो प्रण मोरा। आवहु आवहु देवकि छैया। अब नहु किय जनदीन सहैया। मारहु चक्रचारु

१८
मं
७५
79

घटमोही। तजहुं प्रान निरषत रट तोही। वर
ष सुपन सन जगत विनेवा। अस अवसर न
हिं मिल्यो कदेवा। भलगन चलन चक्र प्रभह्मा
था। समर मरन पुनि सनमुष नाथा। अहो
भाग मम सरस न हजो। जाहि असमन वांछि
न प्रभ सूझो। सुर मनि तपसि जोगि जति जे
ने। करि करि हठ कठिन हठ केते। पाये सो
न तिनहुं अन पायन। जोमम हनन हेत अ

नरायन। चक्र चारु गहि धावत धरनी। धन
धन उदय भाग मम बरनी। आँप्रसाद परम
प्रभु पाई। देखत सबन बिमान बनाई। जैहूं
वैकुंठ भयो सुख भूरी। रमानिवास आस म
म पूरी। वीरकिरो मणि इह नव रामा। सूर
ति हरन कोटि छबिकामा। वसहिं सदा मोरे
उरगेहा। दीन बंधु प्रभु दीन सनेहा। जैपा
रथ सारथि जङराजू। जनमरण एरक बाण

ज

१० विराजू। सोसम अधम दीन जन काहीं। कोऊ
भ उधारे न आन अस नाहीं। हे सारथि करुणा
८० निधिनीरा। सहे घाव सर उभह सरीरा। दोहा
४० निज प्रण तजिहरे। विदत मोरदीन प्रणपाल
अस स्वभाव सोभित नमै त्रिभुवन देवकिला।
ल। २४। टीका। फिर भीषम कहताहै किहे
कृपासिंधु आपने कुछ थोड़ाहित नहीं किया
वहुत कियाहै कोंकि अपना प्रण हारदिया।

और मेरे प्रणको राखोहै अब हे देवकी के लाल
चले आविये मत हकिये इह चक्र मोहै सो मेरे
को शीघ्र मारिये मै न मारे को रटना रटना प्रा
णोंको त्यागदेऊं अबलग जगतमे सानमे वर्ष
वतीत हो गयेहैं ऐसा समय कबी नहीं मिला
था दीना नाथ के हाथमे चक्रका चलना और
रणमे दीनानाथके सनमुख हो मेरा मरना
इससे परे और कौन शुभ लाभहै अहो आज

१८ मेरे समान किसके प्रारब्ध भागहैं कि जिसको
भ॰ मन वांछित फल प्रापत भयाहै देखिये देव
दा॰ ता मुनी तपस्वी जोगी जती इत्यादि जेतेहैं सोसे
४ सर्ण अनेक साधन और यतन कर कर हार
जातेहैं इहभगवान कृपा निधान तिनके ध्या
नमे नहीं आवतेहैं मेरे भाग सूर्जके समान
कैसे उदयहैं कि सोई भगवान मेरे मारने के
वासते हाथमे चक्र पकडे हूये सनमुष धाय।

चले आवते हैं तांते मै आज रणमै भगवान

का इह चक्र प्रसाद पायकर स्रवमे पतित भ

या हूआ सबके देखते वाजे वजावता भगवा

न के वैकुंठ धामको चला जाऊंगा कृपासिंध

ने मेरे मनकी आसा हरण करदईहै हे वीर

सिरोमणी घनस्याम अब एही आनगृह क

रो कि इहजो तुमारी कोटि काम देवकी छ

बीको हरने वाली मूरतीहै सो सदैवही मेरे

हृदय मे निवास करती रहे जैसा तुमारी हे ।
पारथके सारथी हे जनके प्रणको पाले वाले
भगवान तुम कैसेहो कि जिनोने मेरे जैसे अ
धम और महा दीन जनका कि जिसको कोई
उद्धारन हारा नहींथा उद्धार किया और रणमे
पारथके सारथी होकर बडे कठिन बाणों के
घात जोहैं सो शरीरपर सहारे और अपने
प्रणको त्याग कर संसार मे मेरा प्रण रखा

किया है दीन दयाल है देवकी लाल ऐसा जन
के प्रणको पालने वाला सुंदर स्वभाव इह ती
न लोकमै तुमकोही शोभा देताहै। २४। चौपा
ई। कृस्न सुनत सुतन्न सुनवानी। प्रीति प्रती।
ति भक्ति रस सानी। करि हग तकत ननक
निरखाने। शीमवदे मंद मंद मुस कानि। बो
ले वदन दीन उपकारी। सुनहू वचन भीषम
हित कारी। इहि रण कर कारण नहि आना

१८
भ॰
८३

जानिपरे मोहि नमहिं सुजाना। जो प्रथम हिं कु
रु नायक कान्ही। लेतेहु वरजि गुनन मन माहीं
ते नहोत इह कुल कर चाना। सुनत वचन भी
षम जग जाना। जगकर जोरि गिरा सुइ भाषी
मम अनुचित कछु घट घट साषी। केस राज क
हे कुल कर केहू। राख्यो वरजि नदीन सनेहू। कु
ल कहो नव जड कुल माहीं। अस वर वीर रहो
कौ नाहीं। जैसे तुम त्रिभुवन धनुधारी। परम

निरत परहित उपकारी। तव भीषम कह्र दीन

क्र पाला। जोन होत यह समर विसाला। लोक

स मुहि अधमहिं वस कैया। औनेह्न करन धर

नि धन दैया। दोहा। अस भाषत माखे परमपर

जस जस हरि निय रान। तस तस भीषम भक्त

मन छन प्रमोद सरसान। ५५। टीका। इस प्रका

र भगवान संतन्हके पुत्र की परम प्रीती और प्र

तीती वाली भक्ती रस की भीगीहूई वाणी सुन।

१८ भै ८४

कर क्रुद्धकरि रक्तसे नेत्रोंसे देखते हुये भावसे
मंद मंद मुसकाय कर कहनेलगे किहे भक्तप्र
धान और परहितकारी भीषम इस रणका कार
ण कोई दूसरा नहीं है मेरेको नमही जानपडे
हो जो कदी पहिलेही हृदयमे विचारकर कुरु
नायक दुरजोधन को वरजलेते तो इह कुलका
नाश क्यों होनाथा ऐसे जगत पाल भगवान
का वचन सुनकर भीषम हाथ जोडकर कोमल

३८

वाणीसे कहने लगा कि हे दीना नाथ मेरा कथ
न यद्यपि अनुचित नहीं है तद्यपि कहता हूं कि के
स राजा का कुलके किसीने क्यों नहीं वरजलि।
या भगवान कहने लगे कि नव जड कुलमेंको
ई ऐसा स्रष्ट और विचार मान वीर नहीं था कि
जैसे तीनलोकमें प्रधान धनुषधारी और धर्म
की निधी पराये हितके पालने वाले परम उप
कारी तुम हो तव भीषम कहने लगा कि हे दी

न घाल जो कदी इह भारी रणना होता तो मेरे
जैसे अधम को पृथ्वीपर धन्य धन्य करने और
सज्जनका पात्र बनावने के वास्ते तुम कृपा नि
धान कैसे आवने इस प्रकार परस्पर कथन क
रने ज्यों ज्यों भगवान नेडे आवने जानेहै त्यों त्यों
भीषम भक्तके हृदयमे सुख आनंद अधिक
होता जाताहै ।२५। चौपाई। भक्त प्रेम वश श्रीभ
गवाना। चले दौरि मन सुख नजि जाना। पारथ

१८ भ ८५ 85

हूं नाति रथ सगिलानी। दोहा इन लहि नि
ज जसहानी। प्रभु भज भजन गहिस वरजो
री। कहन सो कवि सकुचति मति मोरी। भि
ले मनहुं मोहन वसहोई। गगन मंज नव
नीरध दोई। पुनि गहि चरन कंज भगवाना
किये सरस रस वीर महाना। प्रभुहिं रोकि
असविनय उचारी। कृपानकेत भक्त हित।
कारी। भीषम प्रण हुतो जन नेही। ताहो

५

१८
सं॰
५६

निज प्रण आयुध गेही। दीना नाथ भक्त सत हेतू। किये प्रसन निज कृपा नकेतू। लोटि वलिय अब संधन स्वामी। राखिय मोर न जाद निमामी। तव प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं कौतुक नाथ समर महिमाहीं। करि प्रहार वानन अतुराई। अरिदल दलहुं समर सम दाई। हया रोष जनि भगवन कीजै। विक्रम मोर समर लखि लीजै। दोहा। सखावचन

१०५

लखि कृपानन वदन मंद मुसकाय। निजसं
धन जड़नंद गति मंद मंद जन आय। एक
हो करन सरोज कल चपल तुरंगन वागि
किये सुजस भाजन समर प्रभु पारथ बड़
भागि।२६। टीका। तब भक्तके प्रेमके वश
हो कर भगवान रथको त्याग करके दौड़
ते हुये सनमुख धाय चले ऐसे भगवान
को जाते देखकर पारथभी तुरत रथको

त्यागकर हृदयमैं परम गिलानी औार अप
ने उसको हानी मानकर शीघ्र धायकर
के दीनबंधुको जोगावरी भजसे जाय पकडना
भया तिस समयकी छबीकछु कही नहीं
जाती जैसे पवनके वशहोकर आकाशमें
नवीन दो बादल मिलतेहैं तैसी शोभाको
उदय करतेभये फिर अरजुन कृष्ण सिंधुके
दोनो चरन पकड कर सुंदर वीर रस जोहै

से प्रकट करता भया कहताहै किहे भक्त सनेही
भगवान तुम कैसे हो कि जिनोने भीषम के प्रण
को पूर्ण करके अपने प्रणको हाथमें शास्त्र पक
ड कर टार दिया प्रभु तुम धन्यहो कि भक्तके स
त्य हेत अपना ब्रत असत्य कर दियाहै अबहे
कृपासिंधु कृपा करिये और लौट चलिये जग
तमें मेरी मर्यादाको राखिये तुमारे प्रसाद कर
के हे दीनानाथ कछु डुरलभ नहीं है कौनकसे

१८
भ
८८
88

रण भूमीमे बाणोंके प्रचंड प्रहार करके शत्रुके
संपूर्ण दलको उडायदेंगा हे कृपा निधान वृथा
[illegible]हीं कोप मतकरिये अबरणमे मेरे पराक्रमको
देख लीजिये इसप्रकार सखा जो अर्जुन हैं ति
सके वचन सुनकर भगवान मंद मंद मुसका
वते हुये मंद मंद गतीसेहीं आपने रथपर आ
य कर अतमे चपल घोडयोंकीवागें हाथमे प
कडकर वडभागी जो अर्जुन तिसको रणमे स

ने अपने ऐसे हीन हितकारी प्रभु पाये हैं इस प्रकार क
हिकर पिसाच जो हैं सो भगवान के गुण गाण गावना
ध्यान मे जड़ा हुआ नाचने लग जाता भया नेत्रोंसे प्रेम
जल का प्रवाह चला जाता दीनानाथ की बार बार प्रद
क्षिणा लेता है जदुनाथ महाराजकी छबीको देखदेख
हृदय मे आनंद जो है सो समावता नहीं सनन्दन सख
रुषी के वेद जदुवीर जो हैं तिनको देखकर पिसाच रा
जकी जनम जनम की पीड़ा जो है सो सब मिट जाती भई

२२
भ॰
८॰

फिर आनंदमै लीनभयाहूआ कुमपरमात्माके चरन कमलोंमै चितको जोड़कर असतुती करने लगा कइ नाईं किजैहो नमारी हे कारम हेनरसिंह हेवाराह हे मनस अवतारी जैहो नमारी हे शेषनागकी सिजापर सैन करने वाले हे मकेंद भगवान हे जड़ कल कम लों के प्रफुलन करने वाले चंद्रमा हे दुष्टोंके दलकोभी भंज दंडोंसे खंडन करने वाले हे भक्तजनोंको आनंद देनेवाले हेदीन जनोंके सुखदायक जैहो नमारी हे

चराचरजीवोंके पालक हे जगतके सिरजन हारे हेभ
क्तके मनरूपी सरोवरमै विचरने वाले हंस हे वैसव
जनोंके सषा हे सर्व सनेही विस्नुभगवान जैहो नुमारी
हे देवताउंके हितकारी हे पृथ्वी का भार हरने वाले
हे कमलों वत नेत्रों की शोभा वाले हे गोपाल कृपाल
हे देवकीलाल हे चक्रधारी हे खड्गधारी हे धनख
धारी जैहो नुमारी हे सर्वभवनोके नाथ हे रणमै रथ
के धारनेवाले हे हाथमै बाणकी शोभा वाले हे कमर

११
में
८८

मै निर्वेग जोगीयों की उद्धी है जिसके पारने वाले जैसे
नमारी हे जगत के करना भरना और हरता हे भक्त जनो
के कलप वृक्ष हे स्याम मेघवत शरीर की शोभावाले हे
पापी जनोके उधारन हारे हे ग्राहके ग्रसे हूये गजकी
प्रकार रखणेवाले हे गौतम की स्त्री अहल्या को ता
रनेहारे हे देवताओं का भय दूर करने वाले जैसे नमा
री हे पावन रूप हे बली राजा को छलनेवाले वामन
हे दीनोके मरव डाव दूर करने वाले हे लक्ष्मीके प्रीतम

३

हे दलके सहित रणमै रावणका वलक्षीण करनेवाले
जैसे हो नमारी हे परब्रह्मके धारने हारे परमराम हे गरुड
गामी अर्थात् गरुड पर सवार होने वाले हे नखँर गो
वर्द्धन पर्वतके धारने हारे हे जानकीके स्वयंवरमै
महादेवका धनुष भंजन करनेवाले हे जगतके पिता
तमको मेरी नमस्कार होवै जैसे हो नमारी हे रघुकुल
कमलोंके सूरज हे जगतमै राजा दसरथके जीवन
हे जानकीके प्राण आधार हे जदुकुल कमलोंके वेद

२२
भं
८२

मा हे गोकल भ्रवनारी हे पापी जनोको पवित्र करनेहा
रे हे एतनाको नारने वाले जैसो नमारी हे जड्वंसके मूष
ण हे दासजनोके दूषण दूर करने वाले हे ब्रजवासी हे ग
स विलासी हे जोगी जनोके हृदयमै चरन कमलोंके
धारनेवाले हे ब्रज स्त्रीउके सुखदायक हे बृंदावनमै
विचरनेवाले जैसोनमारी हे अघासुर बकासुरको वध
करनेहारे हे गौउके चारनेमै प्रवीन हे मलचांडूर और
कंस आदिकोंके प्राणोंका नासकरनेवाले हे पांडवोंके

सखे सुहृद हे मुरारी भगवान जैसे तुमारी हे कौरवों की
सभा मे द्रौपदी की लज्जा राखी है हरे हे जगत मे अजामि
ल से पापियों को तारनेवाले हे कृपानिधान हे संतहित
कारी भगवान इस प्रकार अस्तुती करके पिसाच कहता
है कि हे दीनबंधु मै बडा दुरमती पापों का भरा हुआ महा
मंद और मूढ कि जिसको चार विचार बिना हित सत्य
असत्य का कछु भी ज्ञान नही सदैव मैं परद्रोही पाखंडी दं
भी और कपटी हो रहा हूं मेरा ऐसा कौन धरम रहा कि जि

८६

२२
भ॰
८३

सतैं हेदीनानाथ नमभेरे पर अनकृल्ल अर्थात प्रसन्न
होयगयेहो । २५ । चौपाई । अनजानि कहे प्रथम उ
थारी । जो दसन नवदी मतारी । कियोयम यन स
हति मोही । प्रथम उथारन लायक नोही । मोहितें सम
हि कौन सिवकाई । काह कहे अरपण जडताई । दा
रिद्री अतिदीन मलीना । प्रभदाया अनवर लषिकीना ।
भाजन सजम कियो जग मोही । वेदङ्ग्वारवार प्रभ
नोही । असकहि नाचिन लम्पो पिसाचा । क्रसमरा

न बरन मनराचा। मनडूं निमगाण मोद निधवारी।
प्रेमवारि दृगलेननवारी। भनत आज मम सफल नरह
जा। जहि प्रभ कीन दृगन पथ हजा। काइ परडूं नैव
द कृपालें। कसरि जाडूं अवदीन दयालें। दियो ना
थ मोहि जोनि पिसाची। मोरि त्रुषि अमख मडूं साची
प्रेत न आमिष कयर विधाना। रच्यो अहार एवं वि
धाना। होन अहार जोनकर जेहू। निज स्वामिन करे
अरपन तेहू। दोहा। तोते मोर उचित अब निजप्रभ स

२२
मं
८४

84

नमस्कारल्याय । अरपहुं आमिष भक्तिजन चरन केज
सिरनाय ।३०। टीका । फिर कहता है कि हे प्रथम
उधारी भगवान तुमने जो मेरे पिसाच जाती को दर
सन दिया तो कृपानिधान मेरे को संसार मे धन्य धन्य
कर दिया है इहवाती ऊंच आव जैन नहीं है क्योंकि तुम
दीनानाथ अधमों के उधारने को योग्य हो अब मेरे ने
अभ्रन तुमारी कौन सिव काई बन आवे और मै दीन बं
धु को क्या अरपण करूं अर्थात कौन भेटा देऊं मैं तो

३३

मेरो दारिद्री अनसेदीन और मलीनहूं दीनानाथनेम्र
पने चरनोका सेवक और किंकर् जानकर दयाकरी
है और मेरेको जगतमे हजसका पात्र बनाय दियाहै
हेभगवन मै तमको वार वार वंदना करताहूं प्रेम
कहिकर पेलजोहै सो फल भगवानके चरन कमलों
की प्रीती वाला भयाहुआ नाचने लगजानाभया नेत्रों
से प्रेम जलका प्रवाह चला जाताहै मानो आनंदरूपी
समुद्रमे मगन होरहाहै और मनमे करताहै किआ

२२
भं
८५
85

ज संसारमें मेरे समान दूसरा कोई नहींहै कि जिसने
दीन हितकारी भगवानका नेत्रोंके मारग पूजन कि
याहै अब कृपा निधानके आगे क्या नैवेद धरूं औरदी
न वेषको कैसे दिखाऊं मेरेको भगवानने पिसाच जो
नी ही दईहै तातें मेरी प्रसन्नताई विशेषकरके मांसमें
हीहै विधाता ने प्रेतों का आहार मांस और रुधिरही ब
नायाहै तातें जिसका जो अहार होताहै वे अपने स्वामी
को सोई अरपण करताहै इसनें मेरेकोभी योग्यहै कि

भक्ती प्रीति पूर्वक ल्याय कर और चरनो पर सीस नायकर
अपने स्वामीको मोंसही अरपण करेहु अर्थात मोंसही
चौपाई
आगे ल्याय राखेहु ।३०। अस बिचारि सो शेत प्रवीना । रू
चि अरपण हित जनन अलीना । वेदक उज आमिं डुनल्या
इ । थोय विमल जल स्वर भरि जाई । मूलमंत्र अभिमंत्रि
त कईकै । पात्र अनीत प्रीति जत्न यईकै । लैगाव ग्योग्र
भु सनमुख सोई । मानस चार विचार न कोई । जगाक
रजोरि विनय मनराखा । इहूनव र्यो अशार पिसाखा·

८

२२
भ·
८६

प्रति उत्तीन दइ कृपानिधाना । वैदक विप्र प्रसुवेमै
श्राना । नम सम प्रभुके लायक चीना । तापरमै श्रमि
मंत्रित कीना । अवहि वधो पावीनन एहू । कहिय गर
हण नवदीन सनेहू । सेवक प्ररपत वसत सदाही । क
हिवो गदहण उचित प्रभु काही । असकहि प्रेनन हरष प्र
गाना । हग पथ प्रेम पाथ उत जाता । सफ्नो प्रभु सनम
व सावमानी । लिये विप्र आमिष जगपानी । तासमय
ल गत कपट निहारी । भे प्रसन्न प्रति दीन उचारी । दोहा

दोहा॥ लखि अनन्य नहि प्रेम अस प्रेमविवस जदुराय। स
जलनैन मृदु बैन मुष भनेवचन सुषदाय। ३१ टीका
नव ऐसे विचार कर सो प्रवीन प्रेम भगवानको भेटा अ
र [illegible]पन करनेके वासते जतन विचार कर एक वेदक
ब्राह्मणका मास ल्यायकर और गंगाके निरमल जल
मै धोयकर फिर मूलमंत्रसे मंत्रित करके बडे सुंदर प
वित्र पात्रमै धरकर प्रीती और सनमानसे वारविवार
को त्यागे हूये भगवानके सनमुख लेजाताभया और

२२
भ
८

हाथ जोड़कर विनती करने लगा कि हे भगवन् तुमने
पहले पिशाचों का आहार रचया हुआ है और मैं वेदकब्राह्म
ण का मांस ल्याया हूं इस प्रतिकर करके पवित्र है तुम्हा
रे जैसे प्रभु के लायक जानकर मंत्र से मंत्रित करके
ल्याया हूं और भगवन इस प्राचीन कछु वासा नहीं न
वीन अर्थात् नया ही है मैं अभी वध करके ल्याया हूं हे
दीन सनेही इसको ग्रहण करना आपको योग्य है ऐसा
कहिकर हर्ष जो है सो ^ हृदय में नहीं समावता और तेसे
प्रेतके

जस का पाट बनाय देनेभये ।२८। चौपाई। भ
योजांत भारत जवताहा। तब प्रसन्न हर्वक ।
जडुताहं। भाईन जन समाज सव जोरी। मं
गल मोद प्रमोद नथोरी। विधिवत हरषि
धरम सत कांही। वैठायो न्रप आसन माहीं
गैजै सवद भयो चहुं पासा। सव कर हृदय
प्रमोद प्रकासा। तव नहि रजनि भूप सव
पाये। कियो सैन निज भवन सुहाये। सेष ।

१८
भं
८९

निसालखि भूपति जागेउ। श्रीजदुपति पद सु
मरन लागेउ। उनि विचार किय मान सभा।
हीं। इहिछिन हरि दरसन हितजाहीं। असु
मो चित न्रप चलेउ इकाकी। किये सेन जहं
सोये पिनाकी। द्वारा द्वार सात्यकिथिर चीने।
उठि भूपति पद वंदन कीने। पूछ्योराउक
हांभगवाना। तव सात्यकि कर जोरि वखा
ना। वैठायो द्वारे प्रभुमोहीं। काहु कौं कछु

मरमन सोई । मंद मंद नव चले महीसा । रहे ज
हो जड कमल दनीसा । दोहा । नहिं अव सव
भगवान नहं उठिवाविसे जसहाहिं । वैठे प
द आसन किये ध्यान लीन मनमाहिं । २८ ।
टीका । इस प्रकार जब तहां भारत जो पडे है
जिसका अंत हो गया तब प्रसन्नता पूर्वक
जडनाथ भगवान ने संपूर्ण समाजके साहि
त पांडवों को जोड कर महा मंगल और भा

१८ भ॰ ५०

९०

री आनंदसे विधीके अनुसार राजा जुधिष्ट
रको राज सिंघासन पर बिठाय दिया तब जै
जै शब्द जो है सो चारो पासे होने लगा सब
कोई अपने अपने हृदयमै परम भाव और
आनंद मानता भया तब तिस रात्री मे राजा
जुधिष्टर महा हरषमै मगन भया हूआ अ
पने घरमै जायकर सोय रहा जब कुछ शे
ष रात्री रही तब राजा जागउठा और श्री ज

१८

इपती महाराज का स्मरण करनेलगा भग
वान को स्मरते स्मरते राजाके चित्तमें विचा
र उपजा कि इस समय भगवान के दरसनको
चलिये ऐसे विचारकर राजा अकेला ही तहां
चलागया कि जहां भगवान सैन कर रहेथे
तब द्वारेपर सात्यकी जो स्थितथा सो राजा
को देख कर चरनो पर माथा रखकर प्रणा
म करताभया तिसको राजा जुधिष्टर पूछ

ने लगे कि जड़नाथ महाराज कहांहैं तब सात्य
की हाथ जोड़कर कहने लगा कि नाथ मेरेको
तो हारेपर स्थित रहने की आज्ञाहै इह नहीं।
जानताहूं कि भगवान कहांहैं और का करते
हैं ऐसे सात्यकीका वचन सुनकर राजा युधि
ष्ठिर सहजे सहजे जहांभगवान विराजमानथे
तहांको चलपड़े तब तिस समय जड़ नाथजी
महाराज अपनी सेनासे उठकर और पट मास

अथ मीरां बाई चरित्र कथनं । दोहा । हरणदो
ष भ्रम करन कल गिरधर चरन सनेह । क
रहुं कथन सादिर वदन भक्ति महातम ए
ह । चौपाई । मार वाड वरदेस सुहावा । जैम
ल नाम भूप तहं गावा । उपजी तास सदन
सुभ कन्या । मीरांबाई रूपगुण धन्या । गिर
धर देव जनन सुखदाई । मूरति रुचिर स
दन नरराई । तासु भक्ति संजुत मन कारा ।

२४
मे.
१

सजहिं सकल भूप परिवारा। मीरां पितहिं दे
वि हरषानी। गिर धर भक्ति प्रेम मद मानी।
जाहिं लषन हरि भवन सुहाई। करहिं न
म कल गीत अलाई। जब जब चलहिं प्रसं
ग विवाहू। तब तब होहिं विगत उतसाहू।
गिर धर स्वामि प्राणपति जानी। हृदय प्रस
न्न रहत सुखमानी। कहि कहि जन निजन
कबहू बारा। ताहि कराय अंत सई कारा॥

देखि सदिन संजन उनसाहू। जनक हविर
करि दीन विवाहू। दाय जदीन अनेक प्रका
रा। चलेपालेन नव राज कुमारा। मीरां देखि
भयो प्रस्थाना। अति कलेश मानस निज मा
ना। गिरधर विरहें समाम अकुलाई। परीच
वेत धरन मरछाई। नव दासिन नहि लीन
संभारी। सिंचि वदन वर सीतल वारी। मरद
न विजन करन हथि आनी। पूछन जनक।

२४
भ॰
२

बदन मृदुबानी। पुछी कवन सोच जिय तोरे।
करहु सकधन शोक गतमोरे। मैपुर करहुं
मनोरथ तोरा। मोहि दुखभयो देखि दुख
तोरा। तव सीरां रोदन सुखबानी। भाषिस।
जननि [illegible] जनक कहे बानी। सूरति गिर
धर दीन सनेहू। मोरे देहु जनक तव एहू।
अन्न बसन भूषण वितकाहू। मोरे नहिंन
जनक उतसाहू। गिरधर देव एक सावदाये

मोरे प्राण नाथ मनभाये। मीरां वचन सुनत
पितमाता। ते सुरति गिरधर सुखदाता। दोहा
नहि दीनी अतिप्रीति जत लीनी मीरां बाई ।
कीनी सिबका सुफ रुचि प्रेम नवीनी नाई ।। १
टीका। नाभादास जी कहते हैं कि हे संतो अ
व सुह सर्व दोष दरिद्र और भ्रम संदेह के ह
रने वाला और गिरधर भगवान के चरन क
मलों मे प्रेम प्रीती के अधिक करने वाला है

१४
भ०
२

दर भक्तीका महात्मजोहै सोकथन करताहूं ।
इसको जरा कानदेकर सुनिये कहतेहैं कि दे
दर मारवाड देशमें जैमलनाम करके एक
राजा होताभया तिसके घरमें रूप और गुणों
की निधी एक कन्या मीरांबाई नाम करकें उतप
न्न होतीभई तब तिसराजाके घरमें गिरधर भ
गवान की एक सनातन मूरती जोथी तिस
का भक्ती सनमानसे राजाका सब परिवार । हि
पूजन और सेवन करताथा औसे पिताके सहित सब

3

को भगवानकी भक्ती मै लीन देखकर मीरां
भी प्रेम करके उनमत्तभई हुई फिरथर भगवा
न की भक्ती प्रीतीवाली होयजाती भई तिसल
पतही भगवानके भवनमे जाती और सुंदर
नृत्य गायन कर कर दीनानाथ को रिझावती
फिर लघन ही अपने घरमै चले आवती ।
और जब जब तिसके विवाह का प्रसंग च
लता तब तब ही उतसाहसे रहित होयकर

२४
भ॰
४

परम ईश्वरको आपना इष्ट जानी केवल गिरध
र स्वामी को अपने प्राणोंके पती जानकर ।
तिस आनंदमैंही रात्रिदिन मगनरहती तब
अंतको माता पिताने अनेक प्रकार प्रबोधक
र कर और शिक्षा देदेकर तिसको विवाह
का स्वीकार कराया तिसतें उपरांत कुछक
काल व्यतीत होनेके पीछे सुंदर शुभदिन वि
चार कर तिसका विवाह जोहै सोकरदिया ।

और अनेक प्रकारका दायज भी दान किया
नव राजकुमार लेकरके आनंदसे अपने
घरको चल पडताभया अब मीराने देखा
कि प्रस्थान होभया हृदयमें परम कलेश
मानकर गिरधर भगवानकी विरहसे व्या
कुल भईहुई अचेत और मूर्छागत होय
कर पृथवी पर गिरपडी तब दासी गण दे
खकर तरतही सीतल जल और सीतल ।

स्तंभी गावपर छिड़क छिड़क कर मरदन
पंखे आदिक सिब काई करने लगी इसप्र
कार मीरां को जब शरीरमें कुछ सुधी आई
तब माता पिता बड़ी कोमल बानीमे ष्ठने
लगे किहे पुत्री तेरे हृदेमै कौन सोच उतप
न्न भया जिसते तू व्याकुल होयगई है आप
ने जीयका कलेश हमको सुनावो जो अवी
तुमारा मनोरथ सब सरण कर देवें।

स्व भ ५

हे पुत्री इस तुमारा दुख देख कर हमभी पर
म दुखी होय गयेहैं ताते अपने हृदयकी
कहो जो कौन कारनहै इस प्रकार माता
पिताका कथन सुनकर मीरां रोय करके
कहनेलगी कि हे पिता अन्न वस्त्र भूषण ध
न इत्यादिकों को मेरेका कछु अभिलाषा न
हीं है परंतु एक गिरधर भगवान सर्व सुख
दायक अभिलाषा नहींहै परंतु एक गिरधर

भगवान सर्व सुखदायक मेरे प्राण नाथ औ
र प्राण आधार जो हैं तिन की मूर्ती मेरे को द
देवो ऐसे मीरां का वचन सुनकर माता पिता
तत्काल गिरधर भगवान की सुंदर और सु
खदायक मूर्ती जो है सो तिसको देदेते भये
तब मीरां अपने प्राणनाथ की मनोहर मूर्ती
को पायकर आनंद मे मगन भई हुई सुंदर
शिबका जो पालकी है तिसमे प्रीती और सुन

मन मानसे स्थापित करलेती भई। १। चौपाई

अस प्रकार मीरां हरषानी। गिरधर भक्ति

प्रेम अनुरागी। जनक जननि तें होत बदा

ई। हरषत गावति भवन पति आई। हत हत

भामति संजत सारू। अति प्रसन्न मनमा

नि हुलासू। आन समाज जोयन सबलेवा

पूजन चली ग्राम कुलदेवा। तहांजाय वि

धिवत सबकीना। निजकुल रीति हरष।

२४
मं.
८

मनलीना। तब मीरां सन मास उचारा। तब
पुत्री संजन मनकारा। पावन इष्ट देव निज
कोरी। करहु प्रणाम जुगल कर जोरी। मी
रां सुनत मास अस बानी। बोली अभय
वचन हरषानी। मोरे विनु गिरधर भगवा
ना। मानत इष्ट देव जग आना। एकहिं दे
व दया निधि मोरे। गिरधर उनहिं जुगल
करजोरे। दंड प्रणाम मोर उन काहीं। आ

८

नदेव मोहि सूझन नाहीं। मीरा कथन सा
स सनि काहा। इहि मे मोहि न दोष कछु रा
हा। इह कुल इष्ट देव भगवंती। ताहू हू
हि सौभाग करंती। इहि कहे नव सीस
नव नाई। सनाले हू कल्यान सहाई। अस
प्रकार जब मात बखाना। तब मीरां सुमरत
भगवाना। बोली वदन सुनहु नवमाई।
मोहि सौभाग नित्य सुखदाई। अस जाके

२४
भ॰
८

गिरधर पति नागर । सदा अमर त्रैभवन उजा
गर । जो सौभाग्य दान असमेवी । मात नमा
र इष्ट कुलदेवी । तोउर कर विधवा कस ना
री । जव मीरां अस वचन उचारी । केपत अ
धर कोप वससास । चली विकल जीय हो
त निरास । दोहा । पतिपें जाय वृतांत अस
कीन कथन सवनास । इह उरमति कनला
य नव करन वेस निजनास ।२। टीका ॥

८

इस प्रकार मीरांजो है सो हरष तीहुई और ।
फिर पर भगवान की भक्ती और प्रेम मे लीन
भईहुई पिता माता से विदाय होय कर आनंद
पूर्वक अपने पतीके घरमे चलीआई तब पुत्र
और पुत्रकी इस्त्रीके सहित सासजोहै सो सब
स्त्रीउंका समाज साथ लेकर बडे हरषसें आप
ने ग्रामके कुल देवता का पूजने चली तहां
जायकर विधी अनुसार अपने कुलकी सब

२५ भ ५

रीती करके फिर मीरांको कहने लगी कि हे
पुत्री अब तुम भक्ती मनमानसे इस अपनी कु
लके इष्ट देवको हाथ जोडकर और नम्र होय
कर दंड प्रणाम करो तब मीरां सासकी ऐसी
वानी सुनकर अभय और निरसंक होय कर
सबसे कहनेलगी किहे माता मेरातो गिरधर
भगवानके विनाजगतमें और कोईभी इष्टदेवनहीहै
मैंतोतिनकोंही रातीदिन हाथजोरकर दंडप्रणाम करतीहूं

५

इतर और देव मेरेको कोई सूझता नहींहै।
ऐसे मीरांका कथन सुनकर सास जोहै सो
फिर कहने लगी किहे पुत्री इसमे तेरेकोकु
छदोष नहीं है इह हमारी कुलकी इष्टदेव भग
वतीहै तुमारे को सुंदर सो भाग्य और बुद्धी
के देने वालीहै इसको नम्रता से सीस ना
य कर हे पुत्री तूं सुंदर कल्यान को प्रापत
कर इस प्रकार जब सासने कहा तब मीरां

२४ गिरधर भगवान को सुमर कर कहनेलगी
भ किइह माई मेरेको तो नित्य सौभाग्य ही है
१० क्योंकि जिसके ऐसे अमर रूप और तीनों
10 भवनों के नायक गिरधर भगवान प्राण पती हैं
और जो तुमारी ऐसी सौभाग अर्थात सुहाग
के देने वाली कुलदेवी है तोइह तुमारे नगर।
की स्त्री विधवा क्यों कर हैं जब मीरां ने इसप्र
कार उचारन किया तब सास जो है सो क्रोध
१०

से थर थर कांपती हुई व्याकुल और निरास हो
कर अपने पती के पास आय कर के सब हत्तां
त सुनाय देती भई और कहने लगी कि हे प।
ती इस डर मती और वंस के नास करने वाली
को अपने सुभ घर मैं क्यों ले आये हो इह तुमने
भला काम नहीं किया।२। चौपाई। अव हि व
क्र मुख वचन उचारत। मानहुं वज्र बान उर मा
रत। पाछे कवन करहिं इहनी की। बन तन

२४
भ
॥

सास ससुर निज पीकी। अवतैं मैन सभा सभ
काहू। करहू कथन पति डरमति ताहू। राण
सनत रोष विस पागा। भाषत इह कलंक कस
लागा। आयुध हनत वधहुं अवजोई। तो जीय
वध दारुण अग होई। इह कसमरहिं जतन
अवकाहा। अस विचारि चिंता कुलराहा। नि
ज पतनी सनकहिं उचारी। अब इह रहहिं भ
वन निजन्यारी। जिमि दासी सनकार वहीना।

स

॥

सदन

उरमति वसहिँ निसिदीना। अस प्रकार इक
जीरण गेहा। जारदीन वंदीवन नेहा। धरमी
बृद्ध विविध समदाई। छाडे हार पाल नवरा
ई। सीरोंधरम पतिव्रत माती। श्रीगिरधर प
जन नितराती। सादिर लेत ललित करवी
ना। मधुर मधुर स्वर गायन लीना। निरतन
नवल भाव कलस्राई। पावन भक्ति प्रीति
सरसाई। सास ससुर उर वचन उचारे। सह

२४
भ॰
१२

नेवेग वन जानि बिसारे । स्वाव डाव राग द्वेष
संसारा । सदा एक रस जिनहिं बिचारा । तिन
कहे कवन मान अपमाना । जगरूर वाद ख
पन बतजाना । अस प्रकार मीरा अनुरागी ।
गिरधर चरन कंज लवलागी । प्रकट बैठि
हर संत समाजू । गायन करत त्यागत जीय
लाजू । चार विचार विसारत सारी । मगन आ
नंद प्रेम नियकारी । अस आचार नास प्रति

हारी। सास ससुर उरवमाली सभारी। हमरी।
निस कलंक कुलकाहीं। लागेगा इह कलंक ज
गमाहीं। होहिं उपाय दैव अब काहा। मानत
हृदय विपुल निजदाहा। दोहा। नव मीरां कर
दिवस इक कहत न नदि अस आय। निह क
लंक जग कुलन कहं नव कलंक कमलाय २
टीका। फिर सास कहतीहै कि इह अवहीं से
वज्रके समान उर वचनोंके वाण हृदय को।

मारतीहै पीछेसे मंदक्रा करेगी किजो साम ।
ससर और पतीको कुछ समझती और मान
तीहीं नहीं है अवतें हे पती मै तिस उरमतीको
कवी कुछ सभासुभ नहीं कहूंगी तव मीरे
का ससर रा(ण)जोहै सो सुन करके परम को
प करती भया और कहने लगा किहे देव इह
हमको कैसा कलंक लागगयाहै जो अव श
खका ग्रान देकर तिसको मारदेऊं तो स्त्रीके

वध करने का मेरेको जगतमें पाप लगता है
अब इह किस प्रकार मरे मैं कौन यत्न करूं
ऐसे विचार कर चिंता करके व्याकुल भया
हूआ अपनी पत्नी अर्थात स्त्रीको कहनेल
गा कि हे प्यारी अब इसका यही उपाय है जो
इह अपने घरमें नागोंही वैठी रहे जैसे नि
राद्री हूई और विसकारी हूई दासी होती है
तैसे ही इह डरमनी दीन होय कर घरमें वै

२४ भ. १४

दीरहे इस प्रकार विचार करके तिस भगवा नकी प्यारी मीरां को एक जीरण अर्थात पुराने घरमें कैदियों के समान डालदिया और धरमी दृढ दृढ सेवकजोथे सो तिस की रक्षाके वास्ते द्वारपाल छोडदिये तब मीरां पतीव्रत धरम मे प्रवीन तहां निवास करके श्रीगिरधर भगवानके भजनसेवन मैहीं नित्य लीन रहती और हाथमें वीनालेकर

क्षीमक्षीके सहित सरव सखोंके देने वालीहै तब
एकदिन सनातन जोहै सोवृंदावन को रूपकेपा
स चला आवताथा तहांमारगविखे तिसके सीस
काजरा मकट कहीं वृतके को टयोंमैफसगया
तबभक्तप्रधानने अपने हृदयमै पहीजानलिया
किमेरे को भगवान कृपानिधानकी ईहांही स्थि
तरहनेकी आज्ञा भईहै इसप्रकार जब तहांही
अटकेहूये भक्तस्रेष्ट को दोदिन बतीत होयगा

९४ भ० १५

ये नव तीसरे दिन भक्त सुखदायक भगवान गो
पालरूप धार कर एक पवित्र पात्रमै हथलिये हू
ये वहांचले आये श्रोर श्रावतेही दयाके वशभ
येहूये तिसकी जटोंकाभ्तकट हूत्तके कांटयोंमै
जो फसाहू श्राथा सोछुराय करके फिर वडी प्री
ती सनमानसे हथजोथा सो पान करायदेतेभये
श्रर्थात पिलाय देतेभये नवदीनवंधुका दिव्यसरूप
देखकर सनातन भक्तस्कनेलगा किभाईतमकौनहो श्रोर
किसगाउमै वास करतेहो ॥

15

कितने तमारे भ्राताहैं ऐसे तिसका कथन सुनक
र भक्तपालक भगवान कहनेलगे किभाई मैंगो
पजातीहूं ग्रोर चार मेरे भ्राताहैं नंदीग्राममेंजोहे ति
सविषें निवास करताहूं ऐसे कथनकर कर दीन
हितकारी तरतहीं लुप्त होयगये तब ग्रवरज
के वशभयाहूआ सनातन ततकालहीं नंदीग्रा
मकोचलाग्राया तहांग्राय करके जहां तहां भ
ली प्रकार खोजनेलगा परंतु जब वे भक्त हि

२४
भ.
१९

16

तकारी और दीन सुखदायक गोपालजी कहीं देख
नहींपड़े तब निश्चय करके जान लिया कि वेतोगो
पालरूप साक्षात आप भगवानहीं थे ऐसे जानक
रके रोदन करकर अनेंप्रकार पछतावनेलगा
कि अहोमैं अभागी मायाकरके मोहितभया इ
सप्रकार पछतावताहुआ अपनेरूप नामा आ
नाकेपास आयकर भगवानके मिलनेका सब
वृतांत सुनायदेताभया तब एकसमय रूपभक्त

क
जूश्रीदीनबंधुकोजा
ननहींसका

१९

किजे कविताभे वडे प्रवीनथे श्रीरायकेजीकी वे
नी अर्थात केशोंका वरणन करनेलगे तोयद्यपि
तिनोने वहुतंही सोच विचारकिया तथापि तिस
काकोई उपमान हृदयमे फुरतानहीं भया कि
श्रीरायकेजीकीवेनी अमकवस्तुकेसमानहै ३
चौपाई। तवअस कथन सनातन कीना। इहन उ
चित तोहि वंधु प्रवीना। जोकछु हृदय तोर हवि
एहु। तोविरचहु कछुकाव्य सनेहु। रूपसुनत

१९
भ॰
१८

अस वचन हुलासा। उपजी काव्य रचन हवितासा।
आयो नट प्रयाग अनुरागा। सुमरत हुलस भक्तवड
भागा। नरु कदंब साखा कल भावन। लागे नहोंव
रन जग पावन। देखे रूप ललित मन हरना। इह
कस चकित वदन अस वरना। भने सुनानन वच
न सुहाता। इह जग जनति वरन सुखदाता। व
रनन वेनि उचित जन नाहीं। करहु कथन इन व
रनन काहीं। दोहा। वंधु वचन सुनि रूप अस

अति अनंद सरसात। जनु पंकज लखि मधु प
वन भयो लीन पदमात। गौडदेस अस विप्रभेभ
क्तसष्ट जगपहु। जिनकर कथा प्रसिद्ध जग अ
नक अलौकिक रेह्न।४। टीका। ऐसे देवकरस
नातनजी कहने लगे किहेभाई इहजगत माता
कीवेनीका कथन करना तेरेको उचित नहीं है
जोकदाचित हृदयमे कुछ ऐसीही छवी उनसा
हहै तो प्यारे कोई काव्यकी रचनाकरो इसप्रका

२४ भ० १८

रश्रीमाताका वचन सुनकर नृपजीके हृदयमै का
व्यके रचनेकी रुची उत्पन्न होतीभई तब रूपल
रमात्मा का सुमरतेहूये बडभागी भक्तजो थे
सो आनंदसे प्रयागराजपरचले आये तहांएक
कदंबके वृक्षमै बडे पवित्र और मनोहर दोचर
नलगेहूयेथे तिनको देखकर रूप कहनेलगे
किइह चरन कैसेहैं तब सनातन बोले किभा
ई इह भक्त जनो के हृदय को आनं ।

१८

दूरदेनेवाले चरन जगतमार्त दीनसुखदाताकेहैं
वेनीका कथनकरना उचितनहींहै इन पवित्र च
रनोंको वरणनकरो नवरूपभक्त वंधु अर्थात आ
ताका वचन मानकर मानोतिनचरनोंको कम
लजान कर भ्रमरेके समान तिनविखेही लीनहो
यगये प्रयोजन इहकि भक्तीप्रीतीसे अनेकप्रका
र करके तिनकोगायन करतेभये इसप्रकार इ
हभक्त स्पष्ट होतो ब्राह्मण गौड देसविखे उज्ञा

गरहूये कि जिनकी अनेकहीं वडी सुंदर और अलौकिक गाथा जोहैं सोजगत मै प्रसिद्धहैं ॥४॥ इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे मिर्जासिंहकृत भाषाटीकायां रूप सनातन चरित्र बरणनं नाम सरगः

भ०
१९

19

१५

सिद्ध करेंगे अब तुम अपनी सासके पास
जाय करके जोजो वस्तु चाहिये सो सब पूछ
कर और शीघ्र मेरेको आयकरके बताय
देवो ऐसे पिताके मुखसे वचन सुनकर
सो कन्या तुरत अपनी सास के पास जाय।
कर जिस प्रकार पिताने कहाथा सो सब सु
नायदिया तब तिसको सास सुनकर मुख
से मुसकावने लगी और कहने लगी कि

२२
भ०
५५

मैनहीं जानतीहूं अब मेरेको कुछ स्मरण
नहीं रहा तबसो कन्या बार बार पिताके पा
स जाती और फिर साससे आय करके पूछ
ती उनको सास क्रोधसे कहने लगी कि
हम को चाहिये दीपन्यर जावो जाय करके
पितासे लेआवो तब सो जाय करके सास
का कहना पिताको सुनाय देती भई ऐसे
पुत्रीके मावसे वचन सुनकर भक्त सुष्ठ ।

हृदयमें हरष मानकर जदुनाथ भगवान
को समरताहुआ हाथमें खंजरी खडता
ल बाजा लेकर और एक प्राचीन अर्थात
पुरानासा भगवानका मंदर देखकर न
हां भक्ती प्रीती पूर्वक स्थित होयकर हु
रस भगवानके पवित्र गुण गणजोहैं सो
आनंदसे गायन करने लगा इस प्रकार
तिसको भक्ती और प्रेमसे कीर्तन करते

को जब दोपहर वतीत होयगये तब भक्त
जनों की पैज राखने वाले भगवान सुंदर
वैस्नव रूप धारकर जोजो वस्तु तेहा तव
सी को देनी योग्यथी सो कौनकसे सव
ही तिस मंदरमै राखकर फिर आप चरा
चरके स्वामी भगवान तरतंही लोपहो ।
जाते भये तवभक्त प्रधान इसप्रकार कृपासिं
धुका चरित्रदेख कर वारवार प्रणाम करतोहूआसो ५५

भगवानका दियाहूआ सब समाज लेकर
अपने जमाईके घरमै चला आया और त
हां तिनके नाती जाती और ब्रह्मणें का सु
दर भोजन और सुंदरही वस्त्र भूषणों से
यथा योग्य सन मान करके फिर प्रीती पू
र्वक कं विनके दोदो पत्थर दक्षणा देकर
और मावसे अनेक प्रकारकी विनती कर
कर आनंदसे सब विदाय कर दिये । ७ ॥

२२ भं: ५६

चौपाई। पुरजन सकल साम जत देखी। भये लजित विसमय अवसेखी। विप्र प्रसंसि लोक समुदाये। निज निज सदन हरष वस धाये। ब्राह्मणि जठर ग्राम इक ताहू। तासु समाण कौन नहिं काहू। उहि ना निकट आय अस वरनी। मोहि विप्र सो कस मंगल करनी। तव निज भूषण वसन उतारी। तासु दीन हरिभक्त कुमारी। पुत्रि दान अस देखि

५६

सुहावा। नरसी हृदय हरषि सुखपावा। पु
नि प्रभु कहं सुमरण नसलागा। करि करि
नृत्य गीत गुणगाना। नव करण जुत भक्त
सहैया। विविध वसन भूषण वित देया। सु
ना हेत मन हरष मलीने। तिनकर सदन।
स्थापित कीने। होत विदाय भवन निज आ
वा। कुल सरोज चरन मन लावा। संसृति
विषय सुखादिक जोई। त्रिगुणवत भक्त सुष्ट

२२
म
४७

जीय खोई। कै विरक्त महि विचरन लागा। रट
त कुसल गुण गण अनुरागा। तासु सुता क
र सुत बड़भागी। उग्रपयान जब दीन त्सि त्या
गी। सासहिं देन श्राप हरषानी। पितपे श्राय
भक्ति मद मानी। श्रति विरक्त वनमानस रा
गे। जनक सुता हरि मूरति श्रागे। लोक ला
ज कुललाज विहाई। निरतत विमल कुसल
गुणगाई। समय पाय वेसा इक ताहां। श्राई

४८

बसहिं भक्त बर जाहीं। नृत्य गीत कलकला प्रवीना। लोगन तासु कथन अस कीना। ई हो नरसि नामिक गुणसागर। सुभ संगीत मर्म अति नागर। बाद नाद परि प्रवण लीला। तोकर भवन जाहु तव सीला। करहि अभिष्ट तोर फर सोई। देख्या सुनत हरष बस होई। आई वेग भक्त बर धामा। लागीन्ह करन अभि रामा। मूरति देखि देव सुख

२१
भ
५८

48

दोई। अरु संसर्ग भक्तवर पाई निरंतर तासवि
मल मति होई। निंदत करम सकल निजखो
ई। दोहा। वारवधू निजभाग वस ज्ञान भ
क्ति सरसाय। तहां लागि विचरन अभय कु
स विमल गुणगाय। ८। टीका। नव निस
की सास और उर जन जोथे सो सब देख।
करवडे आचर्ज से लज्जाको प्रापत होयगये
और जिस भावसें निंदा परिहास करते थे ॥

तिसी मखसे भक्तसह की अनेक शालाचा । और बडाई करके हर्षसे अपने अपने घरों को चलेगये तिस नगर मे एक वृद्ध ब्राह्मणी रहतीथी तिसको तिसजगए उनसभमे किसी ने याद नही किया तब सो नरसी की कन्या के पास आय कर कहनेलगी कि हे मेरा ल करनीमेरा स्मरण कों नहीं किया और ना मेरेको कुछदान दियाहै ऐसे तिसका

रा
भ.
५५

वचन सुनतेही भक्तकुमारीने ततकाल अप
ने भूषण और वस्त्र उतार कर तिस वृद्ध ब्रा
ह्मणीको देदिये इस प्रकार पत्नीका दान सु
न कर नरसी हृदयमें अत्यंत प्रसन्न होता
भया और तैसेही नृत्यगीत कर कर फिर भ
गवान भक्त सुखदानको स्मरण करनेल
गा तब दीन बंधुने प्रसन्न होयकर भक्तप
त्नीन को और भूषण और सुंदर वस्त्र आ

५५

नुग्रह करदिये सो नरसी भक्त लेकर और
अपनी पुत्रीके निमित्त तिनके घरमै देकर
फिर आनंदसे विदाय होकर अपने घरको
चला आया इस प्रकार कृष्ण भगवानमाके
भजन और स्मरण मे लीन भया हूआ भक्त
संसारके संपूर्ण विषय स्वादकों को तृण
समान हृदयसे तोडकर और विरक्त होय
करके पृथवी पर विचरने लगा ऊंहा जब

भ० प०
११

तिस भक्तकी कन्यांके पुत्रने मानाका हथ पी
ना त्यागदिया तब तिसको तहांहीं सासके
पास छोडकर आप भगवान की भक्ती मेली
न भई हूई पिताके पास चलीआई तहां पिता
पुत्री दोनो विरक्त और प्रेम भक्ती मे लीन भये
हूये लोकलाज और कुललाज सब त्याग
कर भगवान की मूरतीके आगे सदैव नृत्य
और गायन करते रहते तब समय पायकरके

तहां एक वेस्या आय जाती भई सो नृत्यगीत
मै अत्यंतहीं प्रवीनथी तिसको लोगोंने क
हा कि ईहां एक नरसी नाम करकै गुणोंका
समुद्र संगीत के जानने वाला वादजोवाजा
नाद जोगीत तिसमै परम चतुरहै हे सुश्री
ले तूं तिसके घरमैजा सो तेरे मनोरथ को
पूरण करेगा तब वेस्या तिनके मुखसे व
चन सुनकर हरषके वशभई हुई तिनका

२२
भं०
५१

ल नरसी भक्तके घरमैं चलेआई नहां परम
सुख दायक भगवानकी मूर्ती के आगे प्रे
म मैं मगन होयकर नृत्य कर कर वड़ा म
धुर गायन करने लगी तव भगवान की
मूरती का दरसन पाय कर और भक्त स
इके संसर्ग मिलापमैं नृत्य करती करती
को तिसकी बुद्धी जो है सो निरमल होय
गई और अपना निंदत करम जोथा सो

५१

सबत्यागदिया इस प्रकार सोवेस्णा अपने
भागें के वशसे ज्ञान और भक्ती मे लीन
होयकर कृस्नभगवानके गुण गावनी।
हुई अभय होय करकें नहीं ह्रीं विचरने ल
गी।८। चौपाई। नरसि भक्त करमा तलजो
ई। रहा मबि मेदन पतिसोई। अब सब एक
भूप सन नासा। मिथ्या जाय कीन संभासा
महाराज नरसी जद्रूपहू। उपजेया कुल क

५२
भ०
५२

लोक हमगेह्न । वार वधू कन्या जत वाह्न ।
करत नृत्य गायन उतसाह्न । अधम मूढ़
निरलज्ज गवारा । बांधव जाति नाति त्रिस
कारा । दीन नाथ नहि देहु निकारी । नज
हिं ग्राम निंदत जड़ भारी । सुनि नृप सचिव
कथन इहिं भांती । पठे चतुर निज चारि पदा
ती । ते आये दारुण बिसह्लाये । कहत चलइ
बोलत नर राखे । नव वेस्या कन्या जनम आवा ।

५२

करत भक्त न्रत गीत सुहावा। दरसन दे
खि कहिस नरराजू। जान्यो इह विरक्त कुल
लाजू। मूढ करम कस धारन कीना। निज
कुल जाति धरम नहिं चीना। सुनत भक्त
प्रस सुफट उचारा। जाति धरम कुलचार
विचारा। करम अकरम लाभ अरु हाना।
राग द्वेष जग मान अमाना। सुख दुख ज
स अप जस तुम काहीं। हमरे हृदय भूप

कछु नाहीं। इनते हम विरक्त संसारा। नहिं न जाति कुल धरम हमारा। मोरे इनहूं सौ न जव त्यागी। मैंहूं भयो इनतें वैरागी। तो संबंध कवन अब पाछे। देखहु करि विचार नृप आछे। इन दुरजन कर कपट कहानी। अहो धरन पति मानस मानी। मोरे लग्यो निवारण ग्रामा। नव शास्वत निर्गुण गुणधामा। जहि संगति संसर्गन काहू॥

५३

सागर रूप जानत सब ताहू। दोहा। पौराण
क तन देखितव कहिस भूप कस एहू। पं
डित भाखिसभक्त सब कथन विगत संदेहू
टीका। तब नरसी भक्तका एक मामाथा
सो राजाका बड़ा सहाट मंत्रीथा एकदिन
तिसने राजाके साथ जायकर मिथ्याहीं।
कथन किया कि महाराज इह अधम नर
सी जोहै सो हमारी कुलमें एक कलंक उ

९

२२
मे
५४
54

त्पन्न भयाहै और बड़ाभारी जड़है देखिये
कि अपनी कन्या और वेस्या को साथ लेकर
निरलज्ज होय करके न्रत्य और गायन क
रता रहताहै इसीतें जाती जातीके लोगोंने
अपनी पंक्ती से बाहिर करदियाहै तिस बा
ती की तिस मूढ़को कछुभी ग्लानी मिला
नी नहींहै तातें आप कृपा करके मेहा मे
दको अपने नगरसे बाहिर निकाल देवो सो

५४

इष्ट रावने के योग्य नहीं है इस प्रकार मंत्री
अर्थात वजीरका कथन सुनकर राजाने ति
सके लावने के वास्ते तुरत नही वडे चतुर
और चपल चार पयादे भेजदिये सो परम
क्रोधसे नरसीभक्तके पास आयकर कह
ने लगे कि हो भक्त शीघ्र चलो तुम को
राजाने बुलायाहै तिनका वचन सुनतेही
नरसी अपनी कन्या और वेस्या को साथले

२२ भ ५५

55

येह्ये न्रत्य गायन करता करता ततकाल रा
जाके मनमाव आय प्रापत भया तब तिसको
देखतेही राजाने जानलिया कि इह कोई ।
विरक्त साधू है तथापि तिस को ।
कहने लगा कि अहो मूढ इह तूं ने
कौन करम धारन किया है अपनी ।
कुल जाती औरधर्मको नहीं जाना ऐ
से राजा का कथन सुन कर ॥

विचार

भक्त प्रधान कहने लगे कि हे राजन जाती
कुल धरम चार करम अकरम लाभ और
हानी राग द्वेष मान अपमान सुख दुख ज
म अपजस इह संसार मे तुमारे वासते हैं
हमारे को इनका कुछ सपर्श नहीं है हम
इनतें संसार मे सदैव विरक्त हैं और हमा
रा जाती कुल धरम कुछभी नहीं है इन
बांधव संबंधियोंने जब मरेको त्यागदिया

२२
भ॰
५६

56

तोमै भी इनसे वैरागी होयगया फिर संबंध
कहांरहा वास्तव करके कुछभी नहीं एक
झूठीही मनौती मानी हुईहै हे राजन तुम
भी विचार करके देखो कि जगत मैं किसी
का कौन नाताहै जिसको किसी की संगत
मिलापसे कुछ प्रयोजन नहीं सो सदैवही
त्यागरूपहै हेराजन तुमशीघ्रत ओर ज्ञानी
होकर इन ऋषींके कहनेसे मेरेको ग्रामसे

५६

निकाल देना चहतेहो तब राजा भक्त सुष्टके
वचन सुनकर पौराणक पंडित जो कथा बा
चरहाथा तिसकी ओर देख कर कहने ल
गा कि इह कैसाहै और क्या कहताहै तब
पंडित कहने लगा कि इह भक्त जो कहताहै
सोसब सत्यहै इसमै कुछ संशय नही है ॥१
चौपाई। इह अदोष हरि भक्त सुजाना। बिग
न विकार मान अपमाना। भूप सुनत मान

११
भं.
५८

57

स हरषावा। नरसी चरन नम्र सिरनावा।
अब तें अभय भक्त ब्रतधारी। विचरहु स
ऊच सोच सब हारी। अस प्रकार जब भू
प अलावा। भक्त प्रधान सदन निज आवा
रह संसार असार विचारी। जानि सार जग
भक्ति सुखारी। सावधान मानस अनुरागा
भयेसि निरत भक्ति बड़भागा। एक दिव
सँहि सदन सहाये। संत सहस्र अमत

त

चलि आये। तृषित त्रिषत विथत जीयभा
री। नगरहि भक्त अस तिनहिं निहारी। छू
छो सदन अन्न बिन आजू। अहो दैव क
स वनो अकाजू। इन कहूं देहुं अन्न अ
व काहा। अस प्रकार चिंताकुल राहा
करि विचार तव नगरहि यारा। गयो
जाय वनक इक द्वारा। आरत दीन वद
न नहि वानी। भक्त रूप अस विलषि व

२२
भ०
५८

खानी। राग किदार परम प्रीय मोरे। सो मै
धरहुं मदन सुभ तोरे। सुहु सुमद मांहि दे
हु सुहाई। आये संत मदन समदाई। तिनहि
देन भोजन मोहि जोगू। ततर करहिं अपज
स सवलोगू। जो लोभैन देहुं धनतोरा। तो
लो रहो वनक प्रणमोरा। दोहा। मैन कव
हुं गायन वदन इहु किदार कलराग। भक्त
वचन सुनि वनकवर उठ्यो जनहुं जीयजा

ग। दीनसि मद्दा सहस कल लीनसि पत्र लिखाय। हरष्यो भक्त प्रवीन जीये निज अभिष्ट फलपाय।।१०।। टीका। पंडित कहता है कि हे राजन इह भगवानका प्रवीन भक्त मान अपमान और विकारोंसे रहित सर्व प्रकार करके अदोषहै नव राजा पंडित का वचन सुन कर और नरसी को भगवानका दृढ भक्त जान कर नम्र होय करके

११
भ
५५

चरनों पर सीस नावता भया और कहने ल
गा कि अब तें हे भक्तप्रधान तुम अभय
होय करकै जहां तुमारी रुचीहै तहां विच
रो इस प्रकार जब राजा ने कथन किया तब
भक्त स्रेष्ट अपने घरको चला आया और संसा
रको असार विचार कर एक भगवानकी भक्ती
हीं सार जानकर चित्तमे सावधान होयकर बडे
प्रेम और प्रीतीसे भगवानकी भक्तीमे निरंतर करकै

लीन होय जाताभया एकदिन दैवयोगसे
तिसके घरमें भ्रमती भ्रमती एक हजार संतों
की जमात चलीआई सो सब संत तिस सम
य भूष और प्यास करके अतसे व्याकुल
हो रहेथे नरसी भक्त तिनको भ्रमसे देखक
र हृदयमें विचार करताहै कि हे दैव इह
कौन अकाज आय वनाहै आज तो घरमें
अन्नमात्र कुछभी नहीं है और संत जन भू

ष्ठे हैं इनको अन्न कहांसे देऊं इसप्रकार चिं
ता करके व्याकुल भयाहुआ नरसी भक्त
नगरमें चला जाताभया और तहां एक व
नक जो वाणियांथा तिसके द्वारेपर जाय
करके स्थित होयगया फिर तिसको बडे
उत्सवसे दीन होयकर कहनेलगा किहे ध
नी भाई इस समय मेरे घरमें संत समूह
आयेहैं और वे भूषेहैं तिनको अवश्य

ना॰
भ॰
५६.
60

५६.

भोजन देताहै नहींतो लोगोंमै मेरा अप
जस होताहै तोते तुम कृपाकरके मेरेको
हजार रुपैया देवो मै तिनके वदले तुमारे
पास इह किदार राग जो मेरेको परम प्या
राहै गिरवी रखताहूं और मेरा प्रणरहा
कि जवलग तुमारा धन नहीं देऊंगा त
वलग इस रागको मै मुखसे कवी गायन
नहीं करूंगा इसप्रकार भक्त रुपके वच

२२
भ०
६१

न सुनकर निस वाणियेके हृदय मै मानो
ज्ञान प्रकास होयगया और अज्ञान नि
द्रासे जाग उठताभया ततकालही हजा
र रुपैया गिनकर भक्त प्रधानको देदिया
और टीह लिखवाय लिया तव भक्त प्रवीन
अपने मनोर्थको सफल करकै परम हरष
और आनंदको प्राप्त हो जाताभया।९। चौपा
ई। तव तहि वनक जगल वर नारी।

६१

न पाऊंगा और मेरे अहोभाग्य हैं कि मैं महा पापी पिशा
च दुरमती और दुराचारी अनसे दुष्ट हूं आज अथमोके
उद्धार करने वाले श्रीपती भगवानके चरन कमलों
कों जायकर परसूंगा २२। चौपई। कहहु भवज कउं
नमउं निहारे। सो घनस्याम ललित छबि वारे। जोदे
खे करीकै उपकारहू॥ देउ वनाय हरन महिभारहू॥
नोमै देखि चरन शुभ लागी। दरसन होइं विसखवड
भागी। श्रेनकथन सुनिकृपा निधाना। श्रेम नेम

२२
भै
६२

62

लषि नासमझाना । जानि ग्रनन्य चरन निजदासा । री
झि राये प्रभु रमा निवासा । नव पिसाच कहि विशालि
लामा । जाऊं मनुज नव हूसरदामा । ऋम इन निम
नेम निज करना । भये भोर ग्रुनि ग्रनन सियरना ॥
चेटा करन कहन ग्रसवानी । भयो मगन कवि श्रीग्ण
नपानी ॥ ग्रम्रष छाय गहि श्रोतन माला । धारिवक्ष
निज रूप कराला । करि सनान स्हर सरि स्हवेपावा ।
वैदि कुसासन ध्यान जडावा । महि ग्रभि मंत्रि गंगावर

॥

नीरा। नजिहोत्यो सब स्वान न भीरा। कूर्म सुमर
ण ध्यान मन लीना। जोडि समाधि प्रबल चित कीना। दोहा। नाथ मिलन अभिलाष उर लाष लाष
सरसाय। प्रेम मगन भाषत वचन वारि विलोचन
छाय।२३। टीका। फिर पिशाच कहता है कि हे मा
नुष्य जो अतसे छवी वाले सुंदर घन स्याम तुम जैसे क
ही देखे हैं तो कहो जो कहीं देखे होवें तो मेरे पर उपका
र करो सो पृथ्वी का भार हर करने वाले भगवान वना

य देवो जो मै दौउ करके तिनके चरन कमलों पर सीस
धर कर और दरसन करके जगतमै बडभागी और स
फल होय जाऊं ऐसे प्रेतका कथन सुनकर भगवान
तिसका प्रेम नेम जो है सो हृदै जानते भये और अपने
चरनोका अनन्य सेवक समझकर कृपानिधान तिस
पर तुरत ही रीझ गये तब पिसाच कहने लगा कि हे
मानुष्य अब तुम कहीं दूसरे स्थानमे चले जावो ईहां
हम अपना नित्य नेम शुरू करैंगे और प्रातकालसे

ने कंद्री और स्थलकों चले जावेंगे इसप्रकार चेष्टाकरत
करिकर् और शोणित जो लहू है सो पान करके मगन
होयगया फिर मांस खायकर और आंत अर्थात आंत
डौंकी माला हृदयमै पहिरकर तिसके उपरांत गंगा
जीके जलमै जायकर स्नान करताभया फिर कुशा
के आसन परबैठकर और ध्यान लगायकर अंजली
मै गंगाजल लेनेसे संकल्प पढकर खान इत्यादी
का त्याग करदेताभया तब हंस भगवानके स्मरण

और ध्यान मेलीन और समाधीमे स्थित होयकर विन
को भी प्रबल करवैदा और भगवान के ही मिलनेकी
हृदयमे लाख अभिलाषाकरके प्रेममे मगन भया हु
आ नेत्रोमे जलभरकर जिस प्रकार अस्तुती करने
लगा सो आगे कथन की जातीहै ।२३॥ चौपाई ॥
जैति जैति जै कृपानिधाना । जै जै वासुदेव भगवाना
जै जै संख चक्र कर धारी । जै मकुंद जैजैति मुरारी ।
जै जै प्रथम उधारन देवा । जै जै मुनि शंकर सुरसेवा ।

जै जै जदुकुल कमलनरविदाना । जैजै जैनि विस्व सुख दाना । जै अनंत जै संत सहैया । जैरतक भेदनि उजगैया । जै आधार निरधारन केरे । जैनि ह्रवन उरव दीन ठेनेर । करि स्मरण नमरे गिरधारी । छूटत कोटि जनम अग भारी । मोहि अनाथ लषि आपन दासा । करिय नाथ निज जन उरवासा । जरा मरन डसह उर भारी । हरिय कृपा करि मोर मुरारी । कोटि कलपन मतदश स्वामी । नमउं अर्थप्रदजन अनुगामी । बार

२२
में
८५
65

वार विनवौं नेंदलाला। देहु जोनि मोहि जौन कृपाला। तहेंान तव समरण विसराई। रहै प्रीति तव चरन कन्हा ई। दोहा। मैं जहें जहें निज करमवस भ्रमहु नाथ संसार। वहहें भमर इव लभत निन तव पद पदम सरा व २४। टीका। पिताव कहताहै कि जैसो तुमारी हे कृपानिधान हे वासुदेव भगवान जैसो तुमारी हे संख चक्र गदा पदम के धारने वाले जैसो तुमारी हे मुकुंद हे मुरारी हे पापी जनोको उद्धारनेवाले हे अकलंक

मलों के प्रक्षालन करने वाले सूरज हे शिव ब्रह्मादि देव
ताओं करके पूजित किये हुये हे सर्व जगत के सुखदाय क
जैसे तुमारी हे अनेन्त हे संतों के सहायक हे गौरीवल्ल
भ पृथ्वी की रक्षा करने वाले हे निरधारों के आधार
हे दीन जनों के दुःख हरकरने वाले हे भगवान तुम कैसे
हो जो तुमारे स्मरण करनेसे कोटि जनम के पापजो
हैं सो सब छूट जाते हैं अब कृपा करके मेरे को आप
ने चरनों का सेवक जानकर हे दीनबंधु दास के दुःद

ऐसे वास कीरिये जरा जो वृद्धपणा मरणरु जो मरन इरूभारी
डुखमेरे सब कृपा दृष्टी करके हरिये हे दीनानाथ तुम
कोटि कल्प वृक्षके समान अपने दासोंके मनोरथ सिद्ध
करनेको सामर्थहो अबमेरी बार बार यही प्रार्थनाहै कि
मेरेको संसारमे जो जोनी प्राप्त होवे तिस जोनीमे भी ना
थ तुमारा स्मरण मेरेको रहे और मै कर्मके वश ज
हां जहां भ्रमता फिरूं तहां तहांही तुमारे चरणकमलों
का भ्रमरे के समान लोभी बनारहूं २४ ॥ चौपाई ॥

मरन काल मोहि देवकि लाला । बिसरहु तुम न दीन प
ति पाला । अधम पिसाच पतित लषि मोहू । दीनया
ल निजन जिय नछोहू । पर पीडन सुभाव मम मा
नो । कृपासिंधु सरणागत जानो । जन अपराध छ
मा करवेको । तुम सामर्थ नाथ जग एको । पतितो स
रन हारिका विलासी । तुमहिं लाज अब होयन हा
सी । जस जानिये तस कृपा न केन्ह । राखिलेउ भवसा
गर सेतू । अस कहि मनुज प्रान उरधारी । सुमरन

२२
भ॰
५८

(67)

जदुपति दीन उधारी । साधि समाधि ध्यान मन ली
न्यो । नासाग्र अग्र अचल दृग कीन्यो । नाम मेंउ पावन
हरि जोई । लाग्यो जपन प्रेतपति सोई । इक चित
अचल आनगति त्यागी । श्रीपति चरन कमल लव
लागी । मानहु भयो प्रेत पाषाना । छल बल कपट
छूट बिसराना । प्रेतनाथ अस दसा निहारी । भये पा
य दृग कमल सुखारी । दोहा । भे अचरज बस स्याम ह
न मन आनंद सरसाय । इही कीन्यो दृढ भक्ति मम

डरमति देषविशाय ।४६। टीका । फिर पिसाच कहे
नाहैं कि हे दीनयाल देवकीके लाल तुम मेरेको मरने
के समयमे हृदयसे विसरो नहीं और हे कृपानिधान
मेरेको तुम अधम पिसाच और पापी जानकर अपनी
दया को ना त्यागो ऽह मेरा परपीडन स्वभाव जानकर
अर्थात् परपुरुषको डरवेदेने वाला विचार कर प्रभू तुम
अपनी शरणमे राखो क्योंकि दास जनोके अपराध
क्षमा करनेको तुम भगवान सामर्थ्य हो हे हरिका

२२ भं०
६८
68

विलासी मैं तुमारी शरण पड़ा हूं अब मेरी लज्जा तुमको
होवैं है जैसे जानो तैसे ही दीनको राखलेवो ऐसे कहिके
र मानुष्यकी आंन अर्थात आंड़ा गलेमें डारकर जड़ु
नाथ भगवान को स्मरने लग जाता भया और समा
धी लायकर ध्यानमें जुड़कर नासिकाके अग्रभागमें दृ
ष्टीको अचल करलेता भया भगवान के नामका पवि
त्र मंत्रजोहै सोई स्थित होयकर अनपती जपने लगा औ
र सबके भरोसेको हृदयसे त्यागकर श्रीपतीजो भगवा

न हैं तिनके ही चरन कमलों मे मनको जोड देता भया स

व छल बल कपटको त्याग कर श्रेन जो है सो मानो पाषा

ण वन होय गया तब तिसको ऐसी दशा देखकर भग

वान कृपानिधान के नेत्रों मे प्रेमरूपी जल भर आया औ

र आनंदके वश भये हुये भगवान आचर्ज होयकर क

हने लगे कि देखो इस पिसाचने दुर्बमती और द्वेषको

त्याग कर मेरी कैसी दृढ़ भक्ती करी है । २६ । चौपाई ।

मोर नाम निस बासर माही । करत सुमरण आनगति

२२
मं
६५
69

नाहीं। मेरोई मिलन ध्यान उरावै। मेरोई अमियनाम
रस चावै। जोजनमांझ पाप इनकीयो। सहजहिं जप
न नाम सब कीयो। ऐनर करन विमल ह्वै गयऊ। मो
र प्रेम अवचल उरछयऊ। अव निज रूप अनूप सुहा
वा। इन्हिके उचित दिखावन आवा। काहूके कछुनहिं
न निहोरा। अधम उधरन नाम जगमोरा। अस कहि
दीन वंधु जदुराई। कौनक प्रेम पतित उरजाई। निज
अनरूप रूपमन हारू। दीन दिखाय दीन दृगवारू॥

२८

सुंदर स्याम नाम सर सनन की। सोभा अपर स्याम मन चन
की। संख चक्र वनमाल विराजी। गदा पदम पद नूप
र बाजी। पीत वसन उनि दामनि निंदा। कंच कल कुटि
ल मनउ अलि हेंदा। कंभ कंठ लोचन जल जाता। भृ
कुटि वंक छवि धनुष निपाता। अधर बिंब सुक निंद
रन नासा। भाल तिलक श्रीखंड प्रकासा। वर स्कीट
कंचिन मणि मंडित। भुज आजान मान बल खंडित।
उर विसाल छवि जाय न वरनी। चितवनि चारु मुनिन

२२
भं

मन हरनी। बदन प्रसन्न गरुड प्राहहना। किमि उपकर
ऊं कथन मति मूला। भृकुटि विलास जास संसारा॥
जीवचराचरके आधारा। प्रस अनूप हरि रूप निहारो
प्रतसफल निज जनम विचारो। इकपिन प्रबल समा
धिजूडाना। तजोन हरिपद पंकज ध्याना॥ दोहा। जब
तें मोहि उपदेस किय संकर कृपा अगार। तबतें मैं कीयो
विविध जतन अनेक प्रकार। २७। टीका। भगवानक
हते हैं कि इह पिसाच और सबके भरोसे को त्यागँर रागी
क

दिन मेराही स्मरण करताहै और मेराही ध्यान और मेरेही
मिलनेकी प्रीति वाला और मेरेही नामका अमृतरस पी
वता रहताहै इसने आजतक जन्मांतरोंमें जो पाप कियेहैं
सो तो इसके नाम जपते जपते सब सहजेही क्षीन होयगये
हैं मेरे भजनके प्रभावसे इसका अंतःकरण अर्थात हृद
य भली प्रकार निर्मल होयकर रोमरोममें मेरा अचल
प्रेम जोहै सो व्यापत होयगयाहै अब इसको मेरे अनूप
रूपका अवश्य दरसन होना चाहिये इसमैं कोई किसी

का निस्तेरा नहींहै अधम उधारन नाम मेरा सभ जगतमै
प्रसिद्धहै ऐसे कहिकर दीनबंधु जदुनायक नरतहीं ति
स महा पापी प्रेतके हृदयमै जायकर अपना अदभुत
रूपजोहै सो दिखाय देतेभये सो भगवानका कैसा रूप
और ध्यानथा कि नामरस जो नील वरनका कमल तिस
के समान शरीरकी आभा फिर कैसी शोभाथी कि जैसे
नील वरनका बादर होताहै और संख चक्र गदा पदम
करके अंक पाऊंमै नूपर जो झाजरी सो शोभादेतीहैं वि

जलीको लज्जा देनेवाले पीतवस्त्र और बडे मनोहर कुंड
लों वाले श्याम केसकि मानो भ्रमरयोंका समाज है
कंठ हुआ बैठाहै शंखवत ग्रीवा जोगला और कमलों
की छबीको हरने वाले विसालनेत्र वडी वंक भ्रकुटी
कि मानो धनुषकोभी लज्जा देतीहैं बिंबजो कन्दूरी
फल तिनके समान अधरोंकी शोभा शुकजो तोता ति
सको लज्जा देने वाली सुंदर नासिका और मस्तकमे
चंदनका तिलक तैसेही शोभाकरके युक्त कंबिन और

२२
भं
८२
72

मणियोंसे खचित भयहुआ माथेपर मोर मुकट और ख
ल जो उसहैं तिनका मान हर करने वाली लंबी भुजें ह
दय बडा विशाल अर्थात चौडा नेत्रोंकी दृष्टीजोहैं सोमु
नियोंके मनको हरने वालीहैं नैसेही प्रसन्न मुख औ
र गरुडके सवार नारवसिख छबीके धाम ऐसे भगवा
न जोहैं तिनकी उपमा कहांतक कथनकीजावे नि
सके कहनेको कौन सामर्थहै २ इहसंपूर्ण संसारजोहै
सो तिस परमात्माकी भृकुटीका एक विलासहै और

२१

सोई भगवान चराचर जीवोंके आधार हैं इसप्रकार ज
गन नाथका रूप अनूप देखकर मैंने अपने जीवने
और जनम को सफल जानताभया एकथ्यिनहोकर
समाधीमैं लीनभयाहूआ भगवान के चरन कमलके
ध्यानको त्यागतानहीं है कहताहै कि जबसे मेरेको
शंकर देवने उपदेस कियाहै तबतें मैंने भगवान के
पानिध्यानके दरसन के निमित अनेकही यतन किये
हैं ॥२७॥ चौपाई ॥ अस सरूप नहिं परसो निहारी।

जथा विलोकौ आज मरारी । अब नकवङ्ह दग पटिल
उगारङ्ह । सदारूप हरि हृदय निहारङ्ह । यातैं अधिक
आन सावनाहीं । देखि अदेखि पैर हियमाहीं । प्रेमप
योगिथत मन लीना । मनमोहन हरिमूरति कीना ।
हरष मगन रोमांचित गाना । बारबार दग बारि वहा
ना । निरषि निरषि छवि जड कल वेह । उरन समान
पिसाच अनेह । निरत निरंतर ध्यान भगवाना । असप्र
कार जब जाम सगाना । मोद मगन नहिं नैन उघारा·

दीन नाथ तब हृदय विचारा । जब लग मम सरूप उर लोके
तब लग नैन उघारन कीके । तौते अब निज रूप दुरैये । या
के अचल समाधि जु दुरैये॥ अस विचारि उर दीन दयालै ॥
निज वपु लोपि लियो तत कालैं । सो स्वरूप प्रभ आनंददा
ई । उर न लख्यो जब भेत नशाई । चौंकि उठ्यो जग नैन उ
घारी । चहुं कित चकृत लग्यो निहारी । मानहु स्वपन
भयो भ्रम भारू । कहि न सकत दुख बढ्यो अपारू । बार
बार अस करत विचारी । कहां गये मम हृदय विहारी ।

लागयो विकल विलोकन नाहीं। लख्यो वैठ मन माखे जउ नाहीं। दोहा। जथ्याल लख्यो हिय माहि घन स्याम रूप सुखदान। जथा अनघ भो हगन पथ प्रेतनाथ के भान ॥२८॥ टीका। परंतु ऐसा सरूप मेरेका दृष्टीमें नहीं आया कि जैसा मैंने आज देखा है अब मैं नेत्र कबी नहीं खोलूंगा इस भगवानके रूपको हृदयमें सदैवही देखतारहूंगा इससे अधिक जगतमें और कोई सुख नहीं है क्योंकि जो अदेख भगवान थे सो हृदयमें देख पडे हैं ऐसे प्रेममें

मगन भया हूआ पिसाव मानो भगवान्की मनोहर मूरती
ने मोहित कर दियाहै हरषमे शरीर पर रोमांच उठ खड़े
हूये और नेत्रोंसे जल वहता हूआ वारनहीं लेता जङ्गल
के चंद्रमाकी छवी देख देख कर हृदयमे आनंद नहीं
समावता ऐसे निरंतर करके भगवान के ध्यानमे लीन
भयेको जब पहरभर वीत गया और आनंदमे मगन भ
ये हूये ने जब नेत्र नहीं खोले तब दीना नाथने हृदयमे
विचारा कि जब लग मेरा सरूप इसके हृदयमे है तब ल

सु० भ०
८५

75

गाइहु कैसे नेत्र उघाडेगा तो ते अब मै अपने ह्रूपको छिपा
के और इसको निसो अचल समाधीमे जगाऊं ऐसा विचार
करके दीन बंधने ततकाही अपने सह्रूपको लोप कर लि
या जब धनराजने सो सह्रूप भगवान का हृदयमे नही दे
खा तरतही दोनो नेत्र उघाड करके चौक पडता भया औ
र आचर्जके वश होय कर चारो पासैमे देखने लगा पडा हृ
दयमे विचारता है कि इहमेरेको कोई स्वपन भया है किंव
तत है ऐसा कलेश आयकरके आपत भया कि ऊक्क क

थन नहीं कर सकता बार बार यही कहता है कि वे मेरे हृ
दय मैं निवास करने वाले घनस्याम कहां चले गये हैं व्या
कुल होयकरके जो देखने लगा तो वेही घनस्याम सन
मुख बैठे हूये देख पड़े जैसी स्यामसलोनी मूरती को हृ
दय मैं देखता था तैसीही मनोहर मूरती वाले भगवान
प्रेतनाथ अपने नेत्रों के आगे विराजे हूये देखता भया २८
चौपाई ॥ जानि लिये जदुनायक पहू । देवनाथ वृष
भि ध्वज जेहू । मोद मगन तन दसा भुलानी । कहत

ये

२९
११
११

२२
म
७८
76

न प्रेम विकल मुखबानी । जुगल देउ अस मौन रहाना ॥ सुधि संभारि पुनि वदन भुलाना । जै जै जैति त्रिविक्रमदेवा ॥ जैजै सुर समाज मुनि सेवा । जै जै अखिल लोकविश्रामा । जै जै जनमन पूरन कामा । जै मम मुक्तिदान जड नायक । जैजै भक्त संत सुख दायक । अहो भाग मम दीन सहाये । पाय पाय प्रभु मै निजपाये । अस कहि नाचिन लगयो पिसाचा । हरि गुण गान ध्यान मन राचा । देन प्रदक्षण बारहि बारा । प्रेमक चलत प्रेमकी धारा । उर

२५

न समान अनंत अनंह । देखि देखि छबि जदुकुल चंद ॥
मिटि गई जनम जनम की पीरा । बिसु बैदसन माख ज
दुबीरा । बहुरि प्रमोद लीन मन कीने । श्रीपति चरन
चारु चित दीने । दोहा ॥ लाग्यो असतुति करन कल
कमल हरन दुखदीन । जै कूरम जै नर हरि जै बराह जै
मीन । जै धरनी धर सैन कर बरदायक भगवान । जै म
धु कैटभ मद जल बेद चारु सुखदान । जै उदंड भुज
दंड बल चंड खलन दल लीन । जै अखंड मंडन निख

२२
भं.

ल जै प्रमोद प्रद दीन । जैति चराचर नाथ जै जै जगसिरजन
हार । जै हर मानस विमल वर विहरन विदन मरार ॥
जै जै विस्व सहिस्त्र हरि विस्व सघा सरवेज । जैति विमो
चन भारभ्र जैति विलोचन केज । जैति गुपाल कृपाल
जै देवकि लाल लिलाम । जैति चक्रधर खेडगधर जै
ति धनुष धर राम । जैति सरथ रण दमन जै भवन भूरि
के नाथ । जैति सधारन करन सर जैति धरन कटि भाथ·
जै करना भरना जगत जै हरना जन त्रात । जैति कामन

२६

रू भक्तजन जैति स्याम घन गात । जैति उधारन पतित
जै वारन विपति गजिंद । जै तारन मुनि तिय विदत
भै हारन सब द्वंद । जै पावन वामन छलन दलन डेद
उरव दीनँ जै श्री भावन समर जै रावन दलवल लीन । जै
हरि नर जै परस्वधर जै धर नग घनगामि । जै हर भंज
न धनुधर जै जग जनकनि मामि । जै जै रघुकुल क
मल कल उदय अवध मनभान । जै दसरथ जीवन ज
गत जै जै जानकि प्रान । जै मयंक जदुकुल कमल दजै

२२ भ. ७८

78

गोकुल सुखतारि । जै जै पतित पुनीत पय पीयन पूतना तारि । जै भूषन जडवेस वरजन दूषन दमनीय । जै विलास ब्रज वास जै रचन रास रमनीय । जै जै जोगिन हेत उर आरविंद पद ध्यान । जै विहरन हेदा विपुन जै ब्रज बधु सखदान । जै युष्ट बकदारन दनुज चारन धेनु प्रवीन । जैति मल्ल खल कंस बल परषि प्राण हनकीन । जै जै पांडु सहद सखद मद मद मथन मसान । जै जै गावन द्रुपदि पत होत उपत जग जान । जैति प्रजा

मिल पतितन से सब जग जानत श्रैन । तुम नारे क करुणा
यतन सजन सेन सबदैन । मै डुरमति दन डुरिन श्र
ति भ्रगति मूढमद मन । चार विचार नहिना हिन वि
नय नसन श्रमन्य । परद्रोही पावेड पर कपट देभक
र मूल । कौन भन्न वस प्रकट नव भये नाथ श्रवकू
ल । २२ । टीका । नव वेंदाकरन पिशाचने जानलि
ये कि जडनायक भगवान मेरे हृदयमै वासकरने
वाले श्रौर जिनको शंकरदेवने वनायाथा सो पहीं हैं

२२ भ

आनंद मै मगन और प्रेमसे व्याकुल भयाहुआ मुखसे
कुछ बोल नहीं सकता ऐसे दो घडी पर्यंत मौन होरहा
तिसके उपरांत शरीर की सुधी संभालकर बोलताभया
कि जैहो जैहो न्रमारी हे त्रिविक्रम देव हे मनी देवता
उं करके पूजन कियेहुये हे संपूर्ण लोकोंके विश्राम
हे दास जनोंकी कामना पूरन करनेवाले जैहो न्र
मारी हे मेरेसे अधमपिसाचको मुक्ती दान करने वा
ले हे भक्त संतोंके सुखदायक मेरे धन्य भाग हैं जो मै

अथनरसीभक्तचरित्रं।दोहा।अव संकुल सावे
करन कल हरन मोह भ्रमसूल।भक्ती महान
म करहुं कछु कथन मंगल नमूल।भक्ति प्र
वरधन प्रेमप्रद मनभावन मुददान॥जासुसुन
न भव तरन दुष दोष दरन दुर जान।चौपाई
गूरजर देस विदत अभिरामा।तहिमे अजानाम
इक ग्रामा।नागर जाति उजन कुलवाहू।भये
भक्त नरसी अनथाहू।तेसुरव जनमांझ सुहा

२२ भ ८

ये। सुभ सराष्ट्र देसन उपजाये। अति सुभत हा
रा वति नैहीं। षष्ठ जगल जोजन इक ग्रेही। रे
वन सैल ग्रंत मनहारू। सुना नाम विदत ध्रुव
वाहू। तहां निरंत्र कीन निज वासा। वरनित ज
नति जनक गुणरासा। ज्येष्ठ भ्रात जत भामनि
मोहा। आप भक्त निसीक अमोहा। एक दिव
स सेवक जडराई। ग्राम प्रजटन करन गृह आ
ई। कहिस भजावति सन मोहि पानी। देवहवे

बदन कथन अमकीन्यो। थाको विपुल दिवस करेहा। भयोसि आज सफल जग एहा। अम
बकोनि निज बदन प्रवीना। धारन सहत्र नवल कलकीना। दोहा। लोकविलोकन लाग जब
आस कंथ नव पाय। वैठे कमल कपाय तन सक लदेषि विसमाय॥१॥ टीका। अब वउ पवित्र
मनोहर और सुंदर सबके देनेवाला भक्तो का महान मनोहै सो गायन करताहूं कैसाभी

१८
भ
२

महातमहै किजिसके श्रवण करनेसें भगवत
भक्तीके सहित हृदयमै ज्ञानध्यानकी अधिक
ताहोतीहै उद्धोउनामा संदर ग्रामविखें विष
यविकारौंसें विरक्त हरव्यास नाम करके उजा
गर एक गृहस्थी ब्रह्मणभक्त होतेभये सो एक
समय घरसे उदासीनहोयकर स्त्रीके सहित
श्रीवृंदावनके दरसनको चलपडे तो राजाने
तिनके राखनेके लिये यद्यपि बहुतही यतन

ह भ्रम आदि सूल कलेशों के हरने वाला सभ
मंगलोंका मूल भक्तीका महातम जोहै सो क
थन करताहूं इह कैसाभी भक्तीका महातम
है कि भगवान की पवित्र भक्तीके हीं देनेवा
ला आनंद और प्रेमको अधिक करनेवाला
मनका भावना कि जिसके श्रवण करनेतें स
वे दुख दोष और पाप सहजेहीं नास हो जा
तेहैं कहतेहैं कि संदर गूर्जर देशमे अजाना

२२
भ०
३

म करके एक गाउं होताभया तिसगाउंके वी
च नागर जातीमैं ब्राह्मणोंकी कुलविषे नर
सी नामकरके एक भगवानका भक्त होता
भया [illegible] सोसर्वलेजनमो विषे राष्ट्र देशों
मैं विचरताररहा अवजो द्वारिकातें आठजो
जन एक रेवतनामा परवत तिसके निक
ट वडारमणीक सुनानगर जोहै सो भक्त
तिसमैं वासकरताभया मातापिता काल

३

सदगुरुतें सीख्यो निरधारा। अर्थ शास्त्र सभ
जथा प्रकारा। रह्यो वचित्र वीर्य अस नामा।
अग्रज भ्रात भूप मतिधामा। गुण प्रवीन रत
शील सनेहू। किये ननास दार परिग्रहू। का
शि राज निज सुता महाना। रच्यो स्वयंवर वे
द विधाना। देस देस कर नृप नृपराजू। आये
निज निज साजि समाजू। अस सुधि पाय भी
ष्म भट भाना। संष वजाय चल्यो चढ़ि जाना।

१८
भ.
२

न्रपतें सरव तहां सुहावा। निज निज वर कुंव
रिन मन भावा। जाको ललित सुयं वरमाहीं
आय गये भीषम भटनाहीं। तहां सुयंवर दे
खि नरेसा। अरुन नैन रिस किये वसेसा। वट
न प्रचारि भनो भट वाना। निदरि हमहिं अस
कौन महाना। जो न्रप कुंवरिन कहं लै जाई। मे
दे खहुं तहि समर वडाई। अस कहि भीषम दे
व मन मेडा। किये धनुष टंकार प्रचंडा। दोहा।

2

२

उतनें वीर विसाल बहु समर सुभट महिपाल।
सके सहारि न भीषम रिस उठलर न ततकाल ॥१॥ टीका। नाभादासजी कहते हैं कि अब
श्रीजदु नंदन भगवान जोहैं तिनके आनंद
और कल्यानके देनेवाले चरन कमल हृदय
मे धारन करकें संत भक्तोके पवित्र गुण गण
जोहैं सो सुभवानी से मती अनुसार कछु।
गायन करताहूं इह संतोका सजसागगुणा ३

१८
भ०
३

बाद कैसा भी है कि सुमतीके अधिक करने वा
ला कुमती और पापोंके नाम करने वाला सं
सारभय और भ्रमके अंधेरेको हरनेवाला मा
नो प्रकाशमान सूर्य है ऐसे संतभक्तों के चरनो
को सीस नायकर भीषम देवजीकी मनोहर
और सुणनेसे कानोको सुखदेने वाली गाथा
जो है सो मनमानसे प्रीती पूर्वक ईहांगायन
करताहूं कहतेहैं कि जिसप्रकार भीषम जीका

३

जनम हुआहै सो तो महाभारथमैंब्यासदेवजीने भ
ली प्रकार सब कथन कियाहै ईहां हृदयको आ
नंद देनेवाला प्रसंग कुछ संक्षेप करके कथन क
रताहूं क्योंकि बाल अवस्थामें हीं तिनकी सनत
नोंके पूजन से वन करनेमै रूचीरही और तैसे
हीं धर्ममै प्रवीन होकर सज्जनो के सुखदेने
और प्रजाके पालने मै भी प्रीती रही सो भीष
मजी एक समय धर्म शास्त्र की विधी जानने

१८
भ.
५

के नमित्त मुनी पुलस्त जीके पास आवतेभये
तहां तिनके आगे अनेक प्रकार कर नीतीके
सहित धर्म विधान जोहैं सो भली प्रकार सब
सीखलिये तब भीषम जीके बडेभ्राता बचित्रवी
र्ज नामा जो सील सनेह और गुणोंमे परम प्र
बीनथे सो गृहस्थमे रहितथे अर्थात विवाह न
हीं कियाहुआथा तिसी समय कासीकेराजाने
वेदके विधानसे अपनी पुत्रियोंका एक महोत्स

यंवर रचाया तहां देस देस के राजे और महा
राजे अपना अपना समाज सजाय कर सब
चले आवते भये तब इस स्वयं वर की सुधी
पाय कर सूर वीरों मे प्रधान जो भीषमजीथे
सोभी बडे तीव्र वेगवाले रथपर चढकर से
ख बजावते हुये तहां को चल पडे और ति
स स्वयं वर मे राज कुमारियोंने तिनके जाने
से पहिलेही अपने अपने मनको भावते

१८ सुंदर वरजोड़े सो जा चलिये इतनेमें भीषम
भ जीभी तहां आय पहूंचे और स्वयं वर भये हू
५ ये को देखकर परम कोपसे लालनेत्र करले
ने भये और बड़ी उग्रवाणी [illegible] करके सूरवीरों
की रीतीसे ललकार कर कहने लगे कि ऐसा
कौन वीर जगतमें सामर्थ्यहै जो हमारे को नि
दर करके ईहांसे इन राज कुमारियों को लेजा
वेगा मैं तिसको रणमें बड़ाई और बल देखूंगा।
५

इसप्रकार कहिकर भीषम देवजी वीर उनमा
ह्से भरेहुये धनुषका टंकार जोहै सोकरते
भये और उधरसे बडे बडे भारी राजा रणमे।
सूरवीर भीषमजीके कोपको सहार नासके
ततकाल लडने के वास्ते उठ खडे हुये। १॥
चौपाई। लागण होन परस्पर जुजा। वीर धीर
रण मे दनि कुजा। दहुंन ओरतें सायक आते
फेंकरत व्याल विसष मनजाते। छुटे विषम

१८ भ०

6

सर भीषम नाहो। मूर्छितगिरे विपुल नरनाहो।
बहु घायल रणपरे प्रवीरा। भये हनन बहु वि
कल अधीरा। दोहा। असप्रकार न्टप सकलन
हं जीति भीषम भट नाज। न्टप कुवारनकहं
जानधरि फिरे समरि जहराज।२। टीका। नव
परस्पर सूर वीरोंका वडे क्रोधसे रण भूमीमे
जद्धजोहै सो होनेलगा दोनो ओरनें वाण आ
वनेहुये ऐसे प्रतीत होते हैं कि मानो विषके

६

भये हुये सरप फुंकारे मारते चले आवतेहैं त

हां भीषम जीके महां कठिन बाण जो छूटे तो

तिनके बहुत सूरबीर मूर्छागत होगये और

अनेक घायल होयकर पृथवी परगिर पडे

बहुत मारे गये और धीर्जको छोड कर सब

व्याकुल होयगये इस प्रकार बीरोंमे प्रधान

भीषम जी तहां संपूर्ण राजाउंको जीतकर औ

र तिन राज कुमारियों को रथपर बैठाय कर

१९ भे० ८

जडनाथ जीका समरण करने हूये अपनी रा
ज धानी को फिरि आये। २। चौपाई। विजय समाज
स जग पाय महोना। आय भवन निज समति
प्रधाना। अंबालिका सता नृपजोई। दीन्योजेष्ट
भ्रात कहं सोई। अंब अंका दीन सथीरैं। हरषि
देव व्रत हसरवीरैं। तहां अंबके वचन अलाई।
मैलीन्यो स्वयंवर पाई। अब हूसर इह काहू अ
नीनी। अमनहि गिरा सन नव मीनी। भीषम

व

८

देव नहीं सके सहारे। जान्यो अहै अधम वि
भ चारी। नजिदीन्यो करि करि त्रिसकारा। जा
हु जाहु जिन वरय नमारा। यद्यपि निज अ
चित कहं नासा। लमहु नाथ बहु वदप्रका
सा। तद्यपि भीष्म दें नहीं माने। विठ्ठल कहे
पर विठ्ठल विमाने। तव निरास भामनि अकु
लाई। निज पित मात भवन चलि आई। रा
षी तिनहूं न आपन गेहू। आई वहुरि भीष्म

व

भी॰
८
4

पैनेहू। नमत जोरि जुगल करदीना। आवतवि
नय वदन निजकीना। दोहा। राख्योमोहि नमात
पित नाथ छिन कनिजगेहु। आई गिरा स्वत व
हुरि मैं तमपैं दीन सनेहु। २। टीका। नव संदर
जे और सुजस जगत मे पायो करे समती
प्रधान भीष्मजी जोहैं सो अपने घरमे आय
प्रापत भये और अंबालिका नामा राज कुमा
री जोथी सो अपने वडे भ्राता विचित्र वीर्य। ६

मथुरामै लेआये तिस समय तहां हंस भग
वान सुंदर रास लीलामै लीनहो रहेथे ति
नको देखकर शंभू विचार करने लगे कि
ईहां स्त्रीयोंके समाज मै इसको किसप्रकार
ले जाऊं ऐसे विचार कर कौनकी महादेव
तिसका स्त्रीभेष बनाय कर और हाथमै दी
पक पकड़य कर अपने साथ लेजाने भये २
चौपाई। तहां जाय हर संजन दाया। सनतकुम

११
भ
॥

क अस वचन सुनाया। इह राधा इह कृस्न
मुरारी। भक्त हेत संसृति अवतारी। इनहिं
छाडि मोहि मानस प्यारा। आनन सुनहु भ
क संसारा। राधा कृस्न मंत्र जगपावन। कर
हु निरंत्र रटन मन भावन। सरव काम प्र
द मंगलमूला। हारन उरन दोषडरव सूला
सुनि अस शंभु कथन जडताई। बोले वदन
वचन ममकाई। शंकर दीप धरानव पढ़ ॥
॥

कवन करहु मोहि कथन सनेहू। तव गरी
स अस वदन उचारा। दीन नाथ इह भक्त
तुमारा। मैलावा प्रभ शरण तुमारी। करि
निज कृपा हरि गिरधारी। सस्तीत करहु
कृतार्थ एही। सदा देव तव भक्त सनेही।
शंकर कथन सुनत भगवाना। बोले मधु
र वचन हित साना। शंभु तुमार भक्त प्री
यमोरा। मोर भक्त जन निंदक तोरा। सोहं

२२ भ० १२

पी मोहि प्राङ्ग समाना। भोगत घोर नरक
सठनाना। विष्टा क्रिमी होत श्वनिताह्न।
होईहैं श्वेन ग्राम वाराह्न। त्वचित रक्षत उ
रिवन जग सोई। भ्रमत रहत दारद बनहो
ई। यातैं संसृति भक्त नमारा। तवसमान
मोहि मानस प्यारा। तव श्रीकृष्ण देव हरषा
ये। दीपधरनि कल रूप बनाये। नरसिभक्त क
हेसंजत दाया। दीननाथ श्रम वचन अलाया।

भक्त सरूप मोर सम भेषा। इहनव जवन
हगन भरि देखा। लेहु निरंत्र ग्रंथ निजधारी
मोर नृत्य गुण गीत उचारी। विचरहु अभ
य भक्त संसारा। नमहिं सुजस सुख सब
व प्रकारा। लोक प्रलोक सिद्ध सब तोरा।
संतत वचन भक्त वर मोरा। अहजब वन
हिं काज कछु तोरे। करहु सुमरण सुजन न
व मोरे। मैं भेषांत्र सिद्ध सब तोरा। कारज।

२२ करहूं भक्त प्रण मोरा। दोहा। सुनि नरेसी

भ सुम वचन कल कुसदेव सुखदान। खुले

१२ नैन भयो निकट थिर गोप नाथ भगवान

13

सुमरत गाथा कुसमन शंभु चरन सिरनाय

चल्यो भक्त श्रीमात्र कहं भक्ति प्रीति सरसा

य। १। टीका। नव नहो जाय करके शंभू भ

गवान वडी प्रीतीसे तिसको कहने लगे।

कि हे भक्त देख इह रायिके और कुस प

मानमाहैं कि जिनोने भक्तोंके नमित्त जगतमें
अवतार धारन कियाहै इनको छोड़कर संसा
रमे मेरेको और कोई प्यारा नहींहै तोंते तुम
राधाकृष्ण इह परम पवित्र मंत्र जोहै सोई
निरंतर करके रटनकरो अर्थात जपा करो
कि इहमंत्र सर्व सत्वोंका मूल और सर्वका
मनाके देने वालाहै इसके जपनेसे दोष उ
ष और दारिद्र सब हरहो जातेहैं ऐसे शंभ

२२
भ॰
१५

16

का कथन सुनकर कुंसम मार्वेसे नमस्काय
कर कहनेलगे किहे शंकर मेरेका कहो जो
इह तुमारे साथ दीपक पकडे हुये कौन है त
व महादेव कहनेलगे किहे दीना नाथ इह
तुमारा हीं भक्त है मै इसको आपके चरनोकी
शरण मै ल्याया हूं हे प्रभु तुम सदैव दीनोके
सनेही और परम हितकारीहो कृपादृष्टी क
के इसको संसारमे कृतार्थ्य और ॥

१५

सफल करिये तव शंकर की वाणी सुनकर्के
भगवान कृपानिधान मधुर वचनोंसे कहते
भये किहे शंभु तुमारा भक्तजोहै सो मेराही
भक्तहै और मेराभक्त जो तुमारा निंदक है
सो मेरेको द्वेषी शत्रुके समानहै और दुष्ट
घोर नरक भोगकर और विष्टाका कीड़ा हो
कर अंतको ग्रामका सूकर अर्थात सूर बने
गा और तृषा चिरवा कर्के दुखी भयाहूआ

श्री
भ०
१५

महा दारिद्री हो कर जगत मे भ्रमता रहेगा
तोते तुमारा भक्त मेरको तमोर समान नही
मनमे प्यारा है ऐसे कहि कर हासभगवान
तिस दीप धारनीका रूप वनाये हूये नरसी
भक्तको वडी प्रीती और कृपा दृष्टिसे कहने
लगे कि हे भक्त रह मेरा सुंदर सरूप जो
तूने नेत्र भर कर देखा है अब इसी को निरंतर
करके हृदयमे धार्न कर्ले मेराई न्तम गुण और

१५

15

मेराहीं कीर्तन गायन कर कर संसारमै अ
भय होय कर विचरता रहो तेरेको सर्वका
ल सुजस और सुखही रहेगा और तेरा लो
क प्रलोक भी सब सिद्ध हो वेगा हे भक्त इह
मेरा वचन सत्य करकै है और भी जब तेरेको
कोई कारज वने तो मेरा सुमरण करना।
मै तैसाही भेष धार करकै तेरे कार्जको सरण
करहेगा इहमेरा सत्यप्रण है इसमै कुछ संश

२२
भं०
१६

16

य नहीं इसप्रकार भगवान भक्त सुखदानका
वचन सुनते ही नरसीके नेत्र तुरत खुल
गये तब अपने आपको तैसेहीं गोपनाथ
भगवान के सनमुख स्थित भयेहुये दे
खताभया हृदय मै आश्चर्ज मानकर राधा
कृष्णको सुमरता हुआ महादेवके चरनोप
र सीस नायकर और भक्ती प्रीतीवाला हो
यकर फिर भक्त प्रधानजोहै सो कहेंगे गमा

वीको लज्जा देने वाली मनोहर मूर्ती जो है सो आज
नेत्र भर कर देखूंगा अब तक शंकर भगवान के च
रन कमलों को सेवते सेवते बहुत काल बतीत होग
या है और भोगों को भोगते भोगते काया को रोग भी
लग गया तो भी जोग अजोग जो है सो कुछ जानत
ही पड़ा अवस्था के दिन हु थेही बीते चले जाते हैं ख
बरत जो पत्र हैं तिनका कोई खोज ही नहीं मिला आ
ज दया करके और दीन विचार करके महेस प्रभू ने

मेरेको गुनसे हिनके देनेवाला उपदेस जोहै सोदियाहै
नोतेसुखमे अभय होयकर और शीघ्र जायकर गौरीके
नाथके नाथ श्रीजडुनाथ जोहैं तिनको देखूंगा सोक
पतिथान कैसेहैं कि संसारका भय हर करनेवाले
जिनके कोमल चरन कमलहैं और सदैव दीनोंकेहि
तकारी सुंदर मोर मुकटधारी मुरारीभगवानहैं मेरे
आजवडेही उदय भाग्यहैं जोमें ऐसे सर्व सोचोंके हर
करनेवाले देवकी लालका मनमथ नेत्र भरकर दरस

रह्यो एक लौकिकविवहारी। हमर भक्ति नि
रत भगवाना। तासु वदन अस वचनवखा
ना। जो मोहि हास दरस सब दाई। भक्त
लषु नव देह कराई। तो इह सहस मद।
जोई दीना। मै नलेहु पुन भक्त प्रवीना। न
रसो सुनत तासु अमवानी। सत्य वचन।
निज वदन वखानी। आवास दन हरष
उरछाया। विरचि पाक नैवेद लगावा ॥

११
भ०
६२

बहुरि संत सजन समुदाई। प्रीति भक्ति ज
न दीन निमाई। नवनें नज्यो भक्त बड भागा
गायन नहि किदार कलरागा। रह्यो निय
म अस नाम सुहावा। जब जब हरिविर रग
रह गावा। तब तब कृपा सिंधु भगवाना।
जानि नाम निज भक्त प्रधाना। सुमन माल
निज सजस प्रदारी। ताकर देत ग्रीव प्रभु
डारी। पैनहि टरहि अगो चर होई। करहिं दै

62

व अस कौतक सोई। अव नकरहिं निजव
दन सहायन। भक्त कि दार राग कलगा
यन। होत प्रसन्न नत्रिभुवन राई। परत न
तहि माल ग्रीवँ आई। जरजन आय मरम अस
नासा। जाय भूप सन हेष प्रकासा। नरसी
ग्रीव प्रसूनन माला। परत जवन नृप दी
न दयाला। काचे सूत्र रचित जष्ठभारी।
देत ग्रीव हरि मूरति डारी। तेअस भाव प्र

२२
भ
६३

63

५६

सूनन पाई। टूटत परहिं ग्रीव नहि आई ॥
आज कपट सठ विदत प्रकासा। प्रीत्या लेहु
भूप अवनासा। जो सरव सम टूटत आई।
परहिं माल नहि ग्रीव सुहाई। ताकर भक्ति
सत्य सव जानो। नतर अनर्थ कपट प्रभु मा
नो। तव नरेस नहि लीन बुलावा। अस प्र
कार मन दीन सुनावा। मोर देव मूरति क
र आगे। करहु नृत्य गायन अनुरागे। जो सव

६३

ज परहिं ग्रीव तब ग्राई। सोतुम भक्त स्रेष्ट जउ

राई। दोहा। नतर नगर सब लोक इह विदत

हेम तबमानि। सोहिमन भाषत वदन निज

ग्यान ग्यान कछुवानि।।११। टीका। तब तिस

वाणियें की दो स्त्रीयां थी एकतो लोक विवहा

र काजमे प्रवीन ग्रौर भगवान की भक्तीमे

लीनथी सो ग्रानंद पूर्वक नरसीभक्त को

कहने लगी कि हे भक्तप्रधान जोकबी तु

दूसरी

२२
भ.
६४

64

मेरेको हमस भगवान का दरसन कराय देवें
तो इह हजार महाजो तेरेकोदईहै मै फिर
करके नालेङ्गी तब नरसीने स्नान करके
सत्य वचन कहा और हरषसे अपने घर
को चला आया तहां सुंदर भोजन रचाय
कर और प्रथम भगवानको नैवेद्य लगा
यकर फिर भक्ती प्रीतीसे सबसंतो को भो
जन जिमायदिया और अनेक बिनती करी

ई कर करके विदाय कर दिये तबतें तिस

वड भागी भक्तने उस किदार रागका गा

यन करनाही त्यागदिया तिसका इह नि

यमथा कि जब जब किदार रागको गाव

ता तब तब हीं कृपासिंधु भगवान प्रस

न्न होयकर परम रहसके देने वाली अ

पने हृदय की पुष्पमाला जोहै सो तुरत

तिस भक्तके गलेमै डार देतेथे परंत इह

कौतक भगवान लपन होय करके करते थे तिस की दृष्टी मे नहीं आवते थे। सो भक्त अव तिस रागको जो नहीं गायन करता। तिसतें भगवान प्रसन्न नहीं होते और सो माला भी तिसके गलेमे नहीं पडती है तव दुष्ट जन जो थे सो इस भेदको पायकर द्वेष से राजाके पास जायकर कहने लगे किहे नाथ नरसी के गले मे जो पुष्पमाला पड

जातीथी सो लोकाचे सूत्रसे रचीहूई होती
थी वैसीही कपटी भगवानकी सूरतीके
गलेमे डार देता और वे फूलोंके भारसे।
टूटकर तिस नरसीके गलेमे हृयनाटिक
करके आयपड तीथी आज तिस मंदका
कपट जाना गयाहै अब महाराज तिस।
की मीला करलेवो जो सर्व तत्व अर्थात
आगेकी तरह टूटकर पुष्प माला तिसके

गालेमे आयपडी तो तिसकी भक्ती सबसत्य
जानो नहीं तो सब अनर्थ और कपट ही
मानलेना ऐसे तिन द्वेषियों का कथन सु
नकर राजा नरसी भक्तको तुरतनहीं बुला
य करके कहने लगा कि आज तुम मेरे प्र
भुकी मूरतीके आगे प्रेमप्रीतीसे स्तम गा
यन करो जोतो हमारे गालेमे भगवान के
हृदय की माला टूट करके आय पडेगी ।

११
भ०
६६

६६

तो तुम जडुनाथ भगवानके सुरणि भक्तहो

नहीं तो इह नगरके सब लोग अनद तु

मारा देष और पाखंड मानकर मेरेसाथ ।

कुछ और औरही कथन करतेहैं । ११ । चौ

पाई । नरसी सुनत भूप अस बानी । लेनल

लिन वीनानि जपानी । वैठा कुंस भवनक

ल जाई । भक्त स्रष्ट आसन हढ लाई । उर

जन प्रथम पुष्प चुनि ल्याये । पाट सुत्र ह

२२ भ० ६८

फ माल बनाये । जाचिगये हरि मरवति ग्रीवा
जडमति मंद अधम अगासीवा । नवनर
सी स्मरन भगवाना । बीन ननादि मधुर
सुविगाना । लागो करन मनोरम नाना
जगल देह नवनाह समाना । परी नमाल
हूटि नहि ग्रीवा । हरषे देखि सकल अ
ग सीवा । नव नरसी निज हृदय ल
जाना । स्मरण लगो हृस भगवाना ।

(67)

सदा रहे प्रभु पैज रखैया। अब कस हानि देव मोहि दैया। सब करनि मोर सव काज्। भई कृपाल विश्वंभर आज्। भलो सकल दुर्जन मुख नाना। करिहै आज मोर अपमाना। जब नरसी अपमान उचारा। सहि न सके तव भक्त उदारा। इहुनो सदारी न गिरधारी। जन लघुताई नस कहि सहारी। नरसी भेष तुरत धरि लीना। धनि कर

स॰ भ॰ ९८
68

भवन गवन प्रभु कीना। रही सदन तांक
र त्रीय सोई। हरिसरूप अभि लाषत जो
ई। नरसि रूप भगवान सुहाये। तासु व
दन प्रम वचन अलाये। सभेइह मद्दा नि
जलेहो। सोअव मोर पत्र कलदैहो। तासु
लेत मद्दा हरषाई। दीना पत्र करन जउ
राई। दोहा। नसरूप प्रभ देखि हग संभ्र
म कहन उचारि। इह को आन नजान।

मोहि परत नरसिंह वपुधारि ।२। टीका।
तब नरसी भक्त राजाकी ऐसीवानी सु
न कर हाथमैं वडी सुंदर वीना लेकर
तत्काल भगवानके भवनमैं जाताही
आसन दृढ़ करके वैठगया तहां पुष्प ज
न पैहलेही पुष्प ल्याय कर और पाटके
सुतमैं दृढ़माला रचाय कर भगवानकी
मूरतीके गलेमैं डारगयेथे उहां नरसी

भगवान भक्त साव दान को समरकर।
वीना वजाय करके सावसे मधुर गायन
जोहै सो करने लगा इस प्रकार नवनिस
को दोचड़ी वनीन होयगई और माला टू
टकर तिसके गलेमें नहींपड़ी नव उग्र
जन देख करके सब प्रसन्न होतेभये न
रसी हृदयमें लज्जामान होय कर हृस
भगवानका समरण करने लगा कहताहै

69

कि हे प्रभु तुम तो सदैव मेरी टेकहीं राखते
रहेहो अब कैसे हानीको प्रापत कर दिया
मेरी सर्वकी सब करनी और कारन जो है ।
सो सब देम और हासी रूप हो गयाहै अब
सब दुरजन मेरा मखसे नानाप्रकार करके
भला अपजस और अपमान करैंगे इस प्रका
र जब नरसीने मखसे अपमान उचारन कि
या तब भक्त सहायक भगवानसो सहार न

हीसके दीन बंधकी इह तो सदांही रीतहै कि
अपने जनकी लघुताई और अपमान क
बी देख ही नहीं सकते ततकाल नरसींका
रूप धारन करके तिसधनी के घरमै कि
जहां किदार राग गिरवी छोड़ा हुआथा।
आयगये तिस समय तिस धनीकी कोई
स्त्री घरमैं थी कि जो भगवानके दरसन।
की अभिलाषा वालीथी तब नरसी रूप भ

२२ भ ७.

७०

८.

गवान तिस भामनी को कहने लगे कि
हे रुपीले अब इह तुम अपना धन लेले
वो और हमारा टींह देदेवो तिसने तुरत
अपना धन लेलिया और टींह जडनाथ
के हाथ मै देदिया तब धनीको सो स्त्री भ
गवानका अनूप रूप देखकर हृदयमे
भ्रम करके कहने लगी कि मेरेको जा
न नहीं पडता इह नरसीका रूप धारेहुये

२२ भं० ७१

कोई औरहीं है ।।९।। चौपाई । जब पति ताम
सदन निज आवा । सकल मरम नहि दी
न सनावा । वनक सनत मानस विसमाना
रत जन हरन जास भगवाना । सनमुख भ
क पत्र धरि दीना । नरसि विचार देखि अ
सकीना । सर्व होन जिमि दैव सहाया । अ
वहूं कीन भगवन निमिदाया । करत म
नहिं मन दंड प्रणामा । लग्यो करन गाय

न अभिरामा। नेकिदार कल राग सुहावा। भ
क्त मधुर स्वर वदन अलावा। जनहुं शांति
रस पूरण भयऊ। इकटक लोक मौन ब
न रहऊ। सज्जन नृपति सकल विसमाने
मरछित सुधि शरीर विसराने। मानहुं वि
दत महन मनलक्यो। नव हरि समन मा
ल कलहृयो। भक्त स्पष्ट कर कंठ लहराई।
देखत सबन नगन परिछाई। साधु साधु न

११
म०
७२

72

व भूप उचारा। कौन विविध उरजन त्रिसकार। जुग कर जोरि चरन सिरनाई। विनय। नम्र अस वदन अलाई। मोहितें भयो विपुल अपराधु। सदा कृपाय रूप तव साधु। मै अजान कछु सको नजाना। अनवि त् दमहु भक्त भगवाना। अरु इह करहु कथन मोहि काहीं। टूटत माल कंठ तव माहीं। कहि विधि परी भक्त व्रतधारी। तव नरसी

७२

ग्रस कथा उचारी। भूप सनन मानस वि
समाना। लगेण देन संपति मनमाना। ली
नो सो नभक्त वड़भागा। चलेण भवन मा
नस अनुरागा। दोहा। निर नत न्टत स्र
नेक कल गीत नान मल गाय। लगेण।
वसन निज सदन सभ हृदय समीर ज
उराय। टीका। ग्रौर जव तिसका पती व
रवैम ग्राया तिसको तिसत्रीने संहरणे ह

श्री भ० म०

तोन सुनाय दिया तब बनक जो धनीया सो
सुन करके हृदयमें बड़े आश्चर्य को प्रापत
भया और उन्हो भक्तोका भय दूर करने वा
ले भगवान कौनकसे सोटेगा नरसी भक्त
के आगे रावदे नभये तब नरसीने देख क
रके हृदय मे विचार किया कि जिस प्रकार
भगवान आगे सहायता करते रहे तैसेही
कृपा सिंधुने अबभी कृपा करीहै ऐसे सोच

७३

कर् श्रौर मनमें बार् बार् दंड प्रणाम कर के
र तिस परम प्यारे किदार रागको प्रेम पू
र्वक बड़ी मधुर स्वरसे गायन करने लगजा
ता भया तब इस प्रकार् गायन किया कि
मानो श्राय करके शांतीरस परिपूर्ण होय
गयाहै सब लोग चित्रवत् इकटक हो क
कर मौन हो जानेभये श्रौर राजाभी श्रावजे
को साम होयगया सब कोई मूर्छा गतहो

२२
भ॰
७४

कर अचेत होय गये मानो मोहन जो मंत्रहै
तिसके वशभयेहुये मोहित होरहेहैं नव न
न काल भगवान की मूरती के हृदयसे पु
ष्पमाला टूटकर सबके देखतेहीं नरसी
भक्तके कंठमें आय पडी इस अद्भुत च
रित्रको देखकर राजा साधू साधू उचारता
हुआ भक्तसबकी अनेक शलाघा करने
लगा और उरजन जोथे तिनको सिरसको

७४

र करके निकाल देताभया तिसतें उपरांत
हाथ जोडकर और चरनो पर सीस धर क
र दीनतासे बिनती करने लगा कि हेभ
क प्रधान मेरेतें बडाभारी अपराध होय।
गयाहै परंतु तुम संत उदार और दयाकी
मूरती क्षमाही करने योग्यहो मै असाधु
और अज्ञान था तुमारे प्रभाव को कुछ
जान नहीं सका हेभगवानके प्यारे भक्त

मेरा यत्न चित और अपराध जोहै सो तुम
दया करके क्षमाकरो और मेरेको अपना
दास जानकर इह वृतांत भी कहो कि भ
गवानके हृदय की पुष्प माला टूटकर
तुमारे कंठमे किस प्रकार आय पडीहै ।
तब नरसी भक्तने संतो के निमित जिस
प्रकार किदार रागको धनी के चरनमे ध
नके बदले रखाथा सो सब प्रसंग सुना

य दिया राजा सुनकर वडे आचर्ज को प्राप्त
हूआ और भक्त सहूको वहुत धन संपती
जोहै सो देनेलगा तव भक्त प्रधानने राजा
का दियाहूआ धन कुछ भी अंगी कारनहीं
किया तिसको आनंदसे आसीर वाद देकर
अपने घरको चलाआया तहां रात्रीदिन नि
त भगवानके आगे अनेक प्रकारके नृत्य
और गायन करकर भगवानको हीं सुमर

२२ भं ७६

ना कृष्णा काल वतीत करने लगा। ६। चौपा
ई। समय पाय इक धनी सुजाना। काहू न
गर कर रहो महाना। तहि कन्या वर देख
न हेत। अपरो हित निज बोलि नकेत। ना
म विविध विधि वदन सिखावा। वरसंपति
वंत होहिं सुहावा। अरु कुलीन विद्या व
नवाई। सकल सुशील मात पित भाई।
अस प्रकार वरदेखि सुहावन। तव निज

७६

करहु सपदि इत आवन। धनि न देस अपरोहि
न पाई। आवा नगर भक्त जदुराई। लोगन म
न अस सकन लागा। को इतनगर धनक ब
ड भागा। नव उरजन संजत सन माना। दी
न्हा नरसि नकेत पढाना। नेधनइअ सुंदर म
नवारा। आवा विप्र सनत नहि हारा। ताहि
विलोकि भक्त हरषाना। यथा योगय की
न्हा सनमाना। कारि सव भोजनादि सिवका

ई। कहिस भक्त अस वदन सुलाई। ईहां अग
मन कवन हित कीना। तव बोल्यो अस विप्र
प्रवीना। कन्या हवित असक धनि गेहा। तहि
हित वरो बाल तव एहा। तव नरसी कर जो
रि वखाना। इह न उचित मोरे मनमाना। मै
दारदरत दीन इका गर। ते धनद्य सब लोग
उजागर। इह न उचित संबंध सुजाना। देख
हु जाय धनक जगआना। लागन मेर चरन

८८

लघुताई। तीन काल अस वनहिं न भाई। विप्र
सनन हठ जन वरि जोरा। दीन्हो रुचिर माथ
सि सुखोरा। सकुन नारि केलाटि सुहावन।
दैवित वसन आभरन भावन। होन विदाय
नगर निज आवा। तेहुतोन सव धनिहिं स
नावा। नरसी सुवन योग्य वरराहा। तोकर
दीन तिलक उतसाहा। अस प्रकार जब वि
प्र उचारा। धनी सनन कीन्हो विसकारा॥

दोहा। अरे मूढ इन कौन तव इह प्रयोगण क
र आज। निमित्तक सकलंक जग मै प्रसिद्ध
धनि राज। ४। टीका। तव समय पायकर्के
एक किसी नगरका कोई धनीरहा तिसने
अपनी कन्याका वर देखनेके वास्ते उप
रो हितको बुलाय करके सर्व प्रकारसे समु
झाय दिया कि तुम नगरों और ग्रामोंओं
मे जाय कर सुंदर कुलीन माता पिता कर्के

रूपशील विद्यागुण प्रवीन धन संपती करके
युक्त ऐसा जो वर होवे सो देख कर और आ
यकर मेरे को कहो तब उ परो हित धनी की
आज्ञा पाय कर सुभदिन विचार कर जो च
ला तो चलता चलता पहिले नरसी भक्त के
नगर में ही आय प्रापत भया तहां लोगों से
पूछने लगा कि इहां कोई कुलीन धनी सं
दर बालकवाला होवे तो मेरेको बतावो ।

नृ
भं
७९

ऐसे तिसकी वानी सुनकर तहां उस जन जोधे
से कहने लगे कि हे भाई ईहां नरसी नाम
करके एक बडा उजागर धनीहै और धर्म
क तिसका घरहै तुम तहां चले जावो तिसका
पुत्र भी अति से करके सरवांग सुंदर और रू
प वंतहै इस प्रकार तिनके मुखसे वचन सु
नकर ब्राह्मण ततकाल नरसीके घरमे चला
आया तब तिसको देख कर भक्त रुष्ट बडा।

७९

प्रसन्न भया औैर यथा योग्य सब सनमान ।
किया फिर भोजनादि सेव काई करके भक्त
प्रधान पूछने लगा कि हे भाई ईहां तुमारा ।
आवना किस कारन भयाहै तब सो ब्राह्मण
कहने लगा कि अमुक धनीके घरमे सुंदर सीलताकीनिधीकन्याहै तिस
केतुमित्र रहत तुमारा सुंदर वालक जोहै सो मैने वर निश्चित करलिया
है ऐसे तिसका वचन सुनकर नरसी क
हने लगा कि ना भाई ईह सनमान उचित न

हीं है क्यों कि मै अतसे दारिद्रका ग्रसाहुआ
अकेला पुरुषहूं और वे भक्त सबको करके पु
र्ण महा धनाढ्य सब लोगोंमे उजागरहै इहस
वंध कदाचित भी योग्य नहींहै हमेर परवत
को राई के चरनोंमे लागना कैसे हो सकता
है नमस्कार करके कोई और ही धनी जायकर
देखो यद्यपि नरसीने बहुतही कहा तद्यपि
तिस ब्रह्मणने एकनही माना जोरावरीसे वा

लकके माथे मै तिलक देदिया नारियर जो
नेरेल ग्रौर कदली फल जो केलेकी फली
इत्यादि सब सगुन कर कर ग्रौर धन वस्त्र
भूषण यथा योग्य देकर फिर विदाय हो
कर ब्रह्मण अपने घरको चला ग्रावताभ
या तहां ग्राय कर धनी को सब वृतांत
सुनाय देताभया कि नरसी नाम कर
के ग्रमुक नगरमै एक वर उत्तम वर

२२
भं०
८१

घटेखोथा जिसके अंतसे सुंदर कालक
को मैने वर लायक जान कर तिलक दे
दियाहै इस प्रकार जब ब्राह्मणने कथन
किया तब धनीने सुनकर तिसका अ
नंत तिरस कार किया और कहने
लगा कि अरे मूढ मंद मती इहु तैने
कैसा अयोग्य कार्ज
कियाहै को

८१

कि वे कलंकी मिलक और मै सब लोगोंमे
प्रसिद्ध धनी राजहूं ।। ४ ।। चौपाई । निह कलं
क कहं कसो कलंकू । आजन्मूढ जिमि वि
दत मयंकू । यद्यपि वार वार समझायो । त
द्यपि अधम सकल विसरायो । अवतें तज
हुं मूढ जड तोही । जो सकलंक कीन जग
मोही । सुनि अस कठिन धनक उजवानी
वोल्यो हृदय रोष निज ठानी । इह अंगुष्ठ ।

२३
मे॰
२
२१

तिलक जहिसंगा। मैदीन्यो वरमाथ उमंगा। सो
नव के दिले हू अवमेरी। लावहू जाय तिलक
मै फेरी। धनी सनत अस मोन रहाना। बांध
व जाति जनन समझाना। जाति भाग निज
सना सहाना। देखि सदिन वर लगन सधा
वा। अपरोहित पेदीन पठाई। लगन पत्र सा
दिर हरषाई। नरसि देखि चिंतन जीय कीना
लगन पत्र कर लेत प्रवीना। धरो जाय हरि

२१

मूरति आगे। विनय वदन मानस अनुरागे
लागो करन धरनि धरसीसा। दैव अदैव
दैव जगधीसा। मैवल हीन दीन सवभांती
समधी पठा लगन वरपाती। मोहि साम
र्थ दैव कछु नाहीं। तुमहिं करहु सव वि
भ वन माईं। समधी नाति सकल अवतो
रे। इन करजि[illegible]य अभाव प्रभु मोरे। अस
कहि लगो निनादन वीना। कौन ललि

११
भ
८२

त गायन मन लीना। दोहा। नव द्वारावति
ते चले जदुपति भक्त उछाह। आनि समाज
जन विविध विधी लिये सकल संभाह। ११
टीका। फिर धनी कहताहै कि अरे ब्राह्मण
तैंने नेह कलंको ऐसा कलंकी कर दियाहै
कि जैसे प्रकट चंद्रमा कलंकके सहित है
यद्यपि मंद तेरेको वार वार समझाय भी
दिया था तद्यपि तैंने सब विसार हीं दिया।

८२

जावो अधम अब मैने तेरेको त्यागदिया
है जो तैने मेरे को जगतमै कलंक लगा
य दियाहै ऐसे पतीकी कठिन वानी सु
नकर ब्रह्मण क्रोधमे कहने लगा कि
लेवो इस अंगुलीके साथ जो मैने वरके
माथ्ये मे तिलक दियाहै तम इस अंगुली
को काटलेवो मे जाय करके सगुन जो
है सो फेर ल्यांताहूं तवपती सुन करके

व

रा०
भ०
८३

मोन होय रहा और नाती जातीके लोगोंने भी
बहुत समझाय कर तिसके हृदय का भ्रम
मिटाय दिया तब तिसने अपनी कन्याके
भाग और देव इछा जानकर सुंदर सुभदि
न देख करके लगन जोहै सो सुधाया फि
र सुभही मुहूर्तमे लगन पत्रिका लिख क
र और तसी अपरोहित के हाथमे देकर अ
पने समधी अर्थात ऊउसके घरमे पठाय

अथ नारायण भट्टचरितं । दोहा । अव नारायण भ
ट्टकर भक्ति प्रभाव अलाई । करहुं प्रकट संछेपत
कछु हरन डरत डरताई । चौपाई । मथुरा वसहिं
भक्तवर सोई । कमलसरोज चरन रतहोई । विदित
पुराण ध्यान सुहाये । जेजे रहे लुपत मनभाये
तिन सब कहं निज अनभव द्वारा । लग्यो [illegible]
प्रकास करन संसारा । जहां नास कछु होत सं
देहू । सोतिनसि स्वपन कमस जननेहू । तिनकरु

४२
भं.
१

करिदेत जगाये। अस प्रकार कछु काल विहाये
एकदिवस सानंद वसेखी। माघमास संदर ऊ
नलेखी। लोक सकल मानस अनुरागे। चाह
प्रयाग चलन जवलागे। भक्तसंघ सन कहत उ
चारी। हमसन तुम चलहो व्रतधारी। हवि प्रया
ग तीरथ दरसाई। आवहु वहुरि सदन सुख
पाई। तववोल्यो हरिभक्त प्रवीना। इहका तुमहुं
कथन जन कीना। इहां प्रयाग छेत्र मन।

भावा। देहु ललित नव हृगन दिखावा। खोजहु
नगर कोउ सिसु दीन्यो। कामति वैरि नमरि
करि कीन्यो। जोपनीत कुछ नमहिं नभाई। च
लहु वेग अवदेहु दिखाई। असकहि नगर वहि
र तव आवा। देखि उतंग सिखर मनभावा। न
हि पें जाय सकत असवानी। भक्त स्रष्ट निज व
दन वखानी। इहदेखहु उजल सरवदेनी। वह्म
जान अति ललित विवेनी। इह्योजात अति लालि

१३
भ०
२

न छिडेमी। देखिलोग मानस विसमाये। सलिल प्रवाह वरनि किमिजाये। वार वार हरषत अनुरागे। नारायण पद वंदन लागे। दोहा। अरसइह भक्ति प्रवीन भव परम भक्त जडराय। जहि मथुरा निजभक्ति वलदीन प्रयाग दिखाय।१। टीका। अव संहरण पाप और डरमनीके नास करने वाला नारायण भट्टजीकी भक्ती का प्रभाव जोहै सो संक्षेप करके कछु गायन

२

अथ हरि व्यास चरितं । दोहा । अब पावन मन हरन कल करहुं कथन सुवेदान । भक्ति महा तम सुनत जाहि बढहिं सुमति सुभ तान ।
चौपाई । उजउ को उयाम अभिरामा । संस्रति विदत व्यास हरि नामा । विषय विरक्त ग्रहस्थ रतनागर । तिषजत समय एक गुणसागर ।
हेंदावन कहं चल्यो सिधारी । यद्यपि राजकुर चिर हितकारी । रावन हेत यतन बहु कीना

८७ भ० १

तद्यपि रह्यो नविप्र प्रवीना। मातुकूल वृंदावन आवा। तहांललित थल देखि सुहावा। गिरवर वरन चारु रतहोई। लग्यो निवास करन उनसोई। एकदिवस हरिभवन सुशीला। लागीहोन रास वर लीला। राधावरन भक्त मन लूटी। तहांललित किंकणि रजु टूटी। सहिसा व्यास हगन प्रसचीने। निजउपवीत प्रीत जुत लीने। तुरत करन ग्रंथन करिदीन्यो। हरषत

ग विषारत जानी। तेनघुक्र कारज रिसकाई।
अतहे कटुक भाव वचन अलाई। मूढ कव
न असकाज सवासो। मंगत बार बार भवे
वासो। आवा जनहु प्राकट करि कोउ। अ
हो अधम नहिं आवत वीउ। खान पान अव
सर नकि आवत। वहुरिन भेट वदन दि
खावत। दीने देव चरन कर तोही। आवुत
लेन देन भ्रम मोही। तनहू जाहु अव दारिद

११
भ.
२

ग्रासू। मोरे नहि न अधम अवकासू। तासु ब
चन सूलि वज्रसमाना। नरसी हृदय मरण
हविकाना। दोहा। हाला हलतें अधिक इह
दस गुण वचन कठोर। तेमारत इह ज्वा
ल वन जारत जिय निसिभोर। शक्ति खड
ग सर सूल नरका हठलेन सहारि। पैइह
सहो नजात जग वचन वान उरव भारि। १
टीका। अब सर्व सूखों के देनेवाला और मो

२

र हुलाससे भरेहूये च्यनसे गंभीर वानीसे कह
ने लगे कि हे सभाके संपूर्ण लोगो और हे ए
जा दुरजोधन तुम मेरा वचन और प्रण चित्त ।
लगाय करके सुनो कि जो कर मै सत्य करके
भगीरथी जो गंगा है तिसका पुत्र हूं सो सभा
के बीच मे इह हठ और प्रण करता हूं कि ।
कौरवें और पांडवें के दोनो दलों के बीच बडे
हरष और आनंदसे सूर बीरों की वियी और ।

१८ रीती अनुसार जदुनाथ महा राजजीका पवि
भ॰ त्र सुजन जोहै सो कहूंगा ४। चौपाई। प्रथमगन
२१ कनकल देत समाना। रणरज वसन सजहूं स
३१ नमाना। पांडव सुभट सैन संचारी। अगर को
प देहू तिलक लिलारी। विविध वरन को सुम
न तरंगा। पहिराऊं उरमाल उमंगा। सनमुख
अरिदल दमन उगाऊं। हरि कहुं कौरवन सरभि।
संचाऊं। वहुरि त्रिविध क्रम करहुं निरधारू। विक
२१

म दीपति खावहुं चाहू । पारथ सषे समीपसिधा
ऊं । रुचिर प्राण नैवेद लगाऊं । ऐसि प्रीति संस
ति समदाई । देहुं नाथ कहं वीरि खवाई । विजय
प्रदान वान श्रीपीके । मै चलवाय समर महिनी
के । जै प्रदत्तना जो नदिवाऊं । तोहरिजन जगज
न न कहाऊं । हरि रथ सो रथ वहुरि मिलाई । धु
ज वां वर कल करन चलाई । नख सिख निरखि
स्याम छवि सोहन । सुर नर सकल चरा चर मो

१८ भ॰ २२

हन। आज ललित लोचिन फल पाऊं। दीन ना
थ क ह्रंसमर दिखाऊं। दोहा। करि करि बारं बा
र धुनि धनुष सतये चन्न जोर। बजिह्रं बाज रण
सुभट सद हरष करष चह्रं ओर। ९। टीका॥
फिर भीषम जी कहतेहैं कि श्रीगाननजो हथर
है तिसकी कणियो मे जड्डवीरनोको सनान
दे कर रणकी पुरीके वसनेजोहैं सोई सजाऊंगा
सब अंगोमे और पांडवों की संपूर्ण सेना को।

सेच रषण करके अर्थात वस करके सो चंदन
का तिलक भगवान के मस्तक मै देउंगा और
अनेक रंगोंके जो वीर तरंग हैं तिनके पुष्पोंकी
हृदयमै सुंदर माला पहिराउंगा फिर रणमै स
नमुख इमित शत्रुओंको उदयकर कि जिनकी
कुछ गिनती नहीं होगी भगवान को सो कीरती
और सुजस रूपी सुगंधी संघाउंगा फिर त्रि।
विक्रम भगवान को विक्रम जो पराक्रम है ति

१८
भ.
३३

सका सुंदर दीपक दिखाय कर और पारथ जो
अर्जुन है तिसके निकट जायकर प्राणोका नैवे
द लगाऊंगा और संपूर्ण जगत की प्रीतीको खे
चकर सोई कृपानिधान को बीडी खवाऊंगा फि
र जैके देनेवाले श्रीपती महाराज के बाण जो हैं
सो मै भलीप्रकार रणभूमी मे चलवाय कर जै
की प्रतज्ञा जो ना दिखाऊं तो जगतमे हरीके दा
सोंमे दास ना कहाऊंगा और फिर दीना नाथके

33

३३

रथसों रथमिलाय कर ध्वजा और चांवरको। हाथोंमे चलायकर सर्व चरा चरके मनको ह रनेवाली श्रनसे छबीली स्याम मूरती जोहै सो भलीप्रकार देख करके आज नेत्रों के फलको पाऊंगा और दीना नाथ को रणमै रिझाऊंगा धनुष जोहै तिसके चढाने की धुनी वार वार करके वीरोंको हरष और करषके वढानेवा ले रणमै अनेक वाजे बजाऊंगा।९।चौपाई।

१८ भ॰ २४

३४

रथ मंडल करि देन मदछ्लण। उर उपजाऊं प्रमोद
विचछ्लण। आजननाथ जउ ह्नाथन तैहूं। चक्र प्र
सादं अवसि मै पैहूं। अरजन सरपिंजर सहि
मोहा। है जंजर रण परहं प्रमोहा। इहि विधि करि
भजन जउनाथा। त्रिभवन सुजस लेहूं निज हा
था। कृपा प्रसाद कृस कलपाई। वर वस वस
हे कृस धर जाई। मै रह मुनेसा करन जकनाथ
क। श्री जउनंदन दीन सहायक। तमसों प्रस

२४

संनत इव ठाना। इम नयरव मारत धनु वाना
तांते सनकु समासमदाई। निज पण मनहुं प्र
कट गुहराई। समर मचाय घोर घमसाना।
छाडि प्रचंड दलन दलवाना। रोम रोम रिस
विस हुं चढाई। हरिहिं देहुं धनु वान धराई।
यद्यपि प्रण पालिक भगवाना। तद्यपि निज
दासन को माना। दीन नाथ दीनन सुखदाये।
दीन दया निधि रावत आये। दोहा। मेरी वार

१८ भ॰ २५

बिसारि कस विरद बान निज नाथ। लैहैं ग्रप
जस जगतमैं गिरे गहन जन हाथ। ।१८। टीका।
फिर भीषमजी कहतेहैं कि रथ मंडल करके
प्रदक्षणा देकर हृदयमै परम आनंद उपजा
ऊंगा और आजमै श्रीजगनाथ के हाथसें च
क्र प्रसाद पायकर अवश्य सफल हो ऊंगा।
महो वाहु अरजनजोहै तिसके बाणोंके पिंज
रेसे जिंजर अर्थात घायल हो कर रणमै पडे

गा इसप्रकार रंगभूमीमे जदुनाथ भगवानका
सृजन करके तीन लोकका सुजस अपने हा
थमे लेलऊंगा और कृष्ण प्रमातमा के कृपा
प्रसादको पायकर जोगावरीसे कृष्णधाममे
जाय निवास करूंगा हे कुरुनायक उवजोधन
मे सुनाहै कि दीनोकी सहायता करनेवाले
श्रीजदुनंदन महाराजने हमारे साथ ऐसा
हठ और प्रण कियाहै जोहम भारत मे धन

१८
भ.
३९
30

ष और बाण कबी धारन नहीं करेंगे तांते अब
तुम सभाके सबलोग सुनते हो मैभी अपना
प्रण प्रकट करके कहता हूं किमै रणमै घोर
घमसाण मचाय कर और दलके दलनेवाले
महा प्रचंडबाण चलाय कर रोम रोम मेविस
जो क्रोधहै तिसका विस चढाय करके जड
नेदन भगवान को ततकाल धनुष बान प
कडवाय देऊंगा यद्यपि भगवान वडेही प्रण

३९

पाल ग्रौर व्रत धारीहैं तदपि अपने दासों कामा
न जोहै सो दीन हितकारी ग्रौर दयाके समुद्र
सदैव राखनेहीं चले आयेहैं अब मेरी वार अ
सरणों की सरण ग्रौर निरधारों के अधार भ
गवान सो अपना विरद वान कैसे विसार दे
वैंगे इह कबी नहीं हो सकेगा ।।१।। चौपाई । च
लहवेग अब देर न कीजे । मनमाव समर मुज
स सव लीजे । हग अभिलाष दिवस वहुकेरी

१८
भं.
३०

सुनिहैं अवसि आज सब मेरी। पीत वसन वनमाल विराजत। मुकट मयूर माथ छवि छाजत। एक पानि ताजन इकबागा। गहि वाजिन पाछ वउभागा। चहुंदिसि चपल चलावत जाना। अस लखि भक्त हेत भगवाना। धुनि धुनि वान वेग मति भूरी। धन धन होइहं सुजस जग सूरी। अस कहि कुरुपति संजत वीरा। आयो कुरु देव रणधीरा॥ उर अभिलाष लाष सरसानो। मन मुख स

३८

समर वीर मद माते। ताको अभय पांडवन आ
ई। धुनत सबै चट चाप चढाई। देखि सखा जु
न श्री जदुनाथैं। नावत मोद मगन महि माथैं
गनत आज जग सकल मेरे। एक एक कर ला
घन हेरे। जो अस भूरि भवन कर नायक। हो
त समर निज सबै सहायक। दोहा। सेवक वा
जिन वाग गहि बनि सारथि चढि जान। अहैं मा
न भगवान मोहि मनभावे कृपा निधान। १२।

१८ टीका। भीषम जी कहते हैं कि अब शीघ्रही
भ चलो वेर मनकरो रणमे सनमुख होकर सु
३८ जस को प्रापत होवो नेत्रोमे दरसन करनेकी
वहुत दिनोकी अभिलाषाथी सो मेरी आजस
व पूरीहोवेगी पीनहै वस्त्र और तुलसीकी मा
लाहै जिनके हृदयमे माथेमे छवीदेताहै मोर
मुकट एक हाथमै है जिनके कोटडा और एक
हाथमै पकडी हुईहैं पारथजो अर्जुन तिसके

घोड़यों की बागें चारोदिसा मै वड़ा चंचल और
चपल रथजोहै सो चलावतेहैं ऐसे भक्तहित
कारी भगवानका दरसन पायकर और रण
भूमी मै वाणों की प्रवलता दिखाय कर आ
जसुजसके सहित जगतमै धन्य धन्य हो जो
ऊंगा इस प्रकार कथन करके कुरुपति जो
उरनोथनहै तिसके साथ कुरुक्षेत्रको चले
आवते भये नव हृदय मै मानो लावत अभि

१८
भ०
३५
39

लाषाको अधिक किये हूये वीर प्रधान भीष्म
जी धनुषको चढाय कर और संष वजायक
र रणमै अभय होय करके पांडवोंके सन
मुष आय स्थित हूये तहां सषाजो अर्जुनहै
तिसके सहित श्री जदुनाथजीको देषकर
आनंदमै मगन भये हूये भीषम नम्र होय
करके माथा पृथवी पर नायदेते भये और
कहतेहैं कि आजजगतमै मेरे सुकृत जो पु

३५

त्रैहैं सो एक एकके लाष लाष देख पडैहैं क्यों
कि जो तीन लोकके नायक भगवान रणमै
अपने सखेके सहायक हो कर और अपनेदा
सका रथजोहै जिसके घोडयोंकी वागें पकडे
हूये सारथी बनकर कृपानिधान मेरे मन म
ख भयेहैं ।१२। चौपाई। नवनिज सारथि सो अस
बानी। भने वदन भीषम सखमानी। अस अव
सर सनहो हित कारे। मिलिहैं कवहूं न जनन

१८
भं०
थं०

५०

विचारे। कृत उपकार दान मन माना। मै जहि
लग नम सन किय नाना। जोतमतें वनि परहिं
कदाऊ। सबतें उचित आज कै जाऊं। मम रथ का
जिन चपल चलाई। हरि समीप द्रुत देहु पुचा
ई। अपनो औ हमरो संसारा। करहु अनुपम स
जस विसतारा। एक ओर जडवीर विराजहिं।
एक ओर नव रथ छवि छाजहिं। या सबतें
सत अधिक नगारा। धन धन जगत जास

४०

जन पावा। स्याम मनोहर मूरति चारू। माधुरि
हरन कोटि छवि मारू। दरसन जनम सफल
करि लैहो। जोगिन अगम परम पद पैहो। सार
थि आवत पांडु कुमारा। जिहि आगै प्रभु भक्त
उबारा। गहि बाजिन कर बाग सुहाई। बैठे र
थ सोभा सब साई। दोहा। चपल तुरग बस
काय के धरनि धकावत जान। धरहर गहरो
गगन भगग अरिन अभिमान।।९।। टीका।।

तब भीषमजी अपने सारथी सों ऐसी सुखकी
भीगीहूई बानी कहने लगे कि हे हितकारी ये
सो समय अनेक यतन किये परभी आपनन
हीं होगा मैने जो आजतक तेरेसाथ दान स
नमान और उपकार जहांलग सब किये हैं
हे भाई। जो तेरे से बन पडता है तो आज तिन
सबका बदला चुकाय दे सो कैसे कि मेरे रथ
के घोडेयों को अतसे बडे चपल चलाय कर

झट पट भगवान कृपा निधान के पास पहुंचा
यदे नव एक ओर दीन वंधू जगन्नाथ विराज
मान हों और एक ओर हमारा रथ स्थित भ
या हुआ शोभा देवे इह पुरुषार्थ करके आप
ना और हमारा जगत मे सुंदर सुजस जो है सो
विस्तारण करो हे सारथी इस समय से परे सं
सार मे और कोई समय नहीं है जिसका धन्य
जनम है जिसको इह प्रापत होवे ताते आज

१८
भं०
५२

चलकर कोटि कामदेवकी छबी को हरने वा
ली अनसे माधुरी और मनो हर स्याम सुंदंरी का
दरसन करके अपने जनमका फलपाय लेवो
और सो परम पद कि जो मुनी और जोगी जनो
को प्रापत नहीं होताहै तुम सहजेही प्रापत क
रलेवो हे सारथी तुं देख पांडु कुमार चले आव
तेहैं कि जिनके आगे भक्त जनोका तारने वाले
घनस्याम घोड्यों की वागें हाथमे पकडे हुये।

५२

83

रथ पर बैठे शोभापावतेहैं और महा चपल घो
ड़ेयोंको चमकाय कर पृथ्वीपर रथको कैसे
घुमावते और चलावते हैं कि जिससे धूडी उडक
रके आकाश परिपूरण होकर गहिरा होग
या और देख करके शत्रुओंका अभिमान भी दू
र होजाताहै।।१२।। चौपाई।। पावरथ हनत हजारन
सायक। करत बीर बलि बिक्रमि लायक।। को
भट बिन सेनत सत आजू। सन मख होहिं स

१८
भ॰
४४

मर जउराजू । कौन नाथ कहुं आजहि काई । हति
हनिवि सष वान अनराई । सारथि वाजिन चप
ल चलाये । जिमि चपला चल जान धवाये । ले
चलहैं मोहि सनमुख नाहीं । जिय आधार स्या
म घन जाहीं । उत दल इंद देषि भगवाना । मेने
मोटम नमंज महाना । श्री माव मेट मेद मस
काई । लागे भनन भक्त सषदाई । मै पारथनी
के जीय जाना । इह भीषम जग सुभट महाना ।

मोपर भयो अनघ रण गाढा। परहिं आज संग्र
र वड गाढा। जानि परत मोहि कठिन महाना
पै पारथ तव सुभट प्रधाना। निज विक्रम भुज
वल अधिकाई। जनि राखहु कछु समर उठाई
अवलों भयो न संख्यात केहू। भीषम भुज वल
जलनिधि जेहू। पैरि अगाध लियो परि पारा।
श्रीजय तुमहूं समर निध वारा। मथ्यि अनन्त
वल भुजन महाना। कीन्यो विजय सुधा रस

१८ भ॰ ५५

पाना । दोहा । मोरे उर हवि लखन नव विक्रम समर सुजान । को समरथ वरद हुंन महं धीर धाक धनुवान ।१४। टीका । और पार्थ जो अवज्ञ न सोभी हजारों बाण मारकर बडेवीर प्राक्रमी और लायक जोहैं तिनको काटना चला आव ता है आज कौन वीर धीर संतनके पुत्र विना रणमे जडु नाथ के मन माव होने वालाहै औ र कौन आज विषके भरेहुये बाण मार मार क

५५

र दीना नाथको रणमें रिफावेगा हे सार्थी
जैसे विजली धावनीहै तैसे तूं घोड़यों को
चपल करके रथकोचला और जहां प्राणों
के आधार घनस्याम विराजमानहैं तहांति
नके मनभाव मेरेको लेचल ईहांका तोइह
प्रसंगहै और जहां जदुनाथ भगवान दोनों
दलोंको देख कर वडे आनंदसे मंद मंद म
सकाय कर वचन कहने लगे किहे अर्जुन

१८
भ०
५९

५8

मैने हृदयमें भलीप्रकार जाना हुआहै जो
इह भीषम जगतमें वीरोंका सिरोमणी म
हां वीरहै आज मेरे पर क्रोधसे भराहुआ
रणमें आय ठाढा भयाहै मै जानताहूं कि
अब बडा गाढा जुड पडेगा और बडा कठ
न समयहै परन्तु हे पारथ ने भी वीरों मे
प्रधान महां वीर आज अपनी भुजोंका
जहांलग बल पराक्रमहै सो रणमें सबल

५९

गाय लेना कछु पीछे नहीं राखना अवलग।
संसारमे ऐसा कोई नहीं भया कि जिसने भी
धम के भुजा रूपी समुद्रको तर करके पार
पाया हो और तुमने भी जगत मे रण रूपी
समुद्रको अपनी भुजोके अनंत बलसे मथ
न कर कर जैरूपी अमृत रसको पान किया
हुआहै तांते अब मेरे हृदयमे रण भूमीमे
तुमारा बल पराक्रम देखने की अतसे ह

१८
भ॰
५७

ची और लाल साहै कि न्नम दोनो वीरों मै से
धनुष कर नव मै धीरज वाला और साम
र्थ कौनहै। ५। चौपाई। लखहु सखे दल ज
ल निधि भारी। सचित विमल वीर रस वारी
गाढ़ गरव गज ग्राह विसाला। घोर कठोर
कमठ टट ढाला। धनुरथ मीन असि मक
र करेरा। भट गण सिंह नाद वहु घोरा।
सर तरंग वहुं वीरन नेहीं। उठहि भांति व

हु भवन न पैहीं। वीर वरन वहु रतन विराजैं
चमर हिलोर चारु छवि छाजैं। रघनव क वय
आवत नाना। सवल जगल दल कुल महाना।
धरम सवन उरनो थन रानू। उभय वनक स
जि सकल समानू। नव भीषम भज वल ह्ढ
भारी। पाय जहाज सभग सविकारी। चढत
चहत उतरन उनपारा। सो उरगम मोहि फु
रत विचारा। पैहैं पार गनन वित मोरा। होहिं

१८ भं० ५८

48

जास नाविक वर जोरा। इन जडपति अस कर हिं विचारा। उतरण मचो कुला हलभारा। भई देव ब्रन वानन संगा। विघ्नसैन पांडव महि रंगा। नव जडपति लैपारथ काहीं। आय अभ य सनमुख रणमाहीं। वीर प्रधान जगल म न माषे। सुभट भिरन भारन अभिलाषे। दो हा। इतै समर अंध्यार चढ़े दिसन भरन भट भारि। धरन दरन दल भटनिरण पारथ प्र

वल मवाति ॥५॥ टीका। फिर भगवान कहते हैं कि हे सखे देखो इह सेना दलका समुद्र के सा भारी है और वीर रसके जलसे परि पूरण है वडे भारी गाढे गज हसती जिसमें ग्राह अर्थात नंदवयोंके समान हैं और महा कठो र ढालें जो हैं सो ई हैं जिसमें घोर कमठ अ र्थात कछु धनुष और तलवार आदि शोभा देते हैं जिसमे वडे कराल मकर जो मछ ।

१८
भ॰
४९

और तिस समुद्रमै शोरजो होताहै सोईहै सूर
वीरोंके समूह का वश सिंह नाद अर्थात शेरके
समान गरजना नानाप्रकारके वाणोंका छूट
ना जोहै सोई उठतेहैं भांत भांतके तरंग और
वीर रतनहैं जिसमें अनेक प्रकारके रतन चम
रजो फूलतहै सोई पडतेहैं जिसजलमे संदर।
हिलोरे और रथोंके समूहों के चक्रजोहैं सोहैं
जिसमें नाना आवरत अर्थात भांत भांतके घुम

४९

ण चैरे दोनोभारी दलहैं जिसके हफदो किनारे
और धर्म पुत्र राजा जुधिष्टर और दुर्योधन दोनो
वनक अर्थात वानिये अपना सब समाज सजा
य कर गंधारी और भीषमकी भजोंका अनं
त भारी वल जोहै सोई सभ और साव दाय
क जहाज पाय करके और तिसपर चढकर
के तिस रण रूपी अपार समुद्रसे पार हूये व
हते हैं सो मेरेको आतसे दुरगम और महा क

१८
भ०
५०

विन देख पड़ता है परंन्तु एक इह विचार आव
ता है कि सो तिसके पारको पावेगा जिसका ना
वक अर्थात मलाह जो रावरहा होवेगा ईहां जड
नायक भगवान इह विचार करते हैं और ज
हां रणमें अत्यन्त कुलाहल जो होरहा है सो म
च गया देवव्रत जो भीषम है तिसके बाणोंकी
मारसे रणभूमी मै पांडवी सेना सव व्याकुल
होगई और धीरज छूट गया तव जड नेटन म

५०

हाराज अर्जुन को लियेहूये अभय हो कर रण
मे सनमुख चले आये नहो दोनो वीर प्रधान
कोपसे भरे हूये वडी रुची और अभिलाषासे
जुद मे जुड जाते भये तब ईहो शत्रुओंका ना
स करने वाले महा प्रबल अर्जुन लडते लड
ते सब वीरों को दलते हूये रण की चारोंदि
शामे मानो अंधेरा छायन कर देते भये । १५ ॥
चौपाई । उतै भीम भीषम भटिमाना । ज्वलन

१९ भं० ५१

51

जनहुं ग्रीषम उदताना। कोप प्रचंड दहन दल जासा। भड्डा विकट भट समर प्रकासा। दहुंन ओरतें सायक छूटे। मानहुं उसन उरग गण छूटे। खवछिन गिरे विपुल भट धरनी। कहि न जाय कछु वीरन करनी। उभय सूर संग्राम सहाते। प्रगटत उरत वेग दरसाते। इतै सखा अरजुन अभिरामा। उतै भक्त भीषम वल धामा। नाथ दहुंन की अघटन प्रीती। तला विचारथ

५१

रन तलिलीनी। संतन सन कछु दीन दयालें
चछ्रो सरस विन निज पूरणपालें। अरजन
तन नकि कृपा नकेत। सव मम काय रहे
लदि हेत। गनन मनहिं मन त्रिभुवन राजू
मम प्रण रहै कि भीषम आजू। बहुरि विर
ह निज हृदय विचारी। सिउ कीन असदीन
उधारी। भक्त हेत सनि अवसि हमारा। है केवा
श्रमति उचित संसारा। दोहा। मम प्रण रन।

१८ हूत जौन इहू जोजगनाथ तोजाय । पैन जा
भं॰ य प्रण जगन मम भक्त भरोस विहाय ।४९।
५६ टीका । और जुहां अगम और अपार महां भ
यानक मानो ग्रीषम ऋतके प्रज्वलत सू
र्जके समान उदयभये हूये भीषम किजि
नका दलके दगध करने वाला अति प्रचंड
कोप है और बडे विकट बीर धीरज को धा
र कर रण विलास कर रहे हैं तब दोनो श्री

52

५३

आवसे ऐसे बाण छूटे कि मानो सर्पोंके सम्
ह दलोंके डसनेको छूटे जातेहैं अनेकहीं
मरछायल और घायल होयकर पृथवीपर
गिरपडे वीर धीरोंकी करनी जोहै सो कुछ
कही नहीं जाती दोनो वीर रणमें अत्यन्त शो
भा पावतेहैं कबी प्रकट होते और कबी र
णकी गरद गुबार में लपत हो कर अपनी
अपनी सामर्थ्य दिखावते हैं इहां पुरषार्थ

१८
भ०
५२

के धाम अरजुन सषा और उन्हां प्राक्रमके पुंज
भीषमभक्त दीनानाथ भगवानने दोनो की
अघटत प्रीतीकि जो नही घटने वाली जवबि
चार रूपी तला अर्थात तराजूमे धर करके तो
ली तब प्रण पालक दीनानाथ को संतन कु
मार जो भीषमहैं सो चितमे कछु सरसही
देखपडे फिर कृपा निधान अरजुन की ओर
देखकर और हेतकोपायकर। मरवेमे मम

५२

काय करके मौन होयरहे ओर अपने मनमे
विचार करने लगे कि देखिये आजमेरा प्रण
रहताहै कि भीषमका फिर दीन पाल अप
ने विरदको हृदयमै विचार कर इसी अर्थ
को सिद्ध करते भये कि हमारा सत्य जोहै सो
भक्तके निमित्त अवश्य करके असत्य होना
उचितहै मेरा प्रण ओर व्रत जगतमे जाये
तो जाये परंतु मेरे भक्तका प्रणनाजाये ओर

१८
भं॰
५४

जिसके हृदय से मेरा भरोसा नाछूटे ।४६। चौ
पाई । जिमि चपला चमकत चहुं वोरा । तिमि
भीषम सर समर करोरा । फर फरात चहुं
वोरल सोत । वीरन हृदय धीर विलगाने ।
फरे फुंड सूरन सर लागे । परे रुंड रण प्राणन
त्यागे । विकल सिथल दल चेन विहायो । मन
हुं प्रलै अंतक प्रकटायो । उक्त युक्त कछु सू
झत नांही । चितवत जथा पंगु गिरिकांही ।

5h

ह्नन न शत्त स्रूर सिथलाने। कफन नकोप
कंपि कदराने। निज निज मोच गुनन सवको
ई। विघनसेन अस पांडविहोई। पटचर तुरग
जान गजगाछे। परे समर चाघल उषवाछे
छिद भिद किय वानन अंगा। भरे कुंड स्रोण
न महि रंगा। लगि खंजर जंजर तन भयथो।
यम न्रप दल पिंजर सर पयथो। स्रूफन प
घनहिंदि मादिमाई। भादव निसा मनहूं महि

छाई। ब्रह्म लोकलोवीर मकरनी। छयोप्रका
स विद्दनजिमि नरनी। दोहा। वीर धीर नजिपी
रलसी होनजीर ननटूक। भागिगयेमन कीर
नकि मीर भीर अनहूक। ९। टीका। नव जे
से चारो ओर बिजली चमकतीहै तैसेही रण
मे भीषमके करोडोंवाण फर फराय करके
चारो ओर चमक रहेहैं ओर सब वीरोंके ह
दय की धीरज को हरते हैं तिन ऐसे वाणोंके

५५

55

लगनेसे सूरवीरोंके रुंड जो समूहहैं सो फ
डपडे और अनेक रुंड मुंड होयकर प्राणों
से रहित होयगये पांडवोंका संपूर्ण दल।
व्याकुल और अचेत होयगया मानो पहले
काल व्यापित होजाना भया किसीको कुछ
उक्त युक्त सूझनहीं पडती सब आचर्यको प्रा
पत भयेहुये ऐसे देखते हैं कि जैसे पंगु स्त्र
थान पिंगुला अशक्त होकर परवस्तुको देख

१८ भ ५६

56

ताहे सिथल भये हूये सूर वीर शास्त्र नहीं
मार सकते ओर कोर ताासे कांपते हूये कोप
प्रकट नहीं कर सकते सबकोई अपना अ
पना मरना विचारते हैं पदचर जो पयादे त
रगजो घोडे यान जो रथ गज जो हसती इ
ह सब अंगोंकरके छिंदभिंद ओर घायल
होकर रणमें डारी हूये परे हैं शोणित जोल
हू तिसके रणभूमीमें कंड भरे गये खंजर

५

५६

जो तलवारें तिनके फलोंमे जंजर अर्थात ज
री जरी होकर धरम भूपका दल मानो वा
ऐांके पिंजरमे पडगया दिस विदिस मारग
कुमारग किसीको कुछ सूझनहीं पडता
मानो भादों महीने की रात्री पृथ्वीपर छा
यत हो रहीहै वीरजोहैं सो पीडितभये हुये
धीरजको त्यागकर और बाणों की अनहू
क भीड जोनहीं रुकने वाली सो देखकर।

१८
भ॰
५८

57

कौरजो कायरहैं तिनके समान भागचले ऐसे
वीर सिरोमणी भीषमजीकी करनी और सुज
सका प्रकाश जोहै सो सूर्जके समान ब्रह्मलो
क तक फैल जाताभया ।१७। चौपाई । भीम न
कुल सहदेव प्रवीरा । द्रुपदभूप सुत द्रुपत
सुधीरा । नृप वराट लोभट वर आना । कोऊ
नाहि सनमुख धनुवाना । रोषव हीन दीन
सबठाढे । लगेसि रोम रोम सर गाढे । विक

ल अधीर धरम मन हारी। चहत गवन कान
न नजिरारी। जदपि भटनिकहुं धरम प्रकासो। वीरविरदवङ्
वदन उचाहो। तदपि न रुके सुभट कदराने। डरि समर धनु
विकल पलाने। फिले सकल कौरव बलपा
ई। हनत कृपन आयुध अधिकाई। चटकि च
पल चपला चट परहीं। फटकत पटकि भ
टनि फट करहीं। खर भर मच्यो समर चहुं
वोरा। नादत सुभट सिंह रव घोरा। कह्यो ध

१८
भ
५८

वल पारथ इहि काला। कहं सुभट सातकि
नरपाला। अस अमरष वस वीर प्रधाना। न
रजत गरजि समर महि नाना। नव सातकि।
फिरि सन मविराघा। गहित विजय सिंधन
रण आउ। दोहा। समरन निजकुल विरद
मन वार वार गहराय। कहत समर सरको
भेलो फिरहु फिरहु समुदाय। ८। टीका॥
नव महां धीरजके धाम भीमसेन नकुल स

५८

हदेव राजा द्रुपद और जिसका पुत्र और राजा
विराट इनसें लेकर जो और अनेक वीर प्रधान
थे कोई भी सनमुख धनुष बाण नहीं पकड
ताभया क्रोधसे हीन भये हुये राम राम से बा
ण खाये हुये दीन हो कर स्थित होरहे हैं और
धर्म के पुत्र राजा जुधिष्ठर भी धीरज को जाना
विचार रहे हैं और यद्यपि राजा धर्मने सूरवी
रोंको सावधान करने के लिये वीरोंका विरद

हार कर व्याकुल भय हुये रणको छोड कर बन को ॥३

१८
भं॰
५५
59

सुनायकर वहुत ही समझाया और ललकारा
तद्यपि सो कायर भये हुये रुकते नहीं भये रण
भूमीमे धनुष डार डार कर भाग गये तब कौर
व जो हैं सो बल पायकर चमक उठे और महा
कोपसे बाण भर भर कर मारनेलगे बड़ी च
टकसे चपल होयकर चपला जो बिजली है
तिसके समान पड़जाते हैं और फटक करके
पटक करके भटी जो वीर हैं तिन को फटक

५५

रनेहैं अर्थात घायल करनेहैं संग्रामदलमै ए
क खरभर मचगया वीरधीर चारो ओर बडा
शोर सिंहनाद करते हैं ओर कहनेहैं कि अ
व कहांहै वे अनसे प्रवल पारथ ओर कहां
है सात्यकी वीर कहांहै जदुनायक ह्मल ओस
कोपसे भरे हूये वीर धीर रणभूमीमे वडे जो
र गरजकर ललकार ते फिरतेहैं नव सात्य
की नेहै सो जदुवीरको सुमरकर ओर जे कह

१८ भं॰ टी॰

पी रथमेंाहै जिसकी ओर लेकर अर्थात जैको
हृदयमै राखकर अपनी कुलके बिरदको सं
भालकर बडी ऊंची स्वरसे पुकार कर कहने
लगा कि हो भाई रणसे बिमुखहोना सुरवी
रोंका धरम नहीं है फिरि आवो फिरिआवो
इस समय रणमै मरनाहीं सुभके देनेवाला
और सरव अर्थके सिद्धकरने वालाहै ।१८।
चौपाई। बीरन पीठ समर महिदेना। बिदत

६०

गमसुगम इहवाना। तापस जोगि सिद्ध मुनि ज्ञानी करतज॰

लोक अपकीरती लेना। वांधि विरद जगसुरक

हाना। अहैन संतन हृद अनक अमानी। जो

पद पैहिं विडल धम कीने। लेहि वीर रणज

तन वहीने। उनहूं सोच साधन वहुभानी। इ

नहूं समर जूझन धरिक्कानी। तांते वीर वीर

हून करिके। लेहू परम पद सनमुख मरिके

होहिं नवीर प्राणके लोभा। तजन प्राण रण

वीरन सोभा। विमुख समर नरपतिन अभा

१८
भ०
६१

61

गी। लेहिं नरक गृह प्राण त्यागी। अस जिय
जानि सुभट धरि धीरा। जूझहु समर समरि
जउवीरा। प्रभके देखत प्राण विहाई। प्रभु पु
र जाइ निसान वजाई। यद्यपि सात्यकि विवि
ध वखाना। तदपि भीम भीष्म भट बाना। तिन
हिं नलेन देत आस्वासू। वीर विकल कंपन
वस त्रासू। अंग अंग महि रंग उमंगा। विक्रमि
विकट सुभट रन गंगा। दोहा। करि विदल

६१

न दल पंडवी मलै पारिमनु दीन। सवे स्या
म जन अमन रण क्काय मरन रथलीन। अह
कुदंड मंडिल करन दिसन संचरन चारि। सिं
ह घोष मारोष मवे भरन धरन धृतिरारि। म
नहु विजन रण अभय भट नाफो सनमुखे
आय। हरि पद सुमरन नकन तिरछोहं मंट
ममकाय।। १९। टीका। फिर सात्यकी कहते हैं
कि होभाई वीरधीरें को रणमें पीठदेना मक

१८
भं०
६२

62

ट लोकोंमै अपजस ही लेनाहै जगत मै बिरद
बांध कर सूर वीर कहाना सहज नहीं है बडा
कठिनहै तपस्वी जोगी सिद्धमुनी और ज्ञानी
अज्ञानी जगतमै अनेक यतन हठ और सा
धन करतेहैं तो जिस पदकोवे अत्यंत श्रम।
करके प्राप्त करते हैं तिस पदको वीर रणमै
यतन और श्रम के बिना सहजेही पाय लेतेहैं
उनको अनेक प्रकार का सोच और साधन क

रना पड़ता है और इन को केवल रणमें मन
मारव छातीधर कर जूझना होताहै तातेहे
वीरधीरो अव रणमे वीरधरम और वीरकर
नी करके सोई परमपद मन मारव म रक कें पा
यलेवो होभाई वीरजो होतेहैं सो प्राणो के
लोभी नहीं होतेहैं वीरोंको रणमें प्राणत्याग
ने की वडीभारी शोभा होतीहै और जो रण
मे विमरव घरमे जायकर प्राणत्यागनेहैं सो

१८
भ०
६२
63

अभागी होर नरक मै जायकर नानाप्रकार
के दुख और कलेश पावतेहैं ऐसे जानकर
हे वीरधीरो जड़नाथ को स्मर कर और धी
रज को धारकर रणमै सनमुख जूझ जावो
इसप्रकार यद्यपि सात्यकीने तिनको बहुत
ही कहा तद्यपी भीषमके महा कठिन और
भयानक बाण जोहैं सो तिनको कहां धीर
ज लेनेदेतेहैं सब भयके वश भये हूये पर

घर कांपनेहैं सो गंगाका पुत्र और वीरोंमे
प्रधान भीषम जोहै रणभूमीमे अंग अंग
उन साहसे भराहूआ पांडवी सेनाको दल
न करके मानो प्रलै मचाय देता भया फिर
चत्र स्याम और तिनके सषाको और जोड
यों के सहित रथको रणमे वाणोसे पूर
करके और धनुषको घुमावता हूआ चारो
दसामे धावता फिरताहै और कोपसे सिंह

१८
भ°
६५
64

नाद करके धीरज को धारे हूये मानो रण
को जीतकर और अभय होय कर सूरवीर
भगवानके सनमुख आय करके स्थित हो
जाता भया और नेत्रों की तिर्छी दृष्टीसे कम
लनयनाके चरन कमलों की ओर देख दे
ख मुखमें मुसकावता और हृदयमें परमा
नंद सुख मानताहै। ९। चौपाई। विसिष बा
ण भीषम धनुधारी। लगे सुभट पारथ तन

कारी। लखि उर पीर निराचन गाढी। ह्वैगो बि
कल सिथल धृति त्यागी। धनुष धरन कर सक
ति न काहू। थाको समर बिगत उतसाहू। अ
मत उराति बीर अकुलाई। सूषै अधर बदन
पियराई। परि भीषम सरपिंजर मांही। बिस
रि दियो निज बिक्रम कांही। रथपैं अचल ह्वा
र हियमानी। वैठि रह्यो मन मूरति ज्ञानी। नि
कसि न बचन कंप तन बाढ़ा। बोलि न सक

दुष

१८
भ॰
६५

न नैन गाफा। किघोसि निज प्रण हरन जोई। भू
लोभनत नचेतन कोई। विजय लाभ दुरल
भजिय लेखौ। मान्यो हानि गिलानि वसेखौ
अव आधार लषहु इक मनके। गिरधर देव
समर अरजुनके। भीषम सर छिन छिन
अपिकाते। विसष व्याल मनु फुंकरत जा
ते। मृधो पारथ सारथ काही। रथ जुत तुरग
न दरसतनाही। दोहा। दावन वल जुत समर

६५

हरि बारबार रथकाहिं । तबहूं उरयो मनुजात
कछु होत स्थिर दिन नाहिं । २० । टीका । नव
महा धनुषधारी भीषम अतिसे विषके भरेहूये
गाढेवाण जाय करके अर्जुनके शरीरको जो
लगे सोतिन कठिन वाणोंकी अतिसे पीडा ।
श्रोर कलेश मानकर धीरजको त्यागकर व्या
कुल ओर सिथल होय गया धनुषके धारने
की कछु सधी नहीं रही थकत होयकर र

१८
भ०
९९

66

एके उतसाहसे रहित हो गया श्रम करके वी
र लाली जोहै सो सब उतगई अधर जो ओष्टहैं
सोभी सूषगये मुख पीला होय गया भीषम
के बाण रूपी पिंजरे मे पड करके अपने सबध
र्मको विसार दिया हृदयसे हार कर और अ
चल होयकर मानो हानीकी मूरती बन कर
रथपर बैठ रहाहै शरीर से थर थर कांपता।
मुखसे वचन नहीं निकलता नेत्र खोल नहीं

सकना हृदयमें उसके हीं उसके फैल गया पहिले
जो अपना प्रण कियाथा सो सब भूलगया कु
छ खबर नहीं रही जैका लाभजोहै सो होना
कठिन विचारकर ग्लानी ग्रौर गिलानीका हृ
दयमें बहुत मानता भया दोखिये अब इससम
मय अर्जुनके आधार एकहुल्ल समानमाहैं
ग्रौर कोई नहींहै भीषमके वाण जोहैं सो जै
से विषके भरे हुये सरप फुंकारे मारते जाते

१८
भं.
६७

67

हैं तैसे छिन छिनमे अधिक हीं होते जातेहैं । ऐसे बाण मारे कि पारथके साथीको भी भेद दिया अर्थात बाणोंमे लोप करदिया और रथके सहित घोडे भी देख नहीं पडतेहैं यद्यपि अर्जुनके सारथी भगवान बल करके रथको बार बार दबावतेहैं तद्यपि सो उडताही जाताहै पृथवीपर स्थित नहीं होता । २० ।। चौपाई । बाजि विविध तनताजन खोते । पैन

बेगानै सक दरसाने गहन बाग बाजिन हरिका
हीं । रही संभार करन कछु नाहीं । भये अचे
त सकल जगचेतू । नहिं फहरान कलित ।
कपिकेतू । उभय चक्ररत्नक सरलागे । मर
छित परे धरन सयिनागे । दीन नाथ दीनन
हितकारी । जन प्रण पालन हृदय बिचारी
करि नसकत कछुबननतन नाहीं । तब कैा
रव जन कैारव नाहीं । प्रभु गति देखि बद

९८
भं॰
६८

न ममस्काने। मनहुं मूढ निज विजय जितावे
जड्डपति फिरि फिरि पानि पसारैं। बार बार
अरजनै हलारैं। मरिंगे यों जीवत नम ऐहो
कोलिचावन दुकवचन भनैहो। कहन रहे
नव मुभाग कहुरा। मै गांडीव धरन धनुहरा।
हैक उंउ मह कुकदल मारी। उविहू अवनिस
महि समर संहारी। सो पण अव कनदीन।
विसारेहो हैरण दीन सरासन डारेहो। दोहा

६८

68

उठहु उठहु अववेग जन करहु चेतनन माहिं ।
तमरी वहु वरुवादि जगजन नविदन सवका
हिं ।२।। टीका ।। तव चोडे जोहैं सो शरीरपर अने
क कोटडे खोनेहैं भगवान का चोडयों की वागें
पकडने की कुछ संभाल नहीं रही संपूर्ण ज
गतको चैतन्य करने वाले भगवान नहो चेत
नासे रहित अचेत होय गये और रथके रूप
र कपी धुजा जो फरक तीथी सोभी रुत होय

१८
भं०
६५

गई अर्थात फरकती नाभई रथके चक्रोंके दो
नो रावबारे बाणेंके लगनेसे मूरछा होयक
र पृथवी पर गिरपडे तव दीनानाथ ओर दीन
हितकारी भगवान अपने दासका प्रणजोहै
तिसका पालना विचार कर कुछनहीं करस
कने ओर नाकुछवन पडताहै इतनेमें सब कौ
रव ओर कौरवोंका राजा दुर्जोधन भगवान
की दशादेखकर मनमें मुसकावने लगे ।

६५

मानो मूढ़ अपनी जै विचारने भये और ईहां भग

वान वार् वार् हाथ पसार करके अरजुनको ह

लावतेहैं और कहते हैं किहेपारथ तुम मर

गये हो कि जीवतेहो नेत्रोंको खोलकर कुछ

बोलो तोसही तूंतो सभामे बड़े गहरसे कह

ताथा जो मै गांडीव नामा धनुषके धारने मै प्र

धानहूं दो एक घड़ीके बीच रणमै कौरवों के

संपूर्ण दलका नास कर देऊंगा सो अपना प्र

१८
भ
८

ए अब कहां विसार दिया और रण भूमीमे प
नुष वाणको डार दियाहै हे पारथ सावधान
हो और उठो चैतन्य होजावो तमारी जगतमे।
वहुत वडाई है और तमको सव लोग जानते
हैं अपने वल प्रताप को संभालो ।२२। चौपाई
आज मरजाद पांडु कुलकेरी। तव आधीन गुन
न मति मेरी। तव वल धरम सवन चढि आये
रण मचारि डंदभि वजाये। तमरे होत सिथल

८

रण माहीं। कहो कौन धीरज तिन काहीं। का
दर मर्म सकल गल तोही। रणलषि लाजलजा
वत मोही। कस लमरी असविक्रम संगा। चल
हिं सजग कीरति अभंगा। सखा सोच मनकी
कवि जोऊ। कहहु विचारि प्रकट अब सोऊ। है
अभि लाष विजय थोंनाहीं। थोंकछु हारि या
ये मन माहीं। जामे लमरी मीन सुहानी। सो
मति हमहिं सावे सुभभानी। तव समान मेरो

१८
भं०
७१

71

जगमाहीं। मीन सहृद सज्जन प्रीय नाहीं। इतम
भ सखहिं करत सविधाना। उन अलि विषम देव
बलवाना। किय विदलन पांडवि दलसारा। आरि
चाहि देवकि कुमारा। रटत सकल अस जड प
नि देखी। कठिन कुसमय समर प्रभ लेखी। भरे
भूरि अमरष भगवाना। न जिरथ गहिन चक्र र
थपाना। मनहुं सदरसन सहसधारी। असछवी
उदय होत मनहारी। नलनि नाल मन भानु विराजा

७१

चले धाय मनमख जड़राजा। बाजति मड मे
नौर चरन की। छवि अनुपम पट पीतवर
नकी। रुचिर समर रज रंजित नीकी। बिथु
रति अलक वदन सीय जीकी। श्रम कन क
लित विराजत चारू। रिसवस नयन नलिन
अरुनारू। किये उध गन भजन विसाला। अ
मन चक्र लषि उरपत काला। मसो मसो भी
षम अभिमानी। दै दल कढ़त कुलाहलवा

१८ भ॰ ५५

नी। दोहा। तानिरहे निज निज धनुष इकपि
नठाकि प्रवीर। तजत नसर घर घर सउर।
कंपत सकल अधीर। २२। टीका। फिर भग
वान कहतेहैं कि हे अरजुन आज पांडु कुल
की मर्यादाजोहै सो मेरी वुधी करतीहै कि
तमारेही आधीनहै और तेरेहीं वलसे रण
मै डुंदभी वजाय करके राजा धरम भी चढ
आयेहैं अव तमारे रणमै सिथल होनेसे

५५

कहो तिनको कौन पीरजहै ग्रोर तेरेको ग्रै
सा कायर ग्रोर ग्रशक्त देखिकर रणमे लज्जा
करके मैभी मुख छिपावताहूं हे सखे तुम
कहो कि ग्रैसे पराक्रमसे तुमारी जगतमे
कैसे कीरती ग्रोर महिमा चलेगी ग्रब सत
सत्य कहो कि तुमारे मनकी का रुचीहै जे
की ग्रभिलाषाहै कि नही कि ग्रथवा चित्तसे
[illegible]र गयेहो हे सखे मेरेको तो जिसमे तुमा

१८
भ
५२

री सुंदर जीत होवै सोई शुभ भावनीहै क्यों कि
तेरे समान मेरेको संसारमें और कोई सुहृद स
ज्जन और प्यारा नहीं है इस प्रकार ईहां भगवा
न अपने सखा अर्जुन को साविधान करते
हैं और इहां देवव्रत जो भीषमहै तिसके बा
णों ने पांडवों की संपूर्ण सेनाको चूर कर दि
या सब कोई व्याकुल होयकर त्राहि जदुवी
र त्राहि जदुवीर पडे पुकारतेहैं तब भगवान

कपीराज जोहैं सो विदाय करदिये तब रघु।
नाथजीको सुमरते हुये हनूमानजी संपूर्ण
वानरोंके सहित अपने आश्रमको चलेगये
और ईहां तुलसीदास भी तब विदाय होय
कर अपने घरको चलने लगे तब साह बा
र बार चरनोपर सीसनाय कर धनके सहि
त बहुत सिवकाई करताभया परंतु भक्तश्र
धानने स्वीकार नहीं किया तब साह हाथ

जोड़कर और अपना अपराध क्षमा करवा
यकर प्रसन्न भया हुआ विनती करने लगा
कि भक्तस्रष्ट अब मेरेको कृपा करके कछु
उपदेश करिये कि जिससे मै संसारमे सफ
ल होयजाऊं श्रीमेसाहका वचन सुनकर द
या करके श्रीन तुलसीदासजी कहनेलगे
कि हे प्रजापाल तुमको तो श्रेष्ठ योग्य है कि
अपने घरमे एक नवीन बड़ा सुंदर श्रीरघुना

थजीका भवन वनवाओ तहां जोजो अतिथी ।
और संत महातमा आवैं तिन सबका भक्तीसी
तीसे यथायोग्य आदर सतकार करतेरहो इ
सीसे तुमारी जगतमै सुजसके सहित कल्या
ण होवेगी इसप्रकार तिसको उपदेस करके
हृदयमै रघुनाथजीको सुमरते हुये तुलसी
दासजी आनंद पूर्वक वृंदावन को चले आव
तेभये ।२० । चौपाई । तहां आय मानस अनुरा

रा॰
भं॰
१०६

106

गे। नाभादास भक्त वडभागे। देखत तुलसिदा
स हरषाये। कीन प्रणाम भक्ति सरसाये। तव
नाभा निज हृदय विचारा। संतविरक्त विगत
हंकारा। पावन भक्ति प्रीति मन माहीं। कीन
प्रणाम तुलसि जनकाहीं। अस प्रकार सादि
र हरषाई। करत परस्पर विनय वडाई। तुलसी
देखि ललित थल काहू। करि निवास सज्जन
उनमाहू। हृदय समर्पि लाग रघुराये। साधुस

नत दरसन कहं आये। बोले ईहां भक्त सुखदा
ये। मुरलीधर भगवान सुहाये। उनकर अ
ति विचित्र मन भावन। करहु संतवर दरसन
पावन। उठे सुनत तुलसी हरषाये। कहंा मो
र भगवान सुखदाये। मंदिर लेन संत सब
गवने। आये जवहिं निकट हरिभवने। बो
ले एक संत तिन माहीं। मैम भाव तुलसी
जनकाहीं। करि प्रीता अव लेहु निहारी ॥

२५
भ०
१०८

107

अस प्रकार निज वदन उचारी। तुलसि दास
तनदेखि अलावा। जोनिज इष्टदेव मनभावा
पति हरि करहिं उर्पमन आना। सोजगलेत
लाघवत होना। जिमि प्रमदा विभचार निक
महीं। निजवर तजत आन वर रमहीं। दोहा
चारु चतुर रघुवीर पद पदम भ्रमर तुलसी
य। तासु वचन सुनि मरम जुत हृदय सुमरि
सीय पीय। सुरति देखि गुपाल कल कहा क

रन जगाजोति भलेविराजे नाथ छ्वव मनमथ
मथन करोति। ललित अलौकिक रूपवर।
कर मुरली धरआज। मोहन सुरनर भक्तज
न मन चन स्यामल राज। पैतालो जन तुल
सि तव नाथ ननावहिं माथ। जोलो परिहरि
मुरलिवर धरहु नधनु सरहाथ।२१। टीका।
तव तुलसी दास तहाँ वृंदा वनमैं आयकर प
रमभक्त नाभादासजी जोथे तिनको भक्तीषी

२४
भ
१०८
108

तीसे दंड प्रणाम करते भये तब नाभादास
जी भी हृदय मै विचार कर और तुलसीदास
जीको अभिमानसे रहित भक्त और संत वि
रक्त जानकर तैसेंही भक्ती प्रीतीसे दंड प्रणा
म करते भये इसप्रकार हरष पूर्वक बडेमन मान
मे परस्पर विनय वडाई करकै फिर तुलसीदा
सजी वडा सुंदर अस्थान देखकर श्रीरघुना।
थ जीका सुमरण करते हुये तहां निवासक

रने लगे। नव साधसंत सुनकरके जहां तहां
से तुलसी दास जीके दरसन को चले आये
औ से दरसन मेला करके संत कहने लगे।
कि हे भक्त प्रधान ईहां जो अत्यंत दिव्य सरू
प और भक्त जनोके हृदयको आनंद देने
वाले मुरलीधर भगवान विराजमान हैं ति
नका चल करके दरसन पावो और अपने
आगमन को सफल करो इस प्रकार तिन।

म॰ भ॰ १०५

का कथन सुनकरके तुलसीदास ततकाल
उठ खडे हूये और कहनेलगे किसो ऐसेसु
ख दायक मेरे भगवान कहांहैं मै दीनाना
थ का अबी चल करकैं दरसन करूंगा तब सं
तजन ततकालही भक्तरूपको साथलेकर
चलपडे जब भगवानके भवनके निकट आ
यगये तब तिनमैंसे एक संत कहनेलगा ।
किसै अब तुलसीदासके प्रभाव को पीक्षा

करके देखलेङ्गा ऐसे कहिकर फिर तुलसी

दासकी ओर देखकर कहनेलगा किजो को

ई अपने इष्टदेव को त्यागकर और किसीकी

उपासना करताहै सो संसारमें अप जस औ

र हानीकोही प्राप्त होताहै जैसे विभ चा

रनी स्त्री अपने पतीको त्यागकर और पुरुष

के साथ रमन करतीहै तैसेहीं अपने इष्टको

त्यागकर हमरेकी उपासना करने वालावि

भचारी व्रत होताहै ऐसे तिस संतका वच
न सुन कर श्रीरघुनाथ जीके चरन कम
लोंके भ्रमरे परम चतर तुलसीदास जा
नकी नाथके हृदय मै सँरकर श्रीगोपा
लजीकी मनोहर मूरती को देखकर दोनो
हाथजोड करके कहनेलगे किहे कोटिकामदेव
की छबीके लजादेनेवाले सुखनयनी और भक्त
जनोंके मनको मोहितकर्नेहारे घनस्याम आज।

११०

११

अलो किक रूपके सहित हाथमै मुरली धार
न कियेहुये यद्यपि अत्यंत शोभासे विराजे
हुये हो तद्यपि हेनाथ इह तुलसी तुमारादा
स तबलग चरनोपर माथा नहीं नायेगा कि
जबलग सुंदर मुरलीको त्यागकर हाथ मै
सुंदर धनुषबाण धारन नही करोगे। २८।
चौपाई। तुलसि दास अस बचन सुहाये। ब
तसल भक्त सुनत सुखदाये। राधाकृस भये

२४
भ॰
॥

सियरामा। पति हरि वैसिवेत्र अभिरामा। धनु
ष बाणकर धारि सुहाये। लोक बिलोकि
चकित बिसमाये। निज निज हृदय सकल अ
नुरागे। साधु साधु सब भाषण लागे। कीर
ति विमल तुलसि जन गावहीं। बार बार च
रनन सिरनावहीं। एक संत तब वदन उचारा
कुलदेव शरण अवतारा। रामचंद्र श्रेष्ठा अव
तारी। सुनि अस तुलसि भक्त व्रतधारी। अति

॥

प्रसन्न मानस अनुरागे। गायन नृत्य करन।
कललागे। बहुरि बदन अस बचन अलापे
अहोभाग्य जग मोर सुहाये। जो अस प्रभुहि
रूप अवतारा। धरनि धेनु सुर त्रास निवारा
२ सोभित कँन भक्त भव दाया। धन्य भागजन
दरसन पाया। असहढ भक्ति तुलसिव्रत
धारी। वैस्नव गण निज हृदय विचारी। वि
विध प्रसंसहि विमल गुणगाते। निज निजव

ले भक्ति मदमाते। अस इह तुलसि भक्त वड
भागी। केवल लोक उधारन लागी। बालमी
कि जनु आन उदारा। महितल लीन रुचिर
अवतारा। राम चरित पूरब मुखगाथे। बाल
मीकि कछु विपति नपाये। नहितें अब तुल
सी वपुधारी। करि प्रबंध भाषा सुख कारी
गाय गाय विपती जग लीना॥ सो निज
माला मनोरथ कीना॥ ॥

याते तोहि महेश जगध्याना । मनवच करम ।
भक्त भगवाना । जैहिं नभयो नहोवन हारा
धन्य धन्य तुलसी संसारा । वेदहूं नाम युक्त
कर दोई । मोपें करहिं कृपा निज सोई । सदा
देहिं अनकूल सहाये । संसृति सजस सम
ति सुखदाये । दोहा । अस प्रकार इह चरितमें
तुलसि दास मनमान । कीन्यो अलप जथाम
ती कथन श्रवण सुखदान । जेसादिर नर भ

सु०
मं०
११२

किजत करहिं रटन रुचि एहू। उपजहिं सिय रघुबीर पद पदम नवल निनेहू। २२। टीका इसप्रकार तुलसी दासके सुंदर वचन सुन कर वतसल भक्त भगवान गाथा कुसलजोहैं सो ततकालहीं सियेराम रूपहोय गये और वेसी वेत्र अर्थात मुरली छड़ी त्याग करके धनुष बाणको धारन करलेते भये तब इस अदभुत चरित्रको देखकर लोग बड़े आचर्ज।

113

११२

को प्राप्तभये और साधु साधु शब्द उकार

नेलगे फिर तुलसी दासजीकी अनेक प्रका

र कीरती और वड़ाई कर कर वार वार चर्नों

पर सीसनावनेलगे तब तहां एक संत क

हनेलगा कि हमप्रमात्मा जोहैं सोतोपूर्ण

अवतारहैं और रामचंद्र अंसा अवतारीहैं इ

सप्रकार तिसके मुखसे वचन सुनकर पर

म व्रतधारी भक्त तुलसीदास प्रेमकेवश।

अनेसे प्रसन्नभयेहुये नृत्य और गायन कर
ने लगजानेभये और फिर कहनेलगे किहे
संतो आज जगत मे मेरे अहोभाग्यहैं जोश्र
सेयाकू ब्राह्मणके रक्षक और भूमीकाभार
उतारनेवाले पूरण अवतार भगवानका मे
ने दरसन पाया असे तुलसीदास जीकी दृ
ढ भक्तीदेखकर संपूर्ण वैस्नव नानाप्रकार
स्तुतस और वडाई कर कर धन्य धन्य कहने

११५

हुये अपने अपने आश्रमोंको चलगये नाभा
दासजी कहतेहैं कि इसप्रकार इह तुलसी
राम भक्त वडभागी केवल लोगोंके उद्धार
नके वास्ते पृथवीतल परमानो दूसरे वाल
मीकी अवतार धारकर आये हुयेहैं सब ज
नम मै राम चंद्रजीके चरित्र गाय गाय कर
त्रिपती का पावन नहीं भयेथे ताते अब तु
लसीदासका शरीर धारकर और सुंदर भा

२१
भ०
११४

115

षा प्रबंध रचाय कर फिर भक्ती प्रीतीसे गा
य गाय कर सो आपने मनका मनोर्थ सफ
ल करके जगतमे रूपतीको प्रापत भयेहैं
इसते तुलसी दासके समान और हसराको
ई मन वचन काया करके भगवानका प्या
रा भक्त कोई नाभया नहोवेगा इह तुलसीदा
सजी संसार मे धन्यहैं मेरी इनको वार ।
वार वंदना होवे और इह सोव सजनस ।

११४

और सुमतीके देनेवाले सदा सहाय क हो

कर मेरे पर प्रसन्नहीं रहैं हे संत भक्तो इ

ह तुलसीदास जीकी परम पवित्र और म

नोहर गाथाजोहै सो ईहां तुच्छ मतीके अनु

सार मैने सनमान पूर्वक आपके आगे गा

यन कर दईहै इह कैसी भी गाथाहै किजो

कोई इसको प्रीती और श्रद्धा पूर्वक सुनेगा

अथवा गायन करेगा तिसको सियेरघुवीर

भ॰ म॰ ११६

116

जीके चरन कमलोंमैं नित्य नवीन हीसने
ह उपजेगा और भगवानकी भक्ती प्रीतीवा
ला होय कर जगतमैं सुंदर जसका पात्र
हो जावेगा। इतिश्रीभक्त विनोद ग्रंथे भग
वद भक्ती महातमे भाषा टीकायां तुलसी
दास चरित वरणनं नाम सरगः ॥ ।

मिहांसिंह कृत





११६

न लगाय कर ध्यानमें लीन ह्वये वैठेथे। २७।
चौपाई। देखिदसा श्रम भगवानकेरी। रह्योवक
न संकित न्यपहेरी। ठाढ़ोउभय चरी न्यपता
हां। रह्योनकत कौतक सरनाहां। बोले भक्त
सेन सखदैना। बोले अमल कमल दल नै
ना। न्यपहिं देखि जड पति अनुरागे। उठिभ
राय भुज भेटन लागे। पुनि स प्रीति भगवा
नमहीपें। वैठारो निज सेज समीपें। नवधि

१८
भं
५२

92

स मित संदिगाय नयोरी । भनत भूप अस ज
ग कर जोरी । प्रभ उपज्यो संशाय जिय मोरे ॥
निवरन चाहंू कृपा करि तोरे । जगत चरा चर
जीव सवैंही । धरत ध्यान तुमरो प्रभ अैहीं ।
तवति जधरहु ध्यान कहि केरो । हरिय नाथ
संशाय इहमेरो । सुनि अस भूप कथन जड़ता
ई । बोले मधुर मंद मुसकाई । सुनहु परम नृ
प सुमति निधाना । मोर वचन इह सत्य प्रमा

ना। जीव चराचर संसृति जेते। निसि वासर ।
ध्यावत मोहि तेते। दोहा। मै संतन निज जनन
कर धरहूं ध्यान मनमाहिं। मोहि जग जन त
जि ध्यानकों प्राण धीये असनाहिं। २८। टीका
नब ऐसी भगवान की दसा देखकर राजा अ
र्जनके वश हो कर संकित भया हूआ स्थित
होरहा इस प्रकार दो घडी तक दीनवंधु भग
वानका कौतक देखनारहा इतनैमें भक्तसेनो

को सुख देनेवाले कमल समान माने कमलके

दलवत सुंदर नेत्र जाहैं सो बोले नव राजा

युधिष्ठर का मनसुख देखकर भगवान उठ

करके हृदय से लगाय लेते भये फिर प्रीती

सनमान से हाथ पकड़कर अपनी सेजके

समीप बैठाय लेनेभये नव राजाके हृदय मे

जो संदेह उपजा हुआथा हाथ जोड़ कर विन

ती करनेलगा किहे कृपा सिंधू मेरे हृदयमे

जो संशय होरहाहै सो आपकीकृपासें अब
मिटाया चहताहूं सोक्याहै कि जगतके सब
ही चराचर जीव जो निरंतर करके आपका
ध्यानधारतेहैं हे भगवन तुम किसका ध्या
न धारतेहो मैंने आपको ध्यानमें लीन हुये
देखाहै मेराइह संशय निवारण करिये ऐ
से राजाका कथन सुनकर भगवान मंद मं
द मुसकायकर कहने लगे किहे सुमती

प्रधान राजन अवतं मेरा वचन सत्य करके
श्रवण कर कि इह जगतके जितने चराचर
जीवजोहैं सो सब रात्रीदिन मेरेको ध्यावतेहैं
और मै हृदयमै निरंतर करके अपने जनजो
दासहैं तिनका ध्यानधारन करनाहं मेरेको
जगतमै अपनादास भक्त छोड करके और
कोईभी प्यारा नहींहै । २८ । चौपाई । परेसो मज
सर अब सर पही । मोरभक्त भव परम सनेही

श्री भीषम सुभट कमल कुल भाना। अग्रग
न्य धन धरन प्रधाना। नाम ध्यान इहि अव
सर करहीं। लखि अनन्य जन छिन न बिसर
हीं। होत उतरायन रविधीरा। ममपद सुम
रत तजहिं सरीरा। है संका उपजत मनमाहीं
बहन कलंक लगायो मोहि काहीं। निज नि
न कहहिं लोग समुदाई। नृपपै कृपा कीन
नउराई। पैन सिखायो धरम भवालें। कछु

१८ भ· ९५

95

सुभ धरम करम जगपालैं। धरम करम जप जोग विरागा। ज्ञान ध्यान विज्ञान विभागा। चारू अचार विचार सुरीती। अर्थ काम नर नायकनीती। विमल विवेक महातम नामा। साधन जोग अकाम सकामा। विधि निषेध जहिलगि जग माहीं। रह्यो विदित सब भीषम काहीं। तास नजत तन इह सब दाई। होहिं अस्त संशय नहीं गाई। न्रपति ध

१८

रम जस विदित प्रकासा। कोउनि तुमहिं सि
षावन दासा। ऐसेहि तें तुम जो ननरेसा। चा
हु सुनन सुंदर उपदेसा। तोसे कहहुं सत्य
पति धरमा। तुमसों नाहिंन मोर कछु मरमा
जिनो जनन भीषम जगमाहीं। तिनो अपर
को नाहिं न कहहीं। दोहा। ताते तुम भाईन
सहित चलहु सकल मिलि ताहि। मैंहुं चल
व तुमसंग इतन जि विलंब नरनाहि। २९।

१८ भ॰ ९९

96

टीका। हे राजन इस समय मेरा परम सनेही भक्त भीषम जो है सो बाणों की सेजा पर पड़ा हूआ है और वे कैसा है कि वीरों की कमल रूपी कुल मैं एक सूरज और संपूर्ण धनुषधारियों मे प्रथम गिना हूआ है मै इस समय तिसी का ध्यान धार रहा हूं. अपना हृढ भक्त जान कर एक छिन नहीं विसार सकता हूं जब सूरज उत्तरायण होवेगा तब सो भक्त मेरे

२०

चरनोंका स्मरण करना ह्या शरीरको स

गेगा इसतें मै अनेक सोचके वश हो रहा हूं

क्यों कि मेरेको कलंक लगना चहता है सब

लोग जो हैं सो अपने अपने कहेंगे कि देखो

राजापर जडनाथ ने कृपा करी परंतु परम

और सुकरम जो है सो तो कछु नहीं सिखाया

और परम सुभ करम जप जोग वैराग ज्ञान

विज्ञान ध्यान और सुभ आचार विचार सुमरी

नी अर्थकाम राजनीती और निरमल विवेक
सुंदर नाम का महातम जोगके साधन अका
म सकाम विधनषेध अर्थात गृहण त्याग इ
त्यादी जहांलग धर्म संसारमैंहै सोतो सब
भीषम कोहीं विदत हैं सोई भलीप्रकार जा
नताहै तिसके शरीर त्यागनेसे रहसंसरण अ
सत और लुपत हो जावेंगे फिर कौन कहै
गा और हेराजन ऐसे धर्मके प्रकार फिर न

मको कौन सिखावेगा और हेराजन जो तू मेरे
से इह उपदेस सुना चहता है तो मेरा तुमारा
कुछ भेद नहीं है मैं तुमको अपने हृदय की
सच सच कहता हूं कि जितना जगतमें भीष
म जानता है इतना और कोई नहीं कहि सके
गा तातें मेरी इहो समझती है कि अब तुम सभ
आता और सब सजन हितकारी मिलकर ।
विलंवको त्यागकर तहां भीषम के पास चलो

मैभी तमारे साथ चलताहूं । २६ । चौपाई । तमज
स जस सुख्व नवराई । तस तस भीषम देहिं व
नाई । तमरे संग मैहुं चनिलेहों । इति कवहूंन
अस अवसर पैहूं । प्रभ मख चलि प्रभाव अ ।
भिरामहु । धन धन गज्यो नरिंद पितामहु चल
हूं भूप भाष्यो करजोरी । अस अभिलाख अहै
प्रभमोरी । अस कहि भाईन भूप वुलाई । रथ ।
मातंग तरंग सजाई । इकरथ अरजन सामवि

राजे। इक रथ भूप धरम छवि छाजे। चले जात संजन सहदेवा। सात्यकि नकुल करन प्रभुसेवा। भनत कथा मग अनक सुहाई। पहुंचे कुरु खेतर महं जाई। सरन सेज जहं परेउ गंभीरा। भीषम सुभट सिरोमणि बीरा। बंदि चरन लछिन पति अभिरामा। बैठ्यो सीस समीप। पितामा। मन मुख कुसल प्रीत विय भाई। बैठे उर प्रमोद सरसाई। सुनन हेत भीषम उपदेसू

आये मुनिवर हंद वसेरू । दोहा । नव भीषम । पूछ्यो कुसल सादर प्रीति समेत । कह्यो सब न तुमरी कृपा सब विधि कुसल नकेत । ३० ।

टीका । हे राजन तुम्हा जो जो तुम पूछोगे सो भीषम जी सब बताय देवेंगे हमारे संग मे भी सुणलेंगा ऐसा समय फिर कहा आप न होवेगा इसप्रकार भगवानके मुखसे भीषम जीका प्रभाव सुनकर राजा जुधिष्टर ।

तिन पिनामहं जीको धन्य धन्य मानने भये।
फिर हाथ जोड़कर कहने लगे कि दीनाना
थ मै चलता हूं मेरीभी यही अभिलाषाहै
ऐसे कहिकर राजाने ततकाल अपने भा
ईयोंको बुलाय कर और रथ गज घोडे इत्या
दी सुंदर वाहन सजायकर एक रथपर अ
र्जुन और घनस्याम विराजमान हूये औा
र एक रथपर राजाधरम और सहदेव च

१८
भ.
१००

100

ले जाते हैं सात्यकी और नकुल जो हैं सो मार
गमे अनेक कथा वारता कहते हुये भगवा
नकी सेवाकरते चले जाते हैं तब जाते जाते।
कुरु क्षेत्र मे जाय प्राप्त भये जहां वाणोंकी से
जापर वीरधीरों मे सिरोमणी भीषमजी विरा
मे हुयेथे तहां राजा जुधिष्ठर चरनो को वंदना
करके तिनके सीसके पास बैठ गये और सन
मुखमे कृस्न भगवान आस पासमें और सब

भाला वडे आनंद पूर्वक वैठगये तिस समय त
हां भीषम का उपदेश सुनने के वासते मुनियों
के समूहजोहैं सो जहां तहां से चले आवते भ
ये तव भीषम जीने वडी प्रीती सतकारसे स
वकी कुसल जोहै सो पूछी आगेसे सवने क
हा कि आपकी कृपानें सर्व प्रकार करके कु
सल और आनंद हीहै ।२०। चौपाई । श्रीजदु व
रनव चरनन वोरा । वाढ़ भये उर हरष नथोा

रा। भीषमनि वदि स्याम चन काहीं। मानि म
भे ह्मान मोद मनमाहीं। कियो प्रणाम जोरि जग
पानी। जैजै जैति वदन वरवानी। दीन नाथ।
मोसे अगकाहीं। धन धन धनक कौन जग
माहीं। जो इहि अवसर दरसन दीना। कृपान
केन कृतार्थ कीना। तव सडु वचन कह्यो भग
वाना। सुनहु पितामहं नीति निधाना। आये ध
र्म भूप तव पासा। मानस समनकरन कछु आ

२५

सा। सो बालक गुनि नवगुन गेहू। हित जन
सुभग सिखावन देहू। नृपति नीति नव चतु
रसयाने। अपर परम नमेर सब जाने। इनहिं
सिखाय सकल सुविधाना। लेहू बिदन जग
सुजस महाना। जन प्रमोट पद सुनि प्रभु बा
नी। भये बदन भीषम सुख मानी। दीनानाथ
बिरद नव पहू। राखहु सदा दीन परनेहू।
पैसंसय मोहि कृपा अगारा। हरिय हरन।

हरि भेद निभाता। तुम्हरे इच्छन भीत भवभंगा
मोहि सुछुन कर कवन प्रसंगा। जाके सब
विधि तव जन त्राता। ग्रहे भरोस चरन जल
जाता। भीषम वचन सुनत मुसकाई। सव
न सुनाय कहो जडराई। तुम सम तुमहूं प्र
वीन पितामा। वयान काहू तान गुन था
मा। जथा अलाप सकति वरतोरी। तयाता
न सामर्थ न मोरी। तव मात सुनत सकोच

संसारू। विमल परम सुभ सरम प्रकासू। ह
म इन जन समाज किय आवन। अभिलाषि
त नव सुमति सलोवन। दोहा। सुनि अस
कथन कृपायतन मन प्रमोद सरसाय। भ
ने वदन भीषम ववन रवन रुचिर चितला
य। नाथ रीत नमरी सदा पैहै विदन संसार
देहस जस निज जनन कहूं जस नस मिस
हूं मझार।२।। टीका। नव श्री जडुपती जोरैहें

सो आनंद पूर्वक भीष्मजीके चरनो की ओर
बैठगये तिनको तहां बैठे हूये देखकर भीष
म अपने हृदय मै परम सुख मानता भया औ
र दोनो हाथ जोडकर प्रणाम किया फिर मु
खिसे जैसे शब्द उचारकर कहनेलगा किहे
दीन बंधू तुमसत्य करके कृपाकेही समुद्र
हो जो मेरेसे पापीको इस समय चरमै आय
कर दरसन दिया और कृतार्थ करके जगत

102

२६

मै धन्य धन्य और सजनका पात्र बनाय दि
या है तब भगवान कोमल वाणीसे कह
ने लगे कि हे नीतीके निधान पितामहे त
म मेरा वचन सुनो जो इह राजाधर्म तुमा
रे पास आये हैं और कुछ प्रश्न किये चहते
हैं सो इनको तुम बालक विचार कर हि
तके सहित बडे सुखके देने वाली शिक्षा
दो है सो देखो हे भीषम जो तुम राज नीतमे

परम प्रवीनहो और जहांलग धरम सुकरम
और सुभ विधान चार विचार इत्यादीहैं सव
तुमको विदतहैं और भली प्रकार जानते
हो सो संपूर्ण इनको सिषाय कर जगत मै
सुभ जस को प्रापत करलेवो औसी भक्तज
नो के हृदय को आनंद देने वाली भगवा
न की संदरवानी सुनकर भीषम करने ।
लगे कि हे दीनानाथ तुमारा सदैव परीवि

रदहै जो आपने दास पर दयाहीं पालनी प
रंतु दीना नाथ मेरेको वडा भारी संशय हो
गयाहै सो आप कृपा करके मेरे इस संदेह
को हर करिये सो काहै कि राजा जुधिष्टर
जो सरब काल आपके चरनोका हीं भरो
सा रखताहै तिसको आपके होते मेरे पूछ
ने का कौन प्रसंगाहै ऐसे भीषम का वचन
सुन कर भगवान मुसकाय कर और सब

१८ भ ५

को सुनाय कर कहने लगे कि हे पितामह

तुमारे समान जगतमें तुमहींहो हमरा श्रे

सा कोई गुणोंकाधाम नहीं है जैसी अलाप

शक्ती तुमारीहै और जैसा तुम कहते हो

ऐसे कहने की मेरी भी सामर्थ नहीं है हे

गुण प्रधान भीषम हम तो केवल तुमा

रे हीं मालिक सुभ परम और सुभ मर मा

के प्रकार सुणने की अभिलाषा वाले ।

१८

104

होकर सब समाज को लेकर ईहां हमारे। पास आये हैं इस प्रकार भगवान कृपा निधानका कथन सुनकर भीषम अप ने हृदय मैं परम भाव मानकर कोमल बाणीसे कहने लगा कि हे दीनानाथ हमारी सदैव यही रीती है जो जगतमे जे से कैसे करके अपने दासको बडाई और सुजस ही देते रहतेहो। २१। चौपाई। अब

१८ मर्कट करि दया घनेरी । देखि दसा श्रम सं
ज्ञनमेरी । परसत पदम पानि मम सीसा । क
१५ थन शक्ति सतधर्म रमीसा । कथन शक्ति
सतधर्म रमीसा । देहु दयानिधि जन निज
काहीं । होहिं सहजसाहस मनमाहीं । सर
संधान धान तन पीड़ा । प्रभु ढिग कहत
होत अति ब्रीड़ा । सुनत देव व्रत वचन र
साला । धरेउ माथ नहि हाथ कृपाला । वहु

105

रि भजो भ्रम बदन मुरारी । सुनहु भक्त भीष
म व्रतधारी । सकुच न करत भास रविकोरी
धर्म कथित न कछु तुमहिं नधोरी । पाय स्पर
श पानि भगवाना । मिटो जाउ भ्रम सरन म
हाना । विगत खेद उपजो सुखदेहा । उमगे
हरि पद पदम सनेहा । भजो परसि पुनि चर
न मुरारी । रूप सच्छिये रुचि जथा तमारी । ध
न्य सुवन नव प्रसन उचारा । राज धरम करक

१८ रूप प्रकारा । आन विधान वेद मत गायत । क
थिय कथन संदेह पलायन । दोहा । नव भीषम
उर सुमरि पद जदुपति कृपा अगार । सान कु
ल वरणन किये राजधरम विसतार । ३ ।। टी
का । फिर भीषम कहता है कि हे भगवान अब
दया करके मेरी दशा और मेरा कलेश श्रम
देख करके सरव आपियों के हर करने वाले
अपने हाथ से मेरे सीस को स्पर्श करिये और

१०६

१०८

सत्य धरम के कथन करने की शक्ती जो है सो
हे दीन हितकारी मेरे को दीजिये और चित्त
मे उतसाह की अधिकता कीजिये इह बातों
के घाउ और घाव जो हैं तिनको पीछे कथन
करने को आपके मन मध्ये लज्जा आवती है
ऐसे भीषम की वाणी सुनकर कृपा सिंधु
भगवान ही कृपा के वश होय गये और तिसके
[illegible]धे पर हाथ धरकर कहने लगे कि हे अन

धर्मी भीषम जैसे सूरजको प्रकाश करते ।
कुछ संकुच नहीं होता तैसेही धरमके कथ
न करने तमको कुछ लज्जा नहीं है इसप्रका
र जब दीनानाथ के वचन सुने और दीन वं
धूके हाथका स्पर्शपाया ततकाल बाणोके
घाउ और पीडा कलेश सबमिटगया शरीरमे
परम सुख और आनंद उपजताभया तबभ
गवानके चरन कमलों पर प्रणाम करके सो

१८ भ १०८

107

१०८

ई चरन हृदय मै धार कर कहने लगा कि हे

राजन अब जो हमारे मन को भावती है सो

पूछिये ऐसे भीषम पितामह को अन हेल

जानकर राजा जुधिष्ठिर प्रश्न करने भये कि

हे तात राज धर्म के प्रकार और भिन्न भिन्न

नाना विधान कि जो वेद मै गायन किये हुये

हैं सो भ्रम और संशयो के हर करने वाले

कृपा करके सब कथन करिये इस प्रकार य

१८
भी०
१०८

से भूपके प्रश्न सुनकर भीषम जोहैं सो जदुनं
दन भगवान के चरन कमलोंको स्मरकर
बड़ीप्रीती रुचीसे राज धर्मके अनेक प्रकारों
को विस्तार पूर्वक कथन करने लगे।३१।।
चौपाई। बहुरि अनेक ज्ञान मन भाये। सहि
त अंग इति हास सुनाये। विधि नषेध पुनि
बहु विधि भाषा। अर्थशास्त्र कछु मरम न
राषा। कहे सकल साधन अनुरागा। स्वर्ग

108

ह नरकद करम बिभागा। आपद धरम अने
क प्रकारा। जनम जगत सत असत विचा
रा। जोग विराग ज्ञान विज्ञाना। मोक्ष धरम
श्रुति किये बखाना। बिलग बिलग मत ह
रुब प्रलीना। विमल भक्ति पथ गायन की
ना। वरन्नो परम धरम सुखदाना। दान ध
रम श्रुति विविध बखाना। निर गुण सगु
न उपासन चाहू। लक्षण साध अनेक प्रका

काहू। तीरथ संत महातम जोई। कौन विस
द गायन सब व सोई। जस जस सकेउ भूपन
भूपा। तस तस भीषम किये नरूपा। वहो न
ओहु शेष नहिकाला। सकेउ जो न परम म
हि पाला। सकेउ बहुरि भाखि घन गाथा। ब
रनेउ सोऊ सकल कुरुनाथा। सोरठा। कि
मि पावहिं विस्राम। भीषम भनत सपक्ष भ
आसारिक अभिराम। जहं बैठे सोना सकल

टीका। फिर भीषम जीने राज अंगोंके सहित
मनको भावने अनेक इति हास कथन करे
जिसते उपरांत विध नषेध अर्थात गृहस्थात्रा
म इत्यादि धरम जोहैं सो सब कहे फिर अर्थ
शास्त्र के प्रकार और संहरण साधन स्वर्ग औ
र नरक के देनेवाले भिन्न भिन्न करम अन
न्यता जो प्रेम इत्यादि सब सुनाय दिये और
आपद धर्म अर्थात आपदाके धरम जो अनेक

प्रकारके हैं और जगतनमे जनम मरन और प्र
भमका विचार जोग वैराग ज्ञान विज्ञान औ
धरम मोद इत्यादि सब भिन्न भिन्न कथन
किय फिर भगवंत की निरमल भक्ती जो है
तिसका मारग गायन किया सर्व सखोंके दे
ने वाला परम धरम और दानधरम निरगुण
उपासना और संत महातमाके लछण और
महातम परम पवित्र तीर्थ महातम केसहि

ने सब भली प्रकार मालेसे वरणन किये जै
से जैसे राजा युधिष्टरने पूछा तैसे तैसे हीं भी
षम ने सब कहा तिस समय ऐसा कोई प्रस
बाकी नहीं रहा जो राजा धर्मने नहीं पूछा।
और भविषत वाती जो हैं सोभी पूछीं भीषम
जीने वेभी प्रकट करके सब सुनायदई इसप्र
कार भीषमका वडा सुंदर और सुभ कथन
सुन करके व्यास आदिजो सब श्रोता वैठे ह

१८
भ.
॥

हेहैं कोईभी त्पनी को आपत नहीं होता पीतीह
सब सनते हीं जानेहैं ।२२। चौपाई ।ग
व कहूं जग भुजा उठाई । कहो पितामहे
गुहराई । है सिद्धांत शास्त्र सब पहु । रा
है सदासंत पद नेहु । पर उपकार निरत धरि ।
काया । होय अनन्य दास जडमाया । सील स
भाव सदा निजराखै । मोष मन नविचैव रसभा
खै । राखै सब जीवन परदाया । रंगे नरंग मोह

॥

110 111

मद माया। सत्य धरम रत रहैं सदाहीं। कपट
द्वेष ताकै कछु नाहीं। धारै व्रत परहित परधी
नी। ताकै सरल वचन मन नीकी। तजै सुजा
न वैमनिज नाहीं। हैरै हरि मय सब जगका
हो। .... सार धरम समदाई। श्रवन धरम
...धरहु सदाई। भावे हरि नाम दया मनजा
... माया करहिं सखा ननोके। प्रेम प्रवे
...करि विविध प्रकारैं। वदन देव व्रत पाइ

[illegible] ॥ तीन्यो वहति मौन व्रतधारी । तव स
भे [illegible] मति गणसारी ॥ दोहा ॥ लगे सराहन
[illegible] बहु वार वार रखाय । ऐहि नभ योन
होहि जग धन धन भीषम भाय ॥ ३४ ॥ टीका ॥
तव फिर भीष्म टीको भजा उठाय करके सव
को ऊची स्वरसे कहनेलगे कि हे भाई सपूर्ण
शास्त्रोंका सिद्धांत तो यही है जो संतजनोके
चरनोमे सदैव प्रीती और प्रेम रावे और इसशरीको

११२

110

112

कुल कमल पद प्रीति नित दैन सजनस संसार
दुरित दोष दारद समन दमन मोह मदमार
दीका। तब भगवानने अपने हाथ कमल
से भीषमके माथेको स्परश किया तिस
स्परसके होनेसे भीषमका शरीर ततका
ल मानो जले हूये वनके समान होगया।
तब तिसका स्तुतक कर्म जो है सो विधी पूर
वक सब पांडवोंने किया और आपदीन व

व पर उपकार मेंहीं लगा रहे ज
भगवानका अनन्य दास होवे ओ
को त्यागकर एक उनकाहीं भरोसा ए
स्वपने शील स्वभाव में रहे कबी को
रे और विषयोंका रसना चावे सब
पर दयाकीराखे और मोह मद मा
रहे इनके रंगमे ना रंगजावे सदैव स
वीं लीन रहे हृदयमे कपट द्वेष

118

८ ...से ऐसा व्रत धारन करै कि त्रि
...रहित और पर श्रीनीहीं प्रतीत होवै
...नको जीतकर वचन अपना अटल।
...पने वंसकी मर्यादा जो है सो नहीं त्या
...भगवान हैं तिनके सहित सब ज
...है हे धरमरूप सर्व धर्मका साँता
...म हृदयमे सदैव हीं धारनकरो का
...भगवान का नाम और मनमे द

११२

या इन्द्रदोनो जिसके होवैं तिसको माया कवी
स्पर्शी नहीं करतीहै अर्थात तिसके निकट न
हीं आवतीहै इसप्रकार भीष्म जीने राजायु
धिष्ठरको नानाप्रकार प्रबोध करके फिर
मौनभाव हृद धारन करलिया अर्थात बोल
नेसे मौनहो गये तब भगवानके सहित
मुनियोंका सब समाज परम प्रसन्न होकर
अपने [illegible] मुखसे वार वार शलाघा करने

१८ म ११५

लोक के ग्रहे जगतमे भीषम धन्यहें इनके स
मान तीनकालमे नाकोईहै नाभया नाहोगा।
२२। चौपाई। भई गगन नव गिरा सुहाई। रहोउ
नरायण सुवछाई। सुनि भीषम जगजेविनपा
नी। जड़ ... जैसो ग्रम विनय वखानी। दीनना
थ दीनन सुखदाई। वल्पोजान ग्रव समय वि
... । ... नाथ मम नैनन आगे। करन पया
न प्राण इहलागे। प्रभु सनमुख देखत हगनो ११५

हो । माया मोहन कापहिं मोही । नव मकंद उ

[illegible] मानिंद राते । भये ठाढ़ इत भीषम आगे

बरन [illegible] बखसन मघहैं । मन हूं भीति भव

भक्त ने[illegible] हर ऋषी ब्रह्मऋषी ऋषीराई । गंध

र्व यक्ष [illegible] समुदाई । चारन चाहु चतुर नर

नाहा । ठाढ़ विलो कहिं कौतुक नाहो । बार

बार अस कहत सबाही । अहो भाग भीषम ज

गमाहीं । स्याम जलध तन नयन विसाला । बिल

१८

भ॰

११४

115

सत हृदय विमल वनमाला। वसन पीत उपति
दाम निलाजे। हरन कोटि छवि मदन विराजे
चारि भुजा नै खलन मद गंजन। सर उज धर
नि येन गन रंजन। मकट मयूर पुरछवि नी
को। चि[illegible]नि चारु मनिन श्रीयजीको। कुंडि
ल करन बदनविधु निंदा। कचकल कुटिल
मधुप मन हेदा। दोहा। श्याम मूरति मरु माधुरी
लखि मन मख भरि नैन। चितवत अनमिष दे

११४

व ब्रत मरन मेज कृतसैन ३४ । टीका। जब इस
प्रकार भीषम की बड़ाई करी तब आकाशसे
इन्द्र समभवानी प्रकट होती भई जो सब उत्तरा
यण आ[illegible] हो गया है ऐसी आकाश वानी को
भीषम सुणकर जदुनाथजी से विनती करने
लगा कि हे दीन बंधु हे दीनानाथ अब समय
जो है सो बीता जाता है कृपा करके मेरे नेत्रों
के सनमुख स्थित हो जाईये कों कि मेरे प्रा

१८
भ०
॥६

116

ए जोहैं सो अब चलने लागेहैं हेभगवन तुमारे
को मनमुख नेत्रों मै देखते हूये मेरेको मोह
माया आदि कुछ नही व्यापेगा ऐसा सुनतेही
भक्त हितकारी भगवान तुरत उठकर भीष
म के सन्मुख स्थित होजाते भये और चर
णो की ओर खडे होकर तिसके मुखको ओ
र देखतेहैं सो मानो जगतमे भगतका भ
य हर करतेहैं तिस समय तहां देवऋषी ब

॥४

ख ऋषी राजऋषी गंधर्व यक्ष सिद्ध चारन इत्या
दि औरु सब राजा महाराजा स्थितभये हूयेको
लक देख रहेहैं बार बार औरसा कहते हैं कि
आज जगत मे भीषम के धन्य भाग्यहैं कि जो
कोटि कामदेव की छवीको हरने वाले पीत
वस्त्रधारी औरु दुष्ट जनोका मद हर करने वा
ली हैं चार भुजा जिनकी गरुड़ध्वसारण पृथवी
औरु देवताउंके रक्षक मोर मुकट करके शो

१८
भ·
११८

भाय मान और ग्वालियों के मनको प्यारी लगाती है जिनके नेत्रों की संदर दृष्टी कानोंमें मनोहर कुंडल और चंद्रमाको लजादेनेवाला मनोहर हारी जिनके मुख भ्रमरयों के समाज को निरादरने वाले सुंदर श्यामकेश ऐसे भगवानकी दिव्य और माधुरी मूरती को वाणों की सेजा पर विराजा हुआ भीषम सन मुख नेत्र भर कर और एकटक होकर देखताहै।२४।चौपाई

११८

117

सो मूरती नैनन पथलाई । भीषम उर निजली
न समाई । रहे तहां सब मुनिन समाजा । कौ
सिक व्यास देव भरद्वाजा । नारद परस रामज
गसेवा । श्री परवत कश्यप सुकदेवा । देखिबे
सबस जदुपति काहीं । ते सब करत परसपर
नाहीं । आजकौन भीषम समझाना । जहिवि
काय आस कृपा निधाना । अंतकाल सनमुख
गन ताके । अनलत कृपा हृष्टि निजवाके ॥

१८ आज भाग एहि भागन नाहि। एक बदन कि
भ॰ मि जाहिं सराहि। हैं सेवक कर इह सिवकाई।
॥१८ थें कृपाल कर कृपा सुहाई। जासु प्रभाव ना
११८ म सिवकासी। जीवन मुक्ति देत अबनासी
जासुनाम रटि जन जग माहीं। आवन कब
हूं जनम फिर नाहीं। मरन काल हरि सुम
रत जेहि। नासत कोटि जनम अगनेहि। सोक
पाल भीषम पट माहीं। ठाढे अभय करन जन काहीं। दोहा॥

पन पन भाजन सहनस जग भक्त देव व्रतग्राज

मक्ति दान जहि देन हित ताके त्रिभुवनराज ॥ २५ ॥

टीका। नव से भगवानकी मूरती को भीष्म

नेत्रोंके मारगमे ल्यायकर अपने हृदयमे

विराय लेता भया तहां जो मुनियोंका समा

ज विश्वामित्र व्यासदेव भरद्वाज नारद परस

राम परशरनमुनी और कस्यप शुकदेव इत्या

दि सब भगवानको भक्तके प्रेमके वशहूये

१८
भ.
११५

११९

देख कर परस्पर कहते हैं कि आज हमरा भीष
म के समान कौन है जिसने ऐसे कृपानिधान
भगवान को रिझायलिया है देखो अब अंतका
ल जिसके मनमावे स्थित होकर कैसी अनंत
कृपादृष्टी से देख रहे हैं आज इसके भाग संह
ले भागों के राजा हैं जिनको एक मुखसे कैसे
श्लाघा होसकती है क्या जानिये कि इह से
वक की सेवकाई का प्रभाव है कि अथवा भ

११५

गवान कृपानिधान की कृपा है सो कृपासिंधु
कैसे हैं कि जिनके नामके प्रभावसे अविनाशी
महादेव काशी में जीवों को मुक्तीदान देकर
अभय करते हैं और जिस परमात्माके नाम
को रटन करके मानुष्य जगत में फिर जनम
नहीं पावता है मरन कालमें ऐसे दीनानाथ
भगवान के समरण करने से कोटि जनम
के पाप जो हैं सो सब नाश को प्रापत होते हैं ।

१८ भा॰ १२॰

सो भक्त हितकारी भगवान आज अपने दास

भीषम को अभय करने के वास्ते जिसके च

रनों में स्थित भये हुये हैं धन्य है धन्य है जग

नमें सज्जनों का पात्र भीषम कि जिसको अव

भक्ति दान देने के वास्ते तीन लोक के ना

यक भगवान सन्मुख स्थित भये हु

ये हैं ।२५ ॥ चौपाई । देखि देखि प्रभु दीन

सनेहा ॥ सुंदर स्याम नाम रस देहा ॥

१२॰

श्रीलालित पद पंकज मांही। किये निवास म
धुव मनकाही। करि इकाग्र इंद्रि इक ध्याना।
पुलक काय गल द्रगन झराना। पानिजकंज
ना विनय सुनाई। सुनहु भक्तवत्सल जदुरा
ई। विने सुपन सत संबंन मोरे। जगकारज
नहिं कबहूं बिछोरे। सकल जनम आप क
रमन माही। लोयो दीननाथ जगमांही। स
पनेहू भलोकरम नहिं कीना। उरा चार रत

१८ भ० १३।

रेसो मलीना। इह कपाल कछु नाहिं नजाना
कहि सहकल शोको भगवाना। जान्यो प्रभु क
र विरद नयारो। जन अवगुन सब गुनही वि
चारो। अब सब मतिन चरन पर मोरी। दंड
प्रणाम जुगाल कर जोरी। इहि अवसर इन
नैनन मोही। दीषत पक स्याम घन सोही।
भनन वदन प्रस भीषम बानी। आनंद मगा
वे प्रोति जगपानी। दोहा। जो महाति मति म

१३।

१२४

रे ...रो हृदय राखि निज मोय। लागेपा अमल
पे. ...नि करन प्रभु ...व ध्यान मन होय। ३६। टीका।
...नव भीषम ... कमलवत भगवानकी शोभा
को देख देखकर श्री जो लक्ष्मी तिसके हाथों
से मरदन किये हुये जो चरन तिन चरन कम
लोंमै अपने मनरूपी भमरेको निवास देकर
एकाग्र इंद्रय ... एक ध्यान होय कर शरीर
से प्रफुल्लत भया हुआ नेत्रोंमै प्रेम जल भरक

१८ भ. १२२

२ और दोनो हाथ जोड कर विनती करनेलगा कि हे भक्त वतसल भगवान देखिये मेरेको म नैसे वरष वतीत हो गया इन जगत के कार जो मे कवी नही छूटने पाया सव जनम जो हे सो आप करमो मे ही खोय दिया भ ला करम सपने मे भी नहीं किया स दैव उगा चारमे ही लगारहा हूं हे दीन। वंधू मेरेको इह नही जान पडा कि आपकोन

१२२

त्कृत और भक्त के प्रभावसे मेरे महात्मद परती
केहो इसते मैने विचाराहै जो कृपानिधान तुमा
रा विरद न्यारा ही है अपने दासके अव गुन जो
हैं सोगुनहीं विचारते हो फिर भीषम कहतेहैं
कि अब सब मुनियोंके चरनोपर मेरी हाथ जो
ड़कर दंड प्रणाम होवे इस समय मेरे इन नेत्रों
के बीच सर्व लोकोंके धाम एक रत्न श्यामही दे
ख पड़तेहैं इस प्रकार कथन करके आनंदमें म

की

१८ गन भया हूआ भीषम दोनो हाथ जोडकर जो मू
भ० रती भगवान मुनियोंके मनमें बसरहीहै सोई श्र
१२२ पने हृदय मे राख कर और तिनसे सावधान
123 होयकर भगवानकी अस्तुती करने लगा। ३६
चौपाई। जैजै प्रना पाल जदुनायक। जैजै भक्तसं
न सुख दायक। जैजै वृंदारक मनमंडन। जैजै खं
डन दनुज प्रचंड। जैजै आनंद कंद मुरारी। जै
जैजैति केव उर गारी। जैजै कुंजन करन विहा १२२

रा। जैजै धरन अनेक अवतारा। जैजै कृपासिंधु
जनरंजन। जैजै भक्त भीत भव भंजन। जै जग
धीस रमीस अनामा। जैजै जन मन हरन का
मा। जैजै नव तमाल तन सोभा। जैमख अल
क जाल मन लोभा। जै विसाल भुज वनन अ
नूठी। मूरति मदन कोटि मद मूठी। जैजै उर
वन माल बिराजे। पीत वसन डौति दामनि।
लाजे। जै वार जैलोचन घनस्यामा। जै कलके

१८ भ॰ ॥
१२५

कि कीट छाँवि रामा। जैउउ पाल वदन उतिदे
वा। जै ग्रज चंद भाल सरसेवा। जै पारथ सार
थि जदुनाथा। जै रथ चक्र धरन रणहाथा। जे
जै मोर सरन अपणाई। कन कल सेद वदन
उभराई। जैजै रण रज रंजित अंगा। विच विच
श्रोणत विंद सुरंगा। जै करि टेर सुनत द्रुत
धावन। सकुलि ग्रंट गज चंट उरा वन। जैजै न
रवन गाधरन कृपाला। ब्रज उव रन ॥

प्रभु दीन दयाला। जैजै सत्य सिंधु भगवाना। जै
जै पतित उधारन बाना। जैजै दीन नाथ रण दे
वी। परम भूप वन विकल बसेवी। कृपासिं
धु दास नहिन लागी। त्रिण इव निज प्रणदीन
तयागी। सबै हेन मोर प्रण स्वामी। पसा चक्र
करकमल निमामी। दोहा। अहो नाथ मम को
न श्रम करत दीनपर हेत। जोजन मति हित
अमति भये भगवन कृपानकेत। २७। टीका।

१८
भ०
१२४

125

भीषम कहता है कि जै हो तुमारी हे प्रजापा
ल हे भक्त संत सुखदायक हे देवताउं के आ
नंद कारी हे दुष्ट दैत्यों के खंडन हारी जै हो
तुमारी हे ब्रज गलियों में विचरने वाले हे पृ
थवी मंडल पर अवतारों के धारने हारे हे कृ
पा के समुद्र हे दास पाल हे जगत में भक्त ज
नों का भय हरने वाले जै हो तुमारी हे ल
क्ष्मी के पती हे जगत पती हे दास जनों की

१२४

कामना पूरण करने वाले जै हो तुमारी हे नवी
न तमाल वृक्षवत शरीरकी शोभावाले हे
स्याम अलकों वाले हे लंबी भुजाके धारने हा
रे हे कोटि कामदेवकी छबीको लज्जा देनेवा
ले जै हो तुमारी हे तुलसी की माला धारने
वाले हे पीतवस्त्र धारी हे कमल नेत्र हे घ
न स्याम हे मोरमुकट वाले हे चंद्रमा वत
मुखकी शोभावाले जै हो तुमारी हे शिवब्र

१८ भ. १२६

स्त्रादि श्रौर सनकादियों करके सेवन किये हुये हे पारथ के सारथी हे जदुनायक हे रणमें रथ चक्रके धारने वाले जे हो तुमारी हैमेरे वाणों करके भ्रमन क्या थके हुये श्रौर माथे पर प्रस्वेद के कण उभरे। हुये हे श्रंग श्रंग रणकी धूडी से सजे हुये श्रौर श्रोणित जो लहू है तिसके बिंदुओं से बीच बीच शोभित भयेहुये जेहो तुमारी हे। १२६

126

गजेंद्र की पुकार सुनतेही वेगधाय कर र
क्षा करनेवाले हे द्रौपदीके अंटेपर भारत
मे गजघंटाउटाकर बचानेवाले हे नखपर
गोवर्धन धारकर व्रजकी रक्षा करने हारे
हे मत्स्यके समुद्र हे पापीजनो का उद्धार कर
ने वाले जैसा तुमारी हे भगवान नमके सेहो
कि रणमे धरम भूपकी सेनाको व्याकुल दे
खकर और वालोंका हित विचारकर अपना

प्रण जोथा सो त्रिणके समान ततकाल तो
ड़ दिया और मेरा प्रण हरण करनेके वास्
ते रण भूमी के बीच आपने हाथमें रथका
चक्र धारण करलिया ताते देखिये हे दीन बं
धु हमारे समान दीनो पर कृपा और स्नेह क
रने वाला ऐसा कौन है कि जिनोने अपना प्र
ण असत्य करके अपने दासका प्रण सत्य कि
या है ॥१०॥ चौपाई ॥ निज हठ तजत दीन सुखदाई

राख्यो मम रघ भक्त सहाई। कियो आज धन
रंकन रंका। जैसो तीन लोक दै डंका। अलक
हि अनमिष नयनन होई। सोई रूप सनमुख
प्रभु जोई। देखत भयो अचल चित नाहीं। ग
हो मौन मानस कछु नाहीं। जोगकला करि
भक्त प्रधाना। सुमरत कुल भक्त वरदाना।
विनु अनास सनमुख सवकेंह। तजत प्रा
ण कौतुक करतवेह। भयोलीन जड नंदन।

१८
२
१२८

जोती। देखि भक्त भगवान मिलोती। बाजी ग
गन दुंदभी नाना। हरखि प्रसन्न सुमन बरषा
ना। इसो दिसन जैजे धुनि छाई। धन्य धन्य धन भीषम भाई। स्तुति
समाजसबउधोउकारी सुहोभा
ग भीषम ब्रतधारी। जाम दिखाय समर ह
रि काहीं। लियो बजाय भक्ति जग माहीं।
करत भक्ति बल सनमुख ठाढे। देखत दी
न घाल सखबाढे। दोहा। हम सम समर
न सहज भक्त प्राण तजि दीन। हम कृपाते

१२८

कमलनमें भयो कमल महं लीन ।२७। टीका ।
हे भक्त महाराज तुम धन्य हो जो आपने हठ
को त्यागकर मेरे हठ को अटल राखा है और
ज रंकोंमें रंक जैसा भया सो आपने तीन लो
कमें डंका देकर तार दिया है ऐसे कहिकर
और मन मति ध्यान जोड़कर भगवानका
सोई सरूप देखता देखता अचल चित्त
होकर मौनको धारन कर लेता भया औ

रा॰
भा॰
१२९

र फिर योग कला करके हनूमानजी को
स्मरणा स्मरण जतनके विनाहीं भगवा
नके सनमुख प्राणोंको त्यागकर हनूमानजी
की ज्योतीमें लीन होजाना भया इसप्रकार भ
क्त का भगवानमें मिलाना देखकर देवताओं
ने आकाशमें अनेक प्रकारकी दुंदभी बजा
यदई और हर्षसे भांत भांत पुष्पोंकी वर्षा करदई देश
दिशाओंमें जैजै धुनी व्यापत होजातीभई सबकोई कहतेहैं

१२९

१२९

कि भाई आज पृथवीपर इह भीषम धन्य है

और धन्य इस भगवान धारीभक्त के भाग हैं किजि

सने भक्त त्रिनकारी भगवान को रणमे दि

खायकर जोगवरीसे मुनी जोगी जनोको

दुरलभ मुक्ती जोहै सो प्रापत करलई है

और भक्ती केवल से दीनबंधु को मनमुखे

स्थित करके और तिनके देखते हुए स्नेहसे

स्मरन करते हुये प्राणों को त्याग कर दिये

१८ भगवाननैमे हीं लीन होगया। ३६। चौपाई। नव
भी० भीषम कर श्री जदुनाथा। परसे कलित कंज
१३० करमाथा। लीन सपर्श नवन जदुवीरा। जगेव
मन सम भये सरीरा। मनक करम पंडव
सव कीया। जदु पति नाहि तिलो जलि दीया
नव भीषम [illegible] समरन सारी। आय भवन
संजन [illegible]। कृपा सिंधु नव सभा मजाई
बोलि धरम नृप कहा तुकाई। जोजो नमक

130

१३०

हे भीषम भाता। मति महान उपदेस सुनावा
मोन सुनो सेमुपो कहूं नाहीं। भाषहुं सत्य भू
प तव कारे। सुनो मोहिन मरम नराई।
जदपि विदन नगा मोर वडाई। जोवस करन
मोहितव कामा। तो भीषम उपदेस लिलामा
श्रुति पुराण सिद्धांत विचारी। करहु आचरण
सदा सुख कारी। भीषम भनित सरस नगा
माहीं। मोहि अस आन प्रीय को नाहीं। अस

१८ श्रीं १३।

131

समान भीषम संसारा । अहै नमोरि भक्त भव
पारा । दोहा । एस प्रकार नृप धरम कहं व
हु विधि नीति बखान । आशु समति हर धारि
का कियो गवन भगवान । इह अदभुत मन
हरन भव भीषम चरित पुनीत । मैकोस्यो स
जपन कछु कथन हरन भ्रमभीत । कुमति वि
नाशन सुख करन जरन त्रिविध तपसूल । ज्ञा
न ध्यान दायक विमल सकल सुमंगल मूल ।१३।

कुल कमल पद प्रीति नित दैन सुजस संसार
दुरित दोष दारद समन दमन मोह मदमार
टीका। तब भगवानने अपने हाथ कमल
से भीषमके माथेको सपरश किया तिस
सपरसके होनेसे भीषमका शरीर ततका
ल मानो जले हुये वस्त्रके समान होगया।
तब तिसका सनक कर्म जोहै सो विधी पू
र्वक सब पांडवोंने किया और आपदीन व

१५

सने तिलांजली दिये जाने उपरांत भीषम
को सुमरने और तिसके गुण गण कथन
करते हूये भगवानके सहित अपने घरको
चले आये तब कृपासिंधु सभा सजाय कर
और राजा युधिष्टर को बुलाय कर कहनेल
गे कि हे राजन भीषम जीने तमारेको जोजो
उपदेश सिखाया है सो तोताकहीं सुना औ
रनादेखा है मे सत्य कहताहूं यद्यपी जगत

मै मेरी बडु नहीं बडाई है तद्यपी मै इतना नहीं
जानता हूं [illegible] जितना भीषम पितामाने क
हा है सब के [illegible] जो हमारे चित्त मै मेरे को
वश करने की कामना है तो इह भीषमने जो
उपदेश हम को सिखाया है सो संपूर्ण श्रुति
पुराणों का सिधांत अर्थात सार और सर्व सु
खों का साधन जान कर सदैं आचर्ण करते व
रहो क्यों कि सदा निजपर ही चलते रहो इह।

१८ भीष्म का कथन जो है तिसके समान मेरेको
भ० जगत में और कुछ भी प्यारा नहीं है और नाको
१३३ ई संसार में भीष्म के समान मेरेका भक्त प्या
133 रा है इस प्रकार धर्म के पुत्र राजा जुधिष्ठर को
अनेक प्रकार की नीती सुनाय कर और सिखा
य कर महादेव का समरण करते हूये कृष्ण भ
गवान द्वारिका को चले जाते भये नामादास
जी कहते हैं हमने तो अनेकी इह अद्भुत और भ १३३

नके हरनेवाली परम पवित्र भीषम की गाथा
जोहै सो मैने यथा मती कुछ संक्षेप करके क
थन करीहै इह कैसी भी गाथा है कि भय भ्रम
कुमती सूल रोग और मोह मद दोष दारिद्र
दिक संपापों के नास करने वाली और निरम
ल ज्ञान ध्यान के सहित कृष्णभगवान के
चरन कमलोंमे नित्य नवीन प्रीती और भ
क्ती के देनेवालीहै शुभं ।२९। इति भक्तविनो

भ. इति श्री भगवत भक्ती महात्मे भाषाटीकायां मिहाँ सिंह कृत
भीषम चरित्र वरणनं नाम सरगः
१३४

134



अथ भीषम देव चरित्रं । दोहा । श्रीजदु नंदन प
दमपद प्रदप्रमोद कल्यान । उरधरि गुणगण
संत जन मनहुं वदन शुभदान । सुमति प्र
वर धन हरन अग करन कुमति सवनास
संत सुजस दिनमान इति दमन तिमर भ्रम
त्रास । भीषम देव कर चरित्र सुभ सुनत सु
वण सुखदाई । वरन हुं सादिर प्रीति जुत सं
त चरन सिरनाई । चौपाई । जथा जनम भीष

१८
भ.

म जगलीन्यो। भारथ कथन व्यास सव की
न्यो। ईहां कछुक संछेपन प्रसंगा। वटहुं कवि
र मनमोद उमंगा। सिस पननें संतन सिव
काई। किये अचरन तास सुखदाई। संतनथ
मैं निरत दिनराती। सज्जन प्रजा सुखद सव
भांती। एक समय नरनाथ प्रवीना। मनिग
लसुं पैं आवन कीना। धर्म शास्त्र विधि जा
नन हेतू। करि करि प्रसन भूप मति सेतू।

भ० ५१
८३

मे मगनहोयगई ऐसे भक्तप्रधान विठ्ठलजी नट
नागर का नृत्यमे चतुरजो भगवानहैं तिनको ए
ऊदिन रटतेहुये अर्थात भजतेहुये इससंसारके
बंधनको तोड़कर कृष्णपर मातमाकी कृपासे
कृष्णरूपही होयगये ।५। इतिश्री भक्त विनोदग्रं
थे भगवद्भक्ति महातमे मिर्जासिंहकृत भाषाटी
कायां विठ्ठल चरित्र वरणनं नाम सरगः